मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

पहली आवृत्ति १

जनवरी १९६१

तीर्थस्नान

पाठक देखेंगे कि भिन्न भिन्न प्रकारके लोगोंको लिखे गये गांधीजीके पत्र-संग्रहोंमें भी प्रेमाबहनको लिखे गये अिस पत्र-संग्रहका महत्त्व कुछ विशेष है। अिसमें जिन विषयोंकी चर्चा की गयी है अुनकी विविधता तो ध्यान आकर्षित करती ही है। लेकिन अुसके सिवा समय समय पर दी गयी आश्रम-जीवन संबंधी हिदायतें गांधीजीके विचारों और अुनके कार्यको समझनेके लिये कीमती मसालेका काम देती है।

सन् १९३ जैसे नाजुक समयमें जब नमककी कूचके सिलसिलेमें लगभग सारे आश्रमवासी आश्रम छोड़कर दांडीकी तरफ चले गये थे तब आश्रमको चलानेका भार आश्रमकी बहनोंने अपने सिर पर लिया था। अिसलिये आश्रम-जीवन संबंधी सिद्धान्तोंसे लेकर आश्रममें रहनेवाले बच्चोंके विरामको ध्यानमें रखकर दी गयी छोटीसे छोटी हिदायतें भी हमें अिसमें विस्तारसे जाननेको मिलती हैं।

बापूजीके पत्र-संग्रहका अर्थ है व्यापक मनुष्य-जीवनके अनेक छोटे-मोटे पहलुओं पर अेक सत्यदर्शी समाजशास्त्रीका प्रकाश। गांधीजीने आजकलके अलग अलग शास्त्रोंका अध्ययन नहीं किया था। अिसीलिये वे चाहे जितनी गहराअीमें अुतर कर, प्रत्येक विषयका मर्म समझकर, अत्यन्त सादी भाषामें लोगोंका मार्गदर्शन कर सके और खास तौर पर स्त्रियोंका मार्ग दर्शन करनेके लिये अुन्होंने अपने भीतर स्त्री-हृदयका विकास किया। गांधीजी द्वारा बहनोंको लिखे गये पत्रोंमें हमें ये सारी सिद्धियां देखनेको मिलती हैं।

हरअेक व्यक्तिकी योग्यता अुसकी खूबी और अुसकी गहराअीको समझकर अुस व्यक्तिकी आकांक्षाओंकी तृप्ति हो सके अिस प्रकारकी हिदायत वे देते थे।

और बापूजीमें धैर्य भी कितना था? मनुष्यका स्वयं अपने अूपर जितना विश्वास हो अुससे कहीं अधिक विश्वास बापूजी अुस पर रखते थे। हर व्यक्तिकी कमजोर श्रद्धाको वे मजबूत बनाते थे और अन्तमें मनुष्यकी सामान्य शक्तिसे अधिक काम सहज ही अुससे करा लेते थे।

गांधीजीके सार्वजनिक लेख और भाषण देशके सामने हैं और जो लोग गांधी-साहित्यका महत्त्व समझते हैं अुन्हें अब अुस साहित्यका गहरा अध्ययन करनेका मौका भी मिला है। लेकिन गांधीजीका पत्र-साहित्य अुनके भाषणों और लेखोंसे कम नहीं है कम महत्त्वका तो वह है ही नहीं। वहां अुनकी लेखन-शैली भी बिलकुल अनोखी होती है। किसी व्यक्तिकी रग-रगको पहचानकर अुसे तालीम देने अुसका मार्गदर्शन करने अुसे संभालने और आश्वासन या प्रेरणा देनेका काम करनेमें वे कभी थकते ही नहीं थे। अेक ही बातको अुन्हीं शब्दोंमें बार-बार कहनेमें वे अकुलाते नहीं थे। जैसे दो व्यक्तियोंके बीच यह होड़ लगी हो कि किसमें धैर्य ज्यादा है! अेक शिक्षकसे किसीने पूछा   तुम अेक ही चीजको बीस बीस दफा बार बार क्यों समझाते हो?' शिक्षकने अपने स्वभाव-सुलभ धैर्यके साथ कहा   अिसलिअे कि अुन्नीस बार कही हुअी बात बेकार न जाय।

हमारे पास बहनोंको लिखे गये बापूजीके पत्रोंके कुछ संग्रह हैं और अुनसे भी ज्यादा भविष्यमें प्रकाशित होंगे। अुन सबमें कुछ बातें तो समान रूपसे दिखाओ देंगी क्योंकि मनुष्य सब जगह अेकसा ही रहता है। और फिर भी प्रत्येक व्यक्तिके साथ किये गये पत्र-व्यवहारमें बापूजीका मार्ग अलग अलग दिखाओ देता है। अुनके सम्पर्कमें आओ हुओ विदेशी महिलाओंमें से दो महिलाओंको लिखे गये पत्र हमारे पास हैं —मीराबहनको लिखे गये पत्र और अेस्थर फैरिंगको लिखे गये पत्र। कुमारी फैरिंगने बादमें विवाह कर लिया और श्रीमती मैनन बन गयीं। अेक मिशनरी बालिका भारतमें आकर अीसाके प्रेमका प्रचार करने लगती है स्वयं अेक भारतीय युवकके प्रेममें पड़ती है और भिन्न वंशके लोगोंके बीचमें होनेवाले विवाहकी दिक्कतोंको महसूस करती है।

जिसमें ओीसाओी धर्मका प्रश्न, सरकारी नीतिका प्रश्न, दोनों ओरके कुटुम्बोंका प्रश्न और सबसे ज्यादा अलग अलग धर्मोंको माननेवालोंके आध्यात्मिक प्रश्न — ये सब प्रश्न अुस भोली बालिकाके सामने पड़े होते हैं और वह ओीसा मसीह जितनी ही श्रद्धा बापूजी पर रख कर अुनसे आश्वासन प्राप्त करना चाहती है। अुसे लिखे गये पत्र अलग प्रकारके हैं और मीराबहनको लिखे गये पत्र अलग प्रकारके।

स्वदेशियाम भी पटियाला तरफकी अेक ऊँचे मुस्लिम खानदानकी कुमारी अमतुस्सलाम गांधीजीकी धर्मनिष्ठासे आकर्षित होकर अुनके पास आती है। पवित्र कुरानके प्रति अुनकी निष्ठा, अुज्ज्वल देशभक्ति और अुनकी तेजस्विताको देखकर गांधीजी अुनको रास्ता दिखाते हैं। अुनको लिखे गये पत्रोंका सारा संग्रह दूसरे ही प्रकारका है। अेक अत्यंत संस्कारी वृद्ध पुरुषको स्वेच्छासे पतिके रूपमें पसन्द करनेवाली और अुनके कार्यमें सतत प्रतिपल ओतप्रोत होनेवाली श्रीमती कुसुमबहन देसाओी विधवा होनेके बाद आश्वासनके लिये बापूजीके पास आती है, पूज्य बाका हृदय जीत लेती है, किन्तु आश्रमका अंग बनकर नहीं रहना चाहती — अिन कुसुमबहनको लिखे गये पत्र भिन्न प्रकारके हैं। कुसुमबहनकी सारी शक्ति अुनकी पतिनिष्ठामें प्रगट होती है। अुस निष्ठाको प्रोत्साहन देकर अुसीके द्वारा बापूजी अुन्हें समाज-सेवा करने और अपनी अुन्नति करनेकी प्रेरणा देते हैं।

बिहारके नेता ब्रजकिशोरबाबूकी पुत्री और समाजसत्तावादी जयप्रकाश नारायणकी पत्नी प्रभावतीबहन तो गांधीजीकी विशेष पुत्री रही हैं। अुनकी कोमल वृत्तिको समझनेके लिअ गांधीजीने कितनी सावधानी बरती है!

बापूजीने भारतमें आकर अपना काम शुरू किया और राष्ट्र-सेविकाके रूपमें अुनकी नजर श्रीमती सरलादेवी चौधरी पर पड़ी। अिन प्रतिभाशाली विदुषी स्त्रीको तालीम देनेका बापूजीका सारा तरीका अलग था। अब वे सब प्रकारसे तैयार होनेके बाद गांधीकार्य करनेके लिये अपने

पास आजी हुअी राजकुमारी अमृतकौरसे काम लेनेकी बापूजीकी पद्धति अलग थी।

भोली भक्तिसे बापूजीके पास आश्वासन और प्रेरणा लेनेके लिअे आअी हुअी कुसुम गंगाबहनको लिखे गये पत्र अेक प्रकारके हैं तो कॉलेजकी आधुनिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी धर्म-परायणता और हृदयकी निष्ठा दोनोंको बापूजीके चरणोंमें अर्पित करनेवाली प्रेमाबहनको लिखे गये पत्र दूसरे प्रकारके हैं।

अेक अेक व्यक्तिको लिखे गये गांधीजीके पत्रोंका संग्रह गांधीजीका व्यक्तित्व समझनेके लिअे बहुत अुपयोगी है। अिसलिअे कुमारी प्रेमाबहन कंटकसे मैंने कहा कि अिन पत्रोंको समझानेके लिअे पहले वे थोड़ा अपने बारेमें लिख दें और स्वयं बापूजीके प्रति और अुनके कामके प्रति कैसे आकर्षित हुअी यह भी लिख दें।

बीस साल तक अखंड रूपसे चलनेवाले अिस पत्र-व्यवहारके दिनोंमें बापूजीके जीवनमें जो अनेक परिवर्तन हुअे और अुनके (प्रेमाबहनके) अपने जीवनमें भी जो परिवर्तन हुअे अुनका प्रतिबिंब अिन पत्रोंमें कैसे पड़ता है यह समझानेके लिअे बीच बीचमें छोटी प्रस्तावना और टिप्पणियां कहींके रूपमें देने और बापूजीके चले जानेके बाद अुनका काम आगे बढ़ानेमें अुन्हें स्वयं जो अनुभव हुअे वे अनुभव देकर सारी पुस्तक पूरी करनेकी बात मैंने प्रेमाबहनसे कही।

अनेक पहाड़ों प्रदेशों और तरह तरहकी भूरचनाओंमें से पानीके प्रवाह आकर जिस तरह गंगा सिंधु ब्रह्मपुत्र नर्मदा या कृष्णा जैसी नदियोंमें मिलते हैं अुसी तरह भिन्न भिन्न प्रकारके संस्कारोंसे जिनका व्यक्तित्व बना था वैसे स्त्री-पुरुष गांधीजीसे आकर मिले और अुन्होंने गांधी-कार्यमें अपना अपना हिस्सा अदा किया। अिसमें प्रेमाबहनका हिस्सा तर्कप्रधान किन्तु श्रद्धावान महाराष्ट्रका हिस्सा माना जायगा। आखिरी दो-तीन पीढ़ियोंमें जो लोग महाराष्ट्रके वातावरणमें छोटेसे बड़े हुअे

युग सब पर शिवाजी रामदास ज्ञानेश्वर और तुकाराम आदि लोकोत्तर विभूतियोंका असर पड़ा मालूम होता है। देशकी आजादी और आध्यात्मिक अुन्नति — जिन दोनों अुत्कट भावनाओंका मेल जिन पीढ़ियोंमें देखनेको मिलेगा। जिन दोनों भावनाओंके लिअे घरबारका त्याग करके संस्कार सुखको तिलांजलि देकर कोअी अद्भुत काम (something tremendous) करनेकी धुनके दर्शन जिन सबमें कम-ज्यादा मात्रामें होते हैं। माताकी अिच्छाका आदर करके विवाहके लिअे तैयार हुअे युवक नारायण पुरोहितोंके मुंहसे सुमुहुर्त सावधान की चेतावनी सुनते ही चौंककर विवाह-मंडपसे भाग गये और १२ वर्ष तक तपस्या करके समर्थ रामदास बने — यह प्रसंग प्रत्येक महाराष्ट्रीके हृदयमें बसा हुआ है। श्री रामदास स्वामीने छत्रपति शिवाजीकी मदद की और अध्यात्म तथा राजनीतिका समन्वय किया यह श्रद्धा महाराष्ट्रके हृदयमें दृढ़ है। श्रीकृष्ण और अर्जुन शिवाजी और रामदास विद्यारण्य और विजयनगरके राजा — जिस प्रकारकी जोड़ियां ढूंढ़ निकालनेमें महाराष्ट्रको बहुत रस आता है। चन्द्रगुप्तका राजगुरु महामात्य चाणक्य मूलतः वैराग्यशील तपस्वी ब्राह्मण था। अुसने अपना राजनीतिक मिशन सफल बनानेके लिअे चाहे जितने दावपेंच किये हों लेकिन अन्तमें अपने शत्रु अमात्य राक्षसको ही समझा बुझाकर चंद्रगुप्तका राज्य सौंपा और स्वयं गम्भीर प्रायश्चित्त करनेके लिअे जंगलमें चला गया। जिस प्रकार अध्यात्म और राजनीतिका समन्वय करनेका प्रयत्न हमारे देशमें हमेशा होता आया है। और जिसमें जो सफल नहीं हुअे अुन्होंने राजनीतिके अंतमें अध्यात्मकी ही शरण ली है।

बापूजीने असत्य कपट और हिंसाको टाला सर्वभूतहिते रत जीते आदर्शके द्वारा राजनीति और अध्यात्म दोनोंके द्वन्द्वको मिटाकर दोनोंको अेक ही कर दिया।

पहले साधना और बादमें सेवा जैसा क्रम भी महाराष्ट्रमें — बल्कि सारे भारतमें माना जाता रहा है। पहले साधनाके द्वारा योग्यता हासिल करो और अुसके बाद चाहे जितनी समाज-सेवा करो तब वह तुम्हारे

जीवनमें बाधक नहीं होगी अैसा कहा जाता था। यह भी कहा जाता था कि सेवा करके तृप्त हो जानेके बाद अन्तमें धारणा ध्यान और समाधिका ही मार्ग अपनाना है। बापूजीने यहां भी द्वैतको दूर करके सेवाको ही साधनाका रूप दे दिया। सेवा करनी हो तो वह पक्षपात-रहित *विश्वात्मैक्य-बुद्धि धारण करके सबकी करनी चाहिये।* जो हमारे पासके लोग हैं हमारी सेवाके विशेष अधिकारी हैं अुन्हींकी शुद्ध सेवासे प्रारम्भ करना चाहिये — अिस स्वदेशी तत्त्वको गांधीजीने सेवाका नियम और साधनाका आधार बनाया। हम अगर शुद्ध भाव और शुद्ध रीतिसे सेवा करते जायंगे तो हमारे योग्य क्षेम भगवान हमें देगा ही अिस विश्वासके साथ अुन्होंने सेवारूपी साधना की। अितना ही नहीं बल्कि अिस सेवाको ही अुत्कृष्ट ध्यानका साधन बनाया और अिस योगके द्वारा ही अुन्होंने अपना जीवन पूरा किया। ध्यानमें बैठकर समाधिमें हम पहुंचते हैं तब शरीर अपने आप नष्ट हो जाता है। यह आदर्श हम पढ़ते आये हैं। भौतिक नियमोंके अनुसार शरीर-धारणकी अकल न रहने पर शरीर अपने आप नष्ट हो जाता होगा। लेकिन शरीरके नष्ट हो जानेके प्रकार जीवनरके यहां अनन्त होते हैं। दिलीप राजाने अपना शरीर अर्पित किया गओेन्द्रका मोक्ष हुआ अुस समय भी अनन्यभक्ति द्वारा अुसे समाधि-लाभ ही हुआ था। अनासक्त सेवा करते करते चित्त प्रार्थनामय हो गया अुस समय रामनामके स्मरणके साथ शरीर छूट गया यह भी योग द्वारा देह छोड़नेके अनेक प्रकारोंमें से ही अेक प्रकार माना जाना चाहिये।

दूसरी दृष्टिसे देखें तो गांधीजीने माता-पिताकी सेवा करते अुसे पारिवारिक सद्गुणोंका विकास किया। अुनमें से वे सारे कुटुम्बियोंको अभेद दृष्टिसे देखने लगे। कुटुम्बका अर्थ अुनकी दृष्टिमें विशाल होता गया। अैसा करते करते अपने और पराये का भेद ही नहीं रहा। अुनका चित्त अिस तरह बना कि किसी भी व्यक्ति या पक्षका द्रोह न हो और अुनमें विश्वात्मैक्य-बुद्धि दृढ़ हुअी। अिस प्रकार प्राचीन कालकी अनेक साधना-परम्पराओंमें गांधीजीने समन्वयके अेक नये प्रकारकी वृद्धि की।

हमारे जमानेमें अध्यात्म और समाज-सेवाके प्रयोग करनेवाले तीन महापुरुषोंको हम जानते हैं: स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द घोष और महात्मा गांधी। तीनोंके प्रति महाराष्ट्रके साधकोंका असाधारण आकर्षण है। अिसी तरहके आकर्षणके कारण प्रेमाबहन बापूजीके पास आयीं। स्त्री-सुलभ व्यक्तिपूजा अुनमें भरपूर दिखाओ देती है। बापूजी अिस प्रकारकी व्यक्तिपूजाके पीछे रही भावनाका आदर करते थे लेकिन अुसे प्रोत्साहन नहीं देते थे। व्यक्तिपूजासे मुक्त होकर हमें गुण पूजक होना चाहिये और अुससे भी आगे जाकर अिन गुणोंकी प्रेरणा देनेवाले चेतनको — आत्मशक्तिको हमें अपनाना चाहिये — यह थी अुनकी अध्यात्म-साधना। व्यक्तिपूजा वस्तुपूजा मूर्तिपूजा आदि जड़पूजाको वे अच्छी तरह समझ सकते थे और अिसीलिअे अिस भूमिकावाले लोगोंको आगेका रास्ता दिखाना अुनके लिअे संभव हुआ। आत्मशुद्धि चित्तकी शान्ति और देशकी सेवा अिन तीनोंका गांधीजीने शुरूसे आखिर तक समन्वय किया था।

अैसा मालूम होता है कि प्रेमाबहनके सामने ज्ञानेश्वरकी छोटी बहन मुक्ताबाओ नामदेवके घरकी दासी जनाबाओ और राजस्थानके राज-परिवारकी मीराबाओ अिन तीनोंके आदर्श अेकत्र हुअे हैं। अिसीसे अुनकी बापूभक्ति अितनी अुत्कट है। राष्ट्रसेवामें मार्गदर्शकके रूपमें गांधीजीको पसन्द करते हुअे अुनके सत्याग्रह पर प्रेमाबहनका मन मानो चिपक गया और अुन्होंने समझ लिया कि सत्याग्रहकी योग्यता हासिल करनी हो तो अुसके लिअे आश्रम-जीवन अनिवार्य है। अिसीलिअे सत्याग्रह आश्रमके साथ वे अितनी अेकरूप हो सकीं। साबरमतीका सत्याग्रह आश्रम छोड़नेके बाद भी अुन्होंने सासवड़में आश्रम-जीवन ही खड़ा किया और अुसकी प्रवृत्तियोंको आगे बढ़ाया। आज वे सारी प्रवृत्तियां समेट लेने पर भी अुनका जीवन और वृत्ति आश्रममय ही है। और यह आश्रम-जीवन ही अेक अैसी साधना है, जिसमें अध्यात्म और

व्यवहार, समाज-सेवा और आत्म-चिन्तन, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और ध्यानयोग सब अेक ही बाते हैं।

आश्रमके व्रतोंकी जांच करने पर ही यह चीज स्पष्ट होगी। जिन व्रतोंके अनुसार चलनेकी जागरूकता जिनमें होगी, वे ही अूपरके कथनकी सत्यताको स्वीकार करेंगे।

बापूजीके पत्रोंमें पग-पग पर अुनकी जीवन-साधना प्रगट होती है। स्वयं अपनेको भूल जाना, शून्य बन कर रहना, अपने दोष देखना, दूसरे लोगोंके गुण देखना, अपने प्रति कठोर बनना, दूसरोंके प्रति अुदार रहना, जो दूर हैं अुन्हें समझनेके लिये विशेष प्रयत्न करना — आदि बातें अुनके लेखोंमें बहुत देखनेको नहीं मिलतीं, परन्तु अुनके पत्रोंमें विशेष रूपसे दिखाओी देती हैं। और जो लोग अुनकी दृष्टिमें निकटके साधक थे या जिन्हें वे आश्रमके आदर्शोंके मुताबिक ढालना चाहते थे, अुन्हें लिखे गये पत्रोंमें बापूजीने अपनेको और अपनी साधनाको अुत्कट रूपमें प्रगट किया है।

पाठक यह न भूलें कि यह पत्र-व्यवहार अुन लोगोंके बीच हुआ है जो पारमार्थिक भावसे अुत्कट रूपमें सेवामय जीवन जीना चाहते हैं। जिसमें दंभके लिये कोओी स्थान ही नहीं होता। अपने दोषोंको छिपानेकी और सामनेवाले मनुष्यकी दृष्टिमें अच्छे दिखाओी देनेकी वृत्ति भी जिसमें नहीं होती। जिस चारित्र्यके गुणके कारण गांधीजीकी आत्मकथा को दुनियाके तमाम राष्ट्रोंके लोगोंमें आदर मिला है, वही चारित्र्यका गुण जिस पुस्तकमें पग-पग पर दिखाओी देता है।

जिन पत्रोंमें से चुनकर निकाले हुअे ९ पत्रोंका अनुवाद कओी साल पहले प्रकाशित हुआ था। अुसके लिये मैंने प्रस्तावना लिख दी थी। अुस पुस्तकका सम्पादन भी मेरे हाथों हुआ होता तो अेक-दो पत्रोंमें मैंने काफी काटछांट की होती। मैं गम्भीर बीमारीमें फंस गया और वे पत्र जैसेके तैसे छप गये। अुन परसे महाराष्ट्रमें काफी चर्चा और टीका हुओी। अुस टीकाका थोड़ासा प्रसाद मुझे भी मिला। गांधी-सेवा-संघके

अुस समयके अध्यक्ष श्री किशोरलालभाअीने अुस पुस्तकको वापस ले सकनेकी मुझे सूचना की। मैंने अपनी अशक्ति बता कर अुन्हींसे अिसकी जिम्मेदारी लेनेकी प्रार्थना की। अन्तमें यह मामला पूज्य बापूजीके पास गया। अुन्होंने कहा कि जिन पत्रोंको लेकर जितनी टीका हुआी है अुनके छपनेसे कुछ भी नुकसान नहीं हुआ है और अेक बार प्रकाशित होनेके बाद वे पत्र वापस तो लिये ही नहीं जा सकते।

अिस बार अिस सारे संग्रहका संपादन मेरे हाथों हुआ है। शिष्टाचारकी दृष्टिसे जो नाम प्रकाशित नहीं किये जा सकते अुन्हें छोड़ दिया गया है। कहीं कहीं अर्थको स्पष्ट करनेके लिअे कोष्ठकमें शब्द जोड़े गये हैं। अिस बार भी कुछ ज्यादा काटछांट करनेकी मेरी अिच्छा थी लेकिन गांधीजीको गये आज ग्यारह वर्ष हो गये हैं। दुनियाभरके लोग अुनकी जीवन-साधनाके बारेमें अधिक जाननेकी अिच्छा प्रगट करते रहे हैं। ब्रह्मचर्यकी बात हमारे देशमें अेक ओर पुरानी है और दूसरी ओर रूढ़िके कीचड़में फंसी हुआी है जिसे गांधीजी कादा कहते थे। ब्रह्मचर्य अेक अद्भुत शारीरिक तप है आध्यात्मिक साधना है और अब यह अेक बड़ा सामाजिक प्रयोग भी बन गया है। स्त्री-पुरुषके बीचका समग्र संबंध दुनियाकी गहरी चर्चाका विषय बन गया है। अैसे समयमें गांधीजी जैसे सत्यनिष्ठ और लोकोत्तर श्रद्धावाले व्यक्तिने जिस आदर्शका विकास किया और तत्सम्बन्धी जो अनुभव प्राप्त किया दुनियाके अभ्यासियोंके लिअे अुसका बहुत बड़ा महत्त्व है। अिस विषय पर पश्चिमके समाजशास्त्रियों और वैद्यकके विशारदोंने बहुत लिखा है। समाजशास्त्री तो दुनियाके अनेक देशोंमें प्रचलित रिवाजोंको और अनेक धर्मोंके साधकोंने जो अच्छे-बुरे अनुभव प्राप्त किये हैं अुन अनुभवोंको अिकट्ठा करके अुन्हींका गहरा अध्ययन करते हैं।

धर्मशास्त्रोंने प्राचीन कालमें अिस विषयसे संबंधित अनुभव और कल्पनाओं बिना संकोच समाजके सामने पेश की हैं। हमारे देशके धार्मिक ग्रंथकारोंने कभी भी अिस विषयमें घृणा नहीं की।

लोगोंको गलत रास्ते ले जानेके लिये या विकारोंका अधम कोटिका आनन्द माननेके लिये जो साहित्य लिखा और छापा जाता है अुसकी बात दूसरी है। अुससे तो अेक प्रकारका पागलपन ही पैदा होता है। लेकिन जीवनके अूँचे आदर्शको सिद्ध करनेकी कोशिश करनेवाले लोकोत्तर साधकोंके अनुभव और वचन अिससे भिन्न होते हैं। अुनका पठन तो तीर्थस्नान जैसा माना जाता है। अुन्हें पढ़ने और अुन पर मनन करनेसे मनुष्यकी आशय-शुद्धि होती है।[1]

नअी दिल्ली — काका कालेलकर
३ -१-६

[1] मूल गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावना।

पूर्वरंग

फूल मंगाऊं हार बनाऊं। मालिन बनकर जाऊं ॥ध्रु॥
पगमें मैली हाथमें मुरली। गावत गावत घर जाऊं ॥१॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर। बैठत हरिगुन गाऊं ॥२॥

•

पूज्य महात्माजीके प्रति बचपनसे ही मेरा आकर्षण हो गया था। वे सन् १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे भारत वापस आये तब मैं सिर्फ ९ सालकी थी। बंबईकी एक मराठी शालामें मैं चौथी कक्षामें पढ़ती थी। मुझे याद है कि विद्यार्थिनीके नाते मैं सबसे अलग ही पड़ती थी। वह शाला थी तो लड़कोंकी लेकिन हर कक्षामें थोड़ी थोड़ी लड़कियोंको भी प्रवेश मिलता था। सन् १९१५ के बाद लड़कियोंके लिअे अलग शाला होने लगी। लेकिन मेरे ४ साल तो लड़कोंमें ही बीते। शिक्षकगण मुझ पर कृपा थी क्योंकि मैं पढ़नेमें आलस्य नहीं करती थी। छुट्टीमें जब सारे बालक खेलते थे तब मैं पढ़ती थी।

एक विद्वान और कुशल अध्यापक जीवनमें (उस छोटी उमरमें भी) मेरा मार्गदर्शन करते थे। उन्होंने मुझे वाल्मीकि रामायण (मराठी अनुवाद) पढ़नेको दिया। उसे पूरा करनेके बाद व्यासकृत महाभारतके बड़े बड़े पर्व पढ़नेके लिअे दिये। वे मैंने स्त्रीपर्व तक पढ़ लिये। नौ वर्षकी छोटी उमरमें गम्भीर या गहरे तत्त्वज्ञानकी चर्चा समझमें आवे या न आवे तो भी मुग्ध पढ़ जानेका मैं प्रयत्न करती थी। अतएव उपनिषद् या स्मृति भी मैंने पढ़ डाली थी ऐसा मुझे याद आता है। वे सब पुस्तकें मूल संस्कृतका मराठी अनुवाद थीं। फिर उस अध्यापकने मुझे महाराष्ट्रका अितिहास पढ़ाया। उसमें न थी शिवाजी महाराज और उनके गुरु समर्थ रामदास स्वामी अिन दोनों महापुरुषोंका मन

पर गहरा असर पड़ा। मुझे बताया गया कि हमारा देश आजाद नहीं है गुलाम है। अुस पर अंग्रेजोंका आधिपत्य है। लोकमान्य तिलक महाराज जैसे व्यक्ति अुसे तोड़नेका प्रयत्न कर रहे हैं। फलस्वरूप धर्म और अध्यात्मकी नींव पर वीरता और पराक्रमके संस्कारोंकी अिमारत खड़ी हो गयी! मेरे मनमें अैसा लगने लगा कि हमें भी देशकी आजादीके लिये पराक्रम करना चाहिये और अुसके लिये ध्रुव और रामदास स्वामीकी तरह तपस्या करनी चाहिये।

अैसे समय छुट्टीके दिनोंमें अेक बार अुन अध्यापक (नाम भी मुळे)को अुनके कभी दूसरे साथियोंके साथ बातचीत करते मैंने देखा। मैं तो छुट्टीके समयमें भी अुनके साथ ही अधिकांश समय बिताती थी। वे आपसमें जो बातचीत कर रहे थे वह तो अब याद नहीं है लेकिन जिसके बारेमें चर्चा चल रही थी अुसका नाम याद है। बैरिस्टर गांधी! वे गांधीजीकी तारीफमें कह रहे थे कि जिस आदमीने दक्षिण अफ्रीकामें बड़ी वीरता दिखाकर वहांकी सरकारको हरा कर विजय पायी है और अब जिस देशमें वापस आया है। अेक शिक्षक बोले "देखो तो सही जितने बड़े बैरिस्टर हैं लेकिन कितने सादे हैं? धोती पहनते हैं और पैरोंमें देसी जूते हैं! अेक मराठी मासिक पत्रमें अुनका चित्र छपा था। वह चित्र वे सबको दिखाने लगे। मैंने भी अेक नजर अुस चित्र पर डाली। कुर्सियों पर बैठे हुअे बहुतसे लोगोंकी कतारमें गांधीजीका चित्र देखा। वे काठियावाड़ी पोशाकमें थे।

जिस प्रकार मुझे अुनका प्रथम परिचय हुआ लेकिन बादके २-३ सालोंमें अुनका ज्यादा परिचय प्राप्त करनेका कोअी खास प्रसंग नहीं आया। अंग्रेजी शालामें भरती होनेके बाद अैसा जाननेको मिला कि देशका वातावरण धीरे धीरे गरम होता जा रहा है। सन् १९१९ से देशमें युग प्रवर्तक वातावरण पैदा हुआ और महात्मा गांधीका नाम जनताकी जबान पर चढ़ गया। मैं भी अुनकी पुजारिन बन कर अुनके जीवन विचार और पुरुषार्थके बारेमें अधिक जाननेका प्रयत्न करने लगी।

मेरे घरका वातावरण धार्मिक वृत्तियोंका पोषक था। धार्मिक संस्कार देवपूजा विधि-विधान त्योहार, अुत्सव सभी कुछ होते रहते थे। मेरे पिताजी बड़े भक्त और अध्यात्म तथा धर्मके अभ्यासी थे। सरकारी नौकरीमें और साधारण मध्यम वर्गके होनेके कारण अुनकी प्रवृत्तियों पर मर्यादा लगी हुआी थी लेकिन महात्मा गांधीजीके प्रति अुनका बड़ा आकर्षण था। महात्मा गांधी 'यंग अिंडिया' के सम्पादक हुअे तबसे पिताजी अुसके पाठक बने। वाचनालयसे हर हफ्ते 'यंग अिंडिया' का अंक नियमित रूपसे वे लाते थे स्वयं पढ़ते थे और मुझे भी पढ़नेके लिअे देते थे। तब मैं अंग्रेजीकी चौथी कक्षामें पढ़ती होअूंगी। मुझे अंग्रेजीका कितना ज्ञान कहांसे होता? फिर भी मैं अुसे भक्तिपूर्वक और रस लेकर पढ़ती थी और बादमें अच्छी तरह समझने भी लगी थी। पिताजी या मैं 'यंग अिंडिया' का अेक भी अंक पढ़ना चूके नहीं। गर्मीकी छुट्टियोंमें मैं कभी महीने दो महीनेके लिअे बाहर जाती तो पिताजी अुतने सप्ताहके सारे अंक संभाल कर रख लेते थे और मैं वापस आती तब मुझे पढ़नेके लिअे देते थे। अुस समय राष्ट्रीय साहित्य या महात्माजी संबंधी साहित्य मराठीमें बहुत नहीं था। लेकिन मेरे सौभाग्यसे अंग्रेजी शालामें दो अच्छे शिक्षक आये जिनसे समय समय पर दोनों प्रकारके साहित्यके बारेमें मुझे जानकारी मिलने लगी। मैं अंग्रेजी चौथीमें थी तब श्री ह॰ दे॰ गजेन्द्रगडकर नामके अेक शिक्षकने अेक वर्ष तक पढ़ाया। वे कॉलेजमें तत्त्वज्ञानके विद्यार्थी महाराष्ट्रके प्रसिद्ध तत्त्वज्ञानी प्रो॰ रानडेके विद्यार्थी, स्वामी विवेकानन्दके भक्त और [illegible] मुक्तिके लिअे लगन रखनेवाले व्यक्ति थे। अुनके द्वारा मुझे भारतीय और यूरोपीय तत्त्वज्ञानियोंका परिचय हुआ। चौथी अेक साल बाद वे शाला छोड़ कर चले गये। अुसके बाद भी अुनके साथ बरसों तक मेरा संपर्क बना रहा। आगे चल कर प्रो॰ गजेन्द्रगडकर नासिकके हंसराज प्रागजी ठाकरसी कॉलेजमें पहले प्राध्यापक बने और बादमें आचार्य हुअे।

अुनके जानेके बाद दूसरे साल श्री मालचन्द्ररायजी गुरुजार शिक्षकके रूपमें आये। वे भी अरविन्दबाबूके पुजारी योगके अभ्यासी और महात्मा गांधीके भक्त थे। अहमदाबाद कांग्रेसमें वे शरीक हुये थे खादी पहनने लगे थे और पांडीचेरी जाकर श्री अरविन्दबाबूसे मुलाकात भी कर आये थे। अुनसे मुझे सत्याग्रह आश्रमके बारेमें जाननेको मिला। बार बार वे महात्माजीके बारेमें चर्चा करते थे और यूरोप तथा अमेरिकाके विचारकों और साहित्यिकोंका परिचय भी कराते थे।

अिन दो सज्जनोंके बाद अेक तीसरे महापुरुषने विद्यार्थी-जीवनमें मेरे मन पर गहरा प्रभाव डाला। बंबअीमें ठाकुरद्वारमें चलनेवाले स्टुडेन्ट्स लिटररी अेण्ड सायिन्टिफिक सोसायिटीज गर्ल्स हायीस्कूलमें मैं पढ़ती थी। यह अुस समयका प्रसिद्ध विद्यालय था। न्यायमूर्ति चंदावरकर जैसे बड़े बड़े समाज-सेवक वहां स्त्रीशिक्षाको प्रोत्साहन देनेके लिये अवैतनिक शिक्षकके रूपमें अपनी सेवायें अर्पित करते थे। अुसके सुपरिन्टेन्डेन्ट थे स्व॰ श्री गजानन भास्कर वैद्य। वे अेनी बेसेन्टके शिष्य थियोसॉफिस्ट और स्त्रीशिक्षा तथा समाज-सुधारके बड़े हिमायती थे। हिन्दू धर्म और तत्त्वज्ञानके लिये अुन्हें गर्व था। अुन्होंने धर्म-प्रचारके लिये हिन्दू मिशनरी सोसायिटीकी स्थापना की थी। विद्यालयमें रोज सुबह-शाम प्रार्थना होती थी सुबहकी प्रार्थनामें गीताजीके श्लोक पढ़े जाते थे और हर रविवारको सुबह श्री वैद्य स्वयं प्रवचन करते थे। अुनकी प्रभावशाली वाणी और विचारोंने मेरे मन पर गहरा असर डाला। हमें वे अुपदेश देते थे कि तुम सब ब्रह्मचारिणी बन जाओ शंकराचार्य बन जाओ। सारी दुनियामें घूम कर हमारे धर्म और गीताजीका प्रचार करो। अिस अुपदेशसे मुझे सदा प्रेरणा मिलती थी।

मैंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द भगवान बुद्ध और दूसरे अनेक महात्माओंका साहित्यिक परिचय प्राप्त कर लिया। मुझे पढ़ना अच्छा लगता था। लेकिन समय बीतनेके साथ कल्पित साहित्यमें मेरी रुचि नहीं रही परन्तु धर्म अध्यात्म अितिहास राजनीति समाजशास्त्र

मानसशास्त्र अर्थशास्त्र जिन सब विषयोंके प्रति मेरी अभिरुचि बढ़ती गयी। और मराठी या अंग्रेजी भाषामें अुपरोक्त विषयों पर जो भी पुस्तकें मेरे हाथमें आती अुन्हें मैं पढ़ती गयी। महाराष्ट्रका सन्त साहित्य मुझे बहुत प्रिय लगता था। संत-महिलायें ब्रह्मचारिणी मुक्ताबाओी और जनाबाओीके प्रति मेरा बड़ा आकर्षण था। राजस्थानकी संत-महिला मीराबाओीका चरित्र मैंने पढ़ा और मनमें यह आकांक्षा जागी कि मैं भी मीराबाओीकी तरह भगवानको पति मान कर पवित्र जीवन बिताअूं तो कैसा हो!

पिताजीके साथ मैं कीर्तन-प्रवचन सुनने भी नियमपूर्वक जाती थी। हाओीस्कूलमें भी तभी योगमार्गकी ओर मेरा विशेष आकर्षण हुआ था लेकिन परिस्थिति अनुकूल न होनेकी वजहसे अुस क्षेत्रमें मैं प्रयोग न कर सकी।

जिस प्रकार मैं विविध संस्कार ग्रहण कर ही रही थी कि पंजाबमें अत्याचार हुअे और फिर असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ। मुझे अुसमें बड़ा रस आता था। जिस प्रसंगके बाद कभी कभी अखबार पढ़नेको मिलते थे। मेरे पिताजीकी जिजाजत लेकर १९२१ से मैं खादी पहनने शुरू की। पिताजीने स्वयं भी कुछ समय तक खादी पहनी। वे मेरे लिअे अेक चरखा भी ले आये और मैं कातने लगी। 'यंग अिंडिया' में महात्माजी जो विचार प्रकट करते थे अुन पर अपने जीवनमें अमल करनेका प्रयत्न मैं करने लगी। १९२२ में महात्माजी गिरफ्तार हुअे तब अदालतमें अुन्होंने जो बयान दिया अुसे मैं पढ़ गयी। अुससे मुझे नया जीवन मिला। अुन्हें ६ वर्षकी सजा मिलनेके समाचार पढ़कर मैं रो पड़ी। मनमें धुन सवार हुओी कि किसी दिन अुनके सत्याग्रह आश्रममें जाकर तालीम लूंगी। लेकिन अब ६ सालमें क्या होगा आश्रम टिकेगा भी या नहीं असा डर मनमें पैदा हो गया।

पूज्य महात्माजी जेलमें गये तो भी देश अुन्हें भूला नहीं। सभायें होती थीं जुलूस निकलते थे। मैं भी अुनमें भाग लेने जाती थी।

लेकिन पिताजी अुस युवा लड़कीको अकेले नहीं जाने देते थे। जिसलिये मैं अपनी बड़ी बुआ सौ० श्री राधाबाजी मजूमदारसे आग्रह करके अुनके साथ जाती थी। बुआ राष्ट्रीय वृत्तिवाली थीं। कुछ समय तक अुन्होंने स्वयं और अुनके कुटुम्बियोंने खादीका ही प्रयोग किया और चरखा चलाकर अपने और मेरे सूतका कपड़ा बुनवाया जिसके कपड़े बनवाकर अुनके दो लड़कोंको यज्ञोपवीत संस्कारके समय पहनाये गये थे। बम्बजीके मारवाड़ी हाजीस्कूलके सभा-भवनमें हर महीनेकी १८ तारीखको (पूज्य महात्माजीको १८ मार्चके दिन ६ वर्षकी सजा हुजी थी) भगिनी-समाजकी ओरसे बहनोंकी सभा होती थी। अुसमें मैं और बुआ बार बार शरीक होती थीं। वहीं मुझे अभी भाजियों श्री सरोजिनीदेवी नायडू, श्री कृ० प्र० खाडिलकर वगैरा नेताओंके भाषण सुननेका मौका मिला।

पूज्य महात्माजीको मैंने देखा नहीं था। सन् १९२४ में वे जेलसे रिहा हुओे। अुस अवसर पर बम्बजीकी म्युनिसिपैलिटीने अुन्हें मानपत्र दिया। तब मैं विल्सन कॉलेजमें पढ़ती थी। कावसजी जहांगीर हॉलमें यह अुत्सव हुआ अुस समय मैं भी सहेलियोंके साथ वहां गजी थी। महात्माजीके हॉलमें प्रवेश करनेसे लेकर विदा होने तक मेरी नजर अुन पर टिकी रही। मैं अेकटक अुन्हींको देखती रही। वे स्वयं अपना भाषण लिखकर लाये थे। वही भाषण अुन्होंने सभामें पढ़ा। अंग्रेजी और गुजराती दोनों भाषाओंमें वे बोले। वह भाषण तो मैं भूल गयी हूं लेकिन अेक वाक्य अब तक मेरे मानस-पटल पर अंकित है। वह यह है Politics without religion is dangerous! धर्मके अभावमें राजनीति खतरनाक चीज हो जाती है। अुनके शब्द आज भी मेरे कानोंमें गूंजते हैं और अुनके मुखका भाव आज भी मेरी आंखोंके सामने स्पष्ट हो अुठता है।

दूसरे दिन भगिनी-समाजकी ओरसे मारवाड़ी विद्यालयके सभा-भवनमें पूज्य महात्माजीका स्वागत हुआ। मैं भी अुसमें हाजिर थी। वहां महात्माजीको नजदीकसे देखनेका मौका मिला। अुनका गुजराती भाषण

मैंने अेकाग्रतासे सुना। सभा विसर्जित होने पर अुन्हें थैली अर्पण की गयी और झुककर पैरोंकी भेंट भी अुन्हें दी गयी। मन्त्रमुग्धकी तरह मैं भी अुनके पास गयी। वे व्यासपीठ पर सुखसे पलथी मार कर बैठे थे। मेरे पास पैसे कहाँसे होते! लेकिन अेक आना था। वही मेरे लिये लाख रुपयेके बराबर था। जिसकी मैं मन ही मन पूजा करती थी अुन्हें अपना सारा मन (!) अर्पित करनेकी अुत्कट अिच्छाके साथ मैं अुनके सामने जाकर खड़ी हुअी और अपना अेक आना मैंने अुनके आगे रखा। अुनके चरण-स्पर्श करनेकी अिच्छा थी लेकिन पैर तो पलथीमें दब हुअे थे। फिर भी किसी प्रकारका संकोच मनमें रखे बिना मैंने अपनी अुंगलीसे अुनके घुटनेको छुआ और प्रणाम किया। अुन्होंने चौंककर मेरी ओर देखा मुझे प्रणाम किया और दूसरी ओर देखने लगे। अुन्हें क्या मालूम कि अुनका स्पर्श करके मेरा हृदय अपूर्व गौरवसे खिल अुठा था! अुस पवित्र और पावन स्पर्शसे मेरे सारे शरीरमें बिजली-सी दौड़ गयी और आनन्दमें मस्त होकर मैं घर गयी।

फिर तो धीरे धीरे राजनीतिक काम शुरू हुअे। मुझे कॉलेजकी शिक्षा पूरी करनी थी। मेरी अुम्र बढ़ती गयी और मैं युवती बन गयी जिसलिअे लोग पिताजीको मेरा विवाह कर देनेके लिअे कहने लगे। मेरी मा मुझे दस महीनेकी छोड़ कर मर गयी थी। लगभग १ सालकी अुम्र तक मैं अपने ननिहालमें पली और फिर पिताजीके पास रहने आयी थी। पिताजीकी दो शादियां और हुअी थीं। मेरे पांच भाअी हुअे लेकिन बहन अेक भी नहीं है! बुआ और मामा मेरे विवाहके लिअे अुत्सुक थे लेकिन पिताजीका विचार कुछ और ही था। वे स्वयं अिंटर तक पढ़कर रह गये थे जिसलिअे वे सोचते थे कि लड़की बी॰ अे॰ हो जाय तो अच्छा। फिर मेरे आचार-विचार या अभिरुचियोंमें अुन्हें अैसा कुछ दिखायी नहीं देता था जो पराधीन बाधक हो। और, मुझे छात्र वृत्तियां और अिनाम मिला करते थे जिसलिअे भी अुन्होंने मुझे आखिर

तक पढ़ने दिया। लेकिन अुनके मनमें अैसी कोअी कल्पना नहीं थी कि मैं आजन्म ब्रह्मचारिणी रहूं।

पिताजीकी मदद और आशीर्वाद तथा मेरे प्रयत्न दोनोंके फलस्वरूप बी॰ अे॰ का समय पूरा हुआ। दुर्भाग्यसे अुसी अरसेमें अैसी घटनाअें घटीं जिनसे पारिवारिक वातावरण दूषित हो गया। अुनके कारण मेरी अनिच्छा होते हुअे भी मुझे अपने पिताजीके कोपका शिकार होना पड़ा। अुनके और मेरे बीच मतभेद हो गया और अुन्होंने आज्ञा दी "मेरी बात न मानो तो मेरे घरमें मत रहो। अुस आज्ञाको शिरोधार्य करके मैं थोड़े दिनके लिअे अपनी मौसीके यहां चली गयी। बादमें चाल्का गांधी रोड पर बने हुअे वैलीज होस्टलमें भरती हुअी। वहां दो वर्ष तक रही। अुस बीच ट्यूशन करके मैं पैसे कमाती थी और अेम॰ अे॰ की पढ़ाअी करती थी।

अिस होस्टलकी संचालिका श्री कृष्णाबाअी अुर्फ तायी ठुकसकर थीं। वे छह साल अमेरिकामें रह कर अेम॰ अे॰ करके अपने देशको वापस लौटी थीं। अूंची नौकरी छोड़कर अुन्होंने असहयोग आन्दोलनमें भाग लिया था। अुस समय वे लोकमान्य राष्ट्रीय कन्या पाठशालाका संचालन कर रही थीं। कांग्रेसकी कार्यकर्त्री बहनोंसे अुनका अच्छा परिचय था और पूज्य महात्माजीके साथ भी अुनकी अच्छी पहचान थी। वे 'यंग अिंडिया' की ग्राहक थीं। अिसलिअे होस्टलमें अुनके सहवासमें मुझे अनेक प्रकारसे लाभ हुआ।

सन् १९२८-२९ में राजनीतिक घटनाअें तेजीसे घटने लगीं। साअिमन कमीशनके खिलाफ प्रदर्शन करनेमें बम्बअीके कॉलेजोंके विद्यार्थियोंके साथ मैंने भी भाग लिया था। फिर युवक-आन्दोलन, अकाल-पीड़ितोंको राहत पहुंचानेके लिअे चन्दा और अनाज अिकट्ठा करना, खादी बेचना, बारडोलीके करबन्दी आन्दोलनके सिलसिलेमें प्रचार वगैरा प्रवृत्तियोंमें मैं तन-मनसे पूरी तरह डूब गयी थी।

जैसे जैसे मैं सार्वजनिक सेवाके जीवनमें ओतप्रोत होने लगी वैसे वैसे भविष्यके बारेमें मनमें विचार अुठने लगे। अभी साल पहले सत्याग्रह

आश्रमके बारेमें सुना था तमीस पढ़ाओी पूरी करनेके बाद वहीं जाकर रहनेका मैंने सोचा था। लेकिन यह रहस्य मैंने अपने मनमें ही रखा था। पिताजी भुआ सगे-सम्बन्धियों या सहेलियोंमें से किसीको भी नहीं बताया था। प्रियजन संबंधी और सहेलियां मेरे भविष्यके बारेमें सोचनेकी मुझे सलाह देते थे। अेक अंग्रेजी हाओीस्कूलके प्रिंसिपालकी जगह मिलनेका मौका आया और मुझे स्वीकार करनेकी मुझे सलाह दी गयी। लेकिन मैंने अिनकार कर दिया। विवाह करनेका तो अिरादा था ही नहीं। लेकिन मनमें दो आकर्षण थे १ समर्थ रामदास स्वामी और स्वामी विवेकानन्दकी तरह पहले तपस्या ओीश्वरकी प्राप्ति और फिर सार्वजनिक सेवा करना २ देशकी आजादीके लिओे सीधे राजनीतिके क्षेत्रमें कूद पड़ना। लेकिन तपस्याके बिना राजनीति व्यर्थसी मालूम पड़ती थी।

स्वामी रामदासके जीवन-प्रसंग याद आये। १२ वर्षकी अुम्र तक वे पढ़े। अुसी साल विवाहके समय ब्राह्मणोंके सावधान मंत्र बोलते ही वहांसे भाग कर सीधे नासिक पहुंचे और वहां अेकान्तमें १२ वर्ष तक अध्ययन और तपस्या की। भगवान रामचन्द्र प्रसन्न होकर अुनके सामने प्रगट हुओ और अनुग्रहपूर्वक आज्ञा दी अब तुम जगतके अुद्धारका काम करो। लेकिन स्वामी रामदासने कहा मुझे अभी पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करनी है। भगवानकी आज्ञा मिलने पर फिर १२ वर्ष तक अुन्होंने देशमें हिमालयसे रामेश्वर तक पदयात्रा की सारे देशकी परिस्थिति देखी और सेवा करनेकी योजना मनमें तैयार की। अुसके बाद भगवानने फिर आज्ञा दी अब काम शुरू करो। अिस आज्ञाको मानकर समर्थ रामदास स्वामी कृष्णाके किनारे पर जम गये और अनेक योग्य शिष्योंका अेक प्रभावशाली संगठन खड़ा किया। जगह जगह मठोंकी स्थापना करके वहां कुशल शिष्योंको नियुक्त किया और श्री शिवाजी महाराजका स्वराज्य स्थापनाका काम शुरू हुआ। अिसमें अनुकूल वातावरण पैदा किया। कारण तो गुरु-शिष्यकी जोड़ीका काम खूब

तैजीसे चला। अुसका प्रभाव समग्र दो सौ साल तक सारे देशमें फैला हुआ रहा।

मुझे लगता था कि प्रभावशाली सेवाकार्यके लिये योग्यता प्राप्त करनी चाहिये और यह योग्यता तपस्यासे ही मिल सकती है। समर्थ रामदास स्वामीके कितने ही वचन मुझे कंठस्थ थे जो मेरे मनमें हमेशा घूमा करते थे

> सामर्थ्य आहे चळवळीचें। जो जो करील तयाचें।
> परन्तु तेथें भगवंताचें। अधिष्ठान पाहिजे॥

आन्दोलन और आन्दोलनके नेता दोनोंमें शक्ति तो होती है, लेकिन सच्ची स्थायी शक्ति प्राप्त करनी हो तो वहां भगवानका अधिष्ठान होना चाहिये।

और,

> अखण्ड राहे समुदाय। जितर जनांस अुपजे भाव।
> ऐसा आहे अभिप्राय। अुपायाचा॥
> मुख्य हरिकथा-निरूपण। दुसरें तें राजकारण।
> तिसरें तें सावधपण। सर्व विषयी॥
> चौथा अत्यन्त साक्षेप। फेडावे नाना आक्षेप।
> अन्याय थोर अथवा अल्प। क्षमा करीत जावे॥

अुपाय का अर्थ है वह कार्य जिसे करनेसे अनुयायी लोग नेताके प्रति अखण्ड श्रद्धा रखें और अन्य लोगोंके मनमें भी श्रद्धा और विश्वास अुत्पन्न हों। (अुसके लिये चार जरूरी बातें बताते हैं) मुख्य वस्तु हरिकथा-निरूपण (अर्थात् भगवानका अधिष्ठान) दूसरी राजनीति तीसरी हर बातमें सावधानी रखना और चौथी साक्षेप यानी जी-जानसे कोशिश करना। (दूसरोंकी) अनेक प्रकारकी शंकाओंका समाधान करनेकी कला नेतामें होनी चाहिये। छोटे-बड़े अन्यायोंके लिये क्षमा करते जितना अुदार हृदय अुसे रखना चाहिये।

ऐसे नेताको ही (साथियोंका) समुदाय मिलता है।

अैसे आदर्श नेताके पास जाकर तालीम लेनेकी मेरी अिच्छा थी। बंबबीके राजनीतिक क्षेत्रमें सेवाकार्य करनेकी मेरे लिये चाहिये अुतनी गुंजाअिश थी। बम्बभी राज्य (अुस समय प्रान्त) और बंबबी शहरकी युवक-परिषद समितिकी मैं सदस्या चुनी गयी थी। श्री नरीमान हमारे अध्यक्ष थे। श्री बालासाहब खेर अुपाध्यक्ष थे तथा श्री मेहरअली श्री बाटलीवाला वगैरा युवक सहयोगी कार्यकर्ता थे। सबमें भरपूर अुत्साह था। फिर साम्यवादी युवक कार्यकर्ताओंसे भी मेरा परिचय हुआ। श्री डांगे श्री निमकर श्री शौकत अुस्मानी श्री स्प्रैट वगैरासे पहचान हुयी। मैं मराठी और अंग्रेजीमें भाषण देती थी। आन्दोलनमें स्त्रियोंकी बहुत कमी होनेके कारण जो गिनी-चुनी बहनें अुसमें शामिल होती थीं अुनका मूल्य बहुत आंका जाता था। लेकिन मुझे सस्ती लोकप्रियता नहीं चाहिये थी। मैंने देखा कि युवक-युवतियोंमें अुत्साह तो बहुत है लेकिन संयम नहीं है चिन्तनशीलता नहीं है। तालीमके महत्त्व और आवश्यकताको कोअी स्वीकार नहीं करते। कॉलेज पर धरना देने जाते तब ज्यादातर कार्यकर्ता अिस बातकी अपेक्षा रखते कि समय समय पर चाय-सिगरेट वगैरा अुन्हें मिलती रहे। अेक भी सभा खाने-पीनेके आखिरी कार्यक्रमके बिना पूरी नहीं होती थी। देशको कंगाल बनानेके लिये अंग्रेज सरकारको गाली देनेवाले लोग खुद जनताके पैसोंको खाने-पीने और मौज-शौक करनेमें अुड़ाना चाहें यह मुझे अनुचित मालूम होता था। अैसे कार्यक्रमोंमें मैं शामिल नहीं होती थी।

बंबबी म्युनिसिपैलिटीके चुनावके समय कभी बहनें कांग्रेस समर्थनसे चुनावके लिअ खड़ी हुयी थीं। श्री अवन्तिकाबाबी गोखले[1] के लिये

---

१ अवन्तिकाबाबी यह महाराष्ट्री महिला बरसों तक कांग्रेसकी कार्यकर्ती थीं। पूज्य महात्माजीकी आत्मकथा में भी अुनका नाम आता है। मराठीमें पूज्य महात्माजीका चरित्र सबसे पहले अुन्होंने लिखकर छपवाया था। अुस पुस्तककी प्रस्तावना लोकमान्य तिलकने लिखी थी। भारत महिला समाजकी स्थापना भी अवन्तिकाबाबीने की और जीवनपर्यन्त

प्रचार करनेका काम मुझे सौंपा गया था। सुबहसे दोपहर तक मैंने काम किया। दोपहरकी छुट्टीमें भी अवन्तिकाबाई मुझे और दूसरी स्वयं सेविकाओंको खानेके लिये बुलाने आयीं। उस समय मुझे मालूम हुआ कि अपने खर्च पर प्रचारकों और सहायकोंको खिलाना-पिलाना मुम्बी-वालोंका फर्ज माना जाता है। लेकिन मुझे यह पसन्द नहीं आया। अपना घर हो आने-पीनेकी सुविधा हो तो फिर सेवाका बदला क्यों लिया जाय? मैं तो होस्टलमें जाकर खा आयी। मेरा आदर्श निरपेक्ष सेवाका आदर्श था।

मुझे लगा कि जिन युवक-युवतियोंको योग्य तालीम न मिली तो उनमें से अधिकांश आन्दोलनमें टिकेंगे नहीं और जो टिकेंगे उन्हें नैतिक बल नहीं मिलेगा। कमसे कम मैं तो तालीम लिये बिना नहीं रहूँगी। सैनिक बननेके लिये कवायद और दूसरे अनेक संस्कार ग्रहण करने पड़ते हैं। तब क्या सत्याग्रहीके लिये योग्य तालीम जरूरी नहीं है?

कुछ लोग यह मानते थे कि सेवा करते करते तालीम मिल जाती है। यह मत मुझे स्वीकार नहीं था। गुरु बिना तालीम कैसी? भारतकी आजादीके लिये सत्याग्रहकी पद्धतिसे ही आन्दोलन करना हो तो सत्या-ग्रह आन्दोलनके नेता ही योग्य गुरु हो सकते थे।

मुझे भीतरसे अधिष्ठानका महत्त्व समझमें आता था लेकिन मुझके लिये भी अरविन्दबाबू जैसे योगी और सत्यकामीके प्रति मुझे आकर्षण नहीं हुआ। वे एकान्तमें रहते थे लोगोंमें घुलते-मिलते नहीं थे। युवावस्थामें पराक्रमका आकर्षण मुख्य रहता है। श्री अरविन्दबाबूके व्यक्तित्वका वह पहलू उस वक्त जनताकी दृष्टिसे ओझल था।

उसका संचालन किया। सत्याग्रहके सिलसिलेमें उन्होंने जेल भी भोगी थी। युवावस्थामें उन्होंने जेल साल विलायतमें बिताया था। काफी अरसे तक बम्बईकी साप्ताहिक 'हिन्द महिला' की सम्पादिका थीं। जहाँ तक मुझे याद आता है वे तीन साल तक बम्बई म्युनिसिपैलिटीकी सदस्या रहीं।

समर्थ रामदास स्वामीने दासबोध में लिखा है

शिष्यास न करिती साधन। न करविती इंद्रिय-दमन।
ऐसे गुरु आडक्याचे तीन। मिळाले तरी टाकावे॥

जो अपने शिष्योंसे साधना नहीं कराते जो अुनसे अिंद्रिय-दमन नहीं कराते अैसे गुरु टकेके तीन मिलें तो भी अुनका त्याग करना चाहिये।

अैसे निकम्मे गुरुओंके लिअे अुनके मनमें तिरस्कार था। समर्थ रामदास स्वामीके अिस आदर्शसे मिलते-जुलते अेक ही गुरु मेरी आंखके सामने थे और वे थे पूज्य महात्मा गांधी।

बारडोलीका आन्दोलन चल रहा था अुस समय विचित्र रीतिसे बारडोली जानेका मुझे मौका मिला। श्री ठाकी गुलामकरके छात्रावासमें श्री कमलाबाओी लाभिलन नामकी अेक औसाओी बहन थी। अुनके साथ मेरी मित्रता हुआी। वे बहन बबओीकी सेवासदन संस्थामें शिक्षिका थीं। राष्ट्रीय वृत्तिकी थी। अुनके मारफत अेक गुजराती परिवारमें मुझे इयूशन मिली थी। अिस कुटुम्बमें श्री मणिबहन कापड़िया नामकी अेक प्रौढ़ प्रेमल बहन थीं। (कुछ साल बाद अिसी परिवारके मकानके अूपरके हिस्सेमें श्री किशोरलालभाअीने गुरु श्री नाथजी रहने लगे।) अिन मणिबहनके साथ बारडोली जानेका मुझे मौका मिला। श्री कमलाबहन लाभिलन भी साथ थी। बारडोलीमें सरदार पटलसे मुलाकात हुअी बातचीत हुअी। फिर मेरे आग्रहके वश होकर मणिबहन और कमलाबहन अहमदाबाद-साबरमती तक मेरे साथ आओीं।

हम साबरमती सुबह पहुंचे। रिमझिम रिमझिम पानी बरस रहा था। बापूके मनमें स्वभावसे तरह वस हुअे आश्रमके अब प्रायश दर्शन होंगेवाले थे। और मेरे जीवनके आदर्श पुरुषसे भेंट भी होनेवाली थी। अुनके साथ बातचीत करनेका मौका मिलनेवाला था अिसलिअे हृदय हर्षसे अुछल रहा था। आश्रममें श्री गंगाबहन झवेरी नामकी अेक महिला थी जिनसे मणिबहनका अच्छा प्रेम-भाव था। गंगाबहनसे मिलकर हमने प्रातःकर्म पूरे किये। मालूम हुआ कि बापूजी सुबहसे मौनमें गये हैं।

मैं दर्शन करनेको बहुत भुतावली हो रही थी। मैंने पूछा "हम भुनके पीछे ही क्यों न चलें? भुन सज्जन बहनोंने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और हमारा छोटासा जुलूस चला। हम थोड़ी ही दूर गये होंगे कि सामनेसे पूज्य महात्माजी लौटते हुये दिखाई दिये। भुन्होंने काला कम्बल ओढ़ रखा था। भुनके साथ अेक बहन भुली छतरी लेकर चल रही थी। गंगाबहनने कहा यह बहन जयप्रकाशबाबूकी पत्नी प्रभावतीदेवी हैं। भुनके कंधे पर हाथ रखकर महात्माजी चल रहे थे। मैं अधीर और बावली हो गयी। साथकी बहनोंको छोड़कर आगे दौड़ गयी। लेकिन थोड़ासा अन्तर रह गया तब कुछ खयाल हुआ और सकोचसे खड़ी रह गयी। सामनेसे महात्माजी मंदहास्य करते आ रहे थे और पीछे बहनें हंस रही थीं। कैसे रुक गयीं? आगे दौड़ो। शायद गंगाबहनने यह कहा होगा। पूज्य महात्माजी पास आये तब मैंने दौड़कर भुनके चरण-कमलों पर सिर रखा। भुस सुखद स्पर्शसे कृतज्ञताका अनुभव हुआ। फिर खड़े होकर मैंने हाथ जोड़े और आंसुओंसे भीगी आंखें भुनके मुख-मंडल पर टिका कर मनमें कहा अब क्या चाहिये। —आज मैंने ब्रह्मका साक्षात्कार किया —यही भुनके साथ अद्वैत भावका अनुभव किया।

बहनें पास आयीं। गंगाबहन हंसते हंसते कुछ किस तरह बोलीं "कैसी पागल लड़की है! पूज्य महात्माजीने मुझसे हालचाल पूछे। मैंने बारडोलीके और सरदारके कुशल-समाचार सुनाये। हम अंग्रेजीमें बातचीत कर रहे थे। आश्रम पहुंचनेसे पहले मैंने भुनसे विशेष बातचीत करनेके लिअे समय मांग लिया। महात्माजीने कहा शामको घूमने जाते समय मुझसे मिलना। महात्माजीके साथ बात करनेका पहली बार सौभाग्य मिला जिससे प्रसन्न होती हुयी मैं बहनोंके साथ निवास पर गयी।

दोपहर तक मैंने सारा आश्रम देख लिया। वहांके जीवनके बारेमें भी गंगाबहनसे बात किया। फिर दोपहरको हम गुजरात विद्यापीठ देखने गयी। आचार्य कालेलकरसे मेरी पहली भेंट अुसी समय हुयी। मैंने भुनके

बारेमें सुन तो रखा था लेकिन अुनके दर्शन करनेका अवसर नहीं आया था। काकासाहब जैसे विद्वान पुरुषके साथ बातचीत करनेमें मुझे संकोच हुआ लेकिन काकासाहब तो जैसे बोलते थे मानो किसी समान वयवाले मित्रके साथ बात करते हों। बातचीत मराठीमें शुरू हुअी जिसलिअे मेरा संकोच दूर हो गया और साबरमती आनेका अपना हेतु मैंने अुन्हें बता दिया। तालीम लेनेके लिअे आश्रममें भरती होनेकी मेरी विच्छाका अुन्होंने स्वागत किया। फिर हम संस्थाको देखकर आश्रममें वापस आयी।

शामकी सैरके समय पूज्य महात्माजीसे मिलनेके लिअे हम निकलीं तो देखा कि लोगोंका अेक खासा अच्छा दल अुनके चारों ओर बिखरा हो गया था। अुसमें कुछ लड़कियां भी थीं। मैं परेशानीमें पड़ी कि अिस हालतमें बातचीत कैसे हो सकेगी। अेकके बाद अेक व्यक्ति अपनी बारी पूरी करके वापस लौट रहा था। कुछ समय बाद मेरी बारी आयी। बहुत संकोचके साथ संक्षेपमें मैंने अपने जीवनका परिचय देकर महात्माजीको अपना ध्येय बताया और आश्रममें प्रवेश करनेकी जिजाजत मांगी।

लेकिन पूज्य महात्माजीने मुझे प्रोत्साहन नहीं दिया। तटस्थ भावसे अुत्तर दिया।

वे कहने लगे यहां शरीर-श्रम करना पड़ता है। सफाअी करना रसोअी बनाना पीसना कातना आदि काम करने पड़ते है।

मैंने कहा मुझे मालूम है। मुझे शरीर-श्रमकी आदत है। मैं अपने घरमें भी ये सब काम करती थी।

सुबह चार बजे अुठना पड़ता है।

अुसमें कोअी दिक्कत नहीं आयगी।

"पाखाना-सफाअी करनी पड़ती है।

मैंने कहा मुझे मालूम है। यहांके पाखाने मैंने देख लिये हैं। मुझे घृणा नहीं आयेगी।

फिर भी महात्माजी ज्यादा मुसीबतें बताते ही गये। मैं भी हर परिस्थितिमें संतोषपूर्वक रहनेकी अपनी तैयारी बताती ही गयी।

अन्तमें अुन्होंने पूछा "तुम अवन्तिकाबाओी गोखलेको जानती हो ?"

"जी हाँ।"

"अुनसे मिलकर आश्रम-जीवनके बारेमें पूछ लेना।"

मैंने कहा "आप कहते हैं तो पूछ लूँगी लेकिन मुझे अुसकी जरूरत मालूम नहीं होती। मैंने तो सत्याग्रहकी तालीम पानेके लिअे अिस आश्रममें भरती होनेका निश्चय कर लिया है।"

मेरी दृढ़ताको देखकर अुनकी कड़ी आवाज कुछ नरम पड़ी। कहने लगे "आश्रममें प्रवेश मिलनेमें तुम्हें कठिनाओी नहीं होगी लेकिन पूरी तरह विचार करनेके बाद कदम अुठाना ठीक होगा।"

अिस आश्वासनसे मुझे कुछ राहत मिली। मैंने कहा "मैं तो जल्दीसे जल्दी आना चाहती हूँ लेकिन मेरी अैसी अिच्छा है कि मैं यहाँ आअूँ अुस समय आप भी यहाँ रहें। परन्तु मैंने सुना है कि आन्तर-राष्ट्रीय धर्म-परिषदके अधिवेशनमें भाग लेनेके लिअे आप थोड़े ही दिनोंमें यूरोप जानेवाले हैं।"

"अुसका विचार जरूर चल रहा है।"

"आप यूरोप जायें तो वापस आनेमें कुछ महीने तो जरूर लगेंगे ?" (अुस समय यात्रा जहाजसे होती थी। आजकी तरह हवाओी जहाजका प्रचार नहीं हुआ था।)

"अैसा जरूर हो सकता है। लेकिन मैं यहाँ न होअूँ तो भी क्या ? और लोग तो यहाँ रहेंगे ही। तुम आकर रह सकती हो।"

"नहीं यह नहीं हो सकता। मैं तो आपके आनेके बाद ही यहाँ आअूँगी। थोड़े महीने बाद मेरी परीक्षा है। परीक्षा देकर मैं आ जाअूँगी।"

"जैसी तुम्हारी अिच्छा। तुम जब भी आओगी आश्रमके द्वार तुम्हारे लिअे खुले ही होंगे। (Whenever you come, the doors of the Ashram will be open to you.)

अिसके बाद बारडोलीके आन्दोलनके बारेमें कुछ प्रश्नोत्तर हुअे और हम अलग हुअे।

मैं शामकी प्रार्थनामें हाजिर थी। श्री पंडितजीको भी पहली ही बार मैंने देखा। मुझे प्रार्थना तो अच्छी लगी लेकिन मुझ पर अैसी छाप पड़ी कि भजन और धुन गाते समय पंडितजी तल्लीन नहीं हो पाये।

रातको बम्बअी वापस लौटी। अेक दिनमें तीन महापुरुषोंके दर्शन हुझे अुसके आनन्दमें मन मग्न हो रहा था।

*

मैं आश्रममें आकर रहने लगी अुसके बहुत समय बाद पूज्य महात्माजी समय समय पर प्रार्थनाके बक्त व्यक्तिगत बातचीतमें या पत्रोंमें मेरी तारीफ करने लगे। फिर अेक दिन बातचीतमें मैंने अुन्हें ताना मारा "महात्माजी यहांकी ज्यादातर बहनें कहा करती हैं कि हमें बापूजी यहां बुला लाये। कोअी अपने पतिके साथ कोअी माताके साथ कोअी पिताके साथ यहां आअी। लेकिन केवल मैं ही अैसी हूं जो स्वयं ही कलेक बच्चेकी तरह आपके पीछे दौड़ी चली आअी हूं। लेकिन आपने कैसा व्यवहार किया? पहली ही भेंटमें मेरे प्रति अविश्वास दिखाया और मुझे आश्रम-जीवनकी मुसीबतें ही बताने लगे। मेरे अुत्साह पर ठंडा पानी डालने लगे। लेकिन अब तो विश्वास हुआ न?

पूज्य महात्माजीने हंसते-हंसते कहा "तेरी बात सच्ची है। मुझे पहले तो विश्वास ही नहीं हुआ। मुझे लगा कि यह पढ़ी-लिखी बंबअीकी लड़की है। अंग्रेजी बघारती है आश्रममें आनेकी बात करती है लेकिन आयेगी नहीं आयेगी भी तो जिसे आश्रम-जीवन अच्छा नहीं लगेगा यह आश्रममें टिकेगी नहीं। लेकिन तू सच्ची निकली। मैं अपनी हार स्वीकार करता हूं!"

*

बम्बअी आनेके बाद अध्ययन अध्यापन और रोजका कार्यक्रम शुरू हुआ। सार्वजनिक सेवाका काम तो मौका आने पर चलता ही था। बंबअीसे करीब ४-५ मील दूर समुद्रके किनारे मामवले नामका अेक गांव है। वहां मेरी अेक सहेली कु० कृष्णाकुमारी बुलचन्दर (छोटेमें 'किसन')

के रिश्ताका मकान और खेतीवाड़ी है। जिनके साथ मैं दो तीन बार वहां गअी थी। अुस गांवमें वैदय-विद्यालय नामक राष्ट्रीय शिक्षाकी अेक संस्था थी। संस्थामें चरखे चलते थे और सारे शिक्षक तथा विद्यार्थी खादी ही पहनते थे। खास प्रसंग पर राष्ट्रीय नेता वहां आ जाते थे। पूज्य महात्माजी भी वहां अेक बार आ चुके थे। वहीं श्री गंगाधरराव देशपांडे श्री जमनालालजी बजाज श्री किशोरलाल मशरूवाला वगैरासे मेरा परिचय हुआ था और अुनके साथ बातचीत करनेका सौभाग्य भी मिला था। सार्वजनिक जीवनमें शुद्ध आचरणवाले सज्जनों तथा सुधार-हृदय व्यक्तियोंसे जैसे जैसे मेरा परिचय होता गया वैसे वैसे अुसमें मेरा रस भी बढ़ता गया। वैदय-विद्यालयके संचालक श्री हलप और अन्य कार्यकर्ता स्व श्री नाना काणे और श्री शास्त्रीजी वगैरासे भी परिचय हुआ। बादमें मैं महाराष्ट्रमें सेवा करने लगी तब यह परिचय और भी दृढ़ होता गया।

अप्रैल १९२९ में परीक्षा देनी थी। अुससे दो महीने पहिले मैंने पूज्य महात्माजीको पत्र लिखनेका सोचा। वे यूरोप नहीं गये। लेकिन बार डोली आन्दोलनके बाद भावी आन्दोलनके चिह्न दिखाअी देने लगे थे। अुनके पास जल्दी पहुंचनेके लिये मेरा दिल भी अुत्सुक रहा था। श्री शास्त्रीने महात्माजीका पत्र लिखकर याद दिलानेकी मुझे सलाह दी। मुझे यह सलाह ठीक लगी और मैंने पूज्य महात्माजीको पहला पत्र लिखा। अत्यन्त भक्तिभावसे रंगीन कागज पर सुन्दर अक्षर बनाकर पत्र लिखा। अुसमें अपनी मुलाकातका वर्णन किया अुनके आश्वासनका स्मरण कराया और लिखा "अप्रैलमें परीक्षा पूरी होने पर वहां आनेका मेरा विचार है। लेकिन आप वहां लंबे अरसे तक रहेंगे अैसी आशा तो रखती ही हूं।"

जिस दिन बोगाहूलको अुनके अुत्तरका कार्ड (अुनका भी पहला पत्र) मुझे मिला अुस दिन मेरे आनंदका पार न रहा। अुसे बार बार पढ़कर दौड़ती हुअी मैं शास्त्रीके पास गअी और बोली "शास्त्री शास्त्री देखिये तो सही! महात्माजीके हाथका लिखा हुआ अुत्तर मुझे मिला है।"

यह कहकर वह कार्ड मैंने अुन्हें दिया। देनेसे पहले हर्षोन्मादमें मैंने अुसको (पत्रको) चूम लिया।

ताबी हंसने लगीं। मुझे छातीसे लगाकर कहने लगीं "प्रेमाबहन तुम कैसी पागल हो!"

भावनाओंका वेग कम होनेके बाद मैंने विचार किया। महात्माजी सफरमें ही थे ऐसे मालूम हुअे। लेकिन मार्गमें जाते वक्त बंबअी होकर जानेवाले थे। मुझे लगा कि अुस वक्त मैं अुनसे मिलकर बात करूं।

मणिभवनमें वे ठहरे तब मैंने अुनसे मुलाकात की। अुसमें निश्चय किया कि मार्गमें वापस लौटते समय वे बंबअी आयें तब अुनके साथ ही साबरमती चली जाअूं। मालूम हुआ कि यह मअीमें ही हो सकेगा।

मैं खुश हुअी। अब मेरे सगे-संबंधी और प्रियजनोंको मेरा आश्रम जानेका निर्णय मालूम हो गया था। युवक-परिषदके कार्यकर्ताओंको भी अिसका पता चला था। अिस सिलसिलेमें अलग अलग मत मेरे पास आने लगे। मेरे हाअीस्कूलके शिक्षक श्री पुरकर अुस वक्त बंबअीके मराठी पत्र नवाकाळ में सह-संपादक थे। हमारा परिचय बढ़ गया था और हम बार-बार मिलकर आदर्शोंकी चर्चा और विचारोंका आदान प्रदान करते थे। अुन्होंने मेरे निर्णयका स्वागत किया और मुझे प्रोत्साहन दिया मदद करनेकी तैयारी भी बताअी। युवक-परिषदके कार्यकर्ताओं और सहयोगी बंधुओंको मेरा यह निश्चय अच्छा नहीं लगा। आश्रम और पंजरम अुन्हें कोअी खास फर्क नहीं मालूम होता था। अुन लोगोंकी मान्यता यह थी कि बंबअीमें रहकर ही मेरा पुरुषार्थ और जीवनका विकास होगा। मेरे पिताजीका बोध ज्ञान नहीं हुआ था अिसलिअे मैं अुनके पास रही ही नहीं। दूसरे सगे-संबंधियों और सहेलियोंकी रायें अलग अलग मिलीं

अिस जीवनमें पद धरनेसे पहले दीर्घ विचारकी जरूरत है। तरुणाअीका जोश तो तात्कालिक होता है। भविष्यका क्या? शरीर

स्वस्थ और मजबूत है तब तक शक्ति हमारी होती है। शक्ति समाप्त होने पर कौन मदद करेगा?

"देशभक्तिके रास्तेमें पैसा नहीं मिलता। धन न हो तो कोजी बात नहीं पूछता। सावधान रहना। अपनोंको छोड़कर जानेसे धोबीके कुत्ते जैसी हालत होगी — न घरका न घाटका।

पहले धन कमाओ फिर देशभक्ति करो। धनवान देशभक्तोंका ही दुनिया मान करती है दरिद्रोंका नहीं।"

तू विचार कर। तू स्त्री है पुरुष नहीं। पुरुष या जवान लड़का चाहे जो कर सकता है। लड़का देशसे दुनियामें प्रवेश करे तो भी अुसका कुछ नहीं बिगड़ता। लेकिन लड़कीकी स्थिति भिन्न है। वह अधिक समय तक सही-सलामत नहीं रह सकती।

लड़कीकी पूंजी अुसका सतीत्व है। तू तो दूसरे प्रदेशमें दूसरे लोगोंमें दूसरी भाषा बोलनेवालोंके बीच रहने जा रही है। कलको कोजी आफत आ पड़े तो स्वजन पास नहीं होंगे। स्त्रीका सतीत्व चला जाय तो अुसकी सारी जिंदगी बरबाद हो जाती है। जिसका पूरी तरह विचार कर।

महात्माजीका सहारा भी स्थायी रूपसे मिलनेवाला नहीं है। वे आज बाहर हैं कल जेल चले जायेंगे। फिर तेरा क्या होगा? वहांके सब लोग क्या अुन्हींके जैसे होंगे? कौन तेरा भार अुठायेगा? और मान लें कि वे जेल नहीं गये। लेकिन बूढ़े आदमीकी जिंदगीका क्या भरोसा? अुनका अवसान हो जाय तो तू क्या करेगी?

ब्रह्मचर्यका पालन सरल नहीं है। अनुभवियोंसे पूछ ले। जिन्होंने विवाह किया है वे पागल थोड़े ही हैं। आज देशभक्तिके अुत्साहमें तुझे दूसरा कुछ सूझता नहीं है। लेकिन यह जोश अुतरनेके बाद बड़ी अुमरमें तू शादी करना चाहे तो किस माका लड़का तुझसे शादी करनेको राजी होगा? — हमारी जातिका तो राजी नहीं ही होगा। फिर क्या तू की तरह मुसलमानसे शादी करेगी? फिर तो धर्म और जातिसे बाहर रहना पड़ेगा। अुससे क्या लाभ होगा? वगैरा वगैरा।

ये सब बातें मैं सन् १९२९ के सालकी कह रही हूँ। हितैषियोंने अपनी मर्यादाके अनुसार कभी शंकायें उपस्थित कीं। शंकाओंका अंत ही नहीं है। उनका निराकरण भी कैसे हो? अेक जवान लड़की अेक अनोखा प्रयोग करनेका निश्चय कर रही थी। भविष्य अज्ञात था। अपनी शक्ति पर उसे विश्वास नहीं था। फिर दूसरोंके सामने दलील कैसे करे? फिर भी बचपनसे भगवान पर मेरी अटल श्रद्धा थी। मेरा विश्वास था कि सत्यके मार्गमें कोअी डर नहीं है।

सत्य संकल्पाचा दाता भगवान। सर्व करी पूर्ण मनोरथ।।

संत तुकारामका यह वचन मेरे लिये दीपस्तम्भकी तरह था। सत्य संकल्पकी प्रेरणा अीश्वर ही देता है और अपनी कृपासे सब मनोरथ पूरे करता है। अिस सत्यमें मेरा अटल-सुनिश्चित विश्वास था। मेरी अैसी श्रद्धा थी कि अब तक मेरा जीवन जिस प्रकार बनता गया और ध्येयको पानेके लिये जो जो अनुकूलतायें मुझे मिलती गयीं वह सब अीश्वरकी अिच्छाके अनुसार ही हुआ।

जेथें जातों तेथें तूं माझा सांगाती।
चालविसी हातीं धरोनियां।।

संत तुकाराम भगवानको लक्ष्य करके कहते हैं मैं जहाँ जहाँ जाता हूँ वहाँ तू ही मेरा साथी होता है। मेरा हाथ पकड़कर मुझे चलाता है।" मुझे भी वैसा ही अनुभव हुआ था। मैंने सोचा कि अपने जीवनके विकासके लिये और देशका ऋण चुकानेके लिये मुझे सत्याग्रही सैनिक बनना है। साधारण सैनिक जब युद्धके लिये जाता है, तब मेरा क्या होगा? मैं मर जाअूंगा? या घायल हो जाअूंगा? अपंग होकर जीअूंगा तो मेरा क्या होगा? मेरे बाल-बच्चोंका क्या होगा?" अैसा विचार नहीं करता। स्वधर्मे निधनं श्रेयः को मानता है। मुझे भी वैसा ही करना है। जो होना होगा वह होगा। भगवानका यह आश्वासन है कि न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गतिं तात गच्छति। अिस प्रयोगमें

हम बरबाद हो जायें तो भी जीवन कृतार्थ हो गया कहा जायगा। जीवित रहे तो जीवनके विकासका काम मिलेगा ही।

मैंने अपनी तैयारी की। बुआ मौसी और किसनकी मां (जिनके निरपेक्ष प्रेमके कारण हम अुन्हें भारतमाता कहते थे) का आशीर्वाद लिया तथा स्नेहियों और सहेलियोंसे विदा ली। २५ मअी १९२९ की रातको मैं पूज्य महात्माजीके साथ बंबअीसे अहमदाबादके लिअे रवाना हुअी यद्यपि मैं स्त्रियोंके डिब्बेमें बैठी थी। महात्माजीके डिब्बेमें बहुत भीड़ होनेकी वजहसे अुनकी आज्ञाके मुताबिक मैं अलग बैठी थी। २६ को सुबह अहमदाबाद स्टेशन पर मिले। फिर अुनके साथ ही मोटरमें सत्याग्रह आश्रम पहुंची।

हृदयकुंजमें बैठकर पूज्य महात्माजी गरम पेय पीने लगे। मुझे आज्ञा दी अगर अेक सप्ताहके अंदर तुम्हें गुजराती बोलना आ जाय तो ठीक है नहीं तो यहांसे निकाल बाहर करूंगा। यह अंग्रेजीमें की।

कोशिश करके गुजरातीका थोड़ा परिचय तो मैंने प्राप्त कर लिया था लेकिन बोलना नहीं आता था। मुझे हृदयकुंजमें ही अेक कमरा दिया गया। अुसमें श्री वसुमती बहन पंडित नामकी अेक बहन रहती थी। लेकिन अुस समय वे बाहर गअी हुअी थी। मुझे अेक खाट भी मिली। मैंने देखा कि पूज्य महात्माजी बाहर आंगनमें खाट डालकर आकाशके नीचे खुलेमें सोते हैं। मैंने भी अपनी खाट अुनके साथ थोड़ी दूरी पर बिछा ली और तबसे मैं बाहर ही सोने लगी। रोज सुबह अुठते ही महात्माजीका दर्शन सबसे पहले होता था!

पहली रातको ही सोनेसे पहले अुन्होंने मुझसे पूछताछ की। फिर मैंने पूछा मुझे यहां क्या काम करना है? दिनमें क्या क्या काम करूं?"

अुन्होंने प्रश्न किया तुमको चित्रकला आती है?

मैंने कहा थोड़ी थोड़ी आती है। पाठशालामें सीखी थी और बादमें स्वयं कोशिश करके अभ्याससे जो प्राप्त की अुतनी ही आती है।"

तो फिर राज सुबह बाल-मंदिरमें जाकर अेक घंटे तक बच्चोंको चित्रकला सिखाती रहो।"

दूसरा कुछ?"

"रसोओीमें अेक घंटा देना।

तीसरा?

रोज अेक घंटा कातना।"

अिस तरह अुन्होंने मुझे रोज तीन घंटेका काम दिया लेकिन मेरे लिअे समयकी यह मर्यादा टूट गअी। सेवाकार्यका समय बढ़ता गया। अेक दिन मैंने खुद होकर पाखाना-सफाअीमें भाग लिया। महात्माजीको मालूम हुआ तो खुश होकर अुन्होंने मुझे शाबाशी दी।

मेरे यहां आनेके बाद पूज्य महात्माजी अेकाध हफ्ते ही आश्रममें रहे होंगे। फिर सफर पर चले गये। लेकिन जानेसे पहले अेक रात नौ बजनेसे पहले मुझे अपनी खाटके पास बिठाकर मेरे घरकी बहुतसी बातें पूछने लगे। मेरे जीवनका ज्यादा परिचय पा लेनेकी अुनकी अिच्छा थी।

घरकी बातें करनेमें मुझे थोड़ा संकोच तो जरूर हुआ। अुस वक्त तो हमारे बीचमें अन्तर मालूम होता था। मैं अभी नअी ही थी। अिसलिअे संक्षेपमें बातें कीं। लेकिन जब जीवनके दृष्टिकोण और ध्येयके बारेमें बातें चलीं तो मुझे रस आ गया और मैं अुन्हें अपने आदर्शके बारेमें विस्तारसे बताने लगी। आगामी सत्याग्रहके संग्राममें भाग लेनेके लिअे मेरा हृदय तड़प रहा है। मुझे सैनिक बनना है। अुसके लिअे तालीम लेनी है। अैसी अैसी बातें मैंने कीं।

गंभीर बनकर पूज्य महात्माजी मेरी बात सुन रहे थे। अुन्होंने मुझे कहने तो दिया लेकिन फिर वे आश्रम-जीवनके बारेमें बात करने लगे। मैं अधीर हो गअी। मैंने कहा "महात्माजी यहांके काम करनेमें मेरी ना नहीं है। यह तो मैं करती ही हूं। लेकिन अुसका सत्याग्रहसे क्या संबंध है यह मेरी समझमें नहीं आता। मुझे सत्याग्रहके संस्कार चाहिये

जब कि आप दूसरी ही बात करते हैं। आप मुझे कहां ले जा रहे हैं? (Where are you leading me to?)"

मैं तुम्हें सत्याग्रहके रास्ते पर ले जा रहा हूं। (I am leading you to the path of Satyagraha!) वे बोले "जिसी मार्ग पर सत्याग्रह है, देशभक्ति है सेवा है।

मैंने कहा But I want to do something tremendous! (लेकिन मुझे तो कोओ प्रचंड कार्य करना है!)

अुन्होंने विनोद किया "The only tremendous thing that you can do now is to go to sleep. (अभी तो जो प्रचंड कार्य तुम कर सकती हो वह सिर्फ सो जानेका है।)

*

आश्रममें आकर हृदयकुंजमें रहने पर भी पूज्य महात्माजीका सहवास दिन रात नहीं मिलता था। दिनमें दोनों ही अलग अलग जगह काममें लगे रहते थे। खानेके समय दोनों बार मैं अुनके सामने ही बैठती थी। शामको घूमने जाते तब लड़कियोंके साथ मैं भी अुनके साथ जाती थी। प्रार्थनामें दोनों समय शरीक होती थी और रातको अुनके समीप सोनेको मिलता तब अधिकतर रोज ही अुनके पास कुछ न कुछ बातचीत होती थी।

पूज्य महात्माजीने कहा था कि यहां आनेके बाद पहलेका सब हुआ सब कुछ भूल जाना चाहिये और यहां नयी दिशा और नया जीवन प्राप्त करना चाहिये। अुनके आदेशका पूरी तरह पालन करते हुये जीवनका विकास करनेकी मैं जी-जानसे कोशिश करने लगी। अुनके पास सारा दिन बितानेको मिले अैसी जिच्छा तो कभी मनमें भी नहीं अुठी थी। मेरे काम और मेरी तपस्या या साधनाके द्वारा अुन्हें संतोष करानेकी लगन मुझे लगी थी। मेरे बारेमें अुनका जो अविश्वास था वह निकल जाय और आदर्श जीवनके लिये मेरी योग्यता सिद्ध हो जाय तो मैं अुनकी कृपाकी पात्र बन जाअूंगी अैसी मेरी श्रद्धा थी। वे जैसे

अध्यात्म-वीर थे वैसे ही संग्राम-वीर भी थे। मेरे मानस मुझे अुनमें मूर्तिमन्त दिखायी देते थे। अिसलिअे वे जो मार्ग बतायें अुस पर चलकर अपने आदर्शों तक पहुंचनेकी मेरी आकांक्षा थी।

मेरे आश्रम पहुंचनेके थोड़े दिन बाद वे बाहर गये। जाते समय मुझसे कह गये थे कि "मुझे पत्र लिखना।" मैंने विचार किया कि अुसके लिअे मुझे गुजरातीका ज्यादा अभ्यास करना चाहिये। बहनोंके साथ मैं टूटी-फूटी गुजरातीमें बात करने लगी थी। लेकिन अुससे क्या बनता? आठ दिनोंमें भूल किये बगैर गुजरातीमें बोलना मुझे कैसे आ सकता था? फिर हिन्दीभाषी लोग भी आश्रममें थे। मैं तो भाषा-रसिक थी। आश्रममें भारतके लगभग सभी प्रांतोंके सेवक अिकट्ठे हुअे थे। अिसलिअे कभी भाषाओंका परिचय प्राप्त कर लेनेका मौका अनायास हाथ लग गया। लेकिन सेवाके काममें ज्यादा समय देना पड़ता था अिसलिअे भाषाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे समय नहीं मिलता था। पढ़ना भी नहीं हो पाता था तब भाषाओंका अभ्यास तो कहांसे होता? मुश्किलसे गुजराती हिन्दी और अुर्दूका परिचय हुआ।

पूज्य महात्माजी सफर पर गये अुसके थोड़े ही दिन बाद अेक रात मैंने स्वप्न देखा। मैंने देखा कि पूज्य महात्माजी आसन पर पलथी मारकर बैठे हैं। अुनकी गोदमें मैं छोटी बच्ची बनकर लेटी हूं। अुनके वक्षस्थलसे शुभ्र सुन्दर दूधका प्रवाह बह रहा है और वह सीधा मेरे मुंहमें गिर रहा है। वह मधुर दूध मैं पी रही हूं। पूज्य महात्माजी कह रहे हैं "पी पी और पी।" दूधसे मैं धाप गयी पेटमें जगह नहीं रही तो भी दूधका प्रवाह निकल ही रहा है और पूज्य महात्माजी भी ज्यादा पीनेके लिअे आग्रह कर रहे हैं! आखिर अुस प्रवाहने मुझे सिरसे पैर तक प्लावित कर दिया तो भी प्रवाह चालू रहा। मैं घबरा कर नींदसे जाग अुठी।

अिस स्वप्नसे मनमें कुतूहल जागा। पूज्य महात्माजीको आश्रमसे जो पहला पत्र लिखा अुसमें मैंने अिस स्वप्नके विषयमें विस्तारसे लिख भेजा।

गुजराती लिखना अच्छी तरह नहीं आता था जिससे जहाँ तक मुझे याद है मैंने भी गंगाबहन झवेरीकी मदद ली। स्वप्नका अर्थ पूछा और दूसरी बातें लिखकर पत्र समाप्त किया।

पूज्य महात्माजीका जुत्तर आया। छोटासा था। जुनके सारे पत्र छपनेसे पहले नकल करानेके लिये गये थे तब सभी पत्र खो गये। जुनमें से यह भी अेक था। लेकिन जुस पत्रकी कुछ पंक्तियाँ याद हैं, जो यहाँ दे रही हूं।

चि प्रेमाबहन

तुम्हारा पत्र मिला। स्वप्न सात्त्विक और राजस भी होते हैं। तुम्हारा स्वप्न सात्त्विक कहलायेगा। जिसका अर्थ यह है कि तुम अपने आपको मेरे पास सुरक्षित समझती हो।

बादके वाक्य याद नहीं हैं। मुझे पत्र अच्छा लगा। लेकिन जुसमें मेरे लिये बहन संबोधन था जो मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा।

सफरसे लौटनेके बाद पू महात्माजी रोजकी तरह अेक दिन घूमने निकले। लड़कियोंकी टोली जुन्हें घेरकर चल रही थी। मैं पीछे थी। अचानक महात्माजीने रमा रमा की आवाज लगाजी। अपनी धुनमें मुझे लगा कि मेरा ही नाम लेकर जुन्होंने पुकारा है। जिसलिये मैं झटसे आगे जाकर पूछने लगी "मुझे कैसे बुलाया?"

वे बोले मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। मैं रमाको बुला रहा था।

मैं शरमा गयी। मुझे लगा कि आपने मेरा ही नाम लिया।" अैसा कहकर निपटने ही वाली थी कि वे बोले तुम्हें बुलाजूं तो मैं प्रेमाबहन न कहूं?

मुझे मौका मिल गया। नाराजी जाहिर करते हुओ मैंने कहा "मैं कितनी छोटी हू? आप मुझे बहन कहकर क्यों बुलाते हैं? पत्रमें भी आपने जिसी तरह मुझे संबोधित किया। वह मुझे जरा भी पसंद नहीं आया।

पूज्य महात्माजीने विनोद किया मेरी जिच्छा हो तो मैं तुम्हें प्रेमा कहकर बुलाजूं प्रेमकी कहूं या प्रेमी भी कहूं।

यह विनोद मुझे अच्छा लगा। बातचीत तो अभी अंग्रेजीमें ही होती थी — अिसलिअे तुम और तू का भेद मालूम नहीं होता था। मैं पत्र तो गुजरातीमें लिखनेकी कोशिश करती थी लेकिन अभी पू. महात्माजीके साथ गुजरातीमें बातचीत करनेकी हिम्मत नहीं होती थी।

पूज्य महात्माजी अुत्तर प्रदेशके दौरे पर गये तब अुन्होंने मुझे जो पत्र लिखा (९-९-२९) अुसमें बहनके बिना ही सम्बोधन किया था। अुससे मैं खुश तो हुअी लेकिन अुसमें सम्मानसूचक तुमका प्रयोग किया था। वह मुझे खटका! अिसलिअे मैंने फिर अुनसे झगड़ा किया। मेरी यह हठ भी अुन्होंने मंजूर की।

आषाढ़में मेरी वर्षगांठ आअी तब सुबह जल्दी नहा-धोकर मैं पूज्य महात्माजीके दर्शनोंके लिअे गअी। अुस समय वे आश्रममें ही थे और मैं अुनके पास पहुँची तब वे हृदय-कुंजके बरामदेमें खड़े खड़े कुछ देख रहे थे। मैंने झुककर प्रणाम किया तो जरा आश्चर्यसे अुन्होंने पूछा "आज क्या है?

मैंने कहा "मेरी वर्षगांठ है अिसलिअे प्रणाम किया!

अुन्होंने पूछा कौनसा साल लगा?

मैंने कहा चौबीसवां! फिर मैं चली गअी।

अुसके बाद हर वर्षगांठ पर अुनका आशीर्वाद लेनेका रिवाज मैंने आखिर तक चलाया। बाहर होती तो पत्र लिखकर प्रणाम भेजती। आशीर्वाद तो मिलते ही थे। अुनके पास होती तो प्रत्यक्ष प्रणाम करनेका मौका मिलता। फिर पीठ पर जोरका धप्प मिलता। यही अुनका आशीर्वाद होता।

हृदय-कुंजमें पारिजातका अेक वृक्ष था। बरसातमें रोज सुबह झाड़के नीचे फूलोंका गलीचा बिछ जाता था। मेरे मनमें आया अेक बार अिन फूलोंका हार बनाकर महात्माको पहनाना चाहिये। अिसलिअे अेक दिन सुबह जल्दी अुठकर मैंने हार बनाया और अुसे टोकरीमें पत्तोंके नीचे छिपाकर महात्माजीके पास गअी। वे मगन-कुटीरमें मिलने बैठे थे।

दरवाजेके पास जाकर खड़ी रही तो अुन्होंने देखा और पूछा कैसे आयी ? ”

मैंने कहा मैंने पारिजातके फूलोंका हार बनाया है। आपको पहनानेकी अिच्छा है।

आज क्या है ? ”

कुछ न कुछ जवाब देना चाहिये अिसलिअे मैंने कहा पवित्र दिन। ”

देखूं तो हार कहां है ? ”

मैंने पत्तोंके नीचेसे टोकरी निकालकर सामने रखी।

सुन्दर है। अच्छा अैसा कर। मुझे हार पहना दे अुसके बाद मैं यह तुझे वापस दूंगा। तू अुसके दो टुकड़े करना और आश्रममें जो *दो भाअी (नाम बताये) बीमार हैं अुनके पास जाकर दोनोंको अेक* अेक टुकड़ा देना और अुनके समाचार मुझे बताना। ”

मैं खुश हुअी। अुन्हें हार पहनाकर अुनकी अनुपम शोभा मैंने देखी। हार वापस मिला तो अुनकी आज्ञाके अनुसार मैंने सब कुछ कर दिया। भक्तिप्रेमकी परिणति सेवामें होनी चाहिये यह पाठ महात्माजीने मुझे सिखाया। वे कामसे खुश होंगे यह सोचकर बीमारोंके समाचार मैंने तुरंत अुनके पास नहीं पहुंचाये। रातको सोने गअी तब डांट मिली। सेवा और राजनीतिके कार्य सब समान महत्त्वके हैं। कहा हुआ काम तुरन्त करना चाहिये। अैसा अुपदेश मिला।

मेरे दिन आनंदमें गुजर रहे थे। रोज शामको लड़कियों और पू॰ महात्माजीके साथ घूमने जाती तब बड़ा आनन्द आता। बारी बारीसे लड़कियोंके कंधे पर पूज्य महात्माजी हाथ रखते थे। लड़कियां मुझे चिढ़ानेकी कोशिश करतीं प्रेमाबहन बापूजी हमारे कंधे पर हाथ रखते हैं। आपके कंधे पर नहीं रखते।

मैंने पूछा क्यों न रखेंगे ? मैं तुम्हारी तरह जबरन् बीचमें घुसने वाली नहीं हूं।

नहीं आपके कंधे पर रखेंगे ही नहीं। आश्रमका नियम है कि जिसकी अुमर सोलह वर्षसे अूपर हो अुसके कंधे पर बापूजी हाथ न रखें।"

यह नियम क्या बापूजीने बनाया है?

नहीं आश्रमके मंत्री छगनलालभाओीने बनाया है।"

मुझे यह बात सच्ची मालूम नहीं हुआी। मैंने पूज्य महात्माजीसे पूछा ये लड़कियां कहती हैं कि जिसकी अुमर १६ सालसे अूपर हो अुसके कंधे पर आप हाथ नहीं रखते और यह नियम छगनलालभाओीने बनाया है। यह बात सच है?

पूज्य महात्माजीने अुत्तर दिया हां बात सच है।" फिर बोले "तुझे कंधे पर मेरा हाथ रखवाना हो तो छगनलालभाओीकी अिजाजत ले आ।

मेरे अभिमानको धक्का लगा। गुस्सेसे अपना सिर हिलाकर मैंने कहा "आपके हाथकी अैसी मुझे क्या गरज है जो मैं छगनलालभाओीकी अिजाजत लेने जाअूं?"

तुझे हाथ न रखवाना हो तो दूसरी बात है। महात्माजीने विरक्त भावसे जवाब दिया।

लेकिन भगवान देनेवाला हो वहां कौन रोक सकता है?

पूज्य महात्माजीने खुराकके बहुतसे प्रयोग किये थे। अुनमें से कच्चे आहारका प्रयोग अुस समय चल रहा था। तीन महीने तक भाजी चलती रही और अुन्हें अपना प्रयोग सफल होता हुआ दिखाओी दिया। अिसलिअे स्वभावके अनुसार अुन्होंने आश्रमवासियोंमें कच्चे आहारका प्रचार किया। लोगोंने थोड़े अरसे तक तो चलाया फिर छोड़ दिया। अुन सब बातोंमें मैं यहां नहीं जाती यद्यपि वह भी अेक बड़ा मजेदार प्रकरण है। अन्तमें पूज्य महात्माजी अकेले रह गये और अुन्हें भी आंवके दस्त होने लगे। पूज्य महात्माजीके स्नानघरमें ही कमोड रहता था। रोज दो बार पीचक लिये वे नहीं जाते थे। पेचिशका विकार होने पर ज्यादा

आर जाना पड़ता था। जहाँ तक मुझे याद है पहले ही दिनकी यह घटना है। दिन भर काममें लगी रहनेके कारण दिन बीमारीके बारेमें मुझे बिलकुल मालूम नहीं था। बरसातके दिन होनेकी वजहसे हृदय-कुंजमें ही सोते थे। बरामदेके अेक ओर पूज्य महात्माजीका कमरा था जिसके तीन ओर ही दीवारें थीं। बरामदेकी ओर वह खुला था। अुस कमरेमें पूज्य महात्माजी और पूज्य बा खाट डालकर सो गये। गंगाबहन झवेरी वसुमतीबहन और मैं बरामदेमें खाट डालकर सो गये। महात्माजीको पेचिश हो गयी थी जिसलिये कमोड हृदय-कुंजमें ही रखना चाहिये था लेकिन मालूम नहीं यह बात क्यों किसीको नहीं सूझी? आधी रातको पूज्य महात्माजीकी लड़खड़ाती आवाजसे मैं जागी। लालटेन हाथमें लेकर वे बाहर जानेके लिये निकले थे। मैंने वसुमतीबहनसे कहा सुने "बापूजी मैं साथ चलूँ? पूज्य महात्माजीने मना किया। फिर मैंने भी पूछा मैं आजू?" नहीं नहीं वे फिर बोले और चलने लगे। अुनकी लड़खड़ाती आवाज औसी लगती थी मानो अुनके पैर लड़खड़ा रहे हों। बादमें मुझे लगा कि हम साथ जाती तो वे नाराज नहीं होते। लेकिन वे गये। हम फिर सो गये। लेकिन कुछ ही मिनट बाद मैं फिर जागी। देखा तो चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। मैं सोच रही थी पूज्य महात्माजी वापस आ गये होंगे क्या? जितनेमें ही वसुमतीबहन मेरे पास आकर कहने लगीं प्रेमाबहन बापूजी अभी तक वापस नहीं आये। मैं तुरंत अुठकर बरामदेकी सीढ़ियों पर कूद पड़ी और गुसलखानेकी तरफ दौड़ी। दो बाड़े पार करके जाना पड़ता था। बाहर भी अंधेरा ही था। आकाश बादलोंसे घिरा हुआ था जिसलिये घोर अंधकार फैला था। हलकी बरसात भी होने लगी। मैं स्नानगृहके दरवाजेके सामने थोड़ी दूर खड़ी होकर देखने लगी। दरवाजेकी दरारोंमें से अुजाला दिखाजी दिया लेकिन किसी प्रकारकी हलचल नहीं मालूम होती थी। मैं सोचने लगी कि अन्दर महात्माजी होशमें तो होंगे? कहीं बेहोश तो नहीं हो गये? दरवाजा खटखटाकर पूछूँ या नहीं? औसा सोचते सोचते थोड़ी देर खड़ी

रही होअूंगी कि अन्दरसे पानीकी आवाज सुनाअी दी। मुझे भी शांति हुअी और मैं दरवाजेके पास जाकर खड़ी हो गअी। थोड़ी देरमें दरवाजा खुला और हाथमें लालटेन लिये हुअे पूज्य महात्माजी मुझे दिखाअी दिये। " मेरा सहारा लीजिये " अैसा कहनेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी। मैंने अितना ही कहा " मुझे लालटेन दे दीजिये।" पूज्य महात्माजीने लालटेन दी कि अेकदम अुनका शरीर मेरे शरीर पर आ गिरा। मैं चौंकी फिर खयाल आया कि मेरे कंधे पर सहारेके लिअे हाथ रखते समय शरीरमें बिलकुल ताकत न होनेकी वजहसे वह अपंग होकर मेरे अूपर आ पड़ा। मेरे अेक हाथमें लालटेन थी। दूसरे हाथसे मैंने कमरके पाससे पकड़ा और अुनके शरीरका बोझा रखा। मेरे कंधे पर रखा हुआ अुनका हाथ तो बर्फ जैसा ठंडा कांप रहा था। हम चलने लगे लेकिन पूज्य महात्माजीसे किसी भी तरह पैर अुठाया नहीं जाता था। अुनका सारा शरीर कांप रहा था। नाकसे सांस और मुहसे " हा हा " शब्द निकल रहे थे।

" महात्माजी आप बिलकुल कमजोर हो गये हैं।"

वे धीरेसे बोले " हां मुझे कल्पना ही नहीं थी कि कलके आहारका अैसा परिणाम होगा।"

" आपसे तो बिलकुल नहीं चला जाता!"

" चला जायगा " अैसा कहकर वे पैर अुठाने लगे। लेकिन शरीरमें चलने जितनी ताकत नहीं थी।

जवानीमें मेरे शरीरमें पठानकी-सी शक्ति थी। मैंने महात्माजीको पूछा " मैं आपको दोनों हाथोंमें अुठा कर ले चलूं ? "

पूज्य महात्माजी जल्दीसे बोले " नहीं नहीं मैं चलूंगा।"

लेकिन तो भी आगे चल नहीं सके। मैंने पूछा " चौकीदारको बुलाअूं? " जिसके लिअे भी अुन्होंने मना कर दिया। मैं अंधेरेमें देखने लगी। कोअी नजर आ जाय तो! लेकिन कोअी दिखाअी नहीं दिया। जैसे तैसे करके पूज्य महात्माजी करीब अेक मिनटमें अेक कदमकी गतिसे चलने लगे।

हम अेक बाड़ा पार करके दूसरे बाड़े तक पहुँचे तब वसुमतीबहन वहीं दिखाओी दी। अुन्हें मददके लिये बुलाने पर पूज्य महात्माजीको दूसरी ओर भी मदद मिली और हम तीनों बरामदेकी सीढ़ियों तक आ पहुँचे। सीढ़ी अेक फुटसे अूँची थी। पूज्य महात्माजी अुतना अूँचा पैर नहीं अुठा सके। तब मैंने अुनकी अिजाजतके बिना ही अुन्हें दोनों हाथोंसे अुठाकर अूपर ले लिया और खाट पर सुला दिया।

दूसरे दिन अिस घटनाका सबको पता चला। लड़कियाँ मुझसे बातें पूछनेके लिये मेरे पास आकर अिकट्ठी हुआीं। मैंने कहा — लो अब क्या हुआ? बापूजीके हाथकी अधिकारिणी तुम सब कल रातको कहाँ थीं? और नियम बनानेवाले कनुभाअी कहाँ थे? बोलो।

पूज्य महात्माजी थोड़े दिन बिस्तरमें ही रहे। फिर थोड़ा-थोड़ा घूमने-फिरने लगे तब अेक दिन अुन्होंने अेक हाथमें लकड़ी ली और दूसरा मेरे कंधे पर रखकर चलने लगे। लड़कियाँ बड़बड़ाओीं — "बापूजी प्रेमाबहनके कंधे पर हाथ क्यों रखते हैं? यह तो नियमका भंग हुआ!"

लेकिन पूज्य महात्माजीने कहा — देखती नहीं हो? मैं बीमार हूँ और मुझे सहारा चाहिये। यहाँ नियम क्या हो सकता है?

फिर अच्छे होने पर भी मेरे कंधे पर हाथ रखकर वे घूमने लगे। मुझे तो मजा आया! मौनवारको कोअी भी लड़की अुनके साथ घूमने जानेको तैयार नहीं होती थी। लेकिन मैं तो रोजका नियम छोड़ती नहीं थी और पूज्य महात्माजीके मौनमें भी अुनका पवित्र और प्रिय सहवास पाकर शुभ संस्कारोंका लाभ अुठाती। कारण फूलोंकी सुगंध जैसे वातावरणको सुगंधित कर देती है वैसे ही संतोंका अन्तःकरण भी मूक हालतमें भी अपने आसपास आनन्द और पवित्रता फैलाते हैं। अकेली मैं ही मौनवारके दिन अुनकी अनुगामिनी होती देखकर वे मुझे The only faithful (अेकमात्र वफादार) कहने लगे।

अुन दिनों वातावरण सत्याग्रह आश्रमकी हवासे भर गया था। आश्रममें देशके बड़े बड़े नेता आते थे। बातें चलती थीं।

अुत्साहका प्रचंड प्रवाह बहता था। कोअी महान रोमांचकारी घटना समीप आ रही थी। अुसके अुपागीत कानमें सुनाअी दे रहे थे। अिसलिअे मुझे नया चेतन मिलने लगा था। अेक दिन ग्रामको घूमते समय पूज्य महात्माजीका हाथ मेरे कंधे पर था। अुसे सहलाते हुअे गौरवपूर्ण धन्यताके भावसे मैंने कहा "अिस हाथने अंग्रेजी साम्राज्यका सिंहासन हिला दिया वह हाथ मेरे कंधे पर है यह कैसी हृदयको अुल्लसित कर देनेवाली बात है। और मैंने हर्षोन्मादमें अुनके कोमल पवित्र हाथको चूम लिया!!

पूज्य महात्माजी हंसे। "हम कितने महान हैं! अैसा दरबारी रौब दिखाकर, छाती फुलाकर और सिर अूंचा करके कदम कदम बढ़ाते हुअे पूज्य महात्माजी चलने लगे। अुनके हाथकी महानताके सम्बन्धमें यह नअी कल्पना आसपासकी लड़कियोंको बड़ी पसन्द आ गअी।

*

पहाड़की गोदमें निर्भय होकर अुछलते-कूदते जल-प्रपातकी तरह मेरा जीवन आश्रममें सुख और आनन्दमें बह रहा था। महात्माजी दांडी-कूच पर निकले अुस वक्त तक मुझ पर किसी प्रकारकी जिम्मेदारी नहीं थी। पढ़ना पढ़ाना कातना बुनाअीका काम सीखना रसोअीघरमें और जहां जहां जरूरत हो वहां वहां काम करना — अितना ही मेरा कार्यक्रम था। अिस तरह दिनके आठ घंटे काममें बीतते फिर भी कष्ट महसूस नहीं होता था। सब काम खेल जैसे लगते थे। दिन बीतते गये वैसे वैसे पूज्य महात्माजीकी व्यक्तिगत सेवा करनेका भी सौभाग्य मिला। अुनका बिस्तर बिछाना पैरोंमें घी मलना बाहरसे आयें तब अुनके पैर धोना वगैरा सेवायें मैं करने लगी। और बादमें तो?

नित सेवा नित कीर्तन ओच्छव नीरखवा नन्दकुमार रे
भूतळ भक्ति पदारथ मोटुं, ब्रह्मलोकमां नाही रे।[1]

---

१ नित्य सेवा नित्य कीर्तन-अुत्सव तथा नित्य नन्दकुमारके दर्शनका सौभाग्य ही हरिके भक्त मांगते हैं। अिस पृथ्वीतल पर भक्ति नामका महान पदार्थ मनुष्यको प्राप्त होता है, जो ब्रह्मलोकमें प्राप्त नहीं होता।

विरबाकाशमें मांगल्यकी ही अनुभूति होती थी। महात्माजीका सहवास तो अेक अद्भुत अमृतरसका पान था। लेकिन जब वे यात्रा पर जाते तब भी

ज्यां ज्यां नजर मारी ठरे यादी भरी त्यां आपनी! [1]

मेरी भावना अैसी होनेके कारण शारीरिक वियोगमें भी महात्माजीके निकट सान्निध्यका मैं मनमें अनुभव करती थी। अुनके भव्य व्यक्तित्वके अनेक अंग-अुपांग देखनेको मिलते थे। अुससे बहुत सीखनेको मिलता। मेरा जीवन भी अुन्नत होनेका प्रयत्न कर रहा था।

आश्रममें कविवर श्री रवीन्द्रनाथ आ चुके थे। सर्वश्री राजाजी एं मोतीलालजी जवाहरलालजी डॉ पट्टाभि कोंडा वेंकटप्पय्या सरदार वल्लभभाओी — सारे लोकनेता और लोक-सेवक आ चुके थे। देश-विदेशके लोकसेवक भी आश्रममें आ जाते थे। सारी दुनिया देखनेको मिलती थी। पुस्तकें पढ़कर ज्ञान प्राप्त करनेकी जरूरत महसूस ही नहीं होती थी क्योंकि आश्रममें देशका अितिहास बना जा रहा था।

देशके जीवनका विशाल कदम्ब फूलने लगा था। सूर्योदयसे पहले आकाशमें चारों ओर जैसे अुषाके सुनहरी रंगकी शोभा फैलती है वैसे ही न मालूम कहांसे जीवनमें नव-चेतन चमकने लगा था। मैंने अंकलीकी अपनी सहेलियों और स्नेहियोंको लिखा यह आश्रम जगतका मध्यबिन्दु है। अुसका विस्तार अनन्त-सा लगता है। यहां सत्यका साक्षात्कार होता है। न कष्ट है न दुःख है और न तपस्या है। मोहनकी मुरलीका मधुर रस पीकर मस्त ही होना है। विश्वका सार्वभौम और सार्वकालिक नियम जो सत्य या अहिंसा है वह प्रेम ही है। अुसीमें सबको विलीन होना है। दूर रहकर आश्रमकी सच्ची कल्पना हो ही नहीं सकती। यहां आकर ही अनुभव करना चाहिये।

---

[1] जहां जहां मेरी नजर ठहरती है, वहां वहां आपका ही स्मरण भरा होता है।

अच्छा हुआ मैं घरबार और इष्टमित्रोंको छोड़कर समय पर आश्रममें आ गयी। अपने भाग्यकी परीक्षा करते हुये संत जनाबाईकी तरह मैं भी भगवानको धन्यवाद देने लगी

माझ्या मनीं जें जें होतें। तें तें दिधलें अनंतें॥

मेरे मनमें जो जो था वह सब भगवानने पूरा किया!

आश्रम — प्रेमा कंटक

सा सासवड (जि पूना)

१०—८—५१

बापूके पत्र – ५

कुमारी प्रेमाबहन कंटकके नाम

[ता. २८-२-२९ से १६-१-'४८ तक]

१*

[बम्बओीमें अम. ओ. की टर्म्स भर रही थी तब बारडोली आन्दोलनके समय सन् १९२८ में मैं साबरमती जाकर महात्माजीसे मिल आयी थी। पढ़ाओी पूरी होनेके बाद सत्याग्रह आश्रममें भर्ती होनेकी अपनी अिच्छा मैंने बताओी थी और अिसके लिओ अुनकी अिजाजत मांगी थी। "जब आओोगी तब आश्रमके द्वार तुम्हारे लिओ खुले ही होंगे।" अैसा आश्वासन पूज्य महात्माजीने दिया था। १९२९ की फरवरीमें मैंने अुन्हें पत्रमें याद दिलाते हुओ लिखा कि अब परीक्षा पूरी होनेके बाद मैं मओीमें वहां आना चाहती हूं। अुसका यह अुत्तर है। महात्माजीके आंध्रसे वापस लौटते वक्त २५ मओी १९२९ के दिन बम्बओीमें अुनके साथ होकर दूसरे दिन सुबह मैं आश्रम पहुंची।]

२८–२–२९

प्रिय बहन

तुम्हारा स्पष्टतासे लिखा हुआ पत्र मिला। मुझे तुम्हारी अच्छी तरह याद है। तुम जब चाहो तभी आ सकती हो। यहां तुम्हारा खर्च निकालने जितनी रकम प्राप्त करनेमें तुम्हें कोओी दिक्कत नहीं होगी।

* मूल पत्र अंग्रेजीमें है, जो नीचे दिया गया है

28–2–'29

Dear friend

I have your clearly written letter I remember you well. You are free to come whenever you like. There is no difficulty about your earning your way here.

I leave tomorrow morning and return end of March only to leave again for Andhra Desha. I do not know

कल मैं बाहर जा रहा हूं और मार्चके आखिरमें वापस लौटूंगा। आनेके तुरन्त बाद आश्रम आअूंगा। लम्बे अरसे तक आश्रममें कब रह सकूंगा यह नहीं कह सकता।

श्रीमती प्रेमाबहन कंटक
पी ओल लेडीज होस्टल
वाच्छा गांधी रोड गामदेवी
बंबअी – ७

तुम्हारा
मो क गांधी

२

[आदर्श सत्याग्रही बननेकी तमन्ना मैंने पत्रमें बताअी थी। अुसीका यह जवाब है।]

मौनवार,
९–९–२९

चि प्रेमा

तुम्हारा दुख मैं समझता हूं। तुम्हारे प्रेमको अुससे भी ज्यादा समझता हूं। तुम्हारी कर्तव्य-परायणता मुझे बहुत अच्छी लगी है। जिस रास्ते पर तुम आज चल रही हो अुसी रास्तेमें आत्मशुद्धि है, शान्ति है और देशसेवा है, अिस बारेमें कभी शंका मत रखना।

अगर आश्रमसे कुछ मिला हो तो मुझे न छोड़नेका निश्चय करके स्वयं अपनी आश्रमकी और मेरी शोभा बढ़ाना।

बापूके आशीर्वाद

---

when I shall be able to stay at the ashram for any length of time.

Yours
M. K Gandhi

Shrimati Premabai Kantak
P L. Ladies Hostel
Wachha Gandhi Road, Gamdevi
Bombay – 7

४

३

आगरा
१९-९-२९

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। विश्वासके वश होकर तुम का मैंने तू किया है। मुझे अुत्तर लम्बा लिखा यह अच्छा ही किया। काममें लगा हुआ पिता अेक ही लकीर लिखे तो भी बच्चे संतोष कर लेते हैं लेकिन वे तो अपना हृदय पूरा अुंडेलेंगे ही।

यह बात बिलकुल सच है कि मेरे कामोंमें जो भी कोअी आ जाय अुसे फंसा लेनेकी ही मेरी अिच्छा रहती है। किसीके कामोंमें फंस कर हमारा सत्यानाश हो सकता है। लेकिन मेरे कामोंमें फंसे अेक भी व्यक्तिका सत्यानाश हुआ हो अैसा मैं नहीं जानता। अिसलिअे मैं अपना धंधा जारी रखता हूं। बंबअी जानेके किरायेकी मांग तूने ठीक की है और मुझे वह पसन्द आअी है। मैंने छगनलाल जोशी[1]को लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

४

शाहजहानपुर,
११-११-२९

चि प्रेमा

मैंने बंबअी अेक पत्र लिखा था। वह पहुंचा नहीं मालूम होता। तू अुसके पहले ही रवाना हो गअी अैसा मालूम होता है।

बंबअीमें समय बढ़े और आश्रममें घटे अैसा यदि होता हो तो, तो भविष्यमें आश्रमसे अरुचि होनेवाली ही है।

---

१ अुस समय श्री छगनलाल जोशी सत्याग्रह आश्रमके मंत्री थे।

थीती कि पूज्य महात्माजी अगर गिरफ्तार हो गये तो दूसरे दिन सुबहका रोमांचकारी और अैतिहासिक दृश्य देखना कैसे संभव होगा। अेक-दो घंटे ही सोनेको मिला होगा। तीन बजे प्रातःकर्मसे निबट कर मैं पूज्य महात्माजीके पास दौड़ी गयी। वे अपनी खाट पर बैठ कर दातुन कर रहे थे। वे गिरफ्तार नहीं हुअे और अब सुबह होगी ही अिसके आनन्दमें झूम कर मैं अुनके पास गयी और मैंने अपना सिर अुनकी पीठ पर रख कर कहा "महात्माजी आप पकड़े नहीं गये अिसलिअे मन कितना आनन्द आयेगा!

वे हँसे। "पागल!" अितना ही कहा।

प्रार्थनाकी घंटी बजी तो सवा चार बजे सब प्रार्थना-भूमिकी ओर चले। अुस दिन प्रार्थनामें गानेके लिअे पंडितजीको अेक भजन सुनानेका मेरा विचार था। लेकिन अपने मुहल्लेका रास्ता पार करके प्रार्थना-भूमिकी तरफ आते हुअे पंडितजीको लोगोंने रोक लिया। वे रास्तेमें ही धुन गवाने लगे। जिस तरफके हम सब लोग प्रार्थना-भूमि पर अिकट्ठे हुअे। कभी नेता और बड़े समाज-सेवक भी हाजिर थे। चींटीको भी जगह न मिले अितनी भीड़ अिकट्ठी हुअी थी। अंधेरा तो था ही। मैं पूज्य महात्माजीसे थोड़ी ही दूर बैठी थी। प्रार्थना पंडितजीके बिना शुरू हुअी। लेकिन श्लोक पूरे होनेके बाद पंडितजी आ पहुँचे। अंधेरेमें चारों ओर गम्भीर शान्ति थी और सब लोग भजनकी राह देख रहे थे। पंडितजी पूज्य महात्माजीके दाहिनी ओर बैठे थे "तम्बूरेके तार मिला रहे थे तब मैंने अधीर होकर धीरेसे पुकारा "पंडितजी पंडितजी!"

"क्या?" पंडितजीने पूछा।

"जानकीनाथ सहाय करे जब — यह गीत सुबह गाया जा सकता है?"

पंडितजीने जवाब दिया "हाँ।"

मैंने आग्रहपूर्वक कहा "तो फिर अभी यही गीत गाअिये।"

वे बोले "लेकिन अभी तो वैष्णव-जन गीत गाना है न?"

मन खिन्न हुआ लेकिन जानकीनाथने सहायता की। हम मगठीमें बात कर रहे थे फिर भी पूज्य महात्माजी सब समझ गये और बीचमें

पढ़कर अुन्होंने खुद ही पंडितजीसे कहा "पंडितजी वैष्णव-जन गीत तो कूचके समय गाया जायगा। अभी प्रेमा कह रही है वही भजन गािअये।"

मुझे खुशी हुअी। पंडितजीने भी किसी अगम्य आंतरिक भावमें भरपूर होकर मधुर-गम्य और हृदय-गम्य भजन गाकर वातावरणमें भक्तिका सिंचन किया। राग भी हमेशासे अलग ही था।

जब जानकीनाथ सहाय करे तब कौन बिगाड़ करे नर तेरो ॥ध्रु ॥

*

कूच पर जानेसे पहले पूज्य महात्माजी बीमारोंको देखने गये। दो महीनेसे मुहल्लेमें छोटे बच्चे पीठमासे पीड़ित थे। तीन बच्चे भगवानके घर चले गये थे। लेकिन पूज्य महात्माजीके मार्गदर्शनमें किये गये अुपचारसे रोगका अन्त हो गया था। अच्छे हो रहे बालकोंको देखने पूज्य महात्माजी गये। मुझे अेक कल्पना सूझी।

पं. जवाहरलालजी अुस साल पहली बार राष्ट्रपति हुअे थे। अुन्होंने राष्ट्रीय झंडेके बिल्ले बनाकर सब सैनिकोंको दिये थे। मेरे हाथमें भी अेक बिल्ला आ गया। पूज्य महात्माजी बरसोंसे सिलाये हुअे कपड़े पहनते ही नहीं थे। अिसलिअे अुन्हें बिल्ला देनेकी बात किसे सूझती? लेकिन मुझे लगा कि सेनापतिकी छाती पर भी बिल्ला होना चाहिये। अिसलिअे वह बिल्ला लेकर मैं दौड़ती हुअी अुनसे मिलने गयी।

वे आश्रमके मुहल्लेसे छात्रालयकी तरफ आ रहे थे। आनन्दीके कंधे पर अुनका हाथ रखा हुआ था। दो-तीन आदमी पासमें थे शायद नारणदासभाअी भी होंगे। मैं सीधी महात्माजीके पास गयी और मैंने कहा "मैं आपको बिल्ला देने आयी हूँ।"

वे बोले "बिल्ला लेकर मैं क्या करूंगा?

मैंने कहा "राष्ट्रपतिने सबको दिये हैं। सबने अपनी अपनी छाती पर लगा लिये हैं। मैं आपकी छाती पर लगाना चाहती हूं। अेकलेकी धोती पर ही लगाया जाय तो भी क्या बुरा है?

अुन्होंने मंजूर किया। मैंने बिल्ला लगा दिया। अुस समय पूज्य महात्माजीके मुखचन्द्र पर कोअी अपूर्व तेज चमक रहा था! भाअी अहिंसक ही क्यों न हो लेकिन अेक महान संग्राम-वीरकी तरह वे अेक

७

रविवार,
पूना
२१-१-१

चि० प्रेमा

तूने तो अब मुझे पत्र न लिखनेका व्रत ले लिया है असा मालूम होता है। तू काममें डूबी हुअी है, यह मैं जानता हूँ। अिसीलिअे मुझे पत्र चाहिये। काम अिस हद तक न करना कि तू बीमार पड़ जाय। गलेकी आवाज कम करके गलेकी संभाल करना।

बापूके आशीर्वाद

८

२-४-१

चि० प्रेमा

तेरा पूर्ण पत्र मिला है। अुसमें मेरे पत्रकी पहुँच नहीं है। लेकिन मैं मान लेता हूँ कि वह तुझे मिल गया है।

मुझे पैंजीका फूल[1] मिला तो नहीं लेकिन मिला जैसा ही मैं समझता हूँ। प्रेमसे फूल लगानेमें अुनका देना भी शामिल है। फूलको भौतिक रूपमें देना तो कृत्रिमता है।

---

१ पूज्य महात्माजी सत्याग्रह आश्रममें हृदय-कुंजके आंगनमें जहाँ सोते थे अुसके आसपास मैंने फूलोंके पौधे लगाये थे। वे बाड़ी-रूपमें लगे अुनके बाद पैंजीके फूल खिले। अुनमें से अेक फूल मैंने अुन्हें डाकमें भेजा था।

बच्चोंको तू मारती है क्या? मीराबहन[1]की मीठी शिकायत है। तू अपनी तबीयतका ध्यान रखती होगी।

बापूके आशीर्वाद

९

१०–४–३

चि॰ प्रेमा

शराब-बन्दी और विदेशी कपड़ेके बहिष्कारके मेरे मतके बारेमें तेरे क्या विचार हैं?

तेरे पत्र तो मिले ही हैं। मुझे लिखती ही रहना। पुरन्दर[2] अच्छा आदमी मालूम होता है। कमलादेवी[3] भी मुझे बहुत पसन्द आयी हैं। अुनकी लड़कीको हवा अनुकूल आयी तो रहेंगी अैसा कहती हैं। तू अुन्हें रखनेकी कोशिश करना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ मिस स्लेड। जिनके पिता ब्रिटेनकी नौसेनाके बड़े अधिकारी थे। बापूजीकी पुस्तकें पढ़नेसे अुनके प्रति आकर्षित होकर वे हिन्दुस्तानमें आयीं और अुन्होंने अपने जीवनमें भारी परिवर्तन कर डाला। बापूजीने अुनका नाम मीराबहन रखा। बापूजीके अवसानके बाद अुन्होंने थोड़े समय तक अु॰ प्रदेश और काश्मीरमें खेती तथा पशु-सुधारका काम किया। कुछ समय पहले वे स्वदेश लौट गयी हैं।

२ श्री पुरन्दर बंबअीके नवा काल दैनिकके सह-सम्पादक थे। मेरे पुराने अध्यापक (हाअीस्कूलमें) और बादमें स्नेही मित्र। दांडी कूचमें शामिल हुअे थे। पूज्य महात्माजीने अुन्हें दांडी पहुंचनेसे पहले सत्याग्रहियोंकी टुकड़ीमें भर्ती कर लिया था।

३ श्री कमलाबहन शाबिलस (शादीके बाद राय)। अेक अीसाअी बहन और मेरी मित्र थी। बंबअीकी सेवासदन संस्थामें शिक्षिका थीं। दांडी-कूचके समय अपनी लड़कीके साथ अेक मुकाम पर पूज्य महात्माजीसे मिलने गयी थी। वहांसे मुझे मिलनेके लिअे आश्रममें आयी थी।

[जहां तक मुझे याद है ता० १०-४-३ का पत्र लिखनेके बाद पूज्य महात्माजी गिरफ्तार हो गये। जेल जानेके बाद पत्र-व्यवहार बंद हो गया। शुरूमें तो आश्रमसे भेजी हुओी पहली डाक शुन्हें मिली ही नहीं। फिर भी शुनके पास भी मीराबहनका अंग्रेजी पत्र पहुंचनेका समाचार मिलने पर मैंने भी अेक पत्र अंग्रेजीमें लिखा था। और सोचा था कि वह शुन्हें जल्दी मिलेगा। लेकिन बादमें मालूम हुआ कि वह भी पूज्य महात्माजीको नहीं दिया गया। बादमें तो हर हफ्ते पूज्य महात्माजीके पत्र आने लगे।]

यरवडा
मौनवार,
१२-९-३

चि० प्रेमा

तूने तो पत्र लिखना ही बन्द कर दिया था। लेकिन मैं समझा था कि मेरा समय बचानेके लिये तू नहीं लिखती और तेरे पास भी समय नहीं होगा। लेकिन तेरे समाचार तो मैं प्राप्त कर ही लेता था। *तेरा संयम मुझे बहुत पसन्द आया। मुझे तुझसे वैसी आशा नहीं थी।* अब तो हर हफ्ते मुझे पत्र लिखना ही।

मेरे समाचार नारणदासके पत्रसे मिल जायेंगे।

कुसुमने आश्रमसे जाते समय मेरी चीजें किसे सौंपी थीं? मेरे जेल जाने पर मुझे भेजनेको पुस्तकें तुझे सौंपी थीं? शुनमें रामायण कुरान वगैरा पुस्तकें थीं। जिस बारेमें पता लगाना और पुस्तकें आसानीसे मिल जाय तो भेज देना। मुझे जल्दी नहीं है।

वहां कौन कौन हैं और क्या करते हैं मुझे लिखना। तेरा खास काम क्या है? मेरे बारेमें किसीको चिन्ता करनी ही नहीं चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

पुस्तकालय कौन संभालता है?

११

[अिस पत्रमें तारीख नहीं है। लेकिन यह पत्र १२–५–१ और २१–६–१ के बीचका होना चाहिये। आगे १६–७–१ के पत्रमें पूज्य महात्माजीने अंग्रेजी पत्र तो गया ही लिखा है। अिसलिये जाहिर है कि जेलवालोंने यह पत्र अुन्हें दिया नहीं था।]

य म
मौनवार

चि प्रेमा

सत्ताधारियोंने तेरा ही पत्र रोका है अैसा मालूम होता है। यह सारा निर्दोष होगा लेकिन क्या हो सकता है? अगर सारे पत्र मिल जायं तो जेलका अर्थ निरर्थक हो जाय न? दुबारा लिखना।

बापूके आशीर्वाद

१२

य मं
२१–६–१

चि प्रेमा

तेरा सुन्दर पत्र मिल गया। तेरे पत्रोंकी मुझे परवाह न हो तो केवल सभ्यताके लिये तो मैं नहीं मांगूंगा।

गुलमहर और कमला मुझे बहुत अच्छे लगे। दूसरी बहनसे तो मिलना हो तब सही।

तू कच्चा शाक खाना मत छोड़ना। कच्चे करेले जरूर खाये जा सकते हैं। मैंने तो खाये हैं। कोमल करेले लेकर अुनको छिल लेना अुसमें नींबू निचोड़ना लेकिन कभी शाक बिलकुल न मिले तो अुसके बिना भी चला लेना चाहिये। अुसके बदले त्रिफला लेना चाहिये। बना हुआ शरीर

बिगाड़ना नहीं चाहिये। भूख ज्यादा लगती हो तो दही-दूधकी मात्रा भले बढ़ा दी जाय। पैसेका खयाल मत करना। अन्तमें क्या निर्णय किया यह लिखना।

किसी बातका जवाब देना रह गया हो तो फिर पूछ लेना।

बापूके आशीर्वाद

१३

[अखबारके संवाददाताके रूपमें श्री पुरन्दरे डांडी-कूचमें शामिल हुअे थे। बादमें पूज्य महात्माजीने अुन्हें सैनिकके रूपमें सत्याग्रही-दलमें दाखिल किया था। मैंने अिसका कारण पूछा था अिसका अुत्तर यह है।]

यरवडा मंदिर,
६—७—३

चि प्रेमा

तेरा १ जुलाईका पत्र मुझे दिया गया है। सूरतमें फल मिलते हैं यह अच्छा हुआ।

पुरन्दरेको मैंने अिसलिये लिया कि अनुभवसे मैंने नियम-पालनमें अुसे दृढ़ पाया। अुसका खरापन मुझे अच्छा लगा। यह बात अखबारमें नहीं छापी जा सकती।

फूलों और पेड़ोंके साथ मेरी ओरसे बात करना। अुनके भाअी-बहन यहां भी हैं। अिसलिये सन्तोष मानें न?

कुल मिलाकर तेरे दो ही पत्र मुझे मिले हैं। बम्बेका पत्र तो नहीं ही मिला।

बापूके आशीर्वाद

१४

यरवडा मंदिर,
११-७-३

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। निर्मलाके[1] पत्रमें उसकी हिन्दीकी सुन्दर छाया है, तेरे पत्रमें मराठीकी। "वैसे वेद रहित क्यों।"[2] भाषामें होनेवाली ऐसी वृद्धि मुझे अच्छी लगती है। कुछ बरस बाद तो मैं मराठी अच्छी तरह समझ लेनेकी आशा रखता हूं। प्रयत्न तो रोज चलता ही है।

अंग्रेजी पत्र तो गया ही।

छगन नायर[3]के बारेमें समाचार आये हैं।

तेरे गुजराती अक्षर उत्तरोत्तर सुधर रहे हैं।

भावना कभी बार कष्टप्रद सिद्ध होती है। लेकिन भावनाहीन मनुष्य पशुतुल्य है। भावनाको सही दिशामें ले जाना हमारा परम कर्तव्य है।

कच्छ करेले पाकर तो देखने ही चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्व. महादेवभाईकी छोटी बहन जो उस समय आश्रमके विद्यालयमें पढ़ती थी।

२ अर्थ है निराशा मुक्तकी रचा।

३ सत्याग्रह आश्रमके कार्यकर्ता। खादी-भूषण बाद दिल्ली गये थे। वहां उन्होंने आन्दोलनमें भाग लिया था। आजकल कांग्रेसमार्फ सदस्य हैं।

१५

यरवडा मंदिर,
१९—७—१

चि॰ प्रेमा

तेरा विनोदी और समाचारोंसे भरा हुआ पत्र मिला। ऐसे लिखती ही रहना। यहां बीमार न पड़नेकी आशा तो रखता हूं। मुझे कुछ हो गया होगा यह मान कर मैं न मौके पर मेरी मददमें रहनेवाली प्रेमा और वसुमतीको कहांसे लाऊंगा? मेरा वजन घटनेकी बात गलत समझना। मेरी तबीयत अच्छी ही मानी जायगी।

बापूके आशीर्वाद

१६

यरवडा मंदिर,
२८—७—१

चि॰ प्रेमा

तुझे लिखनेमें मुझे कष्ट नहीं होता। तेरा मिजाज ठीक है। हिन्दुस्तानके प्रश्नोंको सुलझानेमें मुझे जितना रस आता है उससे भी ज्यादा आश्रमके और उसमें भी बहनोंके प्रश्न सुलझानेमें आता है। क्योंकि उसमें बड़े प्रश्नोंको सुलझानेकी चाबी छिपी रहती है। जैसा पिंडमें है वैसा ब्रह्माण्डमें है। ब्रह्माण्डको जानने जायें तो भूल करेंगे परन्तु पिंड तो हमारे हाथमें है।

आश्रम ठीक चलता मालूम होता है।

लीला अब ठीक हो गयी होगी।

मैंने जान-बूझकर करेले खा देखनेकी सलाह दी है।

भावना सीधे मार्ग पर जा सकती है। मुझे सीधे मार्ग पर ले जाना परम धर्म है। पुरुषार्थ पक्ष एकांगी है। और कोनसा उद्गम पक्ष बयान पर जाता है?

पुरन्दर 'अनासक्तियोग' का अनुवाद जरूर करें।

बापूके आशीर्वाद

१७

यरवडा मंदिर,
२–८–१

चि० प्रेमा

निर्दोष नींद लेनेके लिये जाग्रत अवस्थामें हमारे आचार-विचार निर्दोष होने चाहिये। निद्रावस्था जाग्रत अवस्थाकी स्थितिको जांचनेका दर्पण है। भावनाको गलत मार्गसे रोकनेकी शक्ति हम सबमें होती ही है। यह सुस्पष्ट प्रयत्न है। जिस प्रयत्नमें हारके लिये स्थान ही नहीं है।

कृष्णकुमारी कमलाबहनसे किस बातमें अलग दिखाअी देती है?

यहां बादल तो पिछले डेढ़ महीनेसे रहते हैं लेकिन बरसात बहुत कम होती है। पर अहमदाबादके सामान्य पैमानेसे बहुत कम नहीं होती।

अैसा उचित है कि मुझे कैदियोंको पत्र नहीं लिखना चाहिये। कृष्ण नायरको मेरे आशीर्वादके साथ यह लिख देना। अुससे मुझे बड़ी बड़ी आशायें हैं।

बापूके आशीर्वाद

१८

[१९२९ की श्रावणी पूर्णिमाके दिन अपने हाथके सूतकी राखी बनाकर और अपनी मुट्ठीमें छिपा कर मैं पूज्य महात्माजीके पास गयी। शामकी प्रार्थनासे पहले वे हृदय-कुंजके आंगनमें लड़कियोंसे पैर दबवा रहे थे। मैंने धीरेसे पूछा “महात्माजी मैं राखी लाअी हूं। आपकी कलाअी पर बांध दूं?” अुन्होंने पूछा “कहां है राखी?” मैंने मुट्ठी खोल कर बताअी। “बहुत सुन्दर है। ले बांध दे!” अैसा कह कर अुन्होंने अपना दाहिना हाथ आगे किया। मैंने वहां राखी बांध कर प्रणाम किया। लड़कियोंने शोर मचाया “राखी तो बहुत बांधनी है। प्रेमाबहनने कसके बांधा

२

थी? पूज्य महात्माजीने पूछा "क्यों? तुम्ही नहीं बांध सकती?" यह राखी पूज्य महात्माजीने दशहरे तक हाथमें बंधी रहने दी। लड़कियां बादमें मुझसे कहने लगीं "बापूको राखियां भेंटमें मिलती हैं, लेकिन अुन्हें वे मेज पर ही रख देते हैं हाथमें नहीं बांधते। फिर तुम्हारी ही राखी कैसे बांध ली?" मैं क्या जवाब देती? लेकिन अुसके बादसे मैं हर साल अुन्हें राखी देती थी। पास होती तो खुद अपने हाथसे बांध देती थी। दूर होती तो डाकसे भेजती थी। अुनके अवसान तक यह क्रम चला। गोलमेज परिषदके लिअे वे विलायत गये तब भी अुनके हाथमें मैंने राखी बांध दी थी। स्टीमर पर खींची गयी अुनकी फोटोमें वह दिखाओ देती है।

पूज्य महात्माजीको मैंने लिखा था "अिस साल श्रावणी पूर्णिमाके दिन आप पास नहीं हैं। जेलमें हैं। राखी तो भेजूंगी लेकिन आपके हाथमें कौन बांधेगा?"]

यरवडा मंदिर
८-८-१

चि॰ प्रेमा

पिछले वर्षका रक्षा-बंधन याद है। सबका आश्चर्य भी याद है। तू बंध गयी यह याद रखनेकी जरूरत नहीं है क्योंकि वह बन्धन जारी है। अिस बार तेरे अधिकारका अुपयोग काकासाहब करेंगे। लेकिन अैसा करते हुअे यदि वे भी बंध गये तो? लेकिन जो कभीके बंध चुके हों अुन्हें क्या डर? अिसलिअे कठिनाओ जैसी कोओ बात नहीं है जो बांधे अुसका तो ठीक लेकिन जो बंधवाये अुसका क्या हाल हो?

पुस्तकालयकी सावधानी तू रखती है, यह मुझे अच्छा लगता है। धीराकी तबीयत अच्छी हो जानी चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

१९

यरवडा मंदिर,
१८-८-३

चि. प्रेमा

तू अधीर मत होना। मनको जीतना सरल नहीं है। लेकिन प्रयत्नसे वह जीता जा सकता है, असी अटल श्रद्धा रखनी चाहिये।

फोड़ोंका शरीर पर कैसा असर हुआ? अुनका रस निकाल देनेकी कोअी जरूरत नहीं होती। अुन्हें काटकर या घिस कर प्याजका रस, नींबू और नमकके साथ लिया जा सकता है।

प्रार्थनाकी आवश्यकताके बारेमें सारे जगतका अनुभव है। अुस पर विश्वास रखें तो मन जमता है।

बहुत जल्दी है।

बापूके आशीर्वाद

२०

यरवडा मंदिर,
२२-८-३

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। श्रावणी पूर्णिमाके दिन तेरी राखी काकाने[1] बांधी थी और तेरी ओरसे प्रणाम भी किया था।

पंडितजी[2]का धैर्य और अुनका त्याग तूने लिखा वैसा ही है। अुनमें सहनशक्ति भी बहुत अूंचे दरजेकी दिखाती है।

अबसे आगे न तो तू दस बजे तक जागना न दूसरोंको जगाना। नौ बजे हमें बिस्तर पर लेट ही जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री काकासाहब कालेलकर। अुस समय पूज्य महात्माजीके साथ ही जेलमें थे।

२ स्व० पं० नारायण मोरेश्वर खरे। संगीत-शास्त्री आश्रमवासी।

२१

मरवडा मंदिर
२१-८-३०

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे कागजके पुरजे देखकर कोअी हंसे नहीं न रोष करे। मुझे यही शोभा देता है। अैसे पुरजे काममें लाने पर भी जो समय मिलता है अुसमें जितनी शोभा मैं अुंडेल सकता हूं अुतनी अुंडेलना चाहता हूं।

तेरे शरीरमें रोग है अैसी शंकासे तू भयभीत क्यों होती है? रोग हो तो भी क्या और यह रोग भारी हो तो भी क्या? 'देह जावो अथवा राहो पाडुरंगी दृढ भावो।'[1] आश्रममें तूने कमसे कम जितना तो सीखा ही है। थोड़े अुपवास कर डाल तो तेरा शरीर स्वच्छ हो जायगा। अुसके बाद कटिस्नान और विशेष रूपसे शिश्न-घर्षण-स्नान (फिक्शन सिट्झ) आवश्यक है। तुझे अिनकी जानकारी न हो तो काशी या राधासे पूछना। वे जानती मालूम होती हैं। क्यूनेकी पुस्तकसे अिनके विषयमें पढ़ भी लेना। स्त्रियोंको कुछ रोग होता है तब मासिक धर्मके बारेमें हमेशा जाननेकी जरूरत होती है। मासिक धर्म तुझे ठीक आता है? नियमसे होता है? तकलीफ होती है? डॉक्टरकी सलाह लेनेकी जरूरत हो तो लेना।

---

१ देह जावो अथवा राहो यह अुक्ति महाराष्ट्रके संतकवि श्री नामदेवकी है। मेरे शरीरमें रोग प्रवेश करे, तो सेवा करनेके बजाय मुझे सेवा लेनी पड़ेगी, मैं अपंग हो जाअूंगी अिस कल्पनासे मैं बेचैन हो गयी थी। शरीरमें कष्ट बढ़ने लगा अुसका कारण बादमें मालूम हुआ। शाकके रूपमें कच्चे करेले सतत खानेसे मुझे पीलिया हो गया।

अरविन्दबाबूकी पुस्तक मैंने नहीं पढ़ी है। मेरा वाचन कितना कम है, यह तो मैं ही जानता हूं। मेरा धंधा ही मुख्यतः कुदरतकी पुस्तक पढ़नेका रहा है। और अुसका वाचन पूरा हो ही नहीं सकता।

नींद तो पूरी लेनी ही चाहिये। ९ से ४ का नियम पालना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

२२

यरवडा मंदिर,
१-९-१

चि० प्रेमा

तूने अब स्वास्थ्यकी चिन्ता छोड़ दी होगी। जमनादास[2]ने क्यों सबको *मिलनेसे अिनकार कर दिया? ज्यादा समाचार मिले हों तो लिखना।*

आश्रमके पुस्तकालयमें हर भाषाकी कितनी पुस्तकें हैं, अिसका किसीने हिसाब लगाया है? पुस्तकालयके लिये कितना समय देना पड़ता है? ढोरोंका अुपद्रव कैसा है? बरसात अब तो नहीं होती होगी। यहां बहुत थोड़ी हुई है। आज ठीक पानी बरस रहा है। अुमस भी बहुत थी।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री अरविन्द घोष (१८७२–१९५)। आधुनिक भारतके महान योगी। बंगभंग आन्दोलनमें प्रमुख भाग लिया। १९ ८में मुजफ्फरपुर बम केसमें पकड़े गये। निर्दोष छूटनेके बाद वे अध्यात्म-मार्गकी ओर मुड़े। १९१ से पांडिचेरी जाकर रहे। १९५ में अुनका अवसान हुआ तब तक वहीं रहे।

२ पूज्य महात्माजीके भतीजे। स्व० मगनलालभाई गांधीके छोटे भाई। अुस समय राजकोट जेलमें थे।

२३

११-९-३

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। अब तबीयत अच्छी हो गयी होगी। उसके नियमका पालन करना ही चाहिये। जिनका कोओ काम कम कर देना चाहिये या अभी पढ़ना वगैरा छोड़ देना चाहिये। पूरी नींद लेने पर मुत्साह बढ़ेगा। जिससे वही काम थोड़े समयमें हो सकेगा। लेकिन जैसा हो या न हो ९ से ४ तक शान्ति रखना चाहिये और सोना ही चाहिये। जिस पर तुरन्त अमल करना। तू बहस न करे तो अच्छा हो। बहस करने जैसी बातोंमें खूब करना जिसमें नहीं।

कमलाबहन[1] मंडलीसे मिलती की या नहीं?

अध्यापक लिमये[2] ने अनासक्तियोग का अनुवाद किया है और वह छपेगा यह दूसरोंको बताना।

मीक (डर) मराठी मीक गुजराती।

बापूके आशीर्वाद

२४

९ -९-३

चि० प्रेमा

तेरा लम्बा पत्र मिला।

तबीयत ठीक रहे तो मेरे लिये सूचना देनेकी जरूरत नहीं है।

परिचमकी मुत वो बहनोंके सम्पर्कमें तू आती है या नहीं? न आती हो तो आना।

---

१ अेक अमेरिकन बहन आश्रममें आयी थीं। नाम कमलाबहन रखा – Miss Betty Lundy। अेक भारतीय भाओीके साथ विवाह करनेवाली थी।

२ अध्यापक लिमये। पूनाके तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठकी तरफसे जो महाविद्यालय पूनामें राष्ट्रीय शिक्षणका कार्य कर रहा था अुसके आचार्य।

अभी तो तेरी सारी जिन्दगी औश्वरने मुझे सौंप दी है[1] अैसा मालूम होता है। अैसा ही अन्त तक चलेगा।

सुशीला[2] कहांकी है? यह मुझे अंग्रेजीमें पूनेसे लिखती है? नाम तो गुजराती या मराठी जैसा है। तामिल तो नहीं है। तामिल ही तो माफ किया जा सकता है नहीं तो पूनेसे मातृभाषामें भेजे।

बापूके आशीर्वाद

२५

[सांझ-कूचसे पहलेकी बात है। पूज्य महात्माजी रातको खाट पर सोते तब मैं अुनकी तीन चादरें अुन्हें ओढ़ाती थी। लेकिन तीनों लगभग अेकसी दिखाओ देती थीं जिसलिये कभी कभी मैं अुनका क्रम भूल जाती थी।]

यरवडा मंदिर,
२८-९-१

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। ओढ़ानेमें तू क्रम भूलती थी यह कैसे याद न रहे? रोज वहीकी वही भूल सहन करनेवाला पिता कितना अच्छा होना चाहिये?

आश्रम-भजनावलि में ८४ वें[3] भजनकी तीसरी पंक्ति यों है कमल ध्याने मोट बांधी। जिसका अर्थ तू समझती हो तो तू, अथवा बालजीभाओ

---

१ पूज्य महात्माजीकी वर्षगांठके निमित्त अपनी सारी जिन्दगी मैंने अुन्हें अर्पित की थी।

२ श्री सुशीलाबहन पै। मेरी सहेली और अुस समय राजकोटकी वनिता विश्राम संस्थाकी संचालिका।

३ कोओ बन्धो कोओ निन्दो वाला भजन। १९५६ के संस्करणमें जिसका नंबर ७९ है।

४ अध्यापक श्री बालजी गोविन्दजी देसाओ। अेक आश्रमवासी। अुन्होंने पूज्य बापूजीकी कुछ मूल गुजराती पुस्तकोंका अंग्रेजीमें अनुवाद किया है। आजकल पूनामें रहते हैं।

अथवा तोतारामजी[1] अथवा जो भी कोअी जानता हो अुससे समझ कर तू भेजना अथवा जो जानता हो वह भेजे।

कमलाके साथ मित्रता की यह अच्छा किया। अुसे परेशानी न हो। अुस पौलिन्गर[2] नामकी बहनके साथ भी मित्रता कर ली? न की हो तो करना। आश्रमके नियमोंके बारेमें अुसके मनमें कुछ प्रश्न हैं। तेरे साथ चर्चा करे तो अुस पर चर्चा करना और अुसे सन्तोष दिलाना।

अब तबीयत कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

२६

[दांडी-कूचके समय पूज्य महात्माजी अपनी खड़ाऊं आश्रममें रख गये थे। मैंने अुनकी मांग की थी। अुसका अुत्तर अिसमें है।

आश्रममें दिन-रात सेवाकार्यमें ही बीतते हैं, वाचन-चिन्तनके लिअे समय नहीं मिलता अैसी शिकायत मैंने की थी। अिस बारेमें पत्रके पिछले भागमें कर्तव्य-कर्म पर प्रवचन किया है।]

यरवडा मंदिर,
२-१०-१

चि॰ प्रेमा

खड़ाऊं चाहिये तो जरूर रखना। लेकिन अिन लकड़ीके टुकड़ोंका तू क्या करेगी? अुनसे तेरा काम दो दिन चले तो भले ही अुनका संग्रह कर। मैं तो अिसे मूर्तिपूजा कहकर अिसकी निन्दा करता हूं। अपने पिताजीका चित्र मैं रखता था। दक्षिण अफ्रीकामें अपने दफ्तरमें बैठकमें

१ वृद्ध तोतारामजी आश्रमकी खेतीबाड़ीका काम करते थे। वे कबीरपन्थी भक्त थे। अुन्होंने बहुत वर्ष फिजीमें खेती करनेमें बिताये थे। फिर अपनी पत्नी गंगादेवीके साथ सत्याग्रह आश्रममें आकर रहे।

२ अेक स्विस बहन। कदकी छोटी लेकिन पुरुष-वेशमें रहती थीं। स्त्रियोंके अधिकारोंके बारेमें विशेष मत रखती थीं। थोड़े दिन आश्रममें रहकर वापस चली गयीं।

और सोनेके कमरेमें मैंने अुनके चित्र रखे थे। मैं सोनेकी जंजीर पहनता था तब अुसमें लॉकिट भी रहता था। अुसमें पिताजी और बड़े भाअीका चित्र रहता था। अब ये सब छोड़ दिये हैं। अिसका यह अर्थ नहीं है कि मैं अुनको कम पूजता हूं। आज वे मेरे हृदयमें अधिक अंकित हैं। अुनके गुणोंका स्मरण करके मैं अुनका अनुकरण करनेका प्रयत्न करता हूं और असी भक्ति असंख्य देवोंकी कर सकता हूं। लेकिन अुनके चित्र संग्रह करने लगूं तो मेरे पास जगह भी न रहे। और अुनकी खड़ाअूं वगैरा रखने लगूं तो नयी जमीन लेकर अुसका मालिक बनना पड़े। अिसलिये अनुभवीकी तुझे यह सलाह है कि मेरे जितने कदम सही दिशामें पड़ते हों अुन कदमों पर तू चल। यह खड़ाअूं रखनेसे हजार गुना अूंचा काम है और अुसे देखकर कोअी नकल करे तो अच्छा है। लेकिन तेरे पास खड़ाअूं देखकर अुसका कोअी अन्धा अनुकरण करने लगे तो वह खड्डेमें ही गिरेगा न? अितना समझ ले और फिर यथेच्छसि तथा कुरु।

जो कर्तव्य-कर्मको समझता है और अुस पर आचरण करता है अुसकी तृष्णा तो मिटती ही है। जिसकी तृष्णा नहीं मिटी अुसे कर्तव्य-कर्मका भान ही नहीं है। तृष्णाका पर्वत तो अितना अूंचा है कि अुसे कोअी पार कर ही नहीं सकता। अुसे धराशायी किये बिना अन्य कोअी अुपाय नहीं है। तृष्णा छोड़ना अर्थात् कर्तव्यका भान होना। मुझे मालूम हो कि मुझे काशी जाना है, वहां जानेका मार्ग भी मुझे मालूम हो तो फिर मुझे कौनसी तृष्णा अुस मार्गसे — कर्तव्यसे — हटा सकती है? मेरी तृष्णा ही काशीके मार्ग पर जानेकी हो और वह पूरी हो जाय तो फिर बाकी क्या बचा? सहज-प्राप्त सेवा तेरे पास है। अुसे अेकनिष्ठासे तू करती रहे, तो अुसमें तुझे पूर्ण संतोष मिलना चाहिये। अुसके सिलसिलेमें जो साथ मिले जो पढ़नेको मिले वह ग्राह्य है अुसके सिवा दूसरी चीजका विचार भी नहीं होना चाहिये। यही मेरी दृष्टिमें योग कर्मसु कौशलम् है। यही समत्व और समाधि है।

लेकिन यह सब तुझे व्यर्थ लगे और तेरी आत्मा वाचन आदि चाहे तो अुसे अुसीसे तृप्त करना। मनका बोझ हलका करना और आराम

लेना। यह कैसे हो यह तो नारणदाससे मिलकर ही तू विचार कर सकती है। नारणदास दीर्घदर्शी है, धैर्यवान है और साधु-चरित है। वह तेरी मदद जरूर करेगा। दूसरी सान्त्वना तो क्या दूं? मेरे जैसे कुछ दिशा-सूचन ही कर सकते हैं। वैसे तेरी और हमारी सबकी शान्तिका सच्चा आधार तो अपने हृदयके अूपर ही है।

सुशीलाके बारेमें समझा। अब तो वह मराठीमें खत भेजे। अुसे मेरा आशीर्वाद।

पंडितजीका संगीत सुननेके बाद तेरे जैसी लड़कीको दूसरा अच्छा न लगे यह मैं समझता हूं। लेकिन तू स्वयं भजन क्यों न गाये? हिम्मत हो तो शाम करना। तू कहे तो मैं लिखूं। तुझे गाना आता तो है। लगभग रोज रातको तू गाती थी यह मैं भूला नहीं हूं। तेरे गलेकी स्थिति कैसी है? डॉ. हरिभाऊकी दिखाया था न?

बापूके आशीर्वाद

—

२७

यरवडा मंदिर,
१२-१-३२

चि. प्रेमा

दोनों अर्थ अच्छे हैं। नाथजीका अधिक अभिप्रेत हो सकता है। तू शान्त हो गयी है यह सद्भाग्य है।

---

१ श्री नारणदासभाअी गांधी। पू. महात्माजीके तीसरे भतीजे। दांडी-कूचके लिअे रवाना होनेसे पहले अुन्हें सत्याग्रह आश्रमका मंत्री नियुक्त करके पूज्य महात्माजीने आश्रमसे सदाके लिअे बिदा ली थी। सन् १९३४ से नारणदासभाअी राजकोटमें रहते हैं। वहां महान तपस्या करके रचनात्मक कामका अुन्होंने खूब विस्तार किया है।

२ श्री केदारनाथजी। स्व. श्री किशोरलाल मशरूवालाके गुरु। श्री नाथजीका पूरा नाम है श्री केदारनाथ कुलकर्णी। सन् १९०५ से १९११ के बीच वे क्रान्तिकारी दलमें काम करते थे। फिर आध्यात्मिक विकासके लिअे हिमालय चले गये और वहां घोर तपस्या की। वहांसे नयी दृष्टि

सरोजिनी देवी' के हृदयमें प्रवेश करना। अुसे सहानुभूति और प्रेमकी जरूरत है। अैसे कामोंके लिअे थोड़ी फुरसत निकालना। अभी तो बड़ी जिम्मेदारीके काम करने बाकी हैं।

अब तेरी तबीयतकी चिंता दूर हो गअी क्या? शरीर बिलकुल चंगा लगता है? खुराक क्या लेती है?

बापूके आशीर्वाद

२८

[मैं बीचमें बम्बअी हो आअी थी।]

यरवडा मन्दिर,
१८–१ –३

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। बंबअीका अनुभव लिखना। यका डॉक्टरको नहीं दिखाती यह ठीक नहीं है। रोगको शुरू होते ही दवा देना चाहिये। समय पर लगाया हुआ अेक टांका आगेके नौ टांकोंको बचाता है, यह कहावत बिलकुल सच्ची है।

लेकर वापस आये। पूज्य महात्माजीके प्रति अुन्हें आकर्षण हुआ। भारतमें आध्यात्मिक योग्यता रखनेवाले चरित्रवान पुरुषोंमें अुनकी गणना है। वे महाराष्ट्री हैं फिर भी अुनके भक्तोंमें गुजराती लोग ज्यादा हैं। थोड़े महीने पहिले शारीरिक व्याधिके कारण जाती हुअी अपमृत्युसे वे बच गये। आज अुनकी आयु ७८ वर्षकी है। बंबअीमें रहते हैं।

१ अुत्तर प्रदेशके कांग्रेस कार्यकर्ता श्री सीतलासहायजीकी पत्नी। अपने पति और दो लड़कियों (जिनमें अेक छोटी चीका थी) के साथ वे सत्याग्रह आश्रममें रहती थीं (१९२९–३)। लेकिन अुन्हें वहां अच्छा नहीं लगता था। अुनके पति काकोरी केससे छूटकर आश्रम लेनेके लिअे आश्रममें आये थे।

२ मेरे गलेकी तिल्लियां बढ़ गअी थीं। अुसका असर मेरी आवाज पर होता था।

मूर्तिपूजाके मैं दो अर्थ करता हूं। अेकमें मनुष्य मूर्तिका ध्यान करते हुअे गुणोंमें लीन होता है। यह अच्छी पूजा है। दूसरेमें गुणोंका विचार न करके वह मूर्तिको ही मूल वस्तु मानता है। यह बुतपरस्ती नुकसान करती है।

बापूके आशीर्वाद

२९

य मं
२९–१ –३

चि. प्रेमा

नासिकसे लिखा हुआ पत्र मिला। अुरन्नरके अनुवादके बारेमें मैंने क्या लिखा था यह याद है न? अनुवाद कर लिया तो अभी कर लिया लेकिन छपनेके अनुवादके बाद अुसे छपवाना या नहीं यह विचारनेकी बात है। आराम करनेसे तबीयत अच्छी है यह बताता है कि तू कामका बोझ सिर पर अुठाये फिरती है। काम करने पर भी अुसका बोझ न लगे यह अनासक्तिका गुण है।

बापूके आशीर्वाद

३०

[सन् १९२९ के चौमासेमें पूज्य महात्माजीने आश्रममें सबसे कच्चे आहारका प्रयोग कराया था। अुसमें मैं भी थी। मैंने तो आठ ही दिन करनेकी अिजाजत ले ली थी। लेकिन तीन दिन बाद ही अुलटियां वगैरा हुअीं और बादके चार दिन मुझे लगभग अुपवास ही करना पड़ा। फिर मैंने पूज्य महात्माजीसे अिजाजत लेकर कच्चा आहार छोड़ दिया। लेकिन अुन्होंने मुझे हमेशाकी खुराकमें थोड़ा कच्चा शाक और दही या दूध —ये तीन चीजें खानेकी सलाह दी। वे मैंने श्रद्धापूर्वक खाअीं। चौमासेकी शुरूआतमें करेलेके सिवा कोअी शाक ही नहीं मिलता था, अिसलिअे अुस बीच मैंने अुबाला हुआ शाक खानेकी अिजाजत मांगी। पूज्य महात्माजी समझाने लगे कि करेले कच्चे ही खाये जा सकते हैं। अुसकी तफसील

अिसके पिछले अेक पत्रमें आ ही चुकी है। (देखिये पत्र १२, १४ १५ १९) मैंने वैसा ही किया। रोज दोनों समय कच्चे करेले खानेसे धीरे धीरे मुझे पीलिया हो गया और सारा शरीर पीला पड़ गया। यह जाननेके बाद जिस पत्रमें ७ दिनका अुपवास करनेका आदेश मिला जो मैंने कुछ दलीलोंके बाद कर डाला। अुसके बाद मैंने कभी भी कच्चे करेले नहीं खाये।]

यरवडा मन्दिर,
१-११-१

चि० प्रेमा

तुझे पीलियेके चिह्न हों खट्टी डकारें आती हों तो मेरा विश्वास है कि तुझे कमसे कम सात दिनका अुपवास करना चाहिये। अिस बीच सोडा या नमक डालकर कमसे कम चार सेर पानी रोज पीना चाहिये। फिर हरे मेवेके रससे अुपवास छोड़ना चाहिये। और आखिरमें पककर छाछ-चावल लेना। अुपवासके दिनोंमें अेनिमा लेना ही चाहिये और कटिस्नान करना चाहिये। सात दिनके अुपवासमें खाट तो नहीं पकड़नी पड़ेगी। थोड़ा-बहुत काम भी किया जा सकता है। अुपवाससे नुकसान तो होता ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

२१

य० मंदिर,
१५-११-१

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। डॉक्टरसे मिली यह तो अच्छा ही किया। लेकिन मैं अपने अुपचार पर ही कायम हूँ। डॉक्टरका अिलाज आखिरमें करे ही करना। लेकिन कमसे कम सात दिनका अुपवास तो कर ही डालना। अुपवाससे हमें डर तो होना ही नहीं चाहिये। सात दिनके अुपवासमें तेरे व्यवसायका काम तू कर सकेगी। जिन्दगीमें जब पहली बार मैंने लम्बा अुपवास किया था अुस समय अेक दिनका भी आराम नहीं लिया

था और कोअी दिक्कत भी नहीं हुअी थी। यह अुपवास सात दिनका था। शरीरमें अुस समय थोड़ी-बहुत चर्बी थी। जिसके पास चर्बीका संग्रह नहीं होता अुसे ही अुपवासमें बिस्तर पर पड़े रहना पड़ता है। दो दिन बाद तो तुझे पहलेसे ज्यादा शक्ति मालूम होगी। दो दिन झूठी भूख लगेगी जरूर फिर तो भूख भी नहीं लगती। और अन्तमें खूब शुद्ध होता है तब भूख लगती है। अुस बीच अेनिमा लेकर मल तो साफ करना ही चाहिये। अेनिमा लेनेके बाद सर्व-प्रक्षालन करनेसे पानी अूपरकी आंतड़ियों तक पहुंचता है। लेकिन जिस आसनकी जानकारी न हो तो अैसा न करना। अुपवासके दिनोंमें पानीमें सोडा और नमक डालकर खूब पीना चाहिये। हर आठ औंस पानीमें पांच ग्रेन नमक दस ग्रेन सोडा मिलाकर अैसे आठ प्याले तक आसानीसे पीये जा सकते हैं। अुसमें मैठा। तू बिना संकोच जितना करे, अैसा मैं चाहता हूं। डॉक्टरसे कहना हो तो कहना। शायद वे भी यह इलाज पसन्द करें। अब तो बहुतसे डॉक्टर अुपवासका चमत्कार जानने लगे हैं।

बापूके आशीर्वाद

१२

[सत्याग्रहकी लड़ाअीमें कूद पड़नेकी आकांक्षा रख कर ही मैं सत्याग्रह आश्रममें तालीमके लिअे गअी थी। जब नमकके सत्याग्रहकी तैयारियां शुरू हुअीं आश्रममें नवचेतन आया और महात्माजीने कूचके लिअे साथियोंके नामकी मांग की तब मैंने अुनसे पूछा "क्या बहनोंको अिस लड़ाअीमें भाग लेनेकी अिजाजत नहीं मिल सकती? तब महात्माजीने कहा क्यों नहीं? भाअियोंकी तरह बहनोंकी बारी भी आयेगी ही! मैंने मुस्कराते कहा, तो मेरा भी नाम लिखियेगा। मुझे जाना है। महात्माजीने हंसते हंसते कहा "तुझे तो मैं झंडाधारी बनाअूंगा।

करांचीमें कानून भंग करनेके बाद विदेशी कपड़े और शराबकी दुकानों पर धरना देनेके लिअे पूज्य महात्माजीने बहनोंका आह्वान किया। आश्रमकी बहुतसी बहनें तैयार हुअीं। मैं भी जाना चाहती थी। हमारी अेक टोली पूज्य महात्माजीसे मिलने नवसारी पहुंची। अुस समय वे

वहां ठहरे हुये थे। महात्माजीने आश्रमकी बहुतसी बहनोंको सत्याग्रही सैनिक बननेकी सम्मति दी। वहां जानी हुयी सब बहनोंको गिरफ्तार मिली लेकिन मुझे बुन्होने मना कर दिया। आश्रममें रहकर वहीं सेवा कार्य करनेका आदेश दिया। मुझे दुःख तो हुआ लेकिन बुनकी आज्ञाके अनुसार मैं वापस आकर काममें अेकाग्र हो गयी। बुस समय आश्रमके मंत्री श्री नारणदासभाजी गांधी थे। आश्रमका रसोजीघर, भंडार पुस्तकालय कार्यालय विद्यालय मेहमानोंकी व्यवस्था सफाजी — लगभग सभी कामोंकी व्यवस्था मेरे सिर पर आ पड़ी। बहुतसी बहनें जेल गजीं लेकिन बाहरके समाजसे जेल जानेवाले मां-बापोंके बच्चों पतियोंकी पत्नियों बगैरा निराश्रितों से आश्रम भर गया। नये आते पुराने जाते। जैसा चलता था। आश्रममें लगभग १५०–२ आदमी तो रहते ही थे। मेरी आयुकी मर्यादाके अनुसार काम कुछ अधिक हो जाता था। फिर भी महात्माजीके आदेशको वैराग्य मानकर मैं प्रयत्नपूर्वक काम करती थी। बादमें जेल जाकर आनेवाली बहनें और परिचित भाजी सब आकर मुझे बुत्तेजित करने लगे (विनोदमें ही) "क्यों? आप कैसे सत्याग्रहमें नहीं कूदतीं? आपको तो सबसे आगे रहना चाहिये था।" मुझे बुरा तो लगता ही था लेकिन मैं नरम जवाब दिया करती थी। अेक दिन अहमदाबादसे श्री मोहनलालभाजी भट्ट आये और बातों ही बातोंमें मुझसे पूछने लगे "क्या तुम यहां आश्रमकी दीवारोंको संभालनेके लिये बैठी हो?" जिससे मुझे बहुत ही बुरा लगा और मैंने महात्माजीको पत्रमें लिखा कि 'आपकी आज्ञा मानकर मैं यहां सेवाकार्य करती रहती हूं। लेकिन लोगोंको अगर जैसा लगे कि मुझे जेल जाना अच्छा नहीं लगता डर या आरामकी जिच्छासे मैं यहां बैठी हूं तो मुझे यह अपमानजनक लगेगा।' मेरी भावनाको समझकर पूज्य महात्माजीने मुझे समझानेके लिये दलील दी।

पूज्य महात्माजीने मुझे १४ दिनका गीतापाठ ७ दिनमें पूरा करनेकी मुझे सलाह दी तब मैंने बुनका विरोध किया। आश्रममें सुबह चार बजे बुठकर १५–२ मिनटमें प्रार्थना-भूमि पर हाजिरी देनी पड़ती थी। यह ज्यादातर लोगोंको पसन्द नहीं था। शामकी प्रार्थनामें लगभग

सभी लोग अिकट्ठे होते थे। सुबह खास तौर पर बरसात या जाड़ेमें जल्दी अुठनेकी किसीकी तैयारी नहीं होती थी। मैं शुरू शुरूमें आश्रम पहुँची तभीसे यह सब देखा करती थी। पूज्य महात्माजी आश्रममें होते तब थोड़े-बहुत लोग (खास तौर पर पुरुष ही) सुबहकी प्रार्थनामें शामिल होते थे। वे बाहर जाते तब अुतने भी नहीं आते थे। बरसातकी अेक सुबह हृदय-कुंजके बरामदेमें प्रार्थना हुअी तब भी बालकोबाजी भी सूर्यभानजी और मैं तीन ही हाजिर थे। दांडी-कूचसे कुछ दिन पहले अनुशासन कुछ कड़ा हुआ तब सुबहकी प्रार्थनामें सभी लोग शामिल होने लगे। बादमें भी यह अनुशासन चला। गीतापाठके कारण सुबहकी प्रार्थनामें ज्यादा समय देना पड़ता था। अब गीतापाठ पूरा करनेसे अुससे भी ज्यादा समय देना पड़ता। छोटे बच्चोंको भी प्रार्थनामें हाजिर होना पड़ता था। अुनके लिये अलग देरसे प्रार्थना करनेकी मेरी सूचनाको पूज्य महात्माजीने मंजूर नहीं किया। लेकिन खास तौर पर अिन बालकोंको ही ध्यानमें रखकर मैंने ७ दिनके गीतापाठके विरुद्ध झगड़ा किया था।

पूज्य महात्माजीने अेक और सूचना भी दी थी कि गीतापाठमें ज्यादा समय देना पड़ता हो तो भजन गाना छोड़ दिया जाय। अुसका भी मैंने विरोध किया। मेरी दलील यह थी कि अगर रद करना ही पड़े तो श्लोक रद किये जायं। क्योंकि प्रतिदिन वे ही श्लोक बोलनेसे श्लोक बासी हो जाते हैं। भजन रोज नया गाया जाता है अिसलिये अुसमें रस आता है।

पहले मुझे आंदोलनमें झंडाधारी बनानेका आश्वासन पूज्य महात्माजीने दिया था लेकिन बहनोंका आह्वान किया तब मुझे आंदोलनमें प्रवेश करनेसे मना कर दिया और आश्रममें ही रहनेका आदेश दिया। मैंने अिसका कारण पूछा था।]

यरवडा मन्दिर,
२४-११-१

चि. प्रेमा

तेरा ब्यौरेवार पत्र मिला। खुश हुआ। जो निर्णय मैं करता हूँ अुनके सभी कारण मुझे हमेशा याद नहीं रहते। तू सच्ची सैनिक सिद्ध

हुमी है। यहां रहनेसे सिपाहीगिरी नहीं होती ऐसा यदि तू मानती हो तो यह भूल है। लड़ाईमें सब आगे ही रहें ऐसा नहीं होता। बहुतसे सिपाही अतिरिक्त रखे जाते हैं। फिर, केन्द्रस्थान पर बहुत जिम्मेदार आदमियोंकी जरूरत होती है। खतरेका डर छोड़ना जरूरी होता है। वह आ पड़े तब भूखे भूठा लेना जरूरी होता है। लेकिन बिना कारण जो जुसकी ओर दौड़ता है वह सिपाही नहीं किन्तु मूर्ख है। नारणदासको मैं सच्चा सिपाही मानता हूं। किसको मालूम तुम्हारे मार्गमें किस प्रकारके खतरे होंगे। सच्ची सिपाहीगिरी औश्वर जैसे रखे वैसे रहनेमें है। जिसमें अनासक्ति है। जिसे व्यावहारिक भाषामें कहें तो जिसका अर्थ यह हुआ कि जिस सेनापतिके अधीन हम विचारपूर्वक स्वेच्छासे गये हों वह जैसा कहे वैसा हम करें। यह पाठ तूने पचा लिया है।

धर्मकुमारके बारेमें पंक्तीहेके पत्रमें शिकायत है — गंदेपनकी। ठीक जिसे जानता मालूम होता है। जांच करना।

गीता-पारायणके बारेमें तेरी राय समझा। काकासाहबके साथ तू जी भर कर लड़ना। लेकिन ऐसा लगता है कि तेरे विरोधके मूलमें तो प्रार्थनाके प्रति ही तेरी अरुचि या अमदा है। तेरा बस चले तो तू जुसमें ही प्रार्थना समाप्त कर दे। मेरी सलाह है कि तू प्रार्थनाकी सारी विधि पर श्रद्धा रख। हो सके तो अर्थ पर ध्यान रख। ऐसा न कर सके तो वे शब्द संस्कारी हैं जुन्हें सुननेमें भी लाभ है, ऐसी श्रद्धा रखकर विनयपूर्वक सुन। जिसका अर्थ यह मत समझना कि मैं तुझे सात दिनके पारायणकी तरफ ले जाना चाहता हूं। जिस प्रार्थनाके पीछे कुछ लोगोंकी अनन्य श्रद्धासे की हुअी १५ वर्षकी तपश्चर्या है जुसमें कुछ तो (सार) है ही यह बात तेरे गले जुतारनेके लिये यह लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

यरवडा मन्दिर,
१ -११-३
रातको

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र पढ़कर बहुत खुश हुआ। आज तो तेरा अुपवास छूटनेको दो दिन हो गये हैं। यह पत्र तेरे हाथमें पहुँचेगा तब तक तो अुपवासकी भूख मरी होगी और नये जीवनका आनन्द ले रही होगी। जैसा अनुभव न हो तो अुपवासको मैं अधूरा मानूँगा। परिणाम मुझे विस्तारपूर्वक लिखा होगा। तेरा अनुभव दूसरोंके लिये मददगार होना चाहिये। अुपवास छोड़नेके बाद किन बातोंकी सावधानी रखनी चाहिये यह तो तू जानती है। अुपवासके बाद बहुत भूख लगती है परन्तु अुस प्रमाणमें पेट कभी नहीं भरना चाहिये। दूध-दही धीरे धीरे बढ़ाते जाना चाहिये। अंट-संट चीजें नहीं खानी चाहिये। रसवाले फल तो खाने ही चाहिये। अुसमें कंजूसी मत करना। शरीर नीरोग हो जाना चाहिये। अुपवासके दिनोंमें काम ठीक चलते हो सका जिसमें मुझे आश्चर्य नहीं होता। बहुतोंको जैसा करते हुये मैंने देखा है। मेरा अपना अनुभव तो मेरे पास है ही। जिसके शरीरमें बहुत रोग होता है अुसे तो अुपवासके दिनोंमें ज्यादा शक्ति मालूम होती है। तेज तो ज्यादा बढ़ता ही है।

बच्चोंका हिसाब ठीक भेजा। कृष्णाविजय सबसे तेज मालूम होता है। दूधीबहन[1] की अनुपस्थितिमें अुनके वर्ग ले सके जैसा कोअी नहीं है? यह तो मैं समझता हूँ कि अभी अिस बारेमें कुछ कहा नहीं जा सकता। बहुतसी बहनें बाहर हों तब क्या हो? फिर भी किसीको यह काम सौंपा जा सकता हो तो अुसे कहनेमें संकोच न रखना।

पुरन्दर छूट गया होगा। अुससे कहना कि अुसके साथका संवाद मुझे याद है। अुसकी डायरी भी याद है। मुझे पत्र लिखे। अनुभव भी बताये। भविष्यका कार्यक्रम भी लिखे।

---

१ श्री वालजीभाअी देसाअीकी पत्नी।

तेरे विरुद्ध मथुरी[1] की शिकायत है। तू बच्चोंको मारती है। लकड़ी भी काममें लेती है। अैसा हो तो यह आदत दूर करना। बच्चोंको हरगिज नहीं मारना चाहिये। क्रॉसबीने टॉल्स्टॉय शिक्षकके रूपमें नामक पुस्तक लिखी है। बहुत करके हमारे संग्रहमें है। देख लेना। अब तो यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मारनेसे बच्चे सुधरते नहीं। यह मैं जानता हूं कि जिसे मारकर पढ़ानेकी आदत पड़ गयी हो अुसे अपनी आदत छोड़ना मुश्किल लगता है। लेकिन यह तो बंदूकधारी सिपाहीके अनुभव जैसा हुआ। वह तो नहीं मानेगा कि बंदूकके बिना दुनियामें काम चल ही नहीं सकता। लगता है यह सिद्ध करनेका काम हमारा है। किसी तरह बच्चोंके बारेमें समझना चाहिये। अभी अिससे ज्यादा नहीं लिखूंगा। तेरा अुत्तर आने पर जरूरत मालूम होगी तो ज्यादा बहसमें पड़ूंगा।

मैं आशा करता हूं कि अुपवासके दिनोंमें तूने खूब नींद ली होगी। और अब तू नियमपूर्वक जल्दी सोती होगी। नींद पूरी लेनी ही चाहिये। खानेकी अपेक्षा नींदकी मनुष्यको ज्यादा जरूरत होती है। खानेका अुपवास फायदा करता है। लेकिन नींदका अुपवास शरीरको बिगाड़ सकता है। अुससे सिर घूमता है और मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है। अिसलिये नींदके बारेमें लापरवाह न रहना। रातको ९ बजेसे सुबह ४ बजे तक गहरी नींद ली जाय तो मैं शिकायत नहीं करूंगा।

मेरे प्रयोगके बारेमें मीराके पत्रमें लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री मथुरीबहन खरे। विद्यालय और बाल-मंदिरके लड़के-लड़कियोंके नाम बहुत बार आते हैं। अुनका हर बार परिचय देना मुश्किल हो जाता है। कृष्णकुमार, चंदन, कन्टू (हरि), विमला, धर्मकुमार, भीखू, बाबला (बाबू), मानसिंह ये सब बाल-मंदिरके बच्चे थे। मथुरी, रामभाऊ, जानकी, दुर्गा, शान्ता, मृदुला, पुष्पा, दयावती, ज्ञानदेवी, शारदा, मणि, निर्मला, सत्यदेवी, धनमाला, मनु, बिन्दु वगैरा विद्यालयके छात्र और बालिकायें थीं। मैत्री (दुर्गाकी बड़ी बहन) आन्दोलनमें शामिल थी।

३४

यरवडा मन्दिर,
५-१२-१

चि. प्रेमा

तेरे अुपवासके लिये और अुस बीच तूने जो अुत्साह दिखाया अुसके लिये बधाओ चाहिये? खुराकके बारेमें तो लिख ही चुका हूं। अभी कच्चा शाक न लेना। दाल तो बिलकुल न लेना। दूध घी [illegible] अुबाला हुआ शाक या फल पपीता मोसंबी वगैरा मिलें तो [illegible] जरूरत नहीं रहती। दवाकी जरूरत मुझे तो नहीं लगती। फिर जिस दवाकी बनावटके बारेमें मालूम न हो अुसे न लेनेकी हमेशा मेरी वृत्ति रही है। अुपवाससे दवाका सारा काम हो जाना चाहिये। सूर्यस्नान जारी रखनेकी जरूरत है तो सही। नींद पूरी लेना।

बच्चोंकी पढ़ाअीका कुछ न कुछ अिन्तजाम जरूर करना।

पुरन्दरका पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। अुसका सारा काम मुझे बहुत निश्चित और साफ मालूम हुआ है।

सुशीलाको वर्षगांठके अुपलक्ष्यमें मेरे आशीर्वाद पहुंचाना।

राजकोट जाने पर तू जमनादास[1] से मिली होगी। मनु[2] से मिली थी? पुरुषोत्तम[3]की तबीयत कैसी है?

जमनादासकी पाठशालामें कुछ होता है? राजकोटमें कुछ आन्दोलन देखनेमें आया? अिन सब बातोंकी आशा तुझसे रखता हूं।

---

१ श्री जमनादासभाओ गांधी पूज्य महात्माजीके भतीजे। राजकोटमें राष्ट्रीय पाठशाला चलाते थे। राजकोटमें मेरी सहेली सुशीला पै रहती थी। अुससे मिलनेके लिये सालमें अेक बार ४ दिनकी छुट्टी लेकर मैं जाती थी।

२ पूज्य महात्माजीके बड़े लड़के श्री हरिलालभाओकी लड़की।

३ श्री नारणदासभाओका लड़का।

धर्मकुमारकी बुरी आदतोंकी तरफ बराबर ध्यान देना। दुर्गाको समझाना। दुर्गा ध्यान दे तो बहुत काम कर सकती है।

बापूके आशीर्वाद

भजनावलि में ११९ वें भजनकी दूसरी पंक्तिमें निजनामग्राही प्रयोग है। जिसका अर्थ नारणदाससे या कोअी गुजराती समझता हो अुससे समझकर भेजना। तू ही समझती हो तो तू लिखना।

३५

१४-१२-१

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। बच्चोंकी सजाके बारेमें भी समझा। तेरी दलील पुरानी है। यह दूषित चक्र है। तुझे मार पड़ी जिससे तू सुधरी जिसलिअे दूसरोंको सुधारनेके लिअे तू अुन्हें मारती है। बच्चे भी बड़े होने पर यही सीखेंगे। बिलकुल मिथ्या दलीलसे कौन हिंसाको मानते हैं। जिस झूठ अनुभवके भ्रम पार जाना हमारा काम है। अुसके लिअे धीरज चाहिये यह मैं स्वीकार करता हूं। यह धीरज पैदा करने और अुसे बढ़ानेके लिअे हम जिकट्ठे हुअे हैं। बच्चोंको पढ़ाना या अनुशासन सिखाना ही हमारा ध्येय नहीं है। अुन्हें चरित्रवान बनाना हमारा ध्येय है और अुसीके लिअे पढ़ाअी अनुशासन वगैरा है। अुन्हें चरित्रवान बनानेमें अनुशासन टूटे पढ़ाअी बिगड़े तो भले ही टूटे और बिगड़े। लेकिन तेरी दलीलको न समझता हूं। यह भी समझता हू कि तेरे मारनेमें द्वेष नहीं है। फिर भी तेरे मारनेमें रोष और अधीरता तो है ही। मैं अेक सुझाव तेरे सामने रखता हूं। तू बच्चोंकी सभा कर। जो बच्चे कहें कि हम शैतानी करें या बाला भंग करें तो हमें मारिये और जिस तरहसे मारिये अुन्हें मारना और वे कहें अुसी तरह मारना। जो मना कर अुन्हें मत मारना। अैसा करते करते तू देखेगी कि अुन्हें मारनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। जिस विषयकी चर्चा मेरे साथ करती रहना। अधीर बनकर या निराश होकर जिसे छोड़ मत देना। तेरी बुद्धि मेरी

बातको स्वीकार न करे तब तक तू अपनी ही मार्गसे चलना। मैं जानता हूं कि तू सत्यकी पुजारी है, अिसलिये अन्तमें तुझे सत्य जरूर मिलेगा।

तेरी खुराक ठीक मालूम होती है।

राजकोटका वर्णन तूने नहीं भेजा।

बापूके आशीर्वाद

५५

[बच्चे समझ सकें अैसी भाषामें प्रार्थनाका महत्त्व समझानेकी पूज्य महात्माजीसे मैंने बिनती की थी। अुसके अुत्तरमें यह पत्र है।]

यरवडा मन्दिर,
२२-१२-१

चि० प्रेमा

तेरा हकीकतोंसे भरा पत्र मिला। नियमनामग्रही के दोनों अर्थ ठीक हैं। आत्मदासका अर्थ गुजराती भाषाके लिये शायद ज्यादा अनुकूल हो। लेकिन तेरा अर्थ बिलकुल न चले अैसा नहीं है।

तू ही बच्ची है यह कल्पना करके मैं प्रार्थना-सम्बन्धी प्रश्नका अुत्तर दे रहा हूं। जैसे हमारे जन्मदाता माता-पिता हैं वैसे ही अुनके भी हैं। अिस तरह अेक अेक सीढ़ी अूपर चढ़ते जायें तो जिस जन्मदाताकी कल्पना हम कर सकते हैं वह औश्वर है। अुसका दूसरा नाम सरजनहार भी अिसीलिये पड़ा है। और जैसे हमारे माता-पिता बहुत बार हमारे बताये बिना ही हमारी अिच्छाको समझ जाते हैं वैसे ही औश्वरके बारेमें भी समझें। और अगर माता-पितामें अितना जाननेकी शक्ति होती है तो सब जीवोंके सरजनहारमें तो हमारा अन्तर जाननेकी बहुत अधिक शक्ति होनी चाहिये। अिससे औश्वरको हम अन्तर्यामीके रूपमें भी पहचानते हैं। अुसे देख सकनेकी जरूरत नहीं है। अपने बहुतसे संबंधियोंको हमने देखा नहीं है, किसीके माता-पिता बचपनमें परदेश गये हों या मर गये हों तो भी वे हैं या थे अैसा हम दूसरों पर श्रद्धा रखकर मानते हैं वैसे ही हमारे सामने औश्वरके बारेमें संतोंका प्रमाण है। अुस पर विश्वास रखकर हमें मानना चाहिये कि अन्तर्यामी

ीश्वर जरूर है। और अगर वह है तो फिर अुसका भजन करने अुसकी प्रार्थना करनेकी बात तो सरलतासे समझमें आ जायगी। अगर हम समझदार हों तो सुबह अुठकर और रातको सोते समय माता-पिताको साष्टांग नमस्कार करते हैं वैसे ही ीश्वरको भी करना चाहिये। और जैसे हम माता-पिताको अपनी बिन्ता बताते हैं, वैसे ही ीश्वरको भी बतानी चाहिये। आजके लिये जितना काफी है न? जिसमें कुछ सार मालूम न हो तो लिखनेमें संकोच मत करना।

बापूके आशीर्वाद

३७

२८–१२–१

चि॰ प्रेमा

मुझे बचपनमें तुझे भावना नहीं है। तू मुझे विश्वास दिलाती है जितना काफी है। चिन्ता चिन्ता कर मजा मत बिगाड़ लेना। अुस पर अुपवासका कुछ असर हुआ क्या? बच्चे मुझे जो पत्र लिखते हैं अुन्हें कोभी देख सके तो अच्छा हो — अक्षर और भाषा दोनोंकी दृष्टिसे।

बापूके आशीर्वाद

३८

१–१–११

चि॰ प्रेमा

जिस हफ्तेकी डाकमें जिस बार भी देर हो गभी है। जिस बीचमें मैंने तो पत्र लिखने शुरू कर ही दिये हैं।

फुरसत होती है तो मन लड़के-लड़कियोंका विचार करता है। तैबीस दिसम्बरका दिन सबसे छोटा क्यों होता है, यह बच्चे नहीं जानते होंगे। यह समझाते हुअे भूगोल तथा खगोलका कुछ ज्ञान सहज ही कराया जा सकता है। यह तू नहीं करेगी? छोटे दिनके बारेमें समझाते हुअे लम्बे और बराबरके दिनके बारेमें (भी) समझा देना। मुसीके साथ

१ बच्चोंको न मारनेका वचन।

ऋतुओंके परिवर्तनकी बात भी। किस्मत क्या है, यह भी समझा देना। अैसी प्रस्तुत बातोंमें दोनोंको रस आना चाहिये। अिसी तरह अंकोंकी देशी पद्धति और जबानी हिसाबकी बात है। यह भी बच्चोंको खेल खेलमें सिखाया जा सकता है। अैसा सोचते हुअे सहज ही वनस्पति-शास्त्र याद आता है। मैं तो अिसमें ठोठ ही रहा। तुझे शायद कुछ आता भी होगा। न आता हो तो तू आसानीसे सामान्य ज्ञान प्राप्त करके बालकोंको दे सकती है और मुझे डाकसे भेज सकती है। सीखती जा और बालकोंको सिखाती जा। तेरे दिमाग पर अिसका बोझ नहीं लगना चाहिये। बच्चोंका और मेरा तो काम बन जाय अगर अैसा कुछ हो सके तो।

बच्चोंको जो देना चाहिये वह हम नहीं देते अैसा क्या कहना है। सरल प्रयत्नसे जो दिया जा सके वह तो दें। नारणदासके साथ मिलकर अिस पर विचार करना।

बापूके आशीर्वाद

३९

[आश्रम-भजनावलि में सूरदासका यह भजन है मो सम कौन कुटिल खल कामी। अुसके विरुद्ध मैंने यह दलील की थी स्वामी विवेकानन्दका मत है कि प्रत्येक व्यक्ति अव्यक्त रूपमें आत्मा ही होता है। अिसलिअे भीतरकी छिपी महानताको प्रत्येक पहचाने और अुसीका चिन्तन करे। मैं पापी हूं मैं पतित हूं अैसा विचार करनेसे साधक पतित ही होगा। यह ठीक हो तो संत बहुत बार क्यों अपनेको धिक्कारते हैं? मानी गुरुदेवका मत भी अैसा ही था। Culture और Education के बीचका भेद भी मैंने पूछा था।]

५-१-'३१

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे विचारसे विवेकानन्द[1] का और गुरुदेवका कहना अेकसा ही है। जो अैसा बोले अैसा हृदयमें लगना चाहिये। सूरदास

१ स्वामी विवेकानन्द (१८६३–१९०२)। श्री रामकृष्ण परमहंसके शिष्य।

तुलसीदास वगैरा भक्तोंने शठ कामी आदि शब्दोंसे अपना परिचय कराया है। यह औपचारिक भाषा नहीं थी अन्तरके अुद्‌गार थे। सच बात यह है कि हमारे अंदर दोनों भावनायें भरी हैं। जाग्रत अवस्थामें हम ब्रह्मरूप लगते हैं। मूर्च्छित स्थितिमें भुस दयालके सामने हम दीन जैसे हैं। जो अपनेको दीन न समझता हो लेकिन पूर्ण ब्रह्म समझता हो वह भले ही मीश्वरकी करुणाकी याचना करनेवाले भजन न गाये। असे मनुष्य करोड़ोंमें अेकके हिसाबसे भी नहीं मिलेंगे। अपनी अल्पताका दर्शन करना महान बननेका आरम्भ है। अलग पड़ा हुआ समुद्र-बिन्दु अपनेको समुद्र कह कर सूख जायगा। परन्तु अपनी बिन्दुताको स्वीकार करे तो वह समुद्रकी ओर प्रमाण करेगा और अुसमें लीन होकर समुद्र बन जायगा।

कल्चरका अर्थ है संस्कारिता। लेज्युकेशनका अर्थ है साहित्य-ज्ञान। साहित्य-ज्ञान साधन है। संस्कारिता साध्य वस्तु है। साहित्य ज्ञानके बिना भी संस्कारिता आती है। जैसे कोअी बालक शुद्ध संस्कारी घरमें पलकर बड़ा हो तो भुसमें संस्कार अपने-आप अुत्पन्न होंगे। आजकी शिक्षा और संस्कारिताके बीच किस देशमें तो कोअी मेल नहीं है। जिस शिक्षाके बावजूद शिक्षितोंमें अभी तक संस्कारिता रही है। जिससे मालूम् होता है कि हमारी संस्कारिताकी जड़ें बहुत गहरी पहुंची हुअी हैं।

प्रसन्नबहन[1] को आशिष और बधाअी। वह पतिको भी जिस ओर आकर्षित करे।

भजनमें तू नारणदासके साथ अुलटी होड़ करती मालूम होती है। ठीक है। तू अभी बड़ा पक्की है। नारणदास घट सकता है।

गीताबोध का आचरण पुरुष्कर कर रहा है, यह मुझे अच्छा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ प्रसन्नबहन भुस समय आश्रममें संस्कार लेनेके लिये आकर रही थीं।

४०

[गीतामें कौनसा श्लोक आपको सबसे प्रिय है? अिस प्रश्नका अुत्तर।

अुस समय फ्रांसके विश्व-विख्यात तत्त्वज्ञानी श्री रोमां रोलां बहुत बीमार थे। अुनकी बीमारीकी खबर मिलने पर आश्रममें अुनके लिअे प्रार्थना की गयी थी।]

यरवडा मन्दिर,
११-१-३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे सबसे प्रिय श्लोकके बारेमें अेक बार तो मैं कह सका था। मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय अित्यादि। आज निश्चित रूपसे नहीं कह सकता। जिस समय जैसी मनोवृत्ति होती है अुसीके अनुसार श्लोक प्रिय लगता है। अिस प्रयत्नमें अब रस नहीं आता। सारी गीता मुझे तो प्रिय लगती है। वही माता है। किसी बच्चेसे कोअी यह प्रश्न पूछे कि माताका कौनसा अंग तुझे अच्छा लगता है तो अुस प्रश्नमें कोअी तथ्य नहीं होता। अैसा ही मेरे बारेमें भी समझना।

यहाँ सरदी दो-तीन दिन पड़ी। अब वैसी नहीं लगती। शायद चारों तरफ दीवार हैं अिसलिअे। हम दोनों सोते तो आकाशके नीचे ही हैं।

काशीनाथ[1] ने आश्रम छोड़ दिया अिसलिअे क्या वे हिन्दी नहीं सिखा सकते?

धर्मकुमारकी खांसीका अिलाज तुरन्त होना चाहिअे। अिसी तरह नयनकाका। कमलाबहनकी मुझे याद है। अुसे मेरा आशीर्वाद भेजना। बीरूके बारेमें समझा।

---

१ श्री काशीनाथ त्रिवेदी। कअी साल तक सत्याग्रह आश्रममें थे और 'हिन्दी नवजीवन' का काम करते थे। पूज्य बापूजीकी कुछ पुस्तकोंका हिन्दीमें अनुवाद किया है। आजकल मध्यप्रदेशमें रचनात्मक काम करते हैं।

रोजांके लिअे प्रार्थना करना ठीक था। मेरे साथके संबंधका विचार न किया जाय तो भी अुनकी स्वच्छता बहुत आकर्षक लगती है।

तेरे गलेमें अभी भी कुछ बाकी है अुसे दूर करनेकी कोशिश करना। सरोजिनीदेवीकी गाड़ी कैसी चलती है? छीता अब बीमार तो नहीं रहती न?

बापूके आशीर्वाद

४१

[श्री कमलाबाजनी बजाजके पुत्र कमलनयनने पूज्य महात्माजीसे मराठीमें ही पत्र लिखनेका आग्रह किया था। महात्माजीने तीन चार पंक्तियोंका पत्र लिखा जो आश्रमकी डाकमें आया था। अुनकी मराठी मुझे बहुत ही मजेदार लगी जिसलिअे मैंने भी अुनसे आग्रह किया कि "मुझे भी आप मराठीमें अेक पत्र लिखिये।"

आपके Hero (जीवन-वीर) कौन थे?" जिस प्रश्नका अुत्तर।

कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा काल-कारणम्।

अिति ते संशयो माभूत् राजा कालस्य कारणम्॥

जिस श्लोकके अर्थके बारेमें मैंने अुनके विचार पूछे थे। नभी भाषामें व्यक्ति और जीवन-वीर! (पुरानी भाषामें काल और राजा)।]

य मंदिर,
१७–१–३१

चि प्रेमा

मेरी हिम्मत कैसी है! अथवा भारतकी भाषाओं पर मेरा प्रेम कितना है! चाहे जितनी अशुद्ध हो फिर भी मराठी तो मानी ही जायगी न? लेकिन तुझे मराठीमें पत्र लिखनेमें अभी देर है।

तुझे काफी जिम्मेदारी भुगानी है। दुर्गा[1] के बारेमें निराश मत होना। अगर तू सिखाना करती ही रहेगी तो वही दुर्गा पढ़नेमें रस लेगी।

वनस्पतिके बारेमें घरेलू ज्ञान तो तू तोताराममजीसे भी प्राप्त कर सकती है। आश्रममें होनेवाले पेड़-पौधोंकी पहचान और वे कैसे

[1] अेक नेपाली लड़की जो विद्यालयमें पढ़ती थी।

अुगते हैं अुनकी अुमर कितनी है वे कब फल देते हैं — यह ज्ञान तो बच्चोंको होना ही चाहिये न? मुझे तो नहीं है।

संक्रान्तिके दिन यहां आधी छुट्टी न होती तो मुझे कुछ भी पता न चलता। तेरा तिलगुड़ मिला। अुसने फिरसे स्मरणको ताजा किया। हमारी संक्रांति तो अिन दिनों रोज ही होती है, अैसा कहा जाय।

नारणदासकी सम्मतिसे मेरे पत्रमें से जो हिस्से भेजने हों भेज सकती है।[1]

Hero यानी पूज्य देवता। राजनीतिमें यह स्थान गोखलेका है। सामान्य रूपमें मेरे समग्र जीवन पर जो लोग असर डाल सके हैं वे हैं टॉल्स्टॉय रस्किन थोरो और रायचंदभाअी[5]। थोरोको छोड़ देना ही अधिक अुपयुक्त होगा।

---

१ महात्माजीके अलग अलग पत्रोंमें अनेक नये नये विचार आते थे। अुन्हें अुद्धृत करके लोगोंको भेजनेका अुल्लेख है।

२ काअुन्ट लिओ टॉल्स्टॉय (१८२८–१९१०)। प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार और तत्त्वचिंतक। अुनकी 'ओश्वरका राज्य तुम्हारे हृदयमें है' नामक पुस्तकने पूज्य बापूजीको बहुत प्रभावित किया था।

३ जॉन रस्किन (१८१९–१९)। प्रसिद्ध अंग्रेज साहित्यकार और तत्त्वचिंतक। अुनकी 'अन्टु दिस लास्ट' पुस्तकने पूज्य बापूजी पर जादू-सा असर किया था। अिस पुस्तकका सार पूज्य बापूजीने स्वयं गुजरातीमें दिया है जो 'सर्वोदय' नामसे प्रकाशित हुआ है।

४ हेनरी डेविड थोरो (१८१७–१८६२)। अमेरिकन लेखक और तत्त्वचिन्तक। अुनके लेखोंका पू. बापूजी पर असर हुआ था। थोरोके लेखोंमें सत्याग्रहके बीज दिखाओ देते हैं। पू. बापूजीने थोरोकी 'अपूर्व ओन सिविल डिसओबीडियन्स' (कानूनका विरोध करनेका कर्तव्य) पुस्तकका 'अिण्डियन ओपीनियन' में अनुवाद दिया था।

५ श्रीमद् राजचन्द्र (१८६७–१९०१)। कवि और ज्ञानी। अुनके आत्मज्ञान संपर्कने पूज्य बापूजीके जीवन पर गहरी छाप डाली। आध्यात्मिक कठिनाओ पैदा होने पर पूज्य बापूजी अुनसे सलाह लेते थे।

दुनियामें होनेवाली क्रान्तियोंका कारण महापुरुष दिखाओ देते हैं। वास्तवमें देखें तो अुनका कारण कोअी दूर ही होते हैं। क्रान्ति अकस्मात नहीं होती। लेकिन जैसे ग्रह नियमित रूपसे घूमते हैं वैसे ही क्रांतिके बारेमें भी है। बात जितनी ही है कि हम अुन नियमों और कारणोंको जानते नहीं जिसलिये अुसे अकस्मात हुआी मानते हैं।

बापूके आशीर्वाद

४२

[यरवडासे छूटनेके बाद या छूटनेकी गड़बड़ीमें यह पुर्जा लिखा हुआ मालूम होता है।]

२-२-३१

चि॰ प्रेमा

यह तुझे लिखनेके खातिर ही लिखा है। तेरे पत्रका अेक ही पन्ना मेरे सामने है। दूसरे कहीं अिधर अुधर हो गये मालूम होते हैं। मिल जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

४३

[पूज्य महात्माजी छूटकर साबरमती आये। स्वराज्य न मिले तब तक आश्रममें न आनेकी अुनकी प्रतिज्ञा थी। वे रास्तेमें घूमने निकले थे। वहां आश्रमवासियोंकी टोली अुनसे मिलने गयी। "आन्दोलनमें विजय मिली है अब स्वराज्य हाथमें आया ही समझो" — असी भावना चारों ओर फैल गयी थी। सब जेलवासी छूटकर आनन्द और गर्वसे भरे लौटे थे। मैं दुःखी थी क्योंकि आन्दोलनमें मैंने तो कुछ भी त्याग नहीं किया था और न कोअी कष्ट अुठाये थे। मुझे पूज्य महात्माजीको मुंह दिखानेमें संकोच होता था। लेकिन अुनके विचार अलग थे। मुझे दिलासा देनेके लिअे कराची कांग्रेसमें अपने साथ ले जानेका अुन्होंने जिरादा किया और मंत्री नारणदासभाअीने अुस योजनाको स्वीकार किया। कराचीमें मैं महात्माजीके साथ ही थी। बंबअीसे दिल्ली होकर हम कराची गये थे। मेरी

अेक लड़की विमन भी विमन संबंधोंमें बहुत काम किया था। पुस्त
महात्माजीकी [illegible]में मेरे साथ ही सत्याग्रह-आश्रममें रहती थी। बादमें
मैं सासवड़ आश्रममें लौटी तब अुनकी आज्ञानुसार मैंने अुन्हें पत्र
लिखा जिसमें अुनके साथ की हुअी यात्रामें मैंने क्या क्या देखा और क्या
क्या सीखा अिसका विस्तारसे वर्णन किया था। अुसका यह अुत्तर है।]

[illegible]

१८-५-३१

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मुझे बहुत पसन्द आया। मैं देखता हूं कि तूने अिस यात्रामें सुन्दर निरीक्षण किया। अिसी तरह भी आगे अनुभव भेजे अैसी मेरी अिच्छा है। अंग्रेजी या मराठीमें लिखे।

लक्ष्मी[1] पर खूब ध्यान देना। अुसका विवाह किसी सवर्णके साथ करनेका विचार है। अुसे अब घरमें होशियार होना चाहिये। अुसे रसोअी आनी चाहिये। घर चलाना आना चाहिये। हिसाब रखना जानना चाहिये। थोड़ी संस्कृत जाने तो बहुत अच्छा। संस्कृत न जाने तो भी प्रार्थनाके श्लोकोंका और गीताका अुच्चारण तो अुसे शुद्ध जानना ही चाहिये।

जितना ज्ञान सब लड़कियोंको प्राप्त होना चाहिये। लड़कियोंकी पढ़ाअीको हम न भूलें यह आवश्यक है। मुझे विस्तारसे लिखना। लड़कियोंके बारेमें तेरा अनुभव बताना।

बापूके आशीर्वाद

४४

११-५-३१

चि॰ प्रेमा

लक्ष्मी और नथा[2] बीमार क्यों रहती हैं? मालूम होता है वे खाना वगैराके बारेमें लापरवाह रहती हैं। नथाको बुखार रहा करे तो अुसका

१ अेक हरिजन कन्या। पूज्य बापूजीने अुसे अपनी पुत्रीके रूपमें स्वीकार किया था।

२ अुत्तर प्रदेशके कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री शीतलासहायकी पुत्री।

शरीर बिगड़ेगा। अुसकी खास जिम्मेदारी किस पर रहती है? हर बच्चेको औसा बनना चाहिये कि आश्रममें वह अनाथ बच्चा नहीं है। कृष्णकुमारीकी तबीयत कैसी है? औराके बारेमें भी मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

४५

बारडोली

४-१-३३

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। म भी सोमवारको रवाना होनेवाला हूं। जिर्स लिखे मंगलवारको ही हम सार्गो बंबजी पहुंचेंगे। लेकिन मैं कुछ जल्दी पहुंचूंगा। मंगलवारको फुरसत हो तब कुछ देरके लिखे मिल जाना। अुस समय बात करनेका मौका मिला तो निश्चय कर दूंगा।

तेरा पत्र समाचारोंसे अच्छा भरा हुआ है। गंगाबहन[1]में अुमंग और अुत्साह तो बहुत है। तू अुनके साथ खूब चर्चा करना और अुन्हें मदद भी देना। अुनका प्रेम अपार है सेवाकी अिच्छा तीव्र है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री गंगाबहन वैद्य मुझसे ६ साल पहले सत्याग्रह आश्रममें आकर रही थी। आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी होते हुओ भी बबजीकी आरामकी जिन्दगी छोड़कर आश्रमवासी बनी। अुनको भाषा अच्छी थी। अुमर ५ वर्षसे अूपर होने पर भी पढ़ने और सेवा करनेका अुत्साह अुनमें बहुत अधिक था। १९३३ में हम जेलमें साथ थी तब मुझसे संस्कृत ग्रंथ पढ़ने बैठती थी। जिस पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था। अुनको चिकित्सा और सिलाओी अच्छी आती थी।

अुन्होंने आश्रममें स्त्रियोंका अच्छा संगठन किया था। १९३४ के बाद खेड़ा जिलेके बोचासण गांवमें रहने लगी। अब भी वहीं रहकर खूब सेवा करती है।

बोरसदके लाठी चार्जके मौके पर गंगाबहनने हंसते हंसते लाठियां

[सन् १९११ में सरकारसे समझौता हुआ तब जेल गये हुये सभी आश्रमवासी भाजी-बहन जेलसे मुक्त होकर वापस आये। जो आश्रमके पुराने रहनेवाले थे वे आश्रममें ही रहने लगे। लेकिन बादमें कठिनाअियाँ पैदा हुअीं। मुनके जेल जानेके बाद व्यावहारिक कामोंकी जिम्मेदारी मेरे सिर पर आ पड़ी थी। वापस आनेवालोंको क्या काम दिया जाय? आन्दोलन फिरसे शुरू हो तो मुसमें शामिल होनेके लिये वे सब प्रतिज्ञाबद्ध थे। जिसलिये थोड़े दिनोंके लिये कामकाज मुनके हाथमें सौंपना मुश्किल हो गया। फिर दांडी-कूचसे पहलेकी आश्रमकी परिस्थिति अनेक तरहसे बदल गयी थी। अनुशासनमें कठोरता आ गयी थी। सब काम यंत्रवत् चलते थे।

सत्याग्रह आश्रममें दो तरहके लोग रहते थे। यद्यपि आश्रममें रहे हुये कार्यकर्ताओंके कुटुम्बी-जन और शिक्षण-संस्कारके लिये कभी कभी आकर अेक नियत समय तक रहनेवाले स्त्री-पुरुष तथा बच्चे। दूसरे प्रकारके लोगोंकी संख्या हमेशा बहुत ज्यादा रहती थी। जिन लोगोंको आश्रमके नियमों और अनुशासन दोनोंका पालन करना पड़ता था जब कि परिवारवालोंको अनेक कारणोंसे सुविधायें मिलती थीं। अनेक सुविधायें तो शारीरिक दुर्बलता या मर्यादाओंके कारण मिलती थीं। लेकिन जिस भेदभावसे कभी बार कठिनाअियाँ खड़ी होती थीं।

सत्याग्रह आन्दोलनके कारण सभी भाजी और व्यावहारिक सभी-पुरानी बहनें आश्रम छोड़ कर चली गयी। तब मेरे जैसी भाजी और नौजवान अकेली पर लगभग सारे ही कामोंकी जिम्मेदारी आ पड़ी। भीश्वरकी कृपासे मेरा शरीर पूर्ण सशक्त और तन्दुरस्ती भी अच्छी थी जिसलिये काम करनेमें मुझे कभी शारीरिक शक्तिकी कमी नहीं लगी यद्यपि नींद बहुत कम मिलती थी। दांडी-कूचके बाद कभी हफ्तों तक रातको मैं केवल तीन घंटे सोती। बादमें पाँच घंटे तक नींद मिलने लगी। ध्येयनिष्ठा तथा पूज्य महात्माजीके प्रति अनन्य श्रद्धा तथा मेरी श्री नारणदासभाजीके वात्सल्य (मुन्हें मैं काका कहती थी)—जिन सबके कारण मुझे थकान नहीं लगती थी। लेकिन मुझमें दोष तो थे ही। मैं

स्वयं बारीकीसे सब नियमोंका पालन कर सकती थी जिससिअे मुझे लगता था कि सभी वैसा कर सकते हैं और अुन्हें वैसा करना ही चाहिये वैसा न करनेवाले या तो आलसी हैं अथवा स्वार्थी होने चाहिये। भले हर व्यक्ति अपनी शक्तिके मुताबिक काम करे, लेकिन अुसे कम या ज्यादा काम तो करना ही चाहिये। वैसा न करनेवालेके प्रति मेरी असहिष्णुता प्रगट होती। कभी कभी मैं क्रोध भी कर बैठती थी। जो वृद्ध थे अुनके प्रति मुझे अमुक मर्यादाका पालन करना चाहिये था। लेकिन अुस मर्यादाका मुझसे अुल्लंघन हो जाता था जिससिअे वे लोग चिढ़ जाते थे। कड़े अनुशासनसे व्यवस्थामें सुसम्बद्धता तो आजी थी लेकिन कुछ स्त्री-पुरुषोंके मन दुःखी हुअे थे। जिससिअे पूज्य महात्माजीके पास शिकायतें आने लगीं।

महात्माजी मुझे अहिंसा क्षमा और अुदारताके पाठ सिखाने लगे। अुनकी शिक्षा मेरी बुद्धिको तो ठीक लगती थी लेकिन अुस पर अमल करनेमें मैं सफल न होती थी। मेरे स्वभावके दोषोंने गहरी जड़ जमा ली थी। वे जल्दी नहीं निकल सकते थे। मुझे विचार आया कि "मैं सत्याग्रही सैनिककी तालीम लेने आजी थी अुसके बजाय पूज्य महात्माजीने मुझ पर आश्रमके संचालनकी जिम्मेदारी डाल दी (भले ही नारणदास काकाकी छत्रछायामें)। यह काम मेरी शक्तिसे बाहर है। यहां केवल संगठनकी बात नहीं है अहिंसा द्वारा संगठन करनेकी बात है। वही अुनरसे व्यक्ति जिन्होंने वर्षों तक तपस्या की है जिनमें वात्सल्य और प्रेम है और जो अपना नैतिक प्रभाव सब पर डाल सकते हैं अैसे ही व्यक्ति अिस कामके अधिकारी हैं। अतः मेरे लिअे यह काम छोड़ देना ही ठीक होगा।

बादमें जब गंगाबहनने जब मगनजीसे यह मांग की कि "आश्रमके संचालनकी सारी जिम्मेदारी पहलेकी तरह मुझे सौंपी जाय और प्रभावहन मेरे हाथके नीचे काम करें" तो मैंने खुशीसे अुसे स्वीकार कर लिया और प्रभाबहनकी बात स्वीकार करनेकी नारणदास काकासे प्रार्थना की। लेकिन नारणदास काकाने मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। अुन्होंने कहा कि "ये लोग प्रतिज्ञा-बद्ध हैं। आन्दोलन शुरू होगा तो सब चले

जाअंगे। फिर मैं क्या करूंगा? व्यवस्था-तंत्र क्या अिस तरह थोड़े थोड़े दिनोंमें बदला जा सकता है? मेरे मन पर अैसी छाप है कि दोस वर्षोंसे पहले पूज्य महात्माजीने जब बहनोंका आवाहन किया तब पंजाबसे अुत्साहसे तुरन्त आन्दोलनमें कूद पड़ी — साथमें आश्रमकी अग्रगण्य सारी कार्यकर्त्री बहनोंको ले गयी। यह बात नारणदास काकाको पसन्द नहीं थी। आश्रमकी भीतरी व्यवस्थाकी देखरेखके लिये किसी प्रौढ़ अनुभवी महिलाकी जरूरत थी। लेकिन अुस समय किसीको यह विचार ही नहीं आया। यह बात अुनको जरूर खटकी होगी।

अिस बीच मुझसे अेक बड़ी भूल हो गयी। जवान लड़कियोंमें भी दो दल हो गये थे। अेक छात्रालयकी लड़कियोंका और दूसरा कुटुम्बियोंवाले भागकी शिक्षक-निवासकी लड़कियोंका। छात्रालयकी अेक लड़कीको (वो लगभग १६ वर्षकी होगी) फिट आते थे। अुस लड़कीको शिक्षक-निवासकी बड़ी अुमरकी अेक लड़की (मैत्री) ने कुछ व्यंगमें कहा। साधारणतः मैं छोटी छोटी बातोंमें नहीं अुतरती थी समझानेकी कोशिश करती थी। लेकिन पुराने बुजुर्ग आश्रमवासी जेलमुक्त होकर वापस आये अुसके बाद वातावरणमें जो क्षोभ अुत्पन्न हुआ था अुसका असर मुझ पर भी पड़ा था। लड़कीके व्यंगके शब्द भी कड़वे थे। वह लड़की रोती हुओ मेरे पास आयी। मैं अुसे लेकर मैत्रीके पास गयी। पूछताछमें खेद प्रगट करनेके बजाय मैत्रीने अुद्धत जवाब दिये। अिसलिये क्रोधमें मेरे मुंहसे ये शब्द निकल गये फिर अैसे व्यंगके शब्द तेरे मुंहसे निकलेंगे तो मुंह पर थप्पड़ दे मारूंगी। अिससे गरम तेलमें पानी पड़ गया। फिर तो महात्माजीका बीचमें पड़ना अनिवार्य हो गया। मैंने गुस्सेमें यह कहकर न्यायकी मांग की कि काममें मदद देकर मुझे सरल बनानेके बजाय विरोधी क्षोभ वातावरणको दूषित करते हैं और मुझे क्रोधवश होनेको मजबूर करते हैं।

पूज्य महात्माजी अुस समय बोरसदमें थे। वहां नारणदास काकाके साथ मैं और विरोधियोंके प्रतिनिधि महात्माजीसे मिलने गये। रातको लगभग २ बजे तक बातें हुओं। अुन्होंने मुझ पर आरोप लगाये। मैंने अेक घंटे तक बोल कर अुनका खंडन किया। अपने दोष तो मैंने स्वीकार किये लेकिन प्रतिनिधियोंसे यह दलील की कि मैं अपनी जिम्मेदारी

छोड़नेको तैयार हूं। या तो आप मुझे वैसा करनेकी अिजाजत दीजिये या गुरुओंको समझाअिये कि वे वातावरणको स्वच्छ रखने तथा वैसी परिस्थिति पैदा करनेका प्रयत्न करें, जिससे मेरे क्षोभका कारण न रहे।" पूज्य महात्माजीसे भी मैंने कहा "आप दूसरे मुझे रास्ता दिखाते रहते हैं। अेक ओर आश्रमकी सुव्यवस्थाके लिअे आग्रह रखते हैं दूसरी ओर प्रेमसे सब कुछ करनेकी शिक्षा देते हैं। जरा विचार तो कीजिये। आप स्वयं जितनी आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति रखनेवाले महात्मा हैं। जितने वर्षोंमें आप अिन लोगोंको नियमपूर्वक प्रार्थनामें शरीक होने जितने संस्कार भी नहीं दे सके तो मैं २५ वर्षकी अनगढ़ लड़की अिन सब पर अपना प्रभाव कैसे डाल सकती हूं?" पूज्य महात्माजीने हंसकर कुछ अिस तरह कहा "मैं तो बापू ठहरा न! लेकिन मुझे सलाह दी कि "तेरे मुंहसे अपशब्द निकलें यह ठीक नहीं है। अैसीके तुझे माफी मांगनी चाहिये।" अुस समय तो मैंने क्रोधमें बिलकुल अिनकार कर दिया। पूज्य महात्माजीको अन्य बातोंके लिअे विरोधियोंको खास कुछ समझानेकी जरूरत नहीं थी क्योंकि अधिकतर बयान तो मैंने ही दे दिये थे। और गलतफहमी हुअी हो तो अुसे दूर करने जितना स्पष्टीकरण कर दिया था।

दूसरे दिन हम आश्रम लौट आये। लेकिन कुछ लोग वहीं रह गये। बादमें मालूम हुआ कि मेरे बारेमें आचारके अूपर टीका करके कुछ वैसी वैसी बातें महात्माजीसे कही गयी कि मुझे साबरमती आकर अिस मामलेमें गहरा अुतरना पड़ा। बादमें तो सारी बातें निराधार सिद्ध हुअी। लेकिन अुसके बाद अेक दिन हृदय-कुंजके बरामदेमें सब छोटे-बड़े आश्रम वासियों बच्चों और मेहमानोंके बीच पूज्य महात्माजीने अिस तूफानका स्पष्ट और विस्तारसे अुल्लेख करके लम्बा प्रवचन किया। मुझसे मुझे बड़ा आघात पहुंचा! शरम भी आअी!! पूज्य महात्माजी बाहर जानेके लिअे निकले तब हमेशाकी तरह मैं अुनके पैर छूने नहीं गयी और तबसे कभी दिनों तक मैं अुनसे बोली भी नहीं। न मिलने जाती न पत्र लिखती। अपनी राजकोट और बंबअीकी सहेलियोंको मैंने अिस वस्तु-स्थितिसे परिचित कराया। अिसलिअे १९२१ के अगस्तमें जब पूज्य महात्माजी बंबअी गये तब भी गुलनार और किसन दोनों अुनसे मिलने

गये। अुन्होंने महात्माजीसे कहा "प्रेमा पर आपने अन्याय किया है। हम अुसे वापस बुलानेवाले हैं।" (देखिये पत्र १–८–३१ से १–९–३१)

मेरे मौनके कारण पूज्य महात्माजीको चिन्ता हुअी। अुन दिनों गोलमेज परिषदके लिअे विलायत जानेकी धूमधाम मची हुअी थी। मेरे पत्र न आनेसे वे बेचैन थे। मुझसे मिलना भी चाहते थे। आखिर विलायत जानेकी तारीख आने लग गअी और जहाँ तक मुझे याद आता है ता० ९–९–३१ और २४–९–३१ के बीच अेक दिन शामको वे आश्रममें आये। प्रार्थनासे पहले मुझे सूचना मिली कि "बापूजी तुमसे मिलना चाहते हैं।" अिसलिअे प्रार्थनाके बाद मैं प्रार्थना-भूमि पर ही अुनकी राह देखती रही। वे आये। मुझे खूब मनाया फुसलाया समझाया तब मैं बोलने लगी। आज भी अुनका प्रेम याद आता है और मैं सोचती हूँ कि मैंने अुन्हें कितना सताया था। लेकिन मेरे मनमें तो वे माता-पितासे भी अधिक थे। अिसलिअे प्रेमके साथ अुन्हें कभी कभी मेरा रोष भी झेलना पड़ता था। यह रोष पहली बारका था। अिसके बाद भी दो बार मैं अुनसे नाराज हुअी थी।

विलायत जानेसे पहले अेक दिन दोपहरको पूज्य महात्माजी दूसरी बार मुझसे मिलने आये। हम दोनों [illegible]की तरफ घूमने गये। अुनका अुपदेश थोड़ी देर सुननेके बाद मैंने अपनी प्रार्थना अुन्हें सुनाअी

"महात्माजी, मुझे सचमुच लगता है कि मैं अिस जिम्मेदारीके लिअे बिलकुल अयोग्य हूँ। मैं अुमरमें छोटी हूँ। माताका वात्सल्य मुझमें नहीं है। असहिष्णुता है, [illegible] है, क्रोध है। अिन दोषोंके रहते हुअे यदि मैं जिम्मेदारी अुठाअूँगी तो मुझसे मेरा विकास तो नहीं होगा परन्तु दूसरोंको तकलीफ जरूर होगी। अिसके सिवा आश्रमका वातावरण शान्त और पवित्र रहनेके बदले बिगड़ जायगा। अिसलिअे यह जिम्मेदारी आप मुझसे ले लीजिये और दूसरे किसी योग्य व्यक्तिको सौंप दीजिये। मैं आश्रम छोड़नेवाली नहीं हूँ। मुझे यहीं रहना है। लेकिन मैं सामान्य बहनके रूपमें रहकर ही काम करूँगी।"

पूज्य महात्माजीने कहा "मैं तुमसे यह काम वापस नहीं लेना चाहता। तुमसे मैं भिक्षा माँगता हूँ कि तू ही यह जिम्मेदारी संभालती रह।"

अब मुझे मुलटा आघात पहुंचा ! मेरे जैसी अेक तुच्छ लड़कीके सामने पूज्य महात्माजी जैसे महापुरुष अितने नम्र हो जायं कि "भिक्षा मांगने" की भाषा बोलें यह मुझसे सहन नहीं हुआ। अन्दर ही अन्दर हृदयमें तीव्र सन्ताप हुआ और मैंने अपनेको सैकड़ों बार धिक्कारा !!

*

पूज्य महात्माजीने गोलमेज परिषदमें जानेका निश्चय किया था। मुसके लिअे कांग्रेसकी शर्तें पूरी हों अिस हेतुसे अंग्रेज सरकारका हृदय बदलनेके लिअे पूज्य महात्माजी महाप्रयास कर रहे थे और भुसी सम्बन्धमें दिल्ली-शिमलाकी तरफ भुनकी दौड़-धूप भी चल रही थी। लेकिन शिमलाकी सरकारका हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ मुसके हाथसे बदरन् कुछ कौलमेंमें कांग्रेस भुस समय सफल हुआी अितना ही कहा जा सकता है। सरकारकी अंतिम सम्मतिका पत्र वाअिसरॉयके गृहमंत्री श्री अिमर्सनके हस्ताक्षरोंसे २७ अगस्त १९३१ के दिन मिला। मुसके बाद पूज्य महात्माजी विलायत रवाना होनेके लिअे सीधे बंबआी गये अैसा मेरा खयाल है। मुझे अंदर ही अंदर संताप होता था कि अिस देशव्यापी चिन्तामें पूज्य महात्माजीको आश्रमकी भी चिन्ता करनी पड़ती है, जिसमें मैं भी अेक निमित्त बन गयी हूं। लेकिन कोअी मुपाय नहीं था। मैं शान्त हो गयी फिर भी मैंने मुन्हें पत्र नहीं लिखा। अिसके पीछे मेरी दृष्टि यह थी कि सरकार मुन्हें कसौटी पर कस ही रही है, मुनका चित्त व्यग्र होगा अैसी स्थितिमें मेरे पत्रोंके लिअे मुन्हें अवकाश कहां होगा? लेकिन महात्माजीसे नहीं रहा गया। ता २४-९-३१ को मुझे पत्र लिखकर मुन्होंने मेरे पत्रकी मांग की थी! बादमें मैं पत्र लिखने लगी तब मुन्हें संतोष हुआ।

श्रावणी पूर्णिमाके दिन मेरी राखी बंधवाकर मेरी और सारे देशकी प्रार्थनाके साथ पूज्य महात्माजी विलायत गये। हमारे बीच फिरसे पहलेकी ही तरह पत्रव्यवहार शुरू हुआ। ता २१-९-३१ और ८-११-३१ के पत्र विदेशसे आये हुअे हैं। महात्माजी वापस आये तब मैं बंबआीमें मुनसे मिलने गयी। ४ जनवरी १९३२ को पूज्य महात्माजी फिर गिरफ्तार हुअे।]

बोरसद,
२२-६-३१

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। ब्यौरा अच्छा दिया है। मुझसे मिल सकी होती तो अच्छा होता। किसनका पत्र समझमें आता है। अच्छा है, ऐसा उसे लिखना।

गंगाबहनका लड़कियोंको जी भरकर सिखानेका लोभ सच्चा और अच्छा है। उसका पोषण करनेमें जो मदद दी जा सके वह सब देनेकी मेरी इच्छा है। तू भी देना।

पंडितजीकी तेरे विरुद्ध कभी शिकायतें हैं। उनके पास जाकर सब शिकायतें सुनना और विनयपूर्वक उनका उत्तर देना। पंडितजी जैसे सच्चे और शुद्ध आश्रमवासियोंका मिलना कठिन है। उन्हें तू जीत लेना। तेरे विरुद्ध शिकायत क्यों होनी चाहिये? तेरा स्वभाव तेज है, उदार है, मिलनसार नहीं है। यह ठीक है। इन दोषोंको मैं बड़ा नहीं मानता। लेकिन उनसे कठिनाइयाँ जरूर पैदा होती हैं। इसलिये ये दोष भी भीतरसे निकाल देना। पंडितजीके साथ तुरन्त सारी बातोंकी सफाई कर डालना।

बापूके आशीर्वाद

२४ ता. तक डाक यहां भेजना। २५-२६ को बंबई। २७ को शायद संभव है बारडोली। लेकिन निश्चित नहीं है।

४७

बोरसद,
१-७-३१

चि. प्रेमा

तेरे दो पत्र मिले। कड़वे घूँट मैं न पिलाऊँ तो और कौन पिलायेगा? इन्हें पीनेमें ही स्वास्थ्यकी रक्षा है। शरीरके स्वास्थ्यकी अपेक्षा मनका स्वास्थ्य अधिक जरूरी है। स्त्रियोंके बारेमें नारणदासने जिस नियमकी सूचना दी है वह बहुत पुराना है। उसका पालन आज तक

नहीं हुआ। असका कारण हमारी या कहो कि मेरी शिथिलता है। आज भी वह नियम समझनेके बाद पूरी तरह असका पालन हो सकेगा या नहीं जिस बारेमें मुझे सन्देह है। जिस बारेमें ज्यादा लिखनेका मेरा विचार है। आज फुरसत मिलेगी तो आज या जब मिलेगी तब लिखूंगा।

किसनको पत्र तो जल्दी ही लिखना चाहिये था लेकिन आज ही पूर्ण लिख सका। असे जल्दी मिल गया तो शायद अबकीमें मुझसे मिलने आयेगी।

मेहमानोंके बारेमें तूने जो लिखा वह मुझे अच्छा लगा।

बापूके आशीर्वाद

४८

शिमला
२–७–'३१

चि० प्रेमा

किसनसे मिला था। यह तो असने लिखा ही होगा। मुझे अैसा लगा कि असे ज्यादा सेवा करनी चाहिये।

तेरा पत्र मिला था।

तू अब भी बच्चोंको मारती है? रमाबहनकी शिकायत थी। पंडितजीको संतोष दिया? गंगाबहनके साथ तू घुलमिल गयी है? तू दुःखी मालूम होती है।

बापूके आशीर्वाद

४९

बारडोली
२६–७–'३१

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरी कौनसी बर्बरता है यह तूने नहीं लिखा। मैं स्वीकार करता हूं कि मुझे यह जानना चाहिये। लेकिन अैसी बातोंमें मैं मूर्ख हूं। तू दीर्घायु हो अैसा कहनेके बदले मैं यह कहूंगा: जल्दी निर्विकार,

निर्दोष होकर आदर्श सेविका बन जा। तेरा जो प्रयत्न चल रहा है वह सफल हो।

तेरे पत्रमें मुझे दोनों रस भरे हैं। तुझमें पागलपन है। वह मुझे अच्छा लगता है। लेकिन तुझमें रोष है और अभिमान भी है। लेकिन मैं विश्लेषण पृथक्करण नहीं करता। लिखना चाहता हूँ। अगर तू अपनी डायरीमें न लिखती हो तो अबसे लिखना। रोज किस पर गुस्सा किया फिर वह बालक हो या बड़ा किसे मारा किसे गाली दी — जितना मेरे लिये लिखे तो भी काफी है। बाकी तो तू जाने और नारणदास जाने। मैं तेरे काममें हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। वह मेरे क्षेत्रसे बाहर है। मैं सब बातोंका पता भी नहीं चला सकता। मुझसे इन्साफ नहीं हो सकता। मेरे पास वैसा करनेका साधन भी नहीं है। मैं तो माता-पिता बन सकता हूँ इसलिये प्रेमकी बात ही कह सकता हूँ। जिसके सिवा सच्चा यहीं न्याय नहीं मांगेगा। न्यायका अर्थ है जैसेको तैसा। सत्याग्रहका अर्थ है शठं प्रत्यपि सत्यं हिंसाके सामने अहिंसा क्रोधके सामने अक्रोध अप्रेमके सामने प्रेम। जिसमें न्याय तौलनेका स्थान ही कहाँ है?

बापूके आशीर्वाद

बोरसद मंगलवारको पहुँच रहा हूँ।

५०

[यह पत्र अंग्रेजीमें लिखा था।]

६–८–३१

चि. प्रेमा

तू मुझे लिखेगी ही नहीं यह कैसे चलेगा? तुझसे मैंने लम्बे पत्रकी आशा रखी थी। अब जरूर लिखना। धुरन्धर और किसनके साथ आज लगभग ढाई घंटे तक तेरी ही बात करनी पड़ी। यह कितनी शरमकी बात है?

मैत्रीसे तू गले मिली यह बात पढ़ कर मैं खुश हुआ। लेकिन पूरे वर्णनके बिना मुझे सन्तोष नहीं होगा।

बापूके आशीर्वाद

५१

१२-८-३१

चि॰ प्रेमा

तू पत्र नहीं ही लिखेगी? मेरे प्रेमको तू समझी ही नहीं। पुत्रीसे भी ज्यादा मान कर मैंने तुझे आश्रममें रखा है। कहीं मुझे शनिवारको जाना ही पड़े[1] तो मेरे पास तेरा कोभी पत्र ही न होगा?

बापूके आशीर्वाद

५२

[यह पत्र १२-८-३१ और ९-९-३१ के बीचका है।]

चि॰ प्रेमा

तू मुझे लिखना बन्द कर दे तो भी मुझे तो पत्र लिखना ही पड़ेगा। लेकिन तू लिखती नहीं यह अच्छा नहीं करती। लिखनेका हुक्म यूं तो मानेगी?

मौनवार

बापूके आशीर्वाद

५३

९-९-३१

चि॰ प्रेमा

तूने अभी तक पत्र नहीं लिखा। अब तो अगर हवाई डाकसे पत्र भेजा हो तो ही हम विलायत पहुँचें तब वह मिल सकता है या १९ तारीखको मिलेगा।

तू मुझे चिन्तामें डाल रही है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ शनिवारको विलायतके लिये रवाना होना पड़े।

५४

२४-९-३१

चि॰ प्रेमा

तू अब शान्त है यह तो आश्वासन मिला है। लेकिन मुझे पत्र लिखना तूने अभी तक शुरू नहीं किया यह दुःखकी बात है। तेरी चिन्ता मुझे बिलकुल न रहे, अैसा तू कर सकती है। ज्यादा अभी नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

५५

[मैंने लिखा था कि गोलमेज परिषदकी चर्चामें समझौतेके खातिर भी हमें अपनी अेक भी चीज नहीं छोड़नी चाहिये।]

२१-१०-३१

चि॰ प्रेमा

तेरे पत्र अब आने लगे हैं। उनके उत्तर देनेकी अिच्छा बहुत है, लेकिन समय नहीं है। अिसलिअे पहुंचसे ही सन्तोष करना।

तू क्यों डरती है? क्या अेक भी अैसी चीज जो जरूर होनी चाहिये मैं छोड़ सकता हूं?

बापूके आशीर्वाद

५६

[यह पत्र विलायतसे लिखा गया है।]

रविवार
८-११-३१

चि॰ प्रेमा

तू परिषदके बारेमें व्यर्थ चिन्ता करती है। अखबारों परसे कोअी अनुमान मत लगाना। मैं देशकी लाज नहीं खोअूंगा यह विश्वास रखना। काम लेनेकी मेरी पद्धति भिन्न होनी ही चाहिये। अिसलिअे दूसरोंके

साथ तुलना नहीं की जा सकती। भेद कहां है यह तो मैं पढ़ूं और बता सकूं तभी मालूम होगा। असलिओे अच्छा यह होगा कि यहां क्या हो रहा है असका विचार करनेमें तू अपने मनको लगाये ही नहीं। मेरी बात समझमें आती है न?

और कुछ लिखनेका समय नहीं है। अितनेसे ही संतोष करना।

बापूके आशीर्वाद

५७

[पूज्य महात्माजी भारत वापस आये और पकड़े गये। अुसके बाद यरवडा मन्दिरसे आया हुआ यह पहला पत्र है।

मैंने चमत्कार के बारेमें महात्माजीके विचार पूछे थे।

Keep thine eye single बाअिबलके अिस वाक्यका अर्थ भी पूछा था।]

यरवडा मंदिर,
२२-१-३२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। बेलकी बहनोंसे मिली यह ठीक किया।

चमत्कार जैसी कोओ चीज अिस जगतमें नहीं है अथवा सब चमत्कार ही है। पृथ्वी अधरमें लटक रही है और आत्मा शरीरमें है यह जानते हुअे भी (हम) अुसे देख नहीं सकते यह बड़ा चमत्कार है। जिसके सामने दूसरे कहे जानेवाले चमत्कार तो बाअूमरके आमके पेड़की तरह तुच्छ लगते हैं।

तेरी आंख अेक रखना का अर्थ है टेढ़ा न देखना अर्थात् दृष्टि निर्मल रखना अुसके द्वारा कुदृष्टि न डालना। अिसके सिवा अिस वाक्यका दूसरा अर्थ है ही नहीं।

सरोजिनीदेवीका किस्सा दु:खद है। लेकिन हम अनासक्तिपूर्वक अुनके साथ व्यवहार करेंगे तो अुनकी गाड़ी सीधी चलने लगेगी। यहां भी प्रयासमें यह अकल बात है।

बापूके आशीर्वाद

[विलायतकी यात्रामें रोम वगैरा स्थानों पर जिन जिन कलाओंका दर्शन किया अुसके बारेमें वर्णन करनेके लिअे मैंने लिखा था।

आश्रमका ध्येय क्या है? आश्रममें जीवनके बारेमें जो विषमता दिखाअी देती थी अुसके अुदाहरण देकर राय पूछी थी।

आपके साथ जेलमें रहने पर भी सरदार चाय क्यों पीते हैं? यह प्रश्न पूछा था।]

यरवडा मंदिर
२५-१-३२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तू चाहती है यह सब दे सकूंगा या नहीं यह मैं नहीं जानता।

अुत्सवके दरबारमें पहुंच जानेका मुझे पता नहीं था।

रोममें चित्रकला देखकर खूब आनन्द लिया लेकिन दो घंटेमें देखकर क्या राय दूं? मेरी शक्ति ही कितनी है? अनुभव कितना है? मुझे अुसमें से कुछ बहुत पसन्द आया। वहां २-३ महीने रहनेको मिले तो चित्र और मूर्तियां रोज देखूं और धीरे धीरे अुनका अध्ययन करूं। वधस्तंभ पर चढ़े हुअे अीसाकी मूर्ति देखी। अुसने मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित किया यह तो मैं लिख ही चुका हूं।

लेकिन वहांकी कला भारतसे अधिक अूंची हो ऐसा मुझे बिलकुल नहीं लगा। दोनों भिन्न रीतिसे विकसित हुअी हैं। भारतकी कलामें कल्पनाप्रधान है। यूरोपकी कलामें कुदरतका अनुकरण है। जिससे पश्चिमकी कलाको समझना शायद सरल हो। लेकिन समझनेके बाद वह हमें पृथ्वी पर चिपकाये रखती है। और भारतकी कला जैसे जैसे समझमें आती है वैसे वैसे वह हमें अूंचाअी पर ले जाती है। यह सब तेरे लिअे ही लिखा है। अिन विचारोंकी मेरे लिअे कोअी कीमत नहीं है। हो सकता है कि भारतके बारेमें मेरा छिपा पक्षपात यह लिखवाता हो या मेरा अज्ञान मुझे कल्पनाके घोड़े पर चढ़ाता हो। लेकिन जैसे घोड़े पर चढ़नेवाला अन्तमें

तो गिरेगा ही न? अैसा होते हुअे भी अगर विसमें से तुझे कुछ मिले तो ले लेना। बसी चीजसे तू आगे बढ़ गभी हो तो विसे फेंक देना। अपनेसे कम जाननेवाले बालकोंके समक्ष माता-पिता जैसी मुग्ध बातें करते हैं वैसी रामायण-महाभारतकी बातें कह सकते हैं और अपने बच्चोंकी गरज पूरी कर सकते हैं। अैसा ही मेरे बारेमें भी समझना।

विससे तू वितना तो देख ही सकेगी कि मैं कलामें रस लेनेवाला जरूर हूं। लेकिन अैसे तो अनेक रसोंका मैंने त्याग किया है, मुझे करना पड़ा है। सत्यकी खोजमें जो रस मिल गये हैं पेट भर कर मैंने पिया है, और अब भी नये रस पीनेको तैयार हूं। सत्यके पुजारीको प्रवृत्तियां सहज ही प्राप्त होती हैं। *विसलिअे वह स्वभावतः गीताके तीसरे अध्यायका अनुसरण करनेवाला होता है।* मैं मानता हूं कि तीसरा अध्याय पढ़नेसे पहले ही मैं कर्मयोग सामने बन गया था। लेकिन यह तो मैं विषयांतर करने लगा।

आश्रमके बारेमें अच्छा प्रश्न पूछा है। आश्रममें बुद्धयोग प्रधान है, क्योंकि मनुष्यका धर्म शरीर-श्रम करना है। जो अैसा नहीं करता वह चोरीका अन्न खाता है। फिर आश्रमका श्रम जितना अपने लिअे है वुतना ही परमार्थके लिअे है। चरखेको केन्द्रबिन्दु बनाया है क्योंकि भारतके करोड़ों लोगोंके लिअे सामान्य महायज्ञ चरखेके रूपमें खेतीके बाद किसीकी कल्पना की जा सकती है। वुसमें धर्म और अर्थ दोनोंकी भलीभांति रक्षा होती है।

आश्रमका अस्तित्व केवल देशसेवाके लिअे ही नहीं है बल्कि देश-सेवाके द्वारा जगत-सेवा करनेके लिअे है और जगत-सेवाके द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेके लिअे अीश्वरका दर्शन करनेके लिअे है।

आश्रममें हर कोअी भरती नहीं हो सकता। आश्रम अपंगालय नहीं है अनाथालय भी नहीं है। वह सेवकों और सेविकाओंके लिअे मापकोंके लिअे है। विसलिअे जो शरीरसे काम न कर सकें वुनके लिअे आश्रम नहीं है। *फिर भी जो सेवाश्रम ओतप्रोत हों वे शरीरसे अपंग हों तो* भी वुन्हें जरूर आश्रममें लिया जा सकता है। अैसे थोड़े ही लोग लिये जा सकते हैं। लेकिन जो आश्रममें आश्रमवासीके रूपमें भरती हुअे हों वे भरती

होनेके बाद अगर अपंग हो जायं तो अुन्हें निकाला नहीं जा सकता। बाह्य दृष्टिसे देखने पर आश्रमके बहुतसे कार्योंमें विरोधाभास दिखाी दे सकता है, लेकिन अंतर-दृष्टिसे जांचने पर विरोधका आभास दूर जायगा। जितनेमें जो समझमें न आवे वह फिर पूछ लेना। और कोअी शंकायें हों तो वे भी बिना किसी संकोचके पूछना।

विज्ञापनमें फोटो खिंचवानेके लिये मैं कभी कभी ही खड़ा हुआ था। अुसमें व्रतभंग नहीं हुआ अैसा मैं मानता हूं।

मेरे सहवासमें रहे हुअे सब लोग मेरे जैसे ही होने चाहिये अैसा बिलकुल नहीं है। यह अिष्ट भी नहीं है। यह तो नकल करने जैसा हुआ। मुझमें जो कुछ अच्छा हो अुसमें से भी जितना पचे अुतना ही ग्रहण करनेमें लाभ है। बाकी सरदार चाय पीते हैं अुन्हें कौन रोक सकता है? और चाय अुनके लिये औषधिका काम करती हो तो? मेरे साथ रहनेवाले यानी मेरे साथी मांसाहारी भी हैं। अुनका क्या हो?

जिसे चाय अनुकूल न आती हो अथवा जिसने चाय न पीनेके बारेमें अुसकी अुत्पत्तिसे सम्बन्धित बातोंका विचार किया है वही चाय नहीं पियेगा। बा मेरे साथ रहते हुअे भी चाय पीती है, कॉफी भी लेती है। अुसे मैं प्रेमपूर्वक चाय-कॉफी बनाकर पिला भी सकता हूं। यह कैसे? तेरे प्रश्नमें केवल विनोद है यह मैं जानता हूं। लेकिन अैसा होते हुअे भी हम लोगोंमें अैसी बातोंके बारेमें कुछ भ्रम है और थोड़ी असहिष्णुता है जिन्हें हमें निकाल देना चाहिये। अुसका [illegible] यह मैं नहीं जानता। लेकिन जिस बारेमें मेरे विचार तू जान [illegible] ा है। और तो बहुत कुछ जिस बारेके दूसरे पत्रोंमें है। वे [illegible] मिलें तो पढ़ना और अुन पर विचार करना।

५९

१०–१–३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। पुस्तकोंकी जो पेटी में लाया हूँ वह वहाँ पहुँच गयी? विद्यापीठमें कोअी रहता है? पुस्तकोंकी देखभाल होती है या सब बरबाद होती जा रही है? मासिक पत्र भी बहुतसे तो सम्हाल कर रखने जैसे होते हैं। बात यह है कि पुस्तकें संभालनेके लिये पूरा समय देनेवाला अेक आदमी होना चाहिये और अुसके मातहत दो आदमी होने चाहिये। वरना हमें पुस्तकालयको जितना बड़ा होने ही नहीं देना चाहिये। यह काम विद्यापीठका ही माना जायगा। हमारा यह विषय नहीं है। नहीं है अिसीलिअे तो विद्यापीठ खोला। वरना आश्रमको ही विद्यापीठ बना सकते। आश्रमका यह क्षेत्र ही नहीं है। आश्रमका काम मुख्यतः आन्तरिक है। विद्यापीठका मुख्यतः बाह्य है होना चाहिये। दोनोंके अुद्देश्य अेक ही हैं लेकिन दोनोंकी प्रवृत्तियाँ अलग हैं। अिसलिअे आश्रममें तो जरूरी पुस्तकें ही रखें बाकी जिनको जरूरत पड़े वे विद्यापीठसे पढ़नेके लिअे ले आवें। यह तो जब फिरसे स्थिर होकर बैठें तबकी बात है। अभी तो सब कुछ बाढ़में बहा जा रहा है और यह अच्छा ही है। बाढ़के अन्तमें भरपूर और काच जैसा साफ-स्वच्छ पानी ही रहता है न?

नागरधर्मीका अुत्सव मुझे याद है। जो अुत्तर मैंने अुस समय दिया था अुसमें आज कोअी परिवर्तन नहीं हुआ है। सिर फूटे जिसे मैंने पटाखे फूटनेकी अुपमा दी है न? और जो आत्माके गुण जानता है, वह तो अुसे अक्षरशः मान सकता है। अगर आत्मा मरती नहीं तो फिर अुसके घर या कपड़े भले ही फटा करें, सड़ा करें, जला करें अुससे क्या बिगड़ता है? फिर, आत्मा तो सदा ही पूर्ण है, अिसलिअे अुसे नये घरबारकी कमी नहीं है। सचमें तो अुसे अिनकी जरूरत ही नहीं है। लेकिन यह सब अपने लिअे है। अिसलिअे जहाँ अपने सिर फूटें वहाँ पटाखे ही फूटते हैं यह समझना। लेकिन आत्माके लिअे अपना क्या और पराया क्या? अैसा सवाल नहीं पूछना चाहिये। शरीर है तब तक थोड़े-बहुत

अंशमें अपना और पराया है अैसा मान कर ही चलना पड़ेगा। ज्यों ज्यों मरते जाते हैं वैसे वैसे अपने और परायेका भेद टूटता जाता है। पराया मानकर दूसरोंको मारते जाते हैं वैसे वैसे यह भेद बढ़ता जाता है। यह बात जैसे जैसे समझमें आती जायगी वैसे वैसे औरतोंकी तरह बच्चे भी ठिकाने आते जायेंगे। अिसमें धीरजकी जरूरत है। अिस बारेमें बच्चोंका पत्र देखना।

बापूके आशीर्वाद

६०

यरवडा मंदिर
५-२-३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। सरदारने सचमुच चाय छोड़ दी है। सुबहकी तो छोड़ ही दी थी यह मैं जानता था। फिर दस बजे पीते थे। अब वह भी छोड़ दी है। यह मुझे छोड़नेके बाद मालूम हुआ। मैंने अेक शब्द भी नहीं कहा। अपनी अिच्छासे ही अुन्होंने छोड़ी है।

बच्चोंको विदायगीके खिलौने भेजे हैं अैसा लिखनेका मेरा अिरादा नहीं था। अैसा पढ़ा जाता हो तो लिखनेमें मुझसे भूल हुअी। लिखनेका आशय तो यह था कि खिलौने मैं मांगता हूं। अब तो दिये जायं तब सही। मीराबहनने सम्हाल कर रखे थे। तुझे शायद याद हो कि वे कहां हैं।

पुस्तकोंकी पेटीके बारेमें या तो मीराको या प्यारेलालको मालूम होगा। बिना खुली पेटीके वजनकी जांच करनेसे ही पता चल जायगा कि अुसमें पुस्तकें हैं या और कुछ? शायद महादेवको मालूम हो।

विरोधाभासकी बात ठीक है। मेरे या आश्रमके जीवनमें जहां विरोधका आभास है वहां मेल बताया जा सकता है। सर्दीमें ओढ़ने-वाले और गरमीमें खुला शरीर रखनेवाले मनुष्यके जीवनमें विरोधका आभासमात्र है। वह अेक ही नियमके वशीभूत होकर कपड़े पहनता या छोड़ता है। अैसे विरोधके आभासोंमें से बहुतोंका मेल बैठाया जा सकता है।

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे पत्र देरसे मिलें तब अुनके अूपरकी छाप देखकर मुझे तारीख लिखनी चाहिये।

किसनको कितनी सजा हुअी? अुसे कहां रखा गया है?

पेटियां तू जरूर खोल सकती है। अुनमें पुस्तकें हों तब तो (ग्रन्थालयमें) अुनकी व्यवस्था होनी चाहिये और दूसरा कोअी सामान हो तो अुसे लिखकर यथास्थान रखना चाहिये। अुस सामानका क्या करना यह समझमें न आवे तो अुसकी सूची बनाकर भेजना जिससे मैं बता सकूं कि क्या करना है। पुस्तकोंमें दूसरोंकी हों तो भी कोअी हर्ज नहीं है। अुनके नाम पुस्तकोंमें हों तब तो वे सरलतासे अलग रखी जा सकती हैं। अगर नाम न हों तो अुन पर आश्रमकी मुहर लगा दी जाय। अिसके बावजूद कोअी अुनके मालिक होंगे तो वे अुन्हें ले जायंगे। हमें तो जो पुस्तकें हमारे कब्जेमें हों अुन्हें यथासंभव संभाल कर रखनेकी व्यवस्था कर देनी चाहिये।

आश्रमका पढ़ाअीके साथ कोअी संबंध ही नहीं है यह मेरे किस वाक्य परसे तूने समझ लिया? मेरे मनमें जो विचार है वह यह है अक्षरज्ञान — बाहरी पढ़ाअी — का आश्रममें गौण स्थान है। अिस लिअे यह विद्यापीठ नहीं हो सका। लेकिन बाहरी विद्याकी अुपयोगिता आवश्यकता तो है ही अिसीलिअे विद्यापीठ खड़ा हुआ। दोनों अेक-दूसरेके पूरक हैं। अिस तरह दोनोंकी मर्यादा होनेके कारण आश्रमके पुस्तक-संग्रहकी भी मर्यादा होनी चाहिये। विद्यापीठकी कोअी मर्यादा हो ही नहीं सकती। अुसकी मर्यादा आन्तरिक प्रयोगोंके बारेमें जरूर है। आश्रमका नाम बड़ा हो गया है, अुसके बारेमें कभी अतिशयोक्तिकी हद तक पहुंचनेवाली मान्यतायें बन गअी हैं जिसलिअे वहां अनेक प्रकारकी और अनेक भाषाओंकी पुस्तकें आती हैं। अुन सबको संभाल कर रखनेकी जगह विद्यापीठ ही हो सकती है। फिर भी आश्रममें जो पढ़ाअी हम करते हैं अुससे संबंधित पुस्तकें जरूर होनी चाहिये। ये पुस्तकें कौनसी हों यह तो तू और अन्य लोग सरलतासे तय कर सकते हैं। कोअी परेशानी खड़ी हो तो मुझसे पूछा जा सकता है। लेकिन मेरी दृष्टिमें तो

परेशानीका सवाल ही नहीं है। अितने वर्षोंके आश्रमके अस्तित्वके बाद हम तुरन्त कह सकते हैं कि सामान्य रूपसे हमें किन पुस्तकोंकी जरूरत होती है। अुसके बाद अगर कभी जरूरत महसूस हो तो हम विद्यापीठके भण्डारका आश्रय ले सकते हैं। दोनों संस्थायें अलग हैं यह मानना ही नहीं चाहिये। दोनोंके क्षेत्र अलग हैं लेकिन दोनोंमें समानता भी बहुत है और अधिक समानता होती जायगी।

अभी अिसमें कुछ और समझाना बाकी हो तो मुझसे फिर पूछना।

किसीके बारेमें मेरे विचार बन जाने पर भी अुसके विरुद्ध मैं कुछ नहीं सुनूं या देखूं अैसा जान-बूझकर तो मैं नहीं ही करता। सुनता हमेशा हूं लेकिन अुससे विचार हमेशा नहीं बदलते। अवलोकनके बाद बने हुअे विचार झट बदल जायं अिसे मैं दोष मानता हूं। कभी बदलें ही नहीं यह हठ माना जायगा। अिसलिअे यह भी दोष है। विचारोंके बदलनेके लिअे सबल कारण चाहिये। बहुत बार तो मुझे प्रत्यक्ष प्रमाणकी जरूरत पड़ती है। अिस स्वभावकी मैं रक्षा करता हूं। और अैसा करनेसे मैं बहुतसे भ्रमोंसे बच गया हूं और दूसरोंके साथ मेरा सहवास निर्मल रह सका है।

अिसलिअे तुझे जो पूछना हो बेधड़क होकर पूछना। अैसा समय फिर नहीं मिलनेवाला है।

तेरा पृथक्करण सही है। यंग अिंडिया का लेखक अेक व्यक्ति है आश्रममें सबके परिचयमें आनेवाला व्यक्ति दूसरा है। यं. अिं. में तो मैं साधु बन कर बैठ सकता हूं। लेकिन आश्रममें जैसा हूं वैसा दिखे बिना कैसे रह सकता हूं? अुस पर मैं सत्यका पुजारी हूं अतः जान-बूझकर दोष छिपानेका तो प्रयत्न भी मुझसे नहीं हो सकेगा। अिसलिअे मुझमें रहे हुअे कौरव यहां वहांसे निकल ही पड़ते हैं। मेरे भीतर देवासुर-संग्राम चलता ही रहता है यह तो तूने कहा ही है न? लेकिन अैसा दीखता है कि कौरवोंकी हार हुआ करती है। लेकिन अिस बारेमें अभी कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। यह तो सोलन[१] के कथनानुसार मृत्युके

१ अेक प्राचीन ग्रीक तत्त्वज्ञानी। अुनकी सूक्तियां प्रसिद्ध हैं। वे कहते थे कि किसी भी मनुष्यके बारेमें अुसकी मृत्युसे पहले कोअी निश्चित मत न बनाओ।

बाद ही कहा जा सकता है। मैंने करोड़ोंकी कीमत रखनेवालोंको क्षणभरमें कौड़ीकी कीमतवाले बनते देखा है। अिसलिअे मुझे किसी तरहका घमंड नहीं है। घमंड है भी किस कामका?

पत्र फिरसे नहीं पढ़ता हूँ यह ध्यानमें रखना।

बापूके आशीर्वाद

९२

[आश्रममें ही तरह तरहकी बातें छूट लेनेवालोंके अुदाहरण मैंने दिये थे।

हरियोमल आश्रममें आये हुअे भीम जैसे अेक सिंधी कार्यकर्ता थे। वे खेतीका काम करते थे।

आश्रममें विवाह कोअी नहीं करते। आश्रमकी प्रार्थना हिन्दू धर्मके अनुसार संस्कृतमें बोली जाती है, जब कि दूसरे धर्मवाले भी आश्रममें रहते हैं अैसा मैंने लिखा था।]

य मं
१९-२-३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र अच्छा है। निःसंकोच होकर लिखा यह ठीक ही किया।

तूने जो आलोचना की है अुसका यह अुत्तर है। मुझे संबंधित व्यक्तियोंका अुत्तर सुनना चाहिये। बादमें ही मैं अुन व्यक्तियोंके बारेमें कह सकता हूँ। लेकिन सामान्य रूपसे कह सकता हूँ कि जिन जिनको छूट दी गयी है अुनके लिये प्रिविलेज का सवाल नहीं रहा है बल्कि आवश्यकताका रहा है। मुझ पर अैसी छाप पड़ी है कि जो लोग सुविधायें लेते हैं वे आलस्यकी वजहसे नहीं लेते परन्तु अिसलिअे लेते हैं कि अुनके शरीरको सुविधाओंकी जरूरत है या यों कहो कि अुनके स्वभावके कारण वे जरूरी हैं। हम किसीके काजी नहीं बन सकते। अुनके प्रयत्नोंका हमें पता (भी) न हो। अिसका यह अर्थ नहीं है कि अुनमें अपूर्णता नहीं

है। अपूर्णता न हो तो वे आश्रममें आयें ही क्यों? मैं ढोंगी नहीं हूं। मैं जो कुछ करता हूं मुझे दूसरोंको भी करना ही चाहिये या सब मुझे कर सकते हैं, यह माननेमें ही महादोष है। जो बोझा हरिमोमल उठाता है वह मैं उठाने जाऊं तो मुझी क्षण मेरा राम बोल जाय। और हरिमोमल अगर मेरी निर्बलतासे द्वेष करे, तो यह गलत ही कहा जायगा।

बहुतोंने यह आरोप लगाया है कि लोग मुझे धोखा देते हैं। कोई भी धोखा नहीं देता ऐसा नहीं है लेकिन अधिकतर लोग मुझे धोखा नहीं देते। मैंने अनुभव किया है कि बहुतेरे लोग मेरे सामने जैसा व्यवहार रख सकते हैं वैसा मेरे पीछे नहीं रख सकते। जिस कारणसे कुछ लोग मेरा त्याग भी करते हैं। जैसा बहुत होता है, जिसीलिये मुझ पर आकर्षण-शक्तिका आरोपण किया जाता है।

लेकिन जितनेसे मुझे या दूसरोंको सन्तोष होनेकी संभावना कम है। यह मैंने बचावके लिये लिखा भी नहीं है। मेरी मनोव्यथा बताती है। लेकिन सच बात यह है और मैंने बरसोंसे मुझे माना है। आश्रमकी त्रुटियां मेरी त्रुटियोंका प्रतिबिंब हैं। मैंने अनेक लोगोंसे कहा है कि मेरी पहचान मुझसे मिलनेसे नहीं होती। मिलने पर मैं अच्छा भी दिखाओ दूं। जो वस्तु मुझमें न हो मुझका भी लोग मुझ पर आरोपण कर दें क्योंकि मैं सत्यका पुजारी हूं। जिसलिये वह पूजा दूसरोंको कुछ भर प्रभावित भी कर दे। मुझे पहचाननेके लिये मेरी गैरहाजिरीमें आश्रमको देखना चाहिये। असमें दिखाओ देनेवाले सारे दोष मेरे दोषोंके प्रतिबिम्ब हैं ऐसा माननेमें जरा भी भूल नहीं होगी मेरे प्रति अन्याय नहीं होगा। जो समुदाय आश्रममें जिकट्ठा हुआ है मुझे मैं खींच लाया हूं ऐसा ही कहा जायगा। और आश्रममें रहकर भी वे दोषोंको दूर न कर सके हों या अपने दोषोंको अुन्होंने बढ़ा लिया हो तो अुसमें अुनका दोष नहीं मेरा दोष है। अुसमें मेरी साधनाकी कमी है। जिन कमियोंको मैं जानता नहीं या देखता नहीं ऐसा भी नहीं है। सिर्फ जितना ही कह सकता हूं कि जो कमियां हैं वे प्रयत्न करनेके बावजूद हैं। और क्योंकि मैं प्रयत्नशील हूं जिसलिये कुल मिलाकर आश्रमका पतन नहीं हुआ ऐसा मेरा विश्वास है। मुझे खुदको जिससे आश्वासन मिलता है

कि तीन वगह आश्रम बनाये और तीनों स्थानों पर मुझके तात्कालिक हेतु सफल हुमे दिखाजी दिये हैं। लेकिन जिस आश्वासनसे भी मैं अपनेको या दूसरोंको धोखा नहीं देता। मुझे तो बहुत दूर जाना है। मार्गमें खाड़ियां और पहाड़ खड़े हैं। फिर भी यात्रा तो करनी ही है। और सत्यकी खोजमें असफलताके लिये अवकाश ही नहीं है जिस प्रकार मैं निश्चिन्त रहता हूं।

विद्वान समाजको आश्रम आकर्षित नहीं कर सका यह बिलकुल सच है। क्योंकि मैं अपनेको विद्वान नहीं मानता। जिसके सिवा जो मुट्ठीभर विद्वान आश्रमके प्रति खिंचे हैं, वे विद्वत्ताका पोषण करनेके लिये नहीं बल्कि दूसरा ही कुछ लेने और अुसका पोषण करनेके लिये खिंचकर आये हैं। वे सत्य-शोधक हैं। और सत्यकी खोज तो अपढ़ कर सकता है, बच्चा कर सकता है, स्त्री कर सकती है, पुरुष कर सकता है। अक्षरज्ञान कभी कभी हिरण्मय पात्रका काम करता है और सत्यका मुंह ढंक देता है। यह कहकर मैं अक्षरज्ञानकी निन्दा नहीं करता। लेकिन अुसे अुसके अुचित स्थान पर रखता हूं। अनेक साधनोंमें यह भी अेक साधन है।

आश्रममें मुख्यतः संस्कृत प्रार्थना पसन्द की गयी है, क्योंकि अुसमें मुख्य रूपसे हिन्दू समुदाय ही आया है। दूसरी प्रार्थनाओंसे द्रोह नहीं है। कभी कभी हम करते भी हैं न? अगर बहुतसे हिन्दुओंके बजाय बहुतसे मुसलमान आ जायं तो कुरान शरीफ रोज पढ़ा जायगा और अुसमें मैं भी भाग लूंगा।

जितनेसे तुझे कुछ अुत्तर मिलता है? संतोष होता है? अुत्तर न मिले संतोष न हो तो बार बार पूछना। मैं नहीं थकूंगा। तुझे संतोष देना चाहता हूं। तू थकना मत।

बापूके आशीर्वाद

६३

[१९ ता. का पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। अिसलिये अिस तरहके प्रेरणादायक विचारोंसे भरे हुअे पत्र लिखते रहिये अैसी मैंने पूज्य महात्माजीसे प्रार्थना की थी।

दांडी-कूचसे कुछ महीने पहलेकी बात है। हृदय-कुंजके बाड़ेके अेक दरवाजेसे मीराबहनके निवास-स्थानके सामने होकर अेक रास्ता जाता था। लोगोंके आने-जानेसे तकलीफ होती है यह शिकायत पूज्य महात्माजीसे करके मीराबहनने वह दरवाजा बन्द करवा दिया। हृदय-कुंजमें रहनेवाली सारी बहनों बच्चों पूज्य बा आदि सबको अिससे दिक्कत होने लगी। दूसरे रास्तेसे लम्बा चक्कर काटकर जाना पड़ता था। श्री मणिलाल गांधी (महात्माजीके दूसरे पुत्र) अुस समय वहां थे। अुन्हें भी यह बात पसंद नहीं आयी। वे चिढ़े। लेकिन पूज्य महात्माजीसे कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं हुअी। सबकी कठिनाअी देखकर मैंने अुनके सामने यह बात की। तब महात्माजीने मीराबहनके कामका समर्थन किया और मेरे लिअे बहुत कड़वी भाषा बरती। अुससे मुझे आश्चर्य और दुःख भी हुआ। मैंने भी अिसके विरुद्ध दलील की। दूसरे दिन प्रातःकालकी प्रार्थनासे पहले पूज्य महात्माजीने अुलाहनावाला अेक पत्र लिखकर मुझे दिया। (अुस दिन मौनवार रहा होगा) वह पत्र फाअिलमें से खो गया है। लेकिन मैंने तुझे अुदार समझा था। तू अैसी कृपण क्यों? अैसी भाषामें कलकी मेरी दलीलके लिअे मुझे डांटा गया था। अिस बातका पता चलने पर थोड़े दिन बाद मीराबहनने वह दरवाजा खुलवा दिया।

अिस बारके पत्रमें मैंने अुन्हें अिस घटनाकी याद दिलाअी थी और लिखा था कि महात्मा भी अैसे वचन कैसे बोल सकते हैं? जिनके लिअे आप अपने मनमें अनुकूल विचार रखते हैं अुनके खिलाफ शिकायत सुननेकी आपकी तैयारी नहीं होती अिसका यह अुदाहरण है।]

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला।

तू मुझसे हृदयको हिलानेवाले सुवर्ण वचन माँगती है। अगर मेरे पास तिजोरी होती तो उसे खोलकर अुसमें से हर हफ्ते तुझे भेजता जाता। लेकिन मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है। जो वचन निकलते हैं वे अपने-आप निकलते हैं। और जिस तरह निकलें वे ही वचन सच्चे क्योंकि वे जीवित वचन कहे जायेंगे। दूसरे तो कृत्रिम होंगे। अच्छे लगने पर भी अुनका असर स्थायी नहीं होता ऐसा मुझे लगता है। मुझसे कृत्रिम कुछ हो ही नहीं सकता। विलायतमें पढ़ते समय मैंने दो बार ऐसा प्रयत्न किया और दोनों बार असफल रहा। अुसके बाद ऐसा प्रयत्न किया ही नहीं।

और जैसा मेरे वचनोंके बारेमें वैसा ही मेरे बारेमें जो अनुभव तू अनुभूत करती है अुसके बारेमें भी समझना। मीराबहनके बारेमें हमारी बात हुई थी वह मुझे याद है। अुस समय मुझे जैसा सूझा वैसा अुत्तर मैंने दिया होगा। तेरे अूपर जिसकी अच्छी छाप नहीं पड़ी यह मैं समझ सकता हूँ। जितनी मेरी अहिंसामें कमी है। मैंने अुस समय कहा तो होगा वही जो मुझे कहना होगा लेकिन अुसमें डंक (कड़वाहट) तूने देखा होगा। सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् यह व्यावहारिक वचन नहीं परन्तु सिद्धान्त है। प्रियम् का अर्थ है अहिंसक। मैंने तुझे जो बात आवेशमें कही होगी वही अगर मैं नम्रतासे कहता तो जो कड़वा असर रह गया वह न रहता। अहिंसक सत्यके बारेमें ऐसा हो सकता है कि बोलते समय वह कठोर लगे परन्तु परिणाममें वह अमृतमय लगना ही चाहिये। यह अहिंसाकी अनिवार्य कसौटी है। यह जो मैं लिखता हूँ वह मुझसे संबंध रखनेवाले कड़वे अनुभवोंके आधार पर है। मीराबहनके बारेमें मैंने अुसके पक्षमें तो तुझसे बहुत जोर देकर कहा होगा। लेकिन अुसे मैंने जितना रुलाया है अुतना किसी और साथी या बहनको नहीं रुलाया। और जिसमें कारण मेरी कठोरता अधीरता और मोह थे। मीराबहनका त्याग मैं अवर्णनीय मानता हूँ और जिसलिये अुसे मैं पूर्ण देखना चाहता हूँ। अुसमें जरा भी कमी दिखायी देती है तो मोहके

कारण मुझमें अधीरता आ जाती है और जिस वजहसे मैं तुझे कुछ तीव्र कर कहता हूं। परिणाम सुधारके रूपमें आता है। जिन अनुभवोंमें मैं अपने अंदर भरी हुअी हिंसाको पहचान सका और जिसलिये अपने पिछले संस्मरणोंको याद करके तुझको सुधारनेका प्रयत्न कर रहा हूं। जिसलिये तेरे पत्र मुझे अच्छे लगते हैं। अुत्तरमें तुझे कुछ दे सकता या नहीं यह मैं नहीं जानता। लेकिन मैं स्वयं तो ले ही रहा हूं। जिस पाठका — अपनी कठोरताका — विशेष भान मुझे विलायतमें हुआ। मेरी सेवाके लिये मुख्य तो मीरा ही थी। वहां भी मुझे सतानेमें मैंने कोअी कसर नहीं छोड़ी। लेकिन अुससे मैं सीख गया। किसी भी मामलेमें अीश्वरने मेरी भूलोंको लम्बे समय तक टिकने ही नहीं दिया। राजनीतिमें भी मैंने जब जब भूल की तब तब अीश्वरने मुझे तुरन्त सुधारा है। तेरे पत्र जिस जागृतिमें सहायक ही हैं।

लेकिन अब तू मेरे पिछले पत्रको ज्यादा समझ सकेगी। अपूर्णमें से पूर्णकी आशा कैसे रखी जा सकती है? अंधेने अंधोंका संघ अेकत्रित किया है। लेकिन अंधा अपने अंधेपनको जानता है। अुसका जिलाज भी जानता है। जिसलिये अंधोंको साथ रखते हुअे भी वह विश्वास रखता है कि अुन्हें कुअेंमें नहीं गिरायेगा न स्वयं गिरेगा। वह हाथमें लकड़ी लेकर चलता है। लकड़ीके सहारेसे चलनेका रास्ता वह मालूम करता जाता है और कदम अुठाता है। जिससे कुल मिलाकर आज तक तो सब कुशल ही रहा है। लकड़ीके अुपयोगके बावजूद कभी जरा भी रास्ता भूला है तो तुरन्त अुसे मालूम हो गया है और वह वापस लौट आया है। साथियोंको भी अुसने लौटाया है। मेरा संचालन जबतक रहेगा तब तक तेरे जैसी प्रेमल स्वभाववालीको आलोचना करनेके कारण मिलते ही रहेंगे। संचालन चला जायगा तब आलोचनाके कारण सर्वथा अदृश्य हो जायेंगे। जिस बीच हम सब अंधे अल्पदर्शी होनेके कारण हाथीको जैसा देखें वैसा अुसका वर्णन करें। हम सबके वर्णन भिन्न होंगे फिर भी अुतने अंशमें बिलकुल सच्चे ही होंगे। और आखिरमें तो हम सबने हाथीका ही स्पर्श किया होगा। जब हमारी आंखें खुलेंगी तब सब साथ साथ नाचेंगे और पुकार अुठेंगे — हम कैसे अंधे हैं! यह तो वही

हाथी है जिसके बारेमें हमने गीतामें पढ़ा था। हमारी आंख पहले खुली होती तो कितना अच्छा होता! लेकिन मेरसे मुझे तो भी मुझकी चिन्ता क्या है? अीश्वरके यहां समयका नाप ही नहीं है या भिन्न प्रकारका नाप है। जिसलिये काममें अज्ञान लुप्त हो जायगा।

अब तो तू जिसमें से जो जो दोष तूने मुझमें देखे होंगे अुन सबका अुत्तर पा लेगी न? जिसका यह अर्थ नहीं है कि अब तू अपनी समस्यामें मेरे सामने रखे ही नहीं। तू रखती रहना और मैं अुत्तर देता रहूंगा।

सुशीला और किसनको मेरे आशीर्वाद भेजना। और कुरुंवरको लिख सकती हो तो अुसे भी। जमनादासकी तबीयत कैसी थी? अुसकी धाताका क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

६४

[आश्रममें सब नियमोंका पालन मैं खुशीसे करती थी। अुसमें सूतयज्ञ विशेष था। अेक दिन ८–१ तार बाकी रहे होंगे कि काममें लग गयी और अुन्हें पूरा करना भूल गयी। जब जिसका भान हुआ तो मुझे बहुत दुःख हुआ और मैंने तीन दिनका अुपवास किया। यह महात्माजीको लिखकर मैंने बताया था।]

यरवडा मन्दिर,
७–१–३२

चि० प्रेमा

मैं मानता हूं कि तू यज्ञ पूरा करना भूल गयी जिसमें रामने तेरा गर्व ही अुतारा है। जिस भूलको जितनी बड़ी तू समझती है अुतनी बड़ी मैं नहीं समझता। तू बड़ी मानती है यह बिलकुल ठीक है। रामने गर्व अुतारा अैसा जिसलिये कहता हूं कि भूलके पुतले हम अगर किसी काममें अेक भी भूल न करें, तो हमारे भीतर गर्व (वह कितना ही सूक्ष्म हो) आ जाना संभव है। जैसा नारदजीके प्रति रामचंद्र का

शिव (?) ने किया वैसा रामने तेरे प्रति किया मालूम होता है। जिससे दो लाभ हैं। मर्म खुल गया और अब भूल नहीं होगी।

तेरे पत्रमें जो प्रश्नचिह्न हैं अुन पर आज लिखनेकी कोओ बात नहीं रह जाती। तू कठोर है अैसा मैंने बिलकुल नहीं माना है। तेरी आलोचनायें मेरे लिअे तो कामकी ही हैं। सबमें गुण-दोष भरे हैं। तू अगर गुण कम देखती हो तो अधिक देखनेकी आदत डालना।

मेरे पत्रसे मारवाडीपनकी सोचमें बिलकुल नहीं पड़ना चाहिये था। मारवाड़ीपन मन तो करता ही है। दूसरे शारीरिक कामके लिअे मैंने अुसके पास समय ही नहीं रहने दिया। जिसमें वह क्या करे? जिसमें भी मेरी रचना-शक्तिका अधूरापन है। आश्रम शुरू किया तभी अुव्यवस्था कर सका होता तो आज जो कुछ लोगोंको केवल देखरेख वगैरामें ही लगे रहना पड़ता है वह न होता। जो चल पड़ा सो चल पड़ा। मैं मानता हूं कि अब भी परिवर्तन हो सकता है। लेकिन वह मुझे सूझता नहीं है और मेरे बजाय अैसी कोओ स्त्री या पुरुष अभी तक हमें मिला नहीं है जो अैसे मामलोंमें आश्रमके नियमोंका अनुसरण करते हुवे अधिक विचार करके अुन पर अमल करा सके। न मिले तब तक जो कुछ चलता है अुसे सहन करें। — बहुत अपूर्ण है यह ध्यानमें रखें क्योंकि मैं तो मानता ही हूं कि आश्रममें सबके लिअे अपने हिस्से आया शारीरिक काम कर सकना और सुव्यवस्थाकी रक्षा होना अवश्य है। यह विश्वास रखकर हम चलेंगे तो किसी दिन जिसकी कुंजी हाथ लग जायगी।

बापूके आशीर्वाद

६५

[मैंने लिखा था मैं देखती हूं कि आप बाहर हों या जेलमें आप अूंचे ही अुठते रहते हैं। पहलेकी अपेक्षा महान होते जाते हैं। जिससे मुझे आनन्द होता है। अैसा न होता या आप अूंचे न अुठकर जैसे थे वैसे ही रहते तो भी आपके प्रति मेरा Admiration (प्रेम) घट जाता। ता० २५-२-३२ के पत्रको पढ़कर मेरे मनमें जो विचार आये थे अूपरके शब्दोंमें मैंने प्रकट किये।

संकर-विवाह तथा विवाह-विच्छेदके बारेमें मैंने भुसकी राय पूछी थी। फिर सह-शिक्षणके बारेमें। आश्रमके विद्यालयमें शिक्षित किया हुआ शिक्षण क्रम लिख भेजा था।

भुस समय जापानने चीन पर हमला किया था। असलिये मेरे मनमें असहाय (भुस समयके) चीनके लिये भितनी हमदर्दी और जापानियोंके प्रति भितना क्रोध था कि स्थान-दर्शन करनेके लिये आश्रममें जब दो जापानी भी नारणदास काकासे मिलने आये तो मैंने प्रश्नोंकी झड़ी लगाकर भुन्हें डांटते हुये जोरदार शब्दोंमें कहा "जापानकी हार और चीनकी विजय" होनी ही चाहिये। यह बात पूज्य महात्माजीको मैंने पत्रमें लिखी थी।]

यरवडा मन्दिर,
११-१-१२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। अभी मुझे बायें हाथसे ही लिखना पड़ेगा। असलिये बहुत लम्बे पत्र नहीं लिखे जा सकते। बायां हाथ दर्दकी वजहसे नहीं चल सकता। महादेव[1] की मदद अब जरूर मिल सकती है लेकिन लेखके लिये यह नया प्रयोग होगा। देखता हूं कि मैं कहां तक लिखा सकूंगा। केवल प्रेमके पत्र लिखवानेमें सफलता मिलती है या नहीं यह देखना है। कामकी ही बातें तो लिखाअूंगा।

तेरे पत्रोंसे मैं जरा भी तंग नहीं हुआ था।

हम सबकी या तो नित्य बढ़ना होता या घटना होता। स्थिर तो कुछ है ही नहीं।

मैं अपने भूपर दोष ले लेता हूं जिसमें झूठी नम्रता या अति शयोक्ति बिलकुल ही नहीं है। असका अर्थ यह नहीं है कि बाकी लोग दोषमुक्त हो जाते हैं। लेकिन जो मुख्य व्यक्ति है वह जैसे अच्छेका यश ले लेता है वैसे ही भुसे बुरेके अपयशका स्वामी भी बनना ही चाहिये।

संकर-विवाहकी आवश्यकताको अेक हद तक मैं स्वीकार करता हूं।

---

१ स्व॰ श्री महादेव हरिभाओ देसाओ (१८९२-१९४२)। पूज्य बापूजीके मंत्री। अुस समय पूज्य महात्माजीके साथ ही यरवडा जेलमें थे।

अगर पुरुषको विवाह-विच्छेदका अधिकार हो तो स्त्रीको भी होना चाहिये। लेकिन सामान्यतः मैं अिस प्रथाका विरोधी हूं। प्रेमकी गांठ अविभाज्य होनी चाहिये।

स्त्री-पुरुषकी शिक्षा अलग भी हो सकती है और साथ भी हो सकती है। यह विषय पर आधारित है। अकसर दोनों साथ सीख सकते हैं। अिस बारेमें सारे देशके लिये या सब परिस्थितियोंके लिये मैं अेक नियम नहीं बता सकता। यह विषय सरल नहीं है। अभी भी कोअी निश्चित परिणाम नहीं बता सके हैं। सारा प्रश्न ही आज प्रयोगका विषय है।

सौंदर्यकी स्तुति होनी ही चाहिये। लेकिन वह मूक ही अच्छी है। और 'ठेन रफ्लेम मुम्बीपा' का सिद्धान्त यहां भी सत्य है। आकाशका सौंदर्य जिसे हर्षित न बनाये उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन जो हर्षसे पागल होकर नक्षत्र-मंडल तक पहुंचनेकी सीढ़ी तैयार करने लगें वे मोहमें पड़े हुअे हैं।

शिक्षण-क्रम अच्छा लगा। अुसमें कोअी परिवर्तन या संवर्धन मुझे अभी नहीं सूझ रहा है।

जापान-चीनके मामलेमें हमारी सहानुभूति चीनकी तरफ होनी ही। लेकिन सच्ची स्थिति तो किसी बालकके पत्रमें मैंने बताअी है वही लगती है।

जमनादासके बारेमें तूने लिखा वही ठीक है। वह मन ही मन घुटता रहता है। अुसका दर्द दाब सके तब काम चले।

बापूके आशीर्वाद

६६

[श्री नारणदास काकाने दांडी-कूचमें शरीक हुअे सैनिकोंमें से तीनकी मांग (आश्रमके काममें सहायता देनेके लिये) पूज्य महात्माजीसे की थी। अुसे अुन्होंने मंजूर कर लिया। अुन तीनमें से अेक थे पंडित खरे थे। बहुत समयसे पूज्य महात्माजी मुझ पर जोर डालकर कहते थे कि मुझे पंडितजीसे स्वरज्ञान प्राप्त करना चाहिये। अिसलिये रोज आधे घंटेका समय निकालकर मैं संगीत सीखने लगी। दो महीने बाद गलेकी गिल्टियोंका ऑपरेशन हुआ और संगीतका वर्ग हमेशाके लिये बंद हो गया।

तो चल बसे। मुझे लगा करता है कि यह कहीं मेरे अज्ञान और हलका तो परिणाम नहीं हो। अिससे हृदयमें गहरी वेदना होती है।"

"वाह वाह ये शब्द महात्माके ही मुहसे निकलते हैं?" मैंने जरा व्यंग्यमें कहा। आप यथासंभव सारे योग्य अुपाय कर चुके हैं। डॉक्टरोंने भी अुनके बारेमें प्रमाणपत्र दिया है। परन्तु मृत्यु किसी तरह टलती ही नहीं तो अुसका कोअी क्या करे? अिसके सिवा आपके जैसे महात्माको यह माया कहांसे लग गयी? आपका मन अितना नीचे कैसे गिरा?

"तेरा कहना ठीक है" महात्माजी बोले "मेरी कमजोरी तो अिसमें है ही।" और नीचा सिर करके वे लिखने लगे। लेकिन अेकाध मिनटमें फिर सिर अूंचा करके कहने लगे "मनुष्य भले ही अनासक्त और व्रतस्थ हो फिर भी अुसमें कोमलता नहीं होनी चाहिये अैसा थोड़े ही है?"]

म० मं०
२१-३-३२

चि० प्रेमा

बायें हाथसे लिखनेका आग्रह रखता हूं अिसलिअे लिखनेका काम अपने आप कम हो जाता है। क्योंकि अभी लिखनेकी आदत गयी नहीं है। विलायतसे जो पत्र वगैरा लाया हूं अुनका हमें अुपयोग करना है। अुनसे बुद्धिभ्रम होना संभव हो तो संभाल कर रख देना। बादमें काम आयेंगे। लॉरेन्सवाली पोथीका किस्सा मैं भूल गया हूं। जिनकी अैतिहासिक कीमत नहीं थी अैसी चीजें साथ नहीं आयीं। अिसलिअे अभी तो सब चीजें बहुत यत्नसे संभाल कर रख देना। जिसका अुपयोग करने जैसा लगे अुसका करना।

मत्रके बारेमें अभिमान=आग्रह आवश्यक है मैं अैसी हूं मेरा मत्र टूट ही नहीं सकता यह अभिमान=गर्व त्याज्य है।

अगर मैं अैसा दावा करूं कि माया मुझे बांध ही नहीं सकती, तब तो मेडलीनके बारेमें जवाब देनेकी जरूरत होगी न? मायाके पाशमें से छूटनेका प्रयत्न करते हुअे भी हम कोमलता और सेवाभाव न छोड़ें। कोअी मर जायगा तो क्या होगा यह विचार मूर्खताका है। मायाका

नहीं। मरना सबको है यह अेक बार जान लेनेके बाद अुसका विचार क्या करना? और फिर हम तो भगवानके हाथमें स्वेच्छासे कठपुतली बने हैं फिर यह झंझट किसलिये? अुसे नचाना होगा वैसे नचायेगा। मूल बात तो माननेकी ही है न? जिसे सदा ही माननेको मिले अुसे दूसरा क्या चाहिये?

तेरा संगीत आगे बढ़ रहा है यह बहुत अच्छा है। फिस्टुला कटवाना जरूरी हो तो कटवा डालना।

आश्रमसे बाहरवालोंके बारेमें अभी फैसला नहीं हुआ है।[1] सुशीलाका नाम शामिल किया है।

अपने दोषोंकी चर्चा करवाकर तू प्रशंसा करवाना चाहती है क्या? मुझे तेरे दोष बताने ही नहीं है। कभी बार मैं बता नहीं चुका हूं? अुनमें कितना सुधार किया यह बता। फिर अिस प्रश्नका अधिक विचार करेंगे।

मौजूदके भक्तों शरीरमें अेक हद तक ही समता होती है। पूर्ण समता जिसमें प्रकट हो वह परमेश्वर है। लेकिन परमेश्वर तो अेक ही है। अिसलिये पूर्णतम मनुष्यमें भी अधूरी समता ही होती है। अिसीलिये मतोंकी भिन्नता और विरोध होते हैं। अिसमें दुःख माननेकी जरूरत नहीं है। पाप = विषमताओंका परिणाम। हमारा धर्म समताकी मात्राको प्रतिदिन बढ़ाते रहना है। अैसा करते करते विषमता बुरी लगनेके बजाय सह्य और कुछ अंशमें सुन्दर भी लगेगी।

हिन्दुस्तानमें सब कुछ अन्य देशोंकी अपेक्षा अच्छा ही है अैसा मान लेनेका कोअी कारण नहीं है। फिर अुत्थान-पतन तो जिसका नियम है। कुल मिलाकर हिन्दुस्तानमें बहुत कुछ अच्छा है। अिसीलिये हिन्दुस्तान विजित देश हुआ विजेता नहीं। जिसके मर्ममें यह मान्यता है कि गुलामकी अपेक्षा अत्याचारीकी स्थिति ज्यादा बुरी है।

हमारे यहां लांगफेलो और अप्टन सिंक्लेर[2]की कौनसी पुस्तकें हैं?

बापूके आशीर्वाद

---

१ मुलाकातके बारेमें।

६७

[पूज्य महात्माजीके बायें हाथसे लिखे हुअे पत्र आने लगे। अिसलिये मुझे लगा कि मुझे लम्बे लम्बे पत्र लिखनेसे अुनका दाहिना हाथ थक गया होगा।]

य॰ मं॰
२८-१-१२

चि॰ प्रेमा

तू चाहे जो सवाल पूछना। अैसा मौका शायद फिर कभी न आये। तू नहीं जानती कि मैं अेक लकीरमें ही जवाब दे सकता हूं और पन्ने भी भर सकता हूं। ज्यादा नहीं लिख सकूंगा तो थोड़ेमें ही पूरा कर दूंगा। फिर भी अुत्तर अधूरे नहीं होंगे।

मेरे दाहिने हाथ पर तेरी चीजका असर हुआ यह तो अैसा माननेके बराबर हुआ कि कौआ डाली पर बैठा और डाली टूटी अिसलिये कौअेके भारसे डाली टूटी।

मुझे स्वप्न आते जरूर हैं लेकिन शायद ही कभी अुन पर मेरा ध्यान जाता है। जो स्वप्न आते हैं अुन्हें मैं कोअी महत्त्व नहीं देता।

हमारे पुस्तकालयमें कारलाअिल[1] और रस्किनकी पुस्तकोंका पूरा सेट होना चाहिये। अगर हो तो अुसकी सूची भेजना।

हमारे पास सब पुस्तकोंकी सूचियां कितनी हैं? अगर अेकसे ज्यादा हों तो अेक मुझे भेज देना।

बड़ी बहनोंके बारेमें मैंने तुझे कभी लिखा नहीं। अिस बार जीमें आया कि लिखूं। बहनोंमें किसी भी सामाजिक हेतुसे आपसमें मिलनी मालूम नहीं होती। अिसका अर्थ यह है कि संघ टूट गया है। अिस बारेमें लक्ष्मीबहन और दुर्गाको मैंने लिखा तो है। लेकिन मेरा कुछ असर होता दीखता नहीं है। साथ मिलकर काम करनेकी जिम्मेदारी लेनेकी शक्ति बहनोंमें आनी चाहिये। तुझमें हिम्मत और आत्म-विश्वास हो तो अिस

---

१ टॉमस कार्लाअिल (१७९५–१८८१)। अंग्रेजी भाषाके प्रसिद्ध लेखक।

कामको तू हाथमें लेगा। अगर हाथमें ले तो हार कभी मानली ही नहीं है जिस निश्चयके साथ ही हाथमें लेना। हमारे पास सारी अनुकूलतायें हों तो ही हम काम करें, यह करना नहीं कहलायेगा। बढ़जी चाहे जैसी लकड़ीके टुकड़ेमें से आकार घड़ लेता है शिल्पी चाहे जिस पत्थरमें से मूर्ति घड़ लेता है वैसे ही चाहे जैसे मनुष्योंके साथ रहना और अुनसे काम लेना हमें आ जाय तभी हमारी मनुष्यताकी कीमत मानी जायगी। मुझे तो लगता है कि हमें यही जिस दुनियामें सीखना है और जिसके लिये हमारे भीतर ताकतकी अुदारता होनी चाहिये। किसीसे मिलते ही अुसके दोष देखकर हम डरने लगें तब तो काम बिगड़ेगा ही। दोष तो है ही — हमारे भीतर भी है और सामनेवालोंमें भी है। जिसके बावजूद भी मिलना है अैसा निश्चय हो तो ही काम बनता है। मैं जानता हूं कि यह काम बहुत कठिन है। मेरा तो बरसोंसे यह चल ही रहा है। लेकिन मैं सफल हुआ हूं अैसा नहीं कह सकता। थोड़ीसी सफलता मिली मालूम होती है, जिसलिये दूसरोंको रास्ता दिखानेकी हिम्मत या धृष्टता मैं करता हूं।

अब तुझे जो ठीक लगे वही करना। यह पत्र बहनोंके सामने रखना हो तो तू रख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

६८

य मं
१–४–३२

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला।

बिन्दु सुन्दर प्रश्न पूछ रहा है। तम्बाकू, कच्चार वगैराके प्रयोग हम आश्रममें कैसे करें? जिस बारेमें नारणदासके पत्रमें लिखा है। जिसलिये यहां जिस संबंधमें नहीं लिख रहा हूं। तू स्वयं यह सीख रही है जिसलिये तेरे सामने यह सवाल खड़ा हुआ या नहीं यह जाननेके लिये

तू आश्रमको जो प्रमाणपत्र देती है वह मैं नहीं लूंगा। सच्चा हो तो वह प्रमाणपत्र मुझे अच्छा जरूर लगेगा। जिस बातको तू हाथमें लेती है अुसके पीछे पागल हो जाती है, अैसी छाप तुझ पर पड़ी होगी। यह ठीक नहीं है। आश्रमके बच्चों तक भी हम कहां पहुंच सके हैं? आश्रममें हम हिन्दी अुर्दू तामिल तेलगु और संस्कृत सीखनेवाले थे। अिस दिशामें बड़ा ही शिथिल प्रयत्न हुआ है। चमड़ेकी कलामें हम कहां कुशल बने हैं? बारीकसे बारीक सूत हम कहां कातते हैं? अैसी तो दूसरी बहुतसी बातें बता सकता हूं। मेरी शंकाके समर्थनके लिअे अितना काफी है। काठी वगैराके पीछे सब पड़ सकते हैं — यह तो मिठाअीके पीछे सब पड़ते हैं अैसा कहनेके बराबर हुआ। संसारमें अैसी चीजें जरूर हैं जिनके पीछे पड़नेमें कोअी परिश्रम नहीं होता। हम पशु-परिवारके भी हैं, अिसलिअे यह गुण हममें स्वाभाविक है। अुसे पैदा नहीं करना पड़ता। अुसे बढ़ाना अुचित है या नहीं यह प्रश्न है। पशुजातिके सभी गुण त्याज्य हों अैसी बात तो नहीं है।

अभी रसोड़ेमें कितने लोग खाते हैं? डबल रोटी अभी भी बनती है क्या? बनती हो तो कौन बनाता है? अच्छी बनती हो तो कोअी आये अुसके साथ अेक या दो भेजना।

तमनीसे कोअी मिले तो अुससे कहे कि अुसके अेक भी पत्रका अुत्तर न दिया हो अैसा मैं नहीं जानता। अिसलिअे वह मुझे पत्र लिखे।

दीक्षितके[1] ज्योतिषशास्त्रका गुजराती अनुवाद हुआ है। वह मेरे पास है। बॉलकी पुस्तक यहां मिल जायगी अिसलिअे नहीं मंगा रहा हूं। अप्टन सिंक्लेरकी भेजी हुअी पुस्तकें आश्रमकी ही हैं। अुन्हें दर्ज कर लेना और अुनमें से बोस्टन और बास टैक्स भेजना। बाकी पुस्तकोंकी सूची भेजना।

अुपनिषद् मुझे अच्छे लगते हैं। अुनका अर्थ लिखने जितनी योग्यता मैं अपनेमें नहीं मानता हूं।

मेरी विनोदी प्रकृतिको तुझे पहचानना चाहिये। प्रशंसा करानेके लिअे तू दोषोंके विषयमें पूछती है, अैसा विनोदमें ही पूछा जा सकता है।

---

१ खगोल-विद्या पर मराठी पुस्तकोंके लेखक।

जिसमें जितना तो सत्य है ही कि अगर प्रेमीजनसे हम अपने दोष जिकलवायें तो ुसका परिणाम प्रशंसा सुननेमें आता है। क्योंकि प्रेम दोष पर परदा डालता है या दोषको गुणके रूपमें देखता है। प्रसंगानुसार दोष बताना प्रेमका स्वभाव है और वह भी संपूर्णता देखनेके लिये ही। तुझे डॉक्टरके सामने हिस्टेरिकल कहा था ुसमें भी तेरी प्रशंसा थी यह क्या किसने कहा? क्योंकि वह प्रसंग जैसा था कि अगर तुझे हिस्टेरिकल न मानता तो तू ज्यादा दोषी ठहरती। तू हिस्टेरिकल तो है ही। तू पागल जैसी हो जाती है जिसका क्या अर्थ है? जो भावनाओंसे अभिभूत हो जाता है वह हिस्टेरिकल है। यह समझमें आता है न?

मुझ पर हमेशा ही यह छाप पड़ी है कि जापानकी नीति शोचनीय है। ुसके विरुद्ध ुसकी जीत जरूर होनी चाहिये थी लेकिन ुससे यह साबित नहीं होता कि जापानकी नीति अनुकरणीय है। लेकिन अभी तो हम अपनी नीतिको संभालें तो भी काफी होगा। जापानको संभालने वाला तो करोड़ों आंखोंवाला सदा जागता सत्पुरुष बैठा है।

बापूके आशीर्वाद

९९

[आश्रमके चौकमें मैं हमेशा आकाशके नीचे खाट बिछाकर सोती थी। अेक रात जबरदस्त आंधी आयी। चारों ओर वातावरणमें धूल भर गयी। ूपरसे खपरैल गिरने लगे। लड़कियां चिल्लायी "प्रेमाबहन! दूट जाओ। खपरैल गिरेगा। लेकिन मैं नहीं ुठी। तीसरी मंजिलसे अेक बड़ा खपरैल मेरी तरफ नीचेको तेजीसे गिरता मैंने देखा। छाती पर आ पड़ता तो मेरा राम बोल जाता यह जानते हुअे भी मैं नहीं ुठी। खपरैल मेरे पास ही बिस्तर पर आ पड़ा और ुसके टुकड़े टुकड़े हो गये। फिर तो मैं ुठकर अंदर भागी। यह घटना मैंने पत्रमें लिख भेजी थी।]

य मं०
८-४-३२

चि प्रेमा

धुरन्धर यहां है तो बहुत करके कभी मिलेंगे ही। तू [अेक] पत्थरसे बहुतसे पक्षी मारनेका लोभ रखे अिसके बजाय अेक चोटसे बहुतसे बेर गिरानेका लोभ क्यों न रखे? पक्षी मारनेका लोभ तेरे लिअे तो त्याज्य होना चाहिये।

खपरैलकी चोटसे अच्छी बची। अिसका यही अर्थ लगायें कि तेरे हाथसे अभी बहुत बड़ी सेवा होनी बाकी है।

बहनोंके बारेमें मुसीबतमें पड़नेका कोअी कारण नहीं है। बहनें तुझसे यह सेवा लेना चाहें और तुझे आत्म-विश्वास हो तो करना वरना यह बात झूठी ही नहीं अैसा समझकर भूल जाना। तुझे आत्म विश्वास सिखानेके लिअे नहीं लेकिन तेरी नम्रताके लिअे गलतफहमी न होने देनेके लिअे कठिन प्रसंग सामने आने पर अुनसे निबट सकनेके लिअे (मैंने लिखा है)। बहुत बार हम मानभंग गलतफहमी वगैराके डरसे जिम्मेवारी लेनेमें हिचकिचाते हैं। अिस संकोचको तू पार कर सके तो जिम्मेवारी लेना। यह तो तू जानती ही है कि सब बहनें बहुत भली हैं। अुनके विचार लिख सके दफ्तर संभाल सके अैसे व्यक्तिकी मददकी अुन्हें जरूरत है। अपढ़ मांमें पढ़ी-लिखी लड़कीसे ज्यादा समझ और व्यवहार-बुद्धि हो सकती है। लेकिन अिस बुद्धिका अुपयोग वह निरक्षरताके कारण नहीं कर सकती। अिस कमीकी पूर्ति लड़कीके द्वारा वह कर सकती है। यह कमी तू पूरी करे अैसी मेरी अिच्छा है। गंगाबहन थी तब मंडल बहुत काम करता था अैसा मैं नहीं मानता। लेकिन किसी न किसी बहानेसे गंगाबहन सब बहनोंको अिकट्ठी कर लेती थी। अुन्हें अैसा लोभ था और अुन्होंने अिसका बीज बोया था। यहां भी वे अैसा ही कर रही हैं। अुस बीजका वृक्ष देखनेकी मैं आशा रखता हूं। सामाजिक काम तो बहनें करती ही हैं लेकिन वह व्यक्तिगत रूपमें करती हैं। मेरी अिच्छा है कि किसी सामाजिक सेवाके लिअे बहनें सामूहिक रूपमें जिम्मेवारी लें। अैसा करनेसे संघशक्ति पैदा होती है। अैसी शक्ति

पैदा हो तब व्यक्ति मले आवे और जावे रहें परन्तु संघ चलता ही रहता है। यह शक्ति औश्वरने केवल मनुष्यको ही दी है। जिस देशमें स्त्रियोंमें यह शक्ति विकसित नहीं की। जिसमें दोष पुरुषोंका है। अभी हमें जिस विवादमें नहीं पड़ना है। अगर हम यह मानें कि यह शक्ति स्त्रियोंमें बढ़नी ही चाहिये तो मुझे बढ़ानेके लिये हमें प्रयत्न करना चाहिये। फिर चाहे आरंभ जिस संघको मेरा पत्र मिलने जितना और अुसका अुत्तर देने जितना ही हो। धीरे धीरे (मले बहुत धीरे हो) अुसमें वृद्धि की जाय। मेरी बात तू अच्छी तरह समझ गयी हो। यह तेरे मले अुतरी हो। दूसरी बहनोंको भी यह ठीक लगती हो जिसमें रस लेनेके लिये वे तैयार हों तो ही यह चीज हाथमें ली जाय। लेकिन जिसमें कठिनाजियां दिखाअी दें या कोअी महत्त्व न दिखाअी दे तो जिसे छोड़ दिया जाय।

मुझे पुस्तकोंकी सूची मत भेजना। अप्टन सिक्लेरकी पुस्तकें मैंने मंगाअी हैं। अुनके सिवा दूसरी कोअी पुस्तकें नहीं मंगानी हैं।

अेक धर्मसे दूसरे धर्ममें लोगोंको लेनेकी प्रथा मुझे तो बिलकुल पसन्द नहीं है। दो अलग धर्मोंके स्त्री-पुरुषोंमें विवाह होना असम्भव या अधर्म्य ही [है, अैसा] मैं नहीं मानता।

हिन्दू धर्मके मूल होते हुओ भी मिश्र तत्त्व मुझे मोरक्का और वर्णाश्रम लगते हैं। किसी भी राष्ट्रको अुन्नतिके रास्ते पर जाना हो तो अुसे सत्य और अहिंसाका आश्रय लेना चाहिये।

मुझे लगता है कि तेरे सब प्रश्नोंके अुत्तर जिसमें पूरे आ जाते हैं।

बापूके आशीर्वाद

विद्यापीठकी तरफसे प्रकाशित गुजराती शब्दकोशके द्वितीय संस्करणकी मेरी प्रति वहां होनी चाहिये। वह भेज देना।

७०

यरवडा मन्दिर,
१८-४-३२

चि॰ प्रेमा

तू सचमुच लिखनेकी मनःस्थितिमें नहीं थी। पत्र तो लगभग हमेशा जितना ही लंबा है, लेकिन बेसिर-पैरका है। जब खानेकी जरूरत न हो तब खाना नहीं चाहिये, घूमनेकी जरूरत न हो तब घूमना नहीं चाहिये, वैसे ही लिखनेकी जरूरत न हो तब लिखना नहीं चाहिये। अथवा थक गयी हूँ अिसलिये नहीं लिखती जितना लिखकर खतम कर देना चाहिये।

दिनका अंत होने पर आनन्दके बदले मनमें चिढ़ होती है यह अच्छा लक्षण नहीं है। यह अनापेक्षित तो नहीं ही है। मेरी सलाह है, मेरा आग्रह है कि तू अपनी पंचात कम कर। अिससे तुझे या आश्रमको कोअी नुकसान नहीं होनेवाला है। प्रफुल्ल चित्तसे किया हुआ काम बढ़ता है और फलगामी सिद्ध होता है।

हर हफ्ते यहांके साथियोंसे मिलता हूँ। अुनमें पुरन्दरको बुलाया था। अुसकी तबीयत अच्छी है। वजन घटा है, क्योंकि क वर्गकी ही खुराक लेता है। अगर बीचमें अुससे कोअी मिला न हो तो तू मिल सकेगी।

प्रेमके संबंधमें अुठनेवाले प्रश्नों पर तूने जो लिखा है वह बिना विचारे लिखा है अैसा मानता हूँ। आर्ट फॉर आर्ट्स सेक का विचार मनुष्यको कहां ले जाता है, यह तू नहीं जानती। अिसके नाम पर पश्चिमके जवान लड़के-लड़की बिलकुल नरकमें अुतर रहे हैं। पत्र लिखते समय शायद कलाकी परिभाषा ही तेरे ध्यानमें नहीं थी। लेकिन तेरे पत्रमें सब कुछ बिना ठिकानेका लिखा जायगा अैसा तूने ही मुझे चेताया है। अिसलिये मैं ज्यादा लम्बा नहीं लिखूंगा।

तू अपने आपको हिस्टीरिकल न समझे यह संभव है। यह हो सकता है कि मिसन भी यह न देख सके। फिर यह भी संभव है कि

हिस्टेरिकका पूरा अर्थ भी तुम दोनों न समझी हो। अिसका अर्थ समझनेके लिये तूने शब्दकोश कभी नहीं खोला होगा। अैसा नहीं है कि हमारे देशमें बी जे पास लोग अंग्रेजी जानते ही हों। फिर अैसे खास शब्दोंके अर्थ तो बहुत कम लोग ही जानते हैं। हिस्टेरिकका तू सुन्दर नमूना है। यह रोग ही है अैसा माननेकी जरूरत नहीं है। लेकिन आखिर तो हिस्टीरियाको मिटा डालनेकी आवश्यकता रहती ही है। लेकिन मैं तुझे अिसके विवेचनमें नहीं अुतारूंगा। तू हिस्टेरिक नहीं है अैसा खुशीसे मानती रह। तू अिसे सच्चा ही सिद्ध करना चाहती है अिसलिये मैं निश्चिन्त हूं। नहि कल्याणकृत् कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति।

तेरा वाक्य यह था कि आश्रममें जिस चीजके पीछे हम पड़ते हैं अुसे छोड़ते नहीं यह आश्रमकी खूबी है। अिसे मैं प्रमाणपत्र मानता हूं। सबके आज आश्रम अिसके योग्य नहीं है। लेकिन अन्तमें हम अिसके योग्य होंगे अैसा आग्रह तो रखेंगे ही। हम जो कर नहीं सके अुसका मुझे दुःख नहीं है। मुझे अुसका भान है अिसलिये मैं जाग्रत हूं। जो कुछ सोचा था अुसे सीखनेका समय नहीं है, यह तो स्पष्ट रूपसे मेरी कमी है। मेरी व्यवस्था-शक्ति कम है, विभाग-शक्ति कम है और समयके प्रमाणका भी ज्ञान मुझे कम है। अैसा होते हुअे भी अगर परिस्थितिवश मैं ज्यादा समय तक बाहर नहीं रहा होता तो अधिकतर कामको किसी तरह मैंने पूरा कर लिया होता। मेरा अैसा अनुभव है। लेकिन बीती हुअी बातोंको किसीलिये याद करते हैं कि अब भी कुछ सुधारा जा सकता हो तो सुधार लें। जो मैं नहीं कर सका अुसका तुम सब विचार करके और योजना बनाकर जितना कर सको करो। क्या क्या करना था, क्या क्या करना बाकी है, अुसमें से क्या क्या करना सम्भव है, अिसकी समय निकाल कर जांच करो। हो सके यह करो। अैसा लगे कि कुछ भी नहीं हो सकता तो फिर अपरिहार्यको भूल जाओ। अुसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

शून्यवत् होनेका अर्थ है मैं करता हूं की वृत्तिको छोड़ना। अिसमें निराशावादके लिये स्थान ही नहीं है।

महादेवने और मैंने अेक सप्ताहमें दुगना काम किया अैसा कहा जायगा। सरदार[1]को अिस बार अभी कातनेकी धुन नहीं लगी है। अुपवास[2] तो हम तीनोंने किये।

बापूके आशीर्वाद

७१

य॰ मं॰
२२-४-३२

चि॰ प्रेमा

पुरन्दरके बारेमें मैं लिख चुका हूं। अुसने अभ्यास नहीं किया है।

मुझे लगता है कि जानकीको जबरदस्ती घूमने नहीं ले जाना चाहिये। अुसमें अुत्साह न हो तो वह घूम नहीं सकती। अुसे प्राणायाम सिखा दे और थोड़ी पैसिव अेक्सरसाअिज कराये तो अभी काफी होगा। पै[3] को तू जानती है?

धर्म-परिवर्तनके बारेमें मैं यह नहीं कहना चाहता कि कभी परिवर्तन हो ही नहीं सकता। हमें दूसरेको अपना धर्म बदलनेके लिअे निमंत्रण नहीं देना चाहिये। मेरा धर्म सच्चा है और दूसरे सब धर्म झूठे हैं अिस तरहकी जो मान्यता अिन निमंत्रणोंके पीछे रहती है अुसे मैं दोषपूर्ण मानता हूं। लेकिन जहां बलात्कारसे या गलतफहमीसे किसीने अपना धर्म छोड़ा हो वहां अुस मनुष्यको अपनी गलती सुधारनेमें यानी अपने असली धर्ममें आनेमें विलम्ब नहीं होनी चाहिये। अितना ही नहीं अुसे प्रोत्साहन भी मिलना चाहिये। अिसे धर्म-परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। मुझे अपना धर्म झूठा लगे तो मुझे अुसका त्याग करना चाहिये। दूसरे धर्ममें जो कुछ अच्छा लगे अुसे मैं अपने धर्ममें ले सकता हूं — लेना चाहिये। मेरा धर्म अपूर्ण लगे तो अुसे पूर्ण बनाना मेरा धर्म है। अुसमें दोष दिखाओ दें तो अुन्हें दूर करना भी धर्म है।

---

१ सरदार वल्लभभाई पटेल।
२ राष्ट्रीय सप्ताहमें ६ और १३ अप्रैलके दिन।
३ श्री लक्ष्मीदास आसरकी पुत्री।

अीराअहमूदको मैं अीसाअी मानता हूँ। अब तो वह भी अपनेको अीसाअी मानती है। अीसाअी होने पर भी गीताको वह आदरसे पढ़े *अिसमें मुझे विरोध नहीं दीखता। हमारी प्रार्थना दूसरे धर्मके लोग भी* आदरसे गाते हैं।

स्वराज्य मिलने पर क्या करूँगा यह मैं सचमुच ही नहीं जानता। अुस समय भी अीश्वर मुझे रास्ता दिखायेगा जैसे आज दिखाता है। भक्ताअ पहलेसे ही व्यवस्था नहीं करते। पहलेसे व्यवस्था करें वह श्रद्धा नहीं है, अथवा है तो कमजोर श्रद्धा है।

ज्ञान अुपासना और कर्म अीश्वर-प्राप्तिके तीन अलग मार्ग नहीं हैं बल्कि ये तीनों मिलकर अेक मार्ग है। अुसके तीन भाग सुविधाके लिअे कर दिये गये हैं। पानी हाअिड्रोजन और ऑक्सीजनका बना है लेकिन पानी न तो हाअिड्रोजन है और न ऑक्सीजन। अैसे ही न तो ज्ञान अकेला प्राप्तिमार्ग है और न अकेली भक्ति। लगभग अैसा कहा जा सकता है कि प्राप्तिमार्ग तीनोंका मिला हुआ रासायनिक प्रयोग है। अिस अुपमामें दोष है, फिर भी मैं जो कहना चाहता हूँ अुसे समझानेके लिअे यह काफी है।

द्रौपदीकी लाज रखी यह पानीकी शराब बनाने जैसा चमत्कार नहीं है। संकटके समय अीश्वर अपने भक्तोंकी मदद करता है, यह विश्वास अुपयोगी है अैसे अुदाहरण संग्रह करने योग्य हैं। लेकिन अगर कोअी अैसी सहायताकी शर्त लगाकर अीश्वरकी भक्ति करे तो वह निरर्थक है।

जबरदस्ती लोगोंके शरीर मजबूत बनानेकी पद्धति मुझे पसन्द नहीं है। अिसमें जबरदस्तीकी जरूरत ही नहीं होती। शरीरको दुर्बल रखना किसीको कभी अच्छा नहीं लगता। यह शिक्षाका विषय है।

जरूरतें कम करनेका आदर्श लोगोंके सामने रखा जा सकता है। फिर अुसके परिणामस्वरूप जो होना होगा वह होगा। अिसमें समझौता कहाँ आता है? समझौता करने न करनेकी जरूरत रहती ही नहीं है।

---

१ बाअिबलमें अेक प्रसंग अैसा दिया गया है कि किसी भोजके समय लोगोंको पिलानेके लिअे शराब नहीं थी अुस समय प्रभु अीसा मसीहने पानीकी शराब बना दी थी।

जो गरीब भूखों मरते हैं अुनको जरूरतें बढ़नी ही चाहिये। लेकिन यह कोओ नभी बात नहीं है। आज भी यह कोशिश चल रही है।

बापूके आशीर्वाद

७२

[मेरे जिस पत्रका यह अुत्तर है अुसमें अुन दिनों मुझे अनेक प्रकारकी जो मानसिक थकावट लगती थी अुसका वर्णन मैंने किया था। देशकी परिस्थितिके बारेमें मुझे अन्दर ही अन्दर असन्तोष हो रहा था। जो तेज और अुत्साह सन् १९१ के आन्दोलनमें दिखाओ दिया था वह जिस समय लुप्त हो गया था। सरकार अुग्रतासे अपनी दमन-नीति चला रही थी। मैं स्वयं हाथ-पैर बांधकर आश्रममें बैठी थी! वहां भी मुझे असन्तोष था। पूज्य महात्माजीका वियोग भी खटकता था।]

म मं
१–५–१२

चि॰ प्रेमा

अगर तुझ पर कामका बोझा ज्यादा पड़ता हो तो वह कम नहीं हो सकता यह बात मेरे गले नहीं अुतर सकती। जिस विचारमें मोह और दुर्बलता है। तेरी जिद्दका कारण तू ही है कामका बोझ नहीं है, जिसे मैं मान सकता हूं। यही हो तो तू धीरे धीरे अनुभवसे समझ जायगी क्योंकि तू ज्यादा दिन तक अपने आपको धोखा नहीं दे सकती। जिस बारेमें मैं तुझे सताना नहीं चाहता। अपनी नाजुक प्रकृतिको सख्त बनाना।

हमारी/पुस्तकोंमें कुछ अुर्दूकी पुस्तकें हैं। अुनमें से कुछ संभवतः अिमाम साहब[1] के यहां होंगी। वहां भी देखना। तू न पहचान सके तो परशुराम चकर पहचानेगा। अुनमें ठीख अुमकी हो तो भेज देना। यह

1 अिमाम अब्दुल कादिर बावजीर। दक्षिण अफ्रीकासे पूज्य बापूजीके साथी बने थे। बापूजीने अुन्हें अपना सहोदर-भ्राता कहा है। सत्याग्रह आश्रमके अुपाध्यक्ष थे।

मौलाना शिबलीकी लिखी हुआी है। अेक और पुस्तक डॉ॰ मुहम्मदअलीका लिखा हुआ नबीका जीवन है। वह भी भेजना। सीरत के दो भाग हैं।

यहां चारों तरफ मजदूर हैं यही सच्चा जीवन है। आश्रमकी यही कल्पना है। हां मजदूर सत्यार्थी होने चाहिये। तू सत्यार्थी नहीं है? दूसरे भाअी-बहन सत्यार्थी नहीं हैं? मैं मानता हूं कि सभी यथाशक्ति सत्यार्थी हैं।

तू पूछती है कि मैं कब आअूंगा। अगर अपनी आंखोंको काममें ले तो तू मुझे देखे बिना न रहे। मेरी आत्मा तो वहीं बसती है। शरीर भले ही यहां रहे या रास्तेमें मिल जाय। यह भी बिलकुल संभव है कि शरीर वहां हो तब भी मैं वहां न होअूं। अिस सत्यको तू देख और अुस मायाको भूल जा।

असन्तोष तो होना ही चाहिये। लेकिन वह असन्तोष अपने बारेमें होना चाहिये। अब तो मैं पूर्ण हो गया जिस दिन मैं अैसा मान बैठूं अुसी दिनसे मेरा पतन हुआ समझना चाहिये। अिसलिअे मुझे अपने बारेमें असन्तोष जरूर होना चाहिये। पर असन्तोषका यह अर्थ कभी नहीं कि मुझे अपने कर्तव्योंमें परिवर्तनकी अिच्छा करते रहना चाहिये।

लेकिन यह सब दलीलोंसे नहीं समझाया जा सकता। समय अपना काम करेगा ही। आज जहां घोर अन्धकार लगता है वहां कल अुजाला भी दिखाअी देगा। मुझे तो अैसी स्थितिको पहुंचानेवाला भजन प्रेमळ ज्योति"[1] ही जीवता है। गुजरातीमें भी अुसका ठीक अर्थ अुतरा है। अंग्रेजी भजन तो अलौकिक है ही।

अैसा सुना है कि बुखार ठीक है। तेरा वजन कितना है? दूध-घी कुल मिलाकर कितना लेती है?

हमारे पुस्तकालयमें कुल मिलाकर कितनी पुस्तकें होंगी?

बापू

---

१ आश्रम-भजनावलि (१९५९) का गुजराती भजन १४७। श्री नरसिंहदासभाअी द्वारा किया हुआ भावानुवाद।

२ Lead, Kindly Light — आश्रम-भजनावलि (१९५९) भजन १८।

य० मं०
७-५-३२

चि० प्रेमा

आध्यात्मिक लेखा-जोखा निकालनेकी आदत पड़ जाय तो झूठा संकोच दूर हो जाता है और हम जैसे होते हैं अुसी रूपमें दुनियाके सामने दिखाअी देने लगते हैं। स्पष्ट है कि यह बात सच्चे मनुष्यों पर ही लागू होती है। झूठे मनुष्य अपना लेखा-जोखा बहुत अर्से तक निकाल ही नहीं सकते। अुनके लिअे यह असंभव है।

नारणदासके बारेमें तूने जो लिखा है वह सब मैं मानता हूं। अुसे शक्तिसे ज्यादा काम हाथमें लेना ही नहीं चाहिये। किसीको भी नहीं लेना चाहिये। लेकिन सामान्यतः मनुष्य अपनेको धोखा देता है। वह अपने प्रति बहुत अुदार रहता है और अपने लिअे हुअे थोड़ेसे कामको भी शक्तिसे बाहरका मान बैठता है। अिसलिअे सामान्यतः कोअी ज्यादा काम करता है तो अुसे रोकनेकी अिच्छा नहीं होती। लेकिन नारणदासका पक्ष न्यारा ही है। वह हमेशा बहुत काम ले लेता है। लेकिन समय पर काम करनेकी आदत होनेके कारण शायद अनजान आदमी अुसका काम न देख सके। जैसा है अिसीलिअे नारणदास नया बोझ न अुठाये यही ठीक है। मैंने अुसे लिखा है। तू ध्यान रखना।

आध्यात्मिक लेखा-जोखा निकालनेके बारेमें मैंने जो लिखा है, अुससे कोअी जड़वत् नहीं बनेंगे। अगर आश्रममें रहकर अेक भी आदमी जड़वत् बने तो मैं हमारी कार्य-पद्धतिमें दोष मानूंगा। यह मैं जानता हूं कि हमारी कार्य-पद्धति पूर्ण नहीं है। लेकिन आश्रममें रहनेवाला कोअी जड़ नहीं बना है और कितने ही जड़ जैसे आदमी चेतन बने हैं। अिससे मैं अनुमान लगाता हूं कि हमारी कार्य-पद्धति ज्यादा नहीं तो कमसे कम ५१ प्रतिशत तो कुशल होनी ही चाहिये। आश्रममें विविध प्रवृत्तियोंके संचालक विशारद नहीं हैं। अिसमें किसीका दोष नहीं है। लेकिन या तो आश्रमने नयी प्रवृत्ति हाथमें ली है या पुरानीको नयी दृष्टिसे चलानेका अुसने संकल्प किया है। अिसलिअे विशारदोंको आश्रममें तैयार करनेकी जिम्मे

बारी हम पर आती है, जिससे समयका [illegible] कुछ अनुचित लगनेवाला व्यय हुआ है। और ऐसा करनेके बावजूद आश्रम बहुत बार शोभित नहीं हो सका। लेकिन आश्रम शोभाके लिये नहीं सेवाके लिये है। सेवा करते हुअे अुसकी शोभा बढ़े तो अच्छा लगे। लेकिन निन्दा हो तो भी अुसे सेवा तो करनी ही चाहिये। अिसका सार यह निकला कि जैसे जैसे हम कुशल होते जायेंगे वैसे वैसे हमारे कार्यका मापदण्ड बढ़ता जायगा और फिर भी अुसका भार हमें कम लगेगा। अिसका ताजा अुदाहरण यह है। बायें हाथसे चक्र घुमानेके पहले दिन मेरे सिर्फ ११ तार निकले। समय ज्यादा लगा। थकान ज्यादा मालूम हुअी। धीरे धीरे कुशलता बढ़ी। अिसलिये थोड़े समयमें दो सौसे भी ज्यादा तार निकलने लगे और थकान पहलेसे कम लगी। अब मगन-चरखा अपनाया है। कल २४ तार ही निकाले और समय बहुत लगा। आज थोड़े समयमें ५६ तार निकाले। थकान थोड़ी लगी। जो बात अेक व्यक्ति और अुसके छोटेसे कामके बारेमें सच है, वही संस्था और अुसके महान कार्यके बारेमें भी सच है। योगः कर्मसु कौशलम्। कर्म अर्थात् सेवाकार्य यज्ञ। हमारी सारी मुसीबतोंकी जड़ हमारी अकुशलतामें है। कुशलता आ जाय तो जो काम हमें अभी कष्टदायी लगता है वही आनन्ददायी लगने लगे। मेरा यह मत है कि सुव्यवस्थित सात्त्विक तंत्रमें कभी कामका बोझ मालूम ही नहीं होना चाहिये।

तू किसी वस्तुको सिद्ध करनेके लिये आश्रममें आती है। यह तुझे कोअी सिखानेवाला नहीं है। सबको स्वयं ही अपनेमें से यह वस्तु ग्रहण कर लेनी है। तेरे जैसी जो ग्रहण नहीं कर सके वह आश्रममें आखिर तक नहीं टिक सकती। जिसे कोअी महत्त्वाकांक्षा न हो वह भिन्न बात यह अलग बात है। आश्रम वास्तवमें स्वतंत्र संस्था है। अुसमें जो भी निश्चय करे अुसके लिये जितना अूँचा चढ़ना हो अुतना अूँचा चढ़नेका अवकाश है। अुसे कोअी यह चीज दे नहीं सकता। तुझे अपने अनुकूल वातावरण खुद पैदा करना है। अपनी सहेलियोंको तू जीत सकती है। लेकिन सच बात तो यह है कि यह स्वार्थीपन कहा जायगा। तेरे लिये तो यहां जो लोग है वे ही तेरे सगा और सगी है। तुझमें जो गुण

हों वे अुनमें अुंडेल। अुनमें हों वे गुण तू ले। अगर तू यह मानती हो कि अेक दोके सिवा और किसीके पास तेरे लिअे लेने जैसा कुछ है ही नहीं तो तू मोहकूपमें पड़ी हुअी है। मुझे लगता है कि जगतमें अैसा कोअी भी नहीं है जिससे हम कुछ भी न ले सकें।

रामकृष्ण[1]के बारेमें तूने जो लिखा है अुसके सत्य होनेकी पूरी संभावना है। मैं अपनेको किसी भी तरह सिद्ध नहीं मानता। अिसलिअे भूलें भी मुझसे हुआ ही करती होंगी। लेकिन मेरी भूलें निर्दोष होनेके कारण आज तक हानिकर सिद्ध नहीं हुअी हैं। अिसलिअे मैं निश्चिन्त होकर रास्ता तय कर रहा हूं और साथियोंको भी साथमें शामिल कर रहा हूं।

पैसिव व्यायाम दुर्बल आदमीसे अुसका सहायक करवाता है, जैसे मालिश या अर्ध-सीपर्सिन अर्ध-सर्वासिन सिर्फ पैर या हाथ धीरे धीरे अूंचे करना। जिसमें बीमार पड़ा रहता है और मानसिक सहयोग देता है। तू समझी?

प्रार्थना पर बहुत बार हमले हुअे हैं। लेकिन यह १६ वर्षसे टिकी हुअी है। अिसमें कितना समय जाता है? कितना बचाया जा सकता है? जो प्रार्थनाकी आवश्यकताको मानता है, वह अुससे द्वेष नहीं करेगा। दोष सभीमें देखे जा सकते हैं। लेकिन यह प्रार्थना कुल मिलाकर ठीक मालूम हुअी है। मुझे बता कि तू क्या परिवर्तन करना चाहती है?

बापूके आशीर्वाद

७४

१७-५-३२

चि॰ प्रेमा

११-५-३२

तेरे वजन और खुराकके बारेमें अिसलिअे पूछा कि मुझे तेरे स्वास्थ्यके बारेमें शंका हुअी। ज्यादासे ज्यादा वजन कितना था? खानेमें टमाटर

---

१ श्री रामकृष्ण परमहंस (१८३६–१८८६)। बंगालके सुप्रसिद्ध भक्त और ज्ञानी। स्वामी विवेकानन्दके गुरु।

या भाजी बिलकुल नहीं पैदा होते? सलादकी भाजी बोनी भी असका क्या हुआ? सलाद या मेथी तू खुद ही अेक छोटी क्यारीमें बो सकती है। यह थोड़े ही दिनमें अुग आती है। कोमी न कोमी हरे पत्ते तो होने ही चाहिये। कच्चे बहुत थोड़े खाये जाते हैं, जिसलिये बोनेमें सुविधा रहती है। टमाटर वहाँ क्यों नहीं होते यह मैं नहीं जानता। पूछकर मालूम करना।

धुरन्धरसे मैं तुरन्त मिला। और अब भी असके हाल मालूम करता रहता हूं। क्योंकि कूचमें असका अच्छा परिचय हुआ था। फिर तेरे खातिर भी असके जीवनमें रस लेता हूं क्योंकि तेरे जीवनमें लेता हूं। यह व्यक्तिगत प्रेम-विशेषका अुदाहरण नहीं है बल्कि अहिंसाका है। अगर किसी खास व्यक्तिके लिये ही प्रेम हो और दूसरेके प्रति द्वेष या दूसरेके प्रति प्रेम हो ही न सके तो वह प्रेम-विशेष है। मुझमें अैसा प्रेम-विशेष नहीं है अैसा मैं मानता हूं। तेरे लिये मैं जो करता हूं वह तेरी जरूरतको समझकर, तू मुझसे आशा रखती है जिसलिये और मेरी अपनी गरजसे भी करता हूं। क्योंकि मैं तुमसे बहुत आशा रखता हूं। जिसमें तू व्यवहार-बुद्धि देखे तो मैं असका जिनकार नहीं करूंगा। मैं जिसे अहिंसक स्वभाव मानता हूं।

अुर्दू पुस्तकोंकी बात तू भूली नहीं होगी।

आश्रमसे सब अेक ही समय पर जानेको तैयार हुअे हों तो मैं अुसे ठीक नहीं मानता। लेकिन अब आश्रमको चलते जितने वर्ष हो गये हैं कि मैं अुसकी चर्चा नहीं करूंगा। दुखड़ा भी नहीं रोअूंगा। कहीं कुछ गलत हो रहा है यह समझकर जब मौका आता है तब अुसे सुधारनेका प्रयत्न करता हूं जिसे आसानीसे रोका जा सके अुसे रोकता हूं। आश्रम बिलकुल खाली हो जाता है और तू आजकलमें वह सकती हो तो एक खाना और काम करनेवाले वापस आ जायं तब जाना। लेकिन ठीक तो वही होगा जो तू और नारणदास सोचें। मुझे यहां बैठे बैठे क्या मालूम पड़े?

१२–५–१२

अिसके साथ साप्ताहिक 'हिन्दू' से निकाला हुआ मॉन्टेसरी[1]का लेख भी है। वह महादेवको अच्छा लगा था अिसलिये अुसकी कतरन कटवा ली। देख लेना। कुछ ग्रहण करने जैसा हो तो करना नहीं तो फेंक देना।

सुशीलाको आनेकी अिजाजत मिल गयी है। अिसलिये तू आनेवाली हो तब अुसे आना हो तो आ सकती है।

तेरे किसी भी प्रश्नका अुत्तर मैंने जान-बूझकर नहीं टाला है। क्या प्रश्न था यह मुझे अब भी याद नहीं आ रहा है। फिरसे पूछेगी तो अुत्तर दूंगा।

आश्रममें दी जानेवाली शिक्षाका प्रश्न पुराना है। मैं यह मानता हूं कि आश्रमवासियोंके साथ अुसकी तुलना नहीं हो सकती। नारणदास पर सारा भार है। वह अपनी अिच्छाके अनुसार व्यवहार कर सकता है। निर्णय करनेमें तू मदद कर सकती है। मैं खुद ओक नियम लागू करना चाहूंगा। बच्चोंके गले तुम्हारी बातें अुतरनी चाहिये। वे अिसमें मजबूर होकर करेंगे तो वह निरर्थक हो जायगा और बलात्कारकी परंपरा कायम हो जायगी। छुट्टी न रखनेकी बात बच्चोंको पसन्द होनी चाहिये।

आश्रमकी पाठशालामें तूने जो जो किया अुसका काजी मैं नहीं बनूंगा। वहां बैठा होता तो जरूर छानबीन करता लेकिन यहां बैठे बैठे कुछ नहीं कहूंगा। तू आत्म-निरीक्षण करनेवाली है। अिसलिये जहां दोष होगा वहां आखिर तू अुसे सुधार ही लेगी।

मैंने तुझे ब्रह्मज्ञान सिखाना चाहा या क्या चाहा यह तो दैव ही जाने। लेकिन मुझे तू जानती है जैसा कहकर ही तूने अपना अज्ञान प्रगट किया है और फिर जो दलीलें दी हैं वे तेरा अज्ञान सिद्ध करती हैं। बुद्धिसे जो ब्रह्मको जानता है वह ब्रह्मको जानता ही नहीं। ब्रह्मज्ञान हृदयमें होता है। ब्रह्मज्ञानमें प्रवृत्तिमात्रका त्याग होता ही नहीं। बाहरसे तो ज्ञानी-अज्ञानी दोनों ओकसे होते हैं लेकिन दोनोंकी प्रवृत्तिके हेतु अुत्तर दक्षिण जैसे होते हैं। रामनाम ब्रह्मज्ञानका विरोधी नहीं है। वे दोनों ओक हो सकते हैं। जो ब्रह्मज्ञानी रामनामसे

१ मरिया मॉन्टेसरी (१८७१–१९५२)। यूरोपकी सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री। बालशिक्षामें जिन्होंने नयी दृष्टि दी।

दूर भागता है वह अज्ञान-कूपमें पड़ा हुआ है और गोता खा रहा है। जो मनुष्य होठोंसे रामनाम बोलता है वह होठोंको सुखाता है और समयका खून करता है। ब्रह्मज्ञान और मेरी शारीरिक अुपस्थितिका अच्छा लगना — ये दो विरोधी वस्तुयें ही हों अैसा जरूरी नहीं है। लेकिन मेरी अनुपस्थिति यदि कर्तव्य-परायणताको कम करे, तो वह ब्रह्मज्ञान नहीं परन्तु मोह है। मुझे ब्रह्मज्ञान है यह कहनेवालेको बहुत सम्भव है ब्रह्मज्ञान न हो। यह मूक ज्ञान है — स्वयंप्रकाश है। सूर्यको अपने प्रकाशका प्रमाण अपने मुहसे बोलकर नहीं देना पड़ता। प्रकाश है अैसा हम देख सकते हैं। यही बात ब्रह्मज्ञानके बारेमें है।

मैं अिस राज्यको मानता था तब मुझे अैसा लगता था कि अिस राज्यसे अिस देशको आखिरमें लाभ ही होगा। अुसके हेतु शुभ हैं। लेकिन अिस प्रसंगमें ज्यादा गहरा नहीं अुतरा जा सकता।

अमेरिकाके स्त्री-पुरुष-व्यवहारके बारेमें जो साहित्य छपता है वह मुझे पसन्द नहीं है। अिस बारेमें मैं लिखना जरूर चाहता हूँ। बच्चे प्रश्न पूछें तब अुन्हें सीधा जवाब देना चाहिये। सिनेमाके बारेमें मैं नहीं जानता। नाटकके लिये स्थान है। अीश्वर-प्राप्तिके लिये मुझे तो अनासक्ति ही पसन्द आती है। अुसमें सब कुछ आ जाता है।

बापू

७५

१९-५-३२

चि० प्रेमा

यद्यपि अगले सप्ताह तेरे मिलने आनेकी सम्भावना है फिर भी पत्रका अुत्तर दे देना ही ठीक है। अिसके सिवा कलकी घटना बताती है कि मेरा मिलना हमेशा अनिश्चित ही माना जाना चाहिये।

बाती बहुत अच्छी लिखती। अैसा लगता है कि अिसका बध आश्रम नहीं ले सकता। मालूम होता है वह अैसी बनकर ही आती है।

आश्रममें पली हुअी लड़कियाँ जितनी दुर्बल देखनेमें आती हैं यह अेक पहेली ही है। मैं अुसे सुलझा नहीं सका हूँ। मेरे पास अुसके लिये अनुमान हैं। लेकिन जब तक मैं अुसके लिये अच्छा आधार न बता सकूँ, तब तक अुनकी चर्चाको मैं निरर्थक मानता हूँ। हमसे हो सके अुतनी खोज हम करें। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि ये लड़कियाँ बाहर जाकर अच्छी ही हो जाती हैं अैसा नियम नहीं है।

नारणदासका ध्यान रखनेका अर्थ है जब शक्तिसे ज्यादा बोझा वह अुठाये तब अुसे सावधान करना और मुझे भी सावधान कर देना। मेरे वचनोंमें मैंने कहीं भी व्यामिश्रता नहीं देखी। अगर हो तो वह अनजाने और भाषा पर मेरे बहुत कम अधिकारके कारण हुअी होगी। मेरे वचन छोटे होनेके कारण अुनमें अध्याहार तो होते ही हैं लेकिन वैसे सूक्तियोंमें होते हैं वैसे ही।

जो लड़कियाँ अंग्रेजी सीखना चाहती हैं, अुन्होंने अगर हिन्दी और संस्कृत पर ध्यान दिया हो और गुजराती अच्छी कर ली हो तो वे जरूर सीखें। सिखानेकी सुविधा पर तो अिसका आधार है ही। लेकिन यह सुविधा हमारे पास होनी चाहिये।

पैसिव व्यायामका मेरा अर्थ तू शायद नहीं समझी। मनुष्य स्वयं करे वह पैसिव नहीं कहलाता। यह व्यायाम बीमारके लिये है। मैं बीमार होअूँ, मेरी आंखोंको व्यायाम देना हो और कोअी अुनकी मालिश करे अथवा मेरे पैरोंको जबरन समकोण बनने जितना झुका करे, फिर सीधा करे और अैसा करता रहे और मुझे अुन्हें झुका-सीधा करनेकी जरूरत न पड़े, तो वह पैसिव व्यायाम कहलायेगा। तू अिसी तरह समझी है अैसा नहीं लगता।

मौन प्रार्थनामें दोनों हेतु थे। मनको आराम देनेका तो था ही। लेकिन अुसके बिना मनको अन्तर्मुख करना भी कठिन था। हर कामको समय पर बदलनेके लिये अवकाश है अैसा हमें लगना चाहिये। हममें अधीरता अशान्ति नहीं होनी चाहिये। अिसीमेंसे तटस्थता आती है।

मेरे अन्दर अेकाग्रता होनी ही चाहिये। लेकिन मुझे संतोष दे सके अुतनी नहीं है। अुसके लिये मैं प्रयत्नशील हूँ लेकिन अधीर नहीं हूँ।

बच्चोंको सारी प्रार्थनामें रस न आता हो तो अुनके लिये कोअी अलग प्रार्थना रखी जा सकती है, जैसा प्रभुदासने किया था। बच्चे भला और शान्तिसे बैठ सकें तो अुसे मैं अच्छा मानूंगा।

११ बजेसे यही प्रार्थना होती रही है यह स्तुति नहीं है। यह वस्तुस्थिति है। जितने बजेसे सब लोग प्रार्थनामें आये हैं यह कहनेका हेतु नहीं है। बहुतसी असुविधाओं और आलोचनाओंके बीच आश्रम जिसी प्रार्थनासे चिपका रहा है और अुसमें से बहुतोंने शांतिका अनुभव किया है। बहुत सबल कारणोंके बिना अुसका त्याग या अुसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता जितना ही कहनेका हेतु था। बहुतोंकी प्रार्थना शामको ठीक नहीं रहेगी। शामका समय भोजन वगैरामें भी दिया जाता है।

तूने अपने विषयमें जो लिखा यह ठीक है। तेरी बुद्धि और तेरे हृदयको सच्चा लगे वैसा ही तुझे करना है। मुझे अधीरता नहीं है। मैं तो जो मुझे अुचित लगता है वह कह देता हूं। अुस चीजको मैं जबरदस्ती तेरे गले नहीं अुतार सकता। मैं जिसकी ही गरज पूरी कर सकता हूं। अिससे बड़ा दावा मेरे लम्बे अनुभवोंका हो सकता है। लेकिन अुनमें से अेकका भी प्रतिबिम्ब तेरे हृदय पर न पड़े तो मेरे हजारों अनुभव तेरे लिये निरर्थक हैं। आश्रमके बारेमें मेरा अेक दावा है। यह आनेवालेको पंख देता है फिर वह चाहे जहां अुड़ सकता है। वह स्वेच्छासे रहे तो रह सकता है न रहे तो भी आश्रमने अपने अेक धर्मका पालन किया। जैसा ही हुआ है यह बहुतोंके बारेमें सिद्ध किया जा सकता है। स्त्रियोंके बारेमें अधिक किया जा सकता है। जैसी लड़कियां आश्रममें आ चुकी हैं जिनमें जरा भी अुमंग अुत्साह नहीं था। आज वे अपनेको स्वतंत्र मानती हैं और हैं। जैसी लड़कियां अुदाहरण अुर्मिला विद्यावती रुखी जित्यादि हैं। व्यक्तिप्रेम मात्रका मैं जिनकार नहीं करता। वह विश्वप्रेमका प्रभुप्रेमका विरोधी नहीं होना चाहिये। बाके प्रति मुझे आज जो प्रेम है वह प्रभुप्रेममें समाया हुआ है। मैं विषयी था तब वह प्रभुके प्रेमका विरोधी था जिसलिये त्याज्य था।

तेरा वजन घटा जिसकी मुझे चिन्ता नहीं है, अगर दूसरी तरह तेरा शरीर ठीक हो। अुर्मिला आ सकती है।

बापू

७६

यरवडा मन्दिर,
२९-५-३२

चि. प्रेमा

अिस बार तेरा पत्र नहीं आया, फिर भी मैं लिख रहा हूँ। क्योंकि यह पत्र आश्रममें पहुँचेगा तब तक तू भी पहुँच चुकी होगी। और संभवतः मेरे पत्रकी आशा रखेगी।

तुम सब आ गयीं, यह ठीक हुआ। बातें तो करनेके लिये हो ही क्या सकती थीं? और थोड़े समयमें हो भी क्या सकती थीं? सुशीलाको मैंने जान-बूझकर खास समय नहीं दिया। क्योंकि हो सके जितना समय मुझे अम्तुलको और धारवाको देना था। सुशीलाको कोअी खास बात तो शायद पूछनी ही नहीं थी?

लड़के और लड़कियाँ मुझे जो पत्र लिखते हैं, अुनमें अूटपटांग सवाल पूछते हैं, और मुझे डर है कि वे भी सिर्फ पूछनेके लिये ही पूछते हैं। अुन्हें अेक बार अच्छी तरह समझाना। पत्र लिखनेकी कला भी कुछ अंश तक सीखनी जरूरी है।

तेरी यात्राके अनुभव लिखेगी, अैसी आशा रखता हूँ।

पुरन्दरेसे तू मिली थी? और किसीसे मिली?

वजन तो बढ़ाया ही होगा?

बापू

७७

यरवडा मन्दिर,
१-६-३२

चि. प्रेमा

आज तो तुझे लिखनेके लिये ही यह छोटासा पत्र लिख रहा हूँ। नई पुस्तकें भेजना मत भूलना। अब मुलाकात होगी तब हो, आज तो बुकपोस्ट रजिस्ट्रीसे भेजना।

बापू

• •

[पू. महात्माजीसे मिलने यरवडा गयी अुसके बाद सिंहगढ़ वगैरा कभी स्थान मैं देख आयी थी। यात्राका सारा वर्णन मैंने पत्रमें महात्माजीको लिखा था। श्री हरि नारायण आपटे मराठी भाषाके सबसे पुराने और बड़े अुपन्यासकार हो गये हैं। अुनका बंगला सिंहगढ़ पर था।

मुझी मामी यरवडा जेलके अुस समयके सुपरिन्टेन्डेन्ट मेजर भंडारी। अुनकी वरताबके बारेमें जो शब्द मैंने लिखे थे।

हमारी गौड़ सारस्वत ब्राह्मण जातिमें अमुक मर्यादामें मत्स्याहारके लिये स्थान है। मैं सत्याग्रह आश्रममें गयी अुससे अेक वर्ष पहले ही मैंने मत्स्याहार छोड़ दिया था। लेकिन मेरा वजन आश्रममें घटने लगा जिसका कारण अनुमानसे हमारी जातिके अेक डॉक्टरने यह बताया था कि "पीढ़ियोंका आहार तुमने छोड़ दिया जिससे वजन घट रहा है।" यह मुझे सही नहीं लगा। महात्माजीने जिस आहारकी सिफारिश की फिर भी मैंने आहार आश्रमका ही रखा। वजन घटनेका सही कारण कामका बोझा और नींदकी कमी थी। जेल जानेके बाद वजन बढ़ा।]

म. मैं.
१९–६–१२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मुझे जरा भी लंबा नहीं लगा। क्योंकि मेरी जिज्ञासाके मुताबिक तूने वर्णन किया है। सिंहगढ़ पर मैं तीन बार गया हूं। अेक बार तो लोकमान्य[1] थे तब। जिसलिये हम मिले भी खूब प्रेमसे थे। अुनका घर मैंने देखा था। कुछ चीजें तूने जरूर नयी लिखी हैं। हरि नारायण आपटेसे मैं मिला था। अुनके अुपन्यास पढ़नेकी जिज्ञासा तो बहुत है लेकिन अब जिस अुमरमें नयी चीज हाथमें लेनेकी हिम्मत नहीं होती। अुर्दू, अर्थशास्त्र, आकाश-दर्शन, चरखा और पत्रव्यवहार जितनी चीजें मुश्किलसे निपटा पाता हूं। बीचमें कुछ न कुछ फुटकर तो पढ़नेका होता ही है।

---

१. स्व. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।

मुन्नी के बारेमें तूने लिखा यह ठीक है। मैं सब देख-समझ सका था। लेकिन यह बात सहन करने योग्य है। मनुष्यके नाते वे बुरे नहीं है। लेकिन अधिकार बुरी चीज है। फिर यह अधिकार भी कहां? अिस लिये हमें हिसाब यों लगाना चाहिये कितना अच्छा है कि कुपरिस्थितियोंमें भी थोड़ी-बहुत मनुष्यता अुनमें कायम रही है? और किसे मालूम कि हम वैसी जगह होते तो हम कितने नीचे गिरे होते? तुझे हमें वैसे अनुभव तो होते ही रहेंगे। वैसे ही अनुभवोंसे सहन-शक्ति अुदारता धैर्य तथा विवेककी शिक्षा मिलती है। सब कुछ अनुकूल हो तब तो सभी कोई अच्छा कहलाने जैसा बरताव कर सकते हैं।

अब संतोष हुआ न? — मेरे जैसा कहनेके पीछे कोई अर्थ नहीं था। सहज अुद्गार निकला था। सुशीलाको कुछ न लगा होगा लेकिन मुझे तो लगा। अुसे जाने दिया तो थोड़ी-बहुत बात तो करनी ही चाहिये थी लेकिन समय नहीं था। अिसलिये जमनालालके बारेमें पूछ कर ही संतोष कर लिया। अुसे मेरे आशीर्वाद।

स्त्री-पुरुषके बारेमें कुछ लिखनेकी अिच्छा तो थी लेकिन तू अिस विषयमें खास प्रश्न भेजे तो ज्यादा अच्छा हो। अंग्रेजीकी पढ़ाई बन्द नहीं करनी है। नये बच्चोंको अमुक विषय सीखनेसे पहले अंग्रेजी न सिखायें अितनी ही बात है। नारणदासके पत्रमें ज्यादा लिखा है।

तेरा शरीर तांबे जैसा होना चाहिये। अगर मच्छीका प्रतिबंध न मानती हो और जैसा लगता हो कि अुसीसे तेरा शरीर अच्छा रह सकता है, तो बाहर जाकर खा सकती है। अिमामसाहब वैसा ही करते थे। जिस विषय पर ज्यादा चर्चा करनी हो तो करना।

बापू

[पहलेमें मैंने लिखा था कि श्री शंकराचार्य और रामानुजाचार्य दोनों स्वतंत्र भारतमें पैदा हुअे थे अिसलिअे वे अध्यात्ममें भी अूंचे चढ़ सके होंगे। बादके संत अिस्लामने भारतको जीता और गुलाम बना लिया अुसके बाद पैदा हुअे अिसलिअे वे सगुण मूर्तिके पुजारी हुअे। पहलेके आचार्योंकी तरह ब्रह्मवादी नहीं हुअे।

मैं पूज्य महात्माजीसे सत्याग्रहकी दीक्षा लेने सत्याग्रह आश्रममें गयी तब अुनसे आध्यात्मिक क्षेत्रमें भी मार्गदर्शन लेनेका मेरा अिरादा था। वंश-परम्परासे मुझे सगुण-अुपासनाके संस्कार मिले थे। मेरे ननसालमें और पिताजीके यहां सगुण-अुपासना ही होती थी यद्यपि पिताजी वेदान्तके अभ्यासी थे। वे रोज अुपनिषद् पढ़ते थे। और कभी कभी मेरे साथ चर्चा भी करते थे। मेरा झुकाव भक्तिमार्गकी तरफ था यद्यपि योग (ध्यानयोग) में भी मुझे रस था। मैं कॉलिजमें बी॰ ए॰ तकसे अन्त तक संस्कृतका अध्ययन चालू रखा था। जिससे वेदान्तका अध्ययन खूब हुआ। बादरायण सूत्रोंका और अुन पर दक्षिणके तीन महान आचार्योंके भाष्योंका अध्ययन करना पड़ा था। श्री पाठक शास्त्री जैसे प्रबुद्ध अध्यापक हमें पढ़ाते थे। मुझ पर निर्गुणका रंग चढ़ने लगा। फिर अद्वैत सिद्धान्तके मंडन पर स्वामी विवेकानन्दके व्याख्यान पढ़नेके बाद मैं अुनके प्रभावमें आ गयी। अुसके बाद मैं आश्रममें पहुंची। वहां तो निराकारकी प्रार्थना होती थी। हिन्दुओंके साथ गैर-हिन्दू भी प्रार्थनामें शामिल होते थे। सर्वधर्म-समभावका वातावरण था। जिसका यह नतीजा हुआ कि अुपासनाकी मेरी सारी मानसिक रचना ही डांवाडोल हो गयी।

प्रार्थनाके बारेमें पूज्य महात्माजीसे मैं अनेक प्रश्न भी पूछती थी। प्रार्थनाके समय आंख बंद करके बैठें तब मनमें भगवानका ध्यान करें या नहीं? पूज्य महात्माजी कहते थे नहीं मूर्तिका ध्यान नहीं करना चाहिये। हम जो श्लोक या भजन गाते हैं अुसके अर्थ पर अेकाग्र होना चाहिये। मैंने पूछा तब सुबहकी प्रार्थनामें सगुण दैवी-देवताओंके स्तवनके श्लोक क्यों रखे हैं? तब पूज्य महात्माजीने अेक बार सुबहके

प्रवचनोंमें अिन श्लोकोंका अर्थ अपने ढंगसे करके बताया। मुझे अुससे संतोष नहीं हुआ। अुनके चले जानेके बाद पत्रव्यवहारमें भी यह चर्चा चालू रही। लेकिन मुझे स्वीकार करना चाहिये कि पूज्य महात्माजीका अध्यात्म-विषयक अधिष्ठान — आधार — क्या था अुसका ठीक ज्ञान मुझे वर्षों तक नहीं हुआ। अितना मैंने समझ लिया कि अुन पर भारतकी पूर्व-परम्पराके संस्कार गहरे होने पर भी वे किसी अेक पंथ या विचारके पूरे अनुयायी नहीं थे। अुन्होंने अपना मार्ग खुद ही ढूंढ लिया था। अुस मार्गकी स्थूल रूपरेखा आज मुझे थोड़ी-बहुत समझमें आती है।

वेदान्तियोंने ब्रह्मका सत्-चित्-आनन्दके रूपमें वर्णन किया है। पूज्य महात्माजीने केवल सत्‌को सत्य स्वरूपमें स्वीकार किया। चित् अर्थात् ज्ञान। वह तो ददामि बुद्धियोगम् अिस आश्वासनके अनुसार अीश्वरकी कृपासे मिलेगा असा वे मानते थे। और आनन्द के लिये अुन्होंने अनासक्तिकी योजना की। जिससे मन क्लेशरहित हुआ। यह था अुनका ज्ञानमार्ग।

भक्तिमार्गमें अुन्होंने अहिंसा पर जोर दिया। सत्य ही अीश्वर है और अुसकी प्राप्ति अहिंसा के जरिये ही होती है। यह था अुनका सूत्र।

अुनका पूरा रस कर्मयोगमें था और हाथमें लिये हुअे विविध कार्य कर्मोंमें अेकाग्र होना ही अुनका ध्यानयोग था। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः। मोक्ष पानेकी कुंजी अुनकी दृष्टिमें यही थी।

मैं नहीं जानती कि पूज्य महात्माजीने साम्प्रदायिक अर्थमें सगुण अुपासना अपने जीवनमें कभी की होगी। अिसलिये सगुण-अुपासनाकी शास्त्रीय मीमांसा वे नहीं कर सकते थे। चर्चामें अपनी मर्यादाको स्वीकार करके अनुभवी भक्तोंका प्रमाण देते थे। सासवड आनेके बाद महाराष्ट्रके सन्तोंका साहित्य प्राप्त करके अुसका पठन चिन्तन और मनन करनेके बाद मुझे सगुण-अुपासनाका मर्म समझमें आने लगा। प्रत्यक्ष साधना करने लगनेके बाद तो मेरा संदेह भी दूर हो गया है। वेदान्तकी परिभाषा सगुण और निर्गुण है, साकार और निराकार नहीं। यह वस्तु ध्यानमें रखने जैसी है।

[पत्रमें मैंने लिखा था कि श्री शंकराचार्य और रामानुजाचार्य दोनों स्वतंत्र भारतमें पैदा हुअे थे अिसलिअे वे अध्यात्ममें भी अूंचे चढ़ सके होंगे। बादके संत अिस्लामने भारतको जीता और गुलाम बना लिया अुसके बाद पैदा हुअे अिसलिअे वे सगुण मूर्तिके पुजारी हुअे। पहलेके आचार्योंकी तरह ब्रह्मवादी नहीं हुअे।

मैं पूज्य महात्माजीसे सत्याग्रहकी दीक्षा लेने सत्याग्रह आश्रममें गयी तब अुनसे आध्यात्मिक क्षेत्रमें भी मार्गदर्शन लेनेका मेरा अिरादा था। वंश-परम्परासे मुझे सगुण-अुपासनाके संस्कार मिले थे। मेरे ननसालमें और पिताजीके यहाँ सगुण-अुपासना ही होती थी यद्यपि पिताजी वेदान्तके अभ्यासी थे। वे रोज अुपनिषद् पढ़ते थे। और कभी कभी मेरे साथ चर्चा भी करते थे। मेरा झुकाव भक्तिमार्गकी तरफ था यद्यपि योग (ध्यानयोग) में भी मुझे रस था। मैं कॉलेजमें गयी तबसे अन्त तक संस्कृतका अध्ययन चालू रखा था। अिससे वेदान्तका अध्ययन शुरू हुआ। बादरायण सूत्रोंका और अुन पर दक्षिणके तीन महान आचार्योंके भाष्योंका अध्ययन करना पड़ा था। श्री पाठक शास्त्री जैसे प्रबुद्ध अध्यापक हमें पढ़ाते थे। मुझ पर निर्गुणका रंग चढ़ने लगा। फिर अद्वैत सिद्धान्तके मंडन पर स्वामी विवेकानन्दके व्याख्यान पढ़नेके बाद मैं अुनके प्रभावमें आ गयी। अुसके बाद मैं आश्रममें पहुँची। वहाँ तो निराकारकी प्रार्थना होती थी। हिन्दुओंके साथ गैर-हिन्दू भी प्रार्थनामें शामिल होते थे। सर्वधर्म-समभावका वातावरण था। जिसका यह नतीजा हुआ कि अुपासनाकी मेरी सारी मानसिक रचना ही डांवाडोल हो गयी!

प्रार्थनाके बारेमें पूज्य महात्माजीसे मैं अनेक प्रश्न भी पूछती थी। "प्रार्थनाके समय आँख बंद करके बैठें तब मनमें भगवानका ध्यान धरें या नहीं?" पूज्य महात्माजी कहते थे "नहीं मूर्तिका ध्यान नहीं करना चाहिये। हम जो श्लोक या भजन गाते हैं अुसके अर्थ पर अेकाग्र होना चाहिये।" मैंने पूछा "तब सुबहकी प्रार्थनामें सगुण देवी-देवताओंके वर्णनवाले श्लोक क्यों रखे हैं?" तब पूज्य महात्माजीने अेक बार सुबहके

आधार पर बनी हुअी राय बहुत बार गलत साबित होती है, जैसा हम देखते हैं। प्रसिद्ध अुदाहरण आत्मा और देहका है। अभी आत्माका देहके साथ निकट संबंध है जिसलिये देहसे भिन्न आत्मा झटसे नहीं दीखती। जिस परिस्थितिको लेकर जिसने पहला वचन यह नहीं कहा अुसकी शक्तिको अभी तक कोअी पहुंचा ही नहीं है। अैसे अनेक अुदाहरण तुझे सहज ही मिल जायेंगे। तुकाराम वगैरा सन्तोंके वचनोंका शब्दार्थ करना अुचित है ही नहीं। अुनका अेक वचन अभी अभी मेरे पढ़नेमें आया है। वह तेरे लिये यहां दे रहा हूं

> केला मातीचा पशुपति। परि मातीसि काय म्हणती॥
> शिवपूजा शिवासी पावे। माती मातीमाजी समावे।
> केला पाषाणाचा विष्णु। परी पाषाण नव्हे विष्णु॥
> विष्णुपूजा विष्णुसि अर्पे। पाषाण राहे पाषाणरूपें॥

जिसमें से मैं यह सार निकालता हूं कि जैसे साधु-सन्तोंकी भाषाके पीछे जो कल्पना रही है अुसे समझना चाहिये। वे साकार भगवानका चित्र खींचते हुअे भी निराकारको भजते हैं। हम मामूली मनुष्य वैसा नहीं कर सकते जिसलिये अुनका रहस्य समझकर न चले तो हम मर जायेंगे।

जो अुर्दू पढ़ सकता है वह जिमामसाहबके यहां जाय तो पुस्तक तुरन्त मिल जायगी। वहां मीरासाहबका अुर्दू-अंग्रेजी शब्दकोष है और अंग्रेजी-अुर्दूका भी साथमें देखना। जिमामसाहबका घर कभी कभी साफ होता है? सभी बाकी घरोंकी हफ्ते पन्द्रह दिनमें सफाअी होनी चाहिये।

आदत न पड़े तभी तक समयका हिसाब रखना मुश्किल होता है। आदत पड़नेके बाद तो अुसमें जरा भी समय नहीं जाना चाहिये। यह सब समझकर किया काम तभी शोभित होता है और फलता है।

दक्षिण अफ्रीकाके बच्चोंका अुदाहरण मैं यहांके बच्चोंकी निन्दा करनेके लिये नहीं बल्कि अुन्हें प्रोत्साहन देनेके लिये देता हूं। यहांके बच्चे भी जरूर काम कर सकते हैं अगर अुनसे काम लेनेवाला कोअी हो। ठ है न?

कमरके दर्दके लिये तुझे गरम पानीमें बैठना चाहिये। अुसमें पन्द्रहसे बीस मिनट बैठना। अुस बीच कमरको हाथसे मलना चाहिये। जिससे

अिस बारेमें मुझे जरा भी शंका नहीं है कि पूज्य महात्माजीने अपने अुपासना-मार्गमें सफलता प्राप्त की थी। अनंत कर्मयोगमें ध्यान-योग साधना बहुत कठिन है। लेकिन पूज्य महात्माजीने अुसमें सिद्धि प्राप्त की थी यह तो अुनके अन्तकालके समय सिद्ध ही हो गया। सामने हत्यारा देहकी हत्या कर रहा है, गोलियां लगती हैं, वेदना होती है, फिर भी औश्वरसे संबंध बना हुआ है, मुंहसे रामनाम निकल रहा है, मन शान्त है। यह घटना अलौकिक कही जायगी! पूज्य महात्माजीने औश्वर-दर्शनके लिये कभी भी अेकान्तिक साधना नहीं की थी। भगवान बुद्ध शंकराचार्य समर्थ रामदास स्वामी वगैरा अवतारी पुरुषोंने पहले साधना की फिर वे सेवाकार्यमें लगे। पूज्य महात्माजीने अिससे अुलटा किया! अुन्होंने सेवाको ही साधना बनाया। अन्ते मतिः सा गतिः यह सिद्धान्त यदि सत्य हो तो पूज्य महात्माजीको अन्त समयमें औश्वर-दर्शन अवश्य हुअे होंगे! मुझे तो विश्वास है।]

प र्म
१७-९-३२

चि. प्रेमा

मैं तुझे मूर्ख ही कहूंगा। प्रश्न पूछनेमें बच्चोंको रस न हो फिर भी वे लिखें यह समझना दुर्लभ है। लिखनेके लिये भी रसके साथ लिखें तो अुसमें कोअी अर्थ है। बच्चे माता-पिताके पत्रकी आशा न रखें फिर भी यदि पत्र आ ही जाय तो वे खुश जरूर होते हैं। अिसमें स्वार्थकी जरा भी गंध नहीं होती। अिससे हिस्टीरिया तो हरगिज सिद्ध नहीं होता। हिस्टीरियाके बारेमें मैंने अेक पत्रमें लिखा है।

प्रार्थनामें साकार मूर्तिका मैंने निषेध नहीं किया। निराकारको अूंचा स्थान दिया है। शायद अैसा भेद करना ठीक न हो। किसीको कुछ और किसीको कुछ अनुकूल आता है। अिसमें तुलनाके लिये स्थान नहीं होता। मेरी दृष्टिसे निराकार अधिक अच्छा है। शंकर और रामानुजका पृथक्करण मुझे ठीक नहीं लगा। परिस्थितिकी अपेक्षा अनुभवका असर ज्यादा होता है। सत्यके पुजारी पर परिस्थितिका असर नहीं होना चाहिये। अुसे तो परिस्थितिको भेद कर बाहर निकल जाना चाहिये। परिस्थितिके

आधार पर बनी हुअी राय बहुत बार गलत साबित होती है, जैसा हम देखते हैं। प्रसिद्ध अुदाहरण आत्मा और देहका है। अभी आत्माका देहके साथ निकट संबंध है अिसलिअे देहसे भिन्न आत्मा झटसे नहीं दीखती। अिस परिस्थितिको लेकर जिसने पहला वचन यह नहीं कहा अुसकी शक्तिको अभी तक कोअी पहुंचा ही नहीं है। अैसे अनेक अुदाहरण तुझे सहज ही मिल जायेंगे। तुकाराम वगैरा सन्तोंके वचनोंका यथार्थ करना अुचित है ही नहीं। अुनका अेक वचन अभी अभी मेरे पढ़नेमें आया है। वह तेरे लिअे यहां दे रहा हूं

> केला मातीचा पशुपति। परि मातीसि काय म्हणती ॥
> शिवपूजा शिवासी पावे। माती मातीमाजी समावे ।
> केला पाषाणाचा विष्णु। परी पाषाण नव्हे विष्णु ॥
> विष्णुपूजा विष्णुसि अर्पे। पाषाण राहे पाषाणरूपें ॥

अिसमें से मैं यह सार निकालता हूं कि अैसे साधु-सन्तोंकी भाषाके पीछे जो कल्पना रही है अुसे समझना चाहिये। वे साकार भगवानका चित्र खींचते हुअे भी निराकारको भजते हैं। हम प्राकृत मनुष्य अैसा नहीं कर सकते अिसलिअे अुनका रहस्य समझकर न चलें तो हम मर जायेंगे।

जो अुर्दू पढ़ सकता है वह अिमामसाहबके यहां जाय तो पुस्तक तुरन्त मिल जायगी। वहां मौलाबक्षका अुर्दू-अंग्रेजी शब्दकोष है और अंग्रेजी-अुर्दूका भी साथमें भेजना। अिमामसाहबका घर कभी कभी साफ होता है? तभी खाली परोंको हल्के पन्द्रह दिनमें सफाअी होनी चाहिये।

आदत न पड़े तभी तक समयका हिसाब रखना मुश्किल होता है। आदत पड़नेके बाद तो अुसमें जरा भी समय नहीं जाना चाहिये। यह सब समझकर किया जाय तभी शोभित होता है और फलता है।

दक्षिण अफ्रीकाके बच्चोंका अुदाहरण मैं यहांके बच्चोंकी निन्दा करनेके लिअे नहीं बल्कि अुन्हें प्रोत्साहन देनेके लिअे देता हूं। यहांके बच्चे भी जरूर काम कर सकते हैं मगर अुनसे काम लेनेवाला कोअी हो। तू है न?

कमरके दर्दके लिअे तुझे गरम पानीमें बैठना चाहिये। अुसमें पन्द्रहसे बीस मिनट बैठना। अुस बीच कमरको हाथसे मलना चाहिये। जिससे

मुसका दर्द भी कम हो जायेगा और मासिक धर्म पर भी असर होगा। डॉक्टर क्या कहता है लिखना। मैसे दर्दको शुरू होते ही दवा देना चाहिये।

तेरा कार्यक्रम मैंने अच्छी तरह देखा। यह शक्तिसे अधिक है। अुसमें काटछांट आसानीसे हो सकती है। १२-१ से ५-४ तक अुद्योग-वर्ग चलता है यानी पाँच घंटे दस मिनट हुअे। जिसमें से अेक घंटा काट देनेसे अकरी फुरसत निकाली जा सकती है। जिस समयमें अेकान्त प्राप्त करके सोना हो तो सोना चाहिये लेटे रहना चाहिये या जिससे आराम मिले वैसा कुछ करना चाहिये। लेकिन यह समय बातोंमें या दूसरे काममें नहीं बिताना चाहिये। जिस घंटेका अुसी समय अुपयोग न करना हो तो आगे जिसकामें जा सकें वसे दूसरे कामोंको जिसका कर रातका समय जिसके लिये रख देना चाहिये। जो अपने काममें तन्मय हो जाता है अुसे कामका बोझ या थिसाबी नहीं लगती। जिसे काममें रस न हो अुसे कम काम भी ज्यादा मालूम होता है। जैसे कैदीको अेक दिन अेक वर्ष जैसा लगता है। जोगीको अेक वर्ष अेक दिन जैसा लगता है।

युरोपका संगीत पहले सुनता था तो मैं भूब अुठता था। अब अुसमें कुछ समझमें आता है और रस भी आता है।

वहां पढ़नेका लोभ रखा ही नहीं जा सकता तेरा यह लिखना ठीक नहीं है। बहुत पढ़नेको न मिले यह बिलकुल सही है पढ़ना गौण वस्तु है यह भी बिलकुल सच है। मैसा होने पर भी आश्रममें रहनेवाले बहुतेरे लोगोंने पढ़ा है। तेरे निरावाके वचन मुझे अच्छे नहीं लगते। जिसमें अपूर्णता लगे अुसे पूर्ण करनेका प्रयत्न कर। लेकिन अन्तमें अगर अपूर्णता ही लगे यानी आखिरमें जोड़-बाकी करने पर दोष बढ़ते मालूम हों तो अुसका त्याग कर देना चाहिये। अुसीमें अपने और समाजके प्रति न्याय है।

मुझे लम्बे पत्र लिखनेके लिये माफी मांगनेकी जरूरत नहीं है। मैं अुनसे अूबता नहीं मुझे वे अच्छे लगते हैं। अुनसे मैं सीखता हूँ क्योंकि वे तेरे अुस समयके हृदयका दर्पण होते हैं।

बापू

म मन्दिर,
२१-६-३२

चि प्रेमा

अुर्दू पुस्तकोंमें नदवीके नामके दो नाम हैं ? शिबलीके बदले नदवीने अुनके बाद कुछ लिखा है। शायद किताब पर मौलाना सुलेमान नदवी लिखा हो।

मछलीके बारेमें मैंने तेरे लिअे कोओी अपवाद नहीं किया। कोअी लिखर मौखिक मिसिज हैं फिर भी मैंने अुसे आश्रममें चलने दिया है। मांस-मच्छीकी मांस-मच्छीके रूपमें आश्रमके लिअे मर्यादा रखी गयी है, लेकिन व्यक्तिके लिअे नहीं रखी जा सकती। मैंने कभी भी नहीं रखी। बिसीलिअे बिमामसाहब बाहर खा सकते थे। नाम है कि तेरी जगह पर नारणदास ही हो। अुसने जीवनभर मांसादि नहीं खाया। लेकिन अुसे भयंकर बीमारी हो जाय और अुसे मांस खाकर जीनेकी बिच्छा हो तो मैं अुसे मांस खानेसे कभी नहीं रोकूंगा। मेरे विचार वह आज जानता है। धर्म भी वह जानता है। फिर भी मृत्युकी बड़ी अजब चीज है। अुस समय अुसकी बिच्छा हो जाय तो अुसमें बाधा न डालना मेरा धर्म है। बिसके विपरीत कोओी बच्चा हो और अुसके लिअे मुझे निश्चय करना हो तो मैं अुसे मरने दूंगा लेकिन मांस नहीं खिलाअूंगा। वा पर अैसी बीती थी यह तू जानती है ? बहुत करके यह किस्सा आत्मकथा में है। तू न जानती हो या यहां कोओी न जानता हो तो पूछना। मैं लिख भेजूंगा। वह हम दोनोंके लिअे — बाके और मेरे लिअे — पुण्य-प्रसंग था। अब तू समझी ? तुझसे मछली खानेका आग्रह मुझे नहीं करना है। अुसके बिना मृत्यु होती हो और तू मरनेको तैयार हो तो मैं तुझे मरने देनेके लिअे तैयार हूं। मछली खाकर शायद जिन्दा रहा जा सकता है परन्तु मरनेके लिअे ही न ? लेकिन यह तो जो माने और पाले अुसका धर्म है। अैसा धर्म दूधके बारेमें मैं अपने ही अूपर कहां लागू करता हूं ? — यद्यपि मुझे प्राणिमात्रका दूध त्याग करनेका धर्म स्पष्ट

सीखता है। लेकिन अैसे धर्म दूसरोंसे पालन करानेके नहीं होते। स्वयं ही पालन करनेके होते हैं — बिति।—

तेरा बाजका भोजन मात्रा-सहित फिर लिखना। परिवर्तन करनेकी सूचना देनी होगी तो दूंगा।

स्त्री-पुरुषके बारेमें तूने ठीक पूछा है।

जिस जिस विषयमें बच्चोंको कुतूहल अुत्पन्न हो अुसके बारेमें हमें मालूम हो तो अुन्हें बताना चाहिये न मालूम हो तो अपना अज्ञान स्वीकार करना चाहिये। बताने जैसा न हो तो पूछनेवालेको रोकें और दूसरोंको भी पूछनेके लिये मना करें। कभी भी अुनकी बातको अुड़ा न दें। हम सोचते हैं अुससे भी ज्यादा अैसी बातें बच्चे जानते हैं। जिस वस्तुके बारेमें वे न जानते हों अुस वस्तुका ज्ञान हम अुन्हें न करायें तो वे बुरे तरीकेसे अुसका ज्ञान प्राप्त करना सीखते हैं। अैसा होने पर भी जो बात बताने जैसी न हो वह अूपरका खतरा अुठाकर भी हम अुन्हें न बतायें। न बताने जैसा बहुत कम होता है। बीभत्स क्रियाका ज्ञान वे हमसे चाहें तो वह हम कभी न दें फिर भले ही हमारे प्रतिबन्धके बावजूद आड़े-टेढ़े ढंगसे वे यह ज्ञान प्राप्त करें।

पक्षियोंमें होनेवाली क्रियाको बच्चे देखें और अुसे जाननेकी जिज्ञासा बतायें तो मैं जरूर अुस जिज्ञासाको तृप्त करूंगा और अुसमें से अुन्हें ब्रह्मचर्यका पाठ सिखाअूंगा। पक्षी पशु और मनुष्यके बीचका भेद मैं अुन्हें सिखाअूंगा। जो स्त्री-पुरुष अैसा ही आचरण करते हैं वे मनुष्य-देह पाकर भी पशु-पक्षी जैसे हैं। यह मिथ्याकी बात नहीं है, वस्तुस्थितिकी है। पशुतामें से निकलनेके लिये हमें मनुष्यकी देह और बुद्धि मिली है।

मासिक धर्मका संपूर्ण ज्ञान अुस अुमर तक पहुंची हुअी बालिकाको कराना चाहिये। अुससे छोटी लड़की अुसे जाने और पूछे तो अुसे भी जितना वह समझ सके अुतना हम समझा सकते हैं।

हम चाहे जैसा प्रयत्न करें तो भी बालक या बालिकायें कभी अन्त तक निर्दोष रह ही नहीं सकते। यह समझकर अुन सबको अमुक समय पर यह ज्ञान देना ही अच्छा है। यह ज्ञान पानेवाला ब्रह्मचर्यका पालन

कर ही न सके अैसा निर्बल ब्रह्मचर्य यदि हो तो हमें अुससे कोअी सरोकार नहीं है। यह ज्ञान पाने पर ब्रह्मचर्य अधिक सबल होना चाहिये। मेरे अपने विषयमें तो अैसा ही हुआ है।

ज्ञान देने और प्राप्त करनेके अनेक भेद हैं। अेक मनुष्य अपने विकारोंके पोषणके लिये यह ज्ञान प्राप्त करता है, दूसरेको यह अनायास मिलता है, तीसरा विकारोंको शांत करनेके लिये और दूसरोंकी मदद करनेके लिये यह ज्ञान प्राप्त करता है।

यह ज्ञान देनेकी योग्यता जिसमें हो वही दे। तेरे भीतर यह कुशलता होनी चाहिये। तुझे आत्म-विश्वास होना चाहिये कि तेरे ज्ञान देनेसे बालिकाओंमें विकार कभी पैदा न होंगे। तुझे अिसका भान होना चाहिये कि विकारोंके शमनके लिये तू यह ज्ञान देती है। अगर तेरे बारेमें विकारोंकी संभावना हो तो तुझे यह देखना चाहिये कि यह ज्ञान देते समय तुझमें तो विकार पैदा नहीं होते।

पति-पत्नीके रूपमें स्त्री-पुरुषके सांसारिक जीवनके मूलमें भोग है। हिन्दू धर्मने अुसमें से त्याग पैदा करनेका प्रयत्न किया है, या यों कहूं कि सभी धर्मोंने किया है।

पति यदि ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर है तो पत्नी भी वही है। पत्नी दासी नहीं, समान अधिकार रखनेवाली मित्र है, सहचारिणी है। दोनों अेक-दूसरेके गुरु हैं।

लड़कीका हिस्सा लड़केके बराबर ही होना चाहिये।

जो दौलत दोनोंमें से कोअी कमाये अुसमें पति-पत्नी दोनोंका बराबरीका हिस्सा है। पति पत्नीकी मददसे ही कमाता है, फिर चाहे पत्नी खाना ही पकाती हो। वह दासी नहीं सहभागिनी है।

जिस पत्नीके प्रति पति अन्यायका व्यवहार करता हो अुसे अुससे अलग रहनेका अधिकार है।

बच्चों पर दोनोंका समान अधिकार है। बड़े हो जाने पर किसीका नहीं। पत्नी नालायक हो तो अुसका अधिकार खतम हो जाता है। अैसा ही पतिके बारेमें है।

सार यह है कि स्त्री-पुरुषके बीच जो भेद कुदरतने रख दिये हैं और जो निरी आंखोंसे देखे जा सकते हैं अुनके सिवा कोअी भेद मुझे

मान्य नहीं है। अब अिस विषय पर तेरा ओक भी प्रश्न बाकी रह गया हो ऐसा मुझे नहीं लगता।

नारणदासके बारेमें मुझे पूरा विश्वास है। वह कहे कि मुझे शांति है तो मैं अशान्ति माननेको तैयार नहीं हूं। मैंने उसे खूब सावधान कर दिया है। दूर बैठकर अब मैं तंग नहीं करूंगा। नारणदासमें अनासक्त होकर काम करनेकी बहुत बड़ी शक्ति है। अनासक्त मनुष्य हमेशा आसक्तकी अपेक्षा बहुत ज्यादा काम करते हैं और बादमें बैठे-से दिखते हैं। वे सबसे बादमें थकते हैं। सच पूछें तो अुन्हें थकान लगनी ही नहीं चाहिये। लेकिन यह तो आदर्श हुआ। तू वहां हाजिर है अिसलिये तू अगर अशान्ति देख के नारणदास अपनेको धोखा देता है यह ताड़ ले तो तेरा धर्म मुझसे अलग हो जायगा। तू तो नारणदासको सावधान कर ही सकती है। मैं भी वहां होअूं और वह प्रत्यक्ष जो कहे अुससे अलग ही देखूं तो अुसे सावधान करूं। तेरी चेतावनीके बावजूद भी वह तेरा विरोध करे, तो जहां तक तू अुसे सत्यवादी समझती है वहां तक तुझे अुसका कहना मानना चाहिये। बहुत बार हमारी आंखें भी हमें धोखा देती हैं। मैं तेरे चेहरे पर चिन्ता देखूं लेकिन तू अिनकार करे, तो मुझे तेरी बात माननी ही चाहिये। मुझसे तू छिपाती है ऐसा भय या शक मुझे हो तो दूसरी बात है। तब मुझे तुझसे पूछनेकी जरूरत नहीं रहती। सच्ची स्थिति जाननेके दूसरे साधन मुझे पैदा करने होंगे। लेकिन आश्रम-जीवन तो अिस तरह चल ही नहीं सकता। सत्य तो अुसके मूलमें ही निहित है। वहां प्रेम हेतुसे भी धोखा नहीं दिया जा सकता।

खादीके बारेमें या तो नारणदासके पत्रमें या बच्चोंके पत्रमें तुझे पढ़नेको मिलेगा।

नारणदास ठेठ क्यों नहीं घबराता यह मालूम कर लेना।

चीनी जुलाबी[1] की राह जरूर देखना। कौनसे सालकी चीनी जुलाबी अिसका विचार करना होगा। साल चाहे जो हो। महीनेकी

---

१ अुस समय ऐसी भविष्यवाणी प्रकाशित हुआी थी कि चीनी जुलाबीके दिन पूज्य महात्माजी जेलसे छूटनेवाले हैं।

तारीख निश्चित हो जाय तो भी गनीमत है। और किसी महीनेकी या दूसरी किसी तारीखकी तो राह नहीं देखनी पड़ेगी? चौथी जुलाअी बीत जाय तो १ ११ की जुलाअी तक शान्त रहना।

बापू

विद्या पर ध्यान देनेकी जरूरत महसूस होती है। यह मुझे मालूम होती है। प्रश्न पूछना भी मुझे नहीं आता। तू देखना।

८१

[हिन्दू तिथिके अनुसार मैं अपनी वर्षगांठ मनाती आअी थी। अिस वर्ष वह ११ जुलाअीके दिन पड़ती थी। मैंने पूज्य महात्माजीको लिखा था कि "मुझे आश्रममें आये तीन वर्ष हो गये अिसलिअे मेरी अुमर अितनी ही माननी चाहिये। क्योंकि यहां आकर मेरा पुनर्जन्म हुआ। फिर आपको मेरे आश्रममें टिकनेके बारेमें शंका थी (जब मैं पहली बार आपसे मिलने और यहां प्रवेश पानेकी अिजाजत लेनेके लिअे आअी थी) यह भी याद आता है।"

मैंने सुना था कि अेक बार किसीने पूज्य महात्माजीसे पूछा कि "आपके हृदयमें अैसी कौनसी अुत्कट अिच्छा है जिसकी पूर्तिके लिअे आप अीश्वरसे प्रतिदिन पवित्रभावसे प्रार्थना करते हैं?" तब पूज्य महात्माजीने अुत्तर दिया था कि कलकत्तेमें कालीघाट पर रोज सैकड़ों बकरोंकी धर्मके नाम पर बलि चढ़ाअी जाती है। अुसे बन्द करानेके लिअे भगवानसे मैं सदा प्रार्थना करता हूं। पत्रमें मैंने यह किस्सा लिखकर पूछा था कि यह सच है या नहीं।]

१०–८–३२

चि॰ प्रेमा

मैं मानता हूं कि तू तीन बरसकी हुअी। तू जो कहती है वह सच है। जब तूने आश्रममें प्रवेश लिया तब तेरे आश्रममें टिक सकनेके बारेमें मुझे शंका थी। लेकिन तू जीतती है अपनी नहीं। क्योंकि अपने

मालूम नहीं है। अब जिस विषय पर तेरा ओक भी प्रश्न बाकी रह गया हो अैसा मुझे नहीं लगता।

नारणदासके बारेमें मुझे पूरा विश्वास है। वह कहे कि मुझे शांति है तो मैं अशान्ति माननेको तैयार नहीं हूं। मैंने अुसे खूब सावधान कर दिया है। दूर बैठकर अब मैं तंग नहीं करूंगा। नारणदासमें अनासक्त होकर काम करनेकी बहुत बड़ी शक्ति है। अनासक्त मनुष्य हमेशा आसक्तकी अपेक्षा बहुत ज्यादा काम करते हैं और बादमें बैठे-से दिखते हैं। वे सबसे बादमें थकते हैं। सच पूछें तो अुन्हें थकान लगनी ही नहीं चाहिये। लेकिन यह तो वादकी हुआ। तू वहां हाजिर है जिसलिओ तू अगर अशान्ति देख ले नारणदास अपनेको धोखा देता है यह ताड़ ले तो तेरा धर्म मुझसे अलग हो जायगा। तू तो नारणदासको सावधान कर ही सकती है। मैं भी वहां होअूं और वह प्रत्यक्ष जो कहे अुससे अलग ही देखूं तो अुसे सावधान करूं। तेरी चेतावनीके बावजूद भी वह तेरा विरोध करे, तो वहां तक तू अुसे सत्यवादी समझती है वहां तक तुझे अुसका कहना मानना चाहिये। बहुत बार हमारी आंखें भी हमें धोखा देती हैं। मैं तेरे चेहरे पर खिन्नता देखूं लेकिन तू जिनकार करे, तो मुझे तेरी बात माननी ही चाहिये। मुझसे तू छिपाती है अैसा भय या शक मुझे हो तो दूसरी बात है। तब मुझे तुझसे पूछनेकी जरूरत नहीं रहती। सच्ची स्थिति जाननेके दूसरे साधन मुझे पैदा करने होंगे। लेकिन आश्रम-जीवन तो जिस तरह चल ही नहीं सकता। सत्य तो मनुष्यके मुंहमें ही निहित है। वहां सूक्ष्म हेतुसे भी धोखा नहीं दिया जा सकता।

बापीके बारेमें या तो नारणदासके पक्षमें या बच्चोंके पक्षमें तुझे पढ़नेको मिलेगा।

नारणदास तेल क्यों नहीं मलवाता यह मालूम कर लेना।

चौथी भुजाओं[1] की राह जरूर देखना। कौनसे सालकी चौथी भुजाओं जिसका विचार करना होगा। साल चाहे जो हो। महीनेकी

[1] अुस समय अैसी भविष्यवाणी प्रकाशित हुअी थी कि चौथी भुजाओंके दिन पूज्य महात्माजी जेलसे छूटनेवाले हैं।

और अुर्दू-अंग्रेजी शब्दकोश जल्दी भेजना। अगर ये पुस्तकें डाह्याभाओीके पास जल्दी भेजी जा सकें तो वे शनिवारको यहां ले आयेंगे।

सारे मकान नियमित रूपसे किसी नियत दिन साफ होने ही चाहिये। सामानको खोलकर झाड़-झटक कर यथास्थान रख देना चाहिये। अिसके लिये समय निकालना अनिवार्य है।

अिस संदर्भमें — फिर वह व्यक्ति हो समाज हो या संस्था हो — अपूर्णता हमें अुसमें पूर्णता लानेका प्रयत्न करना हमारा धर्म है। अगर अुसमें गुणोंकी अपेक्षा दोष बढ़ गये हों तो अुसका त्याग — असहयोग हमारा धर्म है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। यही मैने तुझे लिखा था। अिस वाक्यसे मैने तुझे आश्रम छोड़ने या और कुछ छोड़नेकी सलाह नहीं दी। मैने तो अमुक स्थितिमें मनुष्यमात्रका जो धर्म माना है वही बताया है।

बंगालमें रोज दिन-दहाड़े सैकड़ों भेड़-बकरे काटकर कलकत्तेमें काली माताको चढ़ाये जाते हैं। मुझे रोकनेकी योग्यता प्रदान करनेकी याचना मैं ओश्वरसे कर रहा हूं। क्या तू यह नहीं जानती थी?

मनुष्य अपनेको गोपीकी अुपमा देता है यह मैं जानता हूं। यह केवल भक्तिभावसे होता हो तो अुसमें मुझे कोओ बुराओ नहीं दिखाओ देती। ओश्वरके आगे सब अबला ही हैं।

स्वराज्यमें लोग हिमालयकी चोटीकी और अुत्तरी ध्रुवकी खोज करनेके लिये जरूर निकलेंगे। सामान्य भौतिकशास्त्रोंके ज्ञानको मैं लाभदायी मानता हूं।

मेरे आहारके प्रयोगोंसे मुझे नुकसान नहीं हुआ। वे आठ वर्ष तक भी चले हैं और सात दिन भी चले हैं।

पूरन्बार मासिक पढ़े।

मोनोटाअिप में काम जरूर है।

बापू

वचन पर तू डटी रही। और जो अपने वचनका पक्का होता है, अुसके बारेमें मुझे शंका नहीं रहती। मेरे वचनोंमें ताना (सरकाज्म) रहा हो ऐसा मुझे याद नहीं है लेकिन तू जितनी टिकी अुतनी टिकेगी ही ऐसा मुझे विश्वास नहीं था। तू भाजी अुस समयकी अपनी स्थिति मुझे याद है। मैं तो जरूर चाहूंगा कि जैसे तूने तीन वर्ष बिता दिये वैसे ही तू सारा जीवन आश्रममें बिताये और वह निश्चित ढंगसे रह कर — अनायास ही नहीं बल्कि निश्चय करके तू आश्रमकी है और आश्रम तेरा है ऐसा दृढ़तापूर्वक मान कर और जान कर। लेकिन जिसका आग्रह नहीं हो सकता। मैं तो केवल ऐसी भिक्षा ही कर सकता हूं। तुझे जब तक आश्रम सहज ही अपना न लगे तब तक तू निश्चय नहीं कर सकती। यह तो मैंने तुझे अपनी भिक्षा बताजी।

यह हुजी तेरे आश्रम-जन्मकी बात। अगला जन्मदिन ११ जुलाजीको है और यह पत्र तुझे ८ ता. के आसपास मिलना ही चाहिये। मेरा आशीर्वाद तो है ही। तेरी मूंछोंसे मूंछी अभिलाषायें पूरी हों! अुस दिशामें तेरे प्रयत्न चल ही रहे हैं जिस बारेमें मुझे शंका नहीं है। जितनी आयु और जितना ही स्वास्थ्य भी साथमें होना चाहिये। वे भी रहेंगे ऐसा मैं मानता हूं। लेकिन जिन दोनोंका आधार आखिरमें तेरे या मेरे अूपर नहीं है। सब कुछ अुसे सौंप दिया है। वह चाहे जैसा करे। और वह जो करेगा सब अच्छा ही होगा।

११ की तारीखका तेरा हिसाब भेजना। अुस दिन तू नया निश्चय करती है यह लिखना। जन्मतिथिके दिन कोजी न कोजी नया निश्चय करनेकी सूचना मैं सबको करता हूं यह तो तू जानती है न?

ज्योतिषीके कथनों पर बिलकुल विश्वास न रखना। अुनका विचार भी तू छोड़ दे। अुनके कथन सच्चे हों तो भी अुन्हें जाननेसे कोजी लाभ नहीं है। हानि स्पष्ट है।

तुम्हें वहां गरमी लगती है। पर यहां अच्छी ठंडक रहती है। बरसातकी कमी है।

अुर्दू पुस्तकोंमें पैगम्बरके जितने जीवन-चरित्र दिखाजी दें वे सब मस्तमें सहाबा के दो भाग और तुमकाजे राशदीन तथा अंग्रेजी-अुर्दू

तू मरना स्वीकार करे, लेकिन मछली न खाये — यह मुझे तो अच्छा लगेगा। जिसका अर्थ क्या यह भी है कि तू कॉड-लिवर ऑअिल भी नहीं लेगी? मैं क्या चाहता हूं जिसका विचार नहीं करता हूं। मैंने तो तेरी मानसिक स्थिति जाननेके लिये यह प्रश्न पूछा है। तेरे भोजनमें दूध-दही अथवा/और घी बढ़ाना चाहिये। कच्चे शाकके बदले कभी कभी तो पके फल होने ही चाहिये। पपीते पकते ही नहीं? टमाटर नहीं होते? पत्तागोभी किसी भी तरहकी नहीं होती? तू स्वयं ही थोड़े टमाटर क्यों न बोये? वैसे ही कद्दू खूब तेजीसे बढ़ते हैं। कच्चा पपीता अधिक नहीं खाया जा सकता हमेशा भी नहीं खाया जा सकता। बर्वेका विचार किये बिना जितना परिवर्तन तू भोजनमें करना। गरम पानीमें कटिस्नान जारी रखना। बड़ा दर्द होता है वहां मालिश करानेकी जरूरत तो है ही। कोअी भी लड़की खुश होकर मालिश कर देगी।

बिलाकी मूढ़ता प्रेमसे जायगी। रामभाऊ'का मामला जरा कठिन है। लेकिन अुसका अेक ही अुपाय है। अुस पर तीन शक्तियां काम करती हैं। जिसलिअे अगर तीनों अेक ही दिशामें न चलें तो मुसीबत है। *ये तीन शक्तियां हैं पंडितजी लक्ष्मीबहन और तू यह जिसकी अुस* पर देखरेख हो वह। जिस कठिनाअीको भी पार कर जाना और मार्ग निकालना यह प्रेमका काम है। तेरे भीतर प्रेम जितना विशाल होगा अुतनी ही तेरी शक्ति वैसे बालकोंको सुधारनेमें मददगार साबित होगी।

आश्रमकी बड़ी लड़कियोंके बारेमें अपने भीतर तू अुदारता पैदा करना। क्योंकि वे दोषी होकर घर नहीं बैठतीं लेकिन आचार हो जाती है जिसलिअे। अुनकी लाचारीको तू या मैं नहीं नाप सकते। यह नाप तो लड़कियां ही निकाल सकती हैं। यह गलत भी हो सकता है। अुनकी दृष्टिमें गलत न हो तो जितना काफी है। बड़ी लड़कियोंमें से कुछको ले। आनन्दी' कुसुम । मैं सब क्या करूँ? आनन्दी कामचोर नहीं

---

१ स्व श्री नारायण मोरेश्वर खरेके पुत्र।

२ श्री लक्ष्मीदासभाअी आसरकी लड़की।

३ श्री कुसुम गांधी। श्री नारणदास काकाकी भानी हुअी लड़की। श्री रघुभाअी नवाणीकी पत्नी।

८२

१—७—३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तूने लिफाफेको सजानेकी कोशिश की और अुसे बिगाड़ दिया। बिना अुपयोगकी सजावटके बारेमें भी अैसा ही समझना। सरकार लिफाफे पर जो सजावट करते हैं वह सजावटके खातिर नहीं होती लेकिन अुपयोगमें से सजावट पैदा होती है, अिसलिये वह सुन्दर लगती है। लिखे हुये लिफाफेका फिरसे अुपयोग करना हो तो लिखा हुआ काट देना चाहिये। अिसके लिये अुस स्थान पर नापकर कागजकी बिना कंगूरेवाली पट्टियां चिपकायी थे अच्छी थीं। लेकिन अिससे तुझे संतोष नहीं हुआ। अिसलिये अब यहांसे जानेवाले लिफाफोंको ये अुल्टे किये हैं जिससे छोटी पट्टियां न चिपकानी पड़ें और लिफाफा नया जैसा लगे। यह ध्यानसे देखेगी तो तुझे पता चलेगा। तेरी कंगूरेवाली पट्टियां लगी अुखड़ गयी थी अिसलिये बहुत बुरी लगती थीं। अुपयोग तो अुनका कुछ था ही नहीं। अुसमें की हुयी मेहनत बेकार गयी तथा समय और अुतना कागज भी बिगड़ा। अुतना जनताका नुकसान हुआ। अिसमें से दो सबक लेना समझे बिना किसीका अनुकरण नहीं करना चाहिये। सजावटके लिये की गयी सजावट सच्ची सजावट नहीं है। यूरोपमें जो बड़े बड़े गिरजे हैं अुनके बारेमें कहा जाता है कि अुनकी सारी सजावटके पीछे अुपयोगकी दृष्टि तो होती ही है। यह सच हो या न हो परन्तु मैंने जो नियम बताया है अुसके बारेमें शंकाको स्थान नहीं है।

अिस बारके तेरे पत्रमें अभ्यासकी आलोचनाके सिवा दूसरी बहुत कम बातें हैं। मुझे तो लगता है कि यह आलोचना निरर्थक है। अिसलिये अुसके औचित्यका विचार करनेकी जरूरत ही नहीं रहती। Judge not lest ye be judged वाक्य हृदयमें अुतारने जैसा है। अिससे मिलता हुआ गुजराती वाक्य याद नहीं आ रहा है। मराठीमें हो तो भेजना।

नयी पुस्तकोंकी सूची मुझे चाहिये। शिवाजीकी पुस्तक तो मुझे भेज ही देना और बलीबाका जीवन-वृत्तान्त भी भेजना।

तू मरना स्वीकार करे, लेकिन मछली न खाये — यह मुझे तो अच्छा लगेगा। अिसका अर्थ क्या यह भी है कि तू कॉड-लिवर ऑअिल भी नहीं लेगी? मैं क्या चाहता हूँ अिसका विचार नहीं करना है। मैंने तो तेरी मानसिक स्थिति जाननेके लिये यह प्रश्न पूछा है। तेरे भोजनमें दूध-दही अथवा/और घी बढ़ाना चाहिये। कच्चे शाकके बदले कभी कभी तो पके फल होने ही चाहिये। पपीते पकते ही नहीं? टमाटर नहीं होते? पत्तागोभी किसी भी तरहकी नहीं होती? तू स्वयं ही थोड़े टमाटर क्यों न बोये? वैसे ही लेट्यूस खूब तेजीसे बढ़ते हैं। कच्चा पपीता अधिक नहीं खाया जा सकता हमेशा भी नहीं खाया जा सकता। खर्चका विचार किये बिना जितना परिवर्तन तू भोजनमें करना। गरम पानीमें कटिस्नान जारी रखना। जहाँ दर्द होता है वहाँ मालिश करानेकी जरूरत तो है ही। कोअी भी लड़की खुश होकर मालिश कर देगी।

विद्याकी मुश्त प्रेमसे जायगी। रामभाअूका मामला जरा कठिन है। लेकिन अुसका अेक ही अुपाय है। अुस पर तीन व्यक्तियां काम करती हैं। अिसलिये अगर तीनों अेक ही दिशामें न चलें तो मुसीबत है। वे तीन व्यक्तियां हैं पंडितजी लक्ष्मीबहन और तू या जिसकी अुस पर देखरेख हो वह। अिन कठिनाअियोंको भी पार कर जाना और मार्ग निकालना यह प्रेमका काम है। तेरे भीतर प्रेम जितना विशाल होगा अुतनी ही तेरी शक्ति अैसे बालकोंको सुधारनेमें मददगार साबित होगी।

आश्रमकी बड़ी लड़कियोंके बारेमें अपने भीतर तू अुदारता पैदा करना। क्योंकि वे दोषी होकर घर नहीं बैठती लेकिन लाचार हो जाती हैं अिसलिये। अुनकी लाचारीको तू या मैं नहीं माप सकते। यह माप तो लड़कियाँ ही निकाल सकती हैं। यह गलत भी हो सकता है। अुनकी दृष्टिमें गलत न हो तो अितना काफी है। बड़ी लड़कियोंमें से कुछको ले। जानकी कुसुम । मैं सब क्या करूँ? जानकी कामचोर नहीं

---

१ स्व० श्री नारायण मोरेश्वर खरेके पुत्र।

२ श्री जमनादासभाअी गांधीकी लड़की।

३ श्री कुसुम गांधी। श्री नारणदास गांधीकी मानी हुअी लड़की। श्री रघुभाअी जतापीकी पत्नी।

है कुसुम तो हरगिज नहीं है। पर तो बच्चोंका भार है। बच्चोंको तालीम कैसे दी जाय जिसे वह शायद ही जानती है जितनेमें भी बन बैठी। अब उससे कितने कामकी आशा रखी जाय? दूसरी तो जो तेरे ध्यानमें हो वे सही। जिनका न्याय हम सोना या मोती तोलनेके कांटेसे नहीं कर सकते। और तू अनुभव होने पर देखेगी कि जैसे जैसे तुझमें उदारता बढ़ेगी वैसे वैसे लोगोंसे काम लेनेकी तेरी शक्ति बढ़ेगी। यह सही है या गलत यह तो दैव ही जाने लेकिन ऐसा कहा जाता है कि मैं लोगोंसे बहुत ज्यादा काम ले सकता हूं। यह सच हो तो उसका कारण यह है कि लोगोंके बारेमें मुझे चोरीका शक ही नहीं होता। वे कर सकें उतने कामसे मैं सन्तोष कर लेता हूं। लेकिन ज्यादा कामकी मांग करूं तो वे ज्यादा करेंगे। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि लोग मुझे जितना ठगते हैं उतना और किसीको शायद ही ठगते होंगे। यह परीक्षा सच निकले तो भी मुझे पश्चात्ताप नहीं होगा। मैं दुनियामें किसीको धोखा नहीं देता जितना प्रमाणपत्र मुझे मिले तो वह मेरे लिये काफी है। ऐसा प्रमाणपत्र कोई मुझे न दे तो न सही लेकिन मैं तो अपने आपको देता ही हूं।

मुझे असत्य सबसे बुरा लगता है।

ज्यादासे ज्यादा लोगोंका ज्यादासे ज्यादा भला[1] और जिसकी लाठी उसकी भैंस[2] के नियमको मैं नहीं मानता। सबका भला सर्वोदय और कमजोर पहले — यह नियम मनुष्यके लिये है। हम तो पैरवाले मनुष्य कहलाते हैं लेकिन चौपायोंके स्वभावको अभी तक छोड़ नहीं सके हैं। उसे छोड़ना हमारा धर्म है।

बापू

---

१ Greatest good of the greatest number

२ Survival of the fittest.

८३

य मं
१०-७-३२

चि प्रेमा

तेरा भाग्य ही फूटा समझूं क्या? मैंने तो वर्षगांठका आशीर्वाद लौटती डाकसे भेजा था। लेकिन मेरा पत्र अधरमें ही लटक गया। कहीं कल न रवाना हुआ हो? लेकिन कागज पर लिखे हुअे आशीर्वादसे क्या बनेगा? हृदयका आशीर्वाद हो तो काफी समझना चाहिये। और वह तो था ही। हृदय किस ढंगसे काम करता है जिसका हमें पता भी नहीं चलता। लेकिन सत्य यही है बाकी सब मिथ्या है।

कमरके दर्दका अिलाज तुरन्त करनेकी जरूरत है। अुसका संबंध मासिक धर्मके साथ हो सकता है। तुझे ठीक समय पर होता है? आनन्दी मणि और मंगलाके बारेमें भी मुझे यह शंका होती है। तू अुन लड़कियोंसे बात करके मालूम कर लेना। संभव है मणिको मासिक धर्म शुरू हो गया हो। मणि आश्रममें आयी तब तीन वर्षकी थी असा मुझे याद है। अिस समय अुसे सोलहवां वर्ष चलता होगा। मंगला भी शायद अितने ही वर्षकी हो। सब ठीकसे जान लेना।

जो नयी बहनें आयी हैं अुनमें से कोअी लिखना जानती हों तो अुनसे मुझे लिखनेके लिअे कहना। नर्मदा[1]को अच्छी तरह पहचान लेना। अुसकी कहानी दुःखद है।

---

१ सौराष्ट्रकी अक होशियार लड़की। वह विवाहित थी लेकिन अुसे अुस समय विवाहित जीवन पसन्द नहीं था। सत्याग्रह करके जेल गअी। अुसका पति अुसे लेने आया तो अुसके साथ जानेसे अुसने अिनकार कर दिया। अक 'सज्जन परोपकारी कार्यकर्ताके प्रयत्नसे अुसका विवाह-विच्छेद हो गया। फिर 'वह संस्कार-ग्रहण करनेके लिअे सत्याग्रह आश्रममें आकर रही।

मेरी स्मृतिके अनुसार नर्मदाका संबंध-विच्छेद करानेमें पूज्य महा-त्माजी भी सम्मत हुअे थे।

प्रेसिडेन्ट विलसनके जीवनका मुझे परिचय नहीं है। जो मुना है अुसके अनुसार तो वह भला आदमी था और अुसके हेतु भी अच्छे थे।

पिछले युद्धसे काम हुआ जैसा नहीं मालूम होता। नीतिका बल कमजोर पड़ा है। द्वेष बढ़ा है। लड़नेकी वृत्ति कम नहीं हुआी है। लालच बहुत बढ़ गया है।

किसी मनुष्य या वस्तुको ध्यानमें रखकर प्रार्थना हो सकती है। अुसका परिणाम भी आ सकता है। लेकिन अैसे मुद्देसके बिना की गयी प्रार्थना आत्मा और जगतके लिये अधिक कल्याणकारी हो सकती है। प्रार्थनाका असर खुद पर होता है। अर्थात् अुससे अंतरात्मा अधिक जाग्रत होती है। और जैसे जैसे जागृति बढ़ती है वैसे वैसे अुसके प्रभावका विस्तार बढ़ता जाता है। अूपर हृदयके बारेमें मैंने जो बात लिखी वह यहां भी लागू होती है। प्रार्थना हृदयका विषय है। मुंहसे बोलना वगैरा क्रियामें हृदयको जाग्रत करनेके लिये है। जो व्यापक शक्ति बाहर है वही भीतर भी है और अुतनी ही व्यापक है। शरीर अुसके रास्तेमें बाधक नहीं होता। बाधा हम पैदा करते हैं। प्रार्थनाके द्वारा वह बाधा दूर होती है। प्रार्थनासे विच्छित फल प्राप्त हुआ या नहीं असका हमें पता नहीं चलता। मैं नर्मदाकी मुक्तिके लिये प्रार्थना करूं और वह दुःखमुक्त हो जाय तो मुझे यह नहीं मान लेना चाहिये कि वह मेरी प्रार्थनाका फल है। यह प्रार्थना निष्फल कभी नहीं जाती लेकिन क्या फल देती है यह हमें मालूम नहीं होता। अिसके सिवा हमारा सोचा हुआ फल मिले तो वह अच्छा ही है अैसा भी नहीं मानना चाहिये। यहां भी गीताबोध का अमल करना है। प्रार्थना अनासक्त होनी चाहिये। किसीके बारेमें प्रार्थना की हो तो भी अनासक्त रहा जा सकता है। किसीकी मुक्ति हमें अिष्ट लगे अिसलिये अुसकी प्रार्थना करें। लेकिन वह मिलती है या नहीं अिस बारेमें हम निश्चिन्त रहें। विरुद्ध परिणाम आने पर यह माननेका कोअी कारण नहीं कि प्रार्थना निष्फल ही गयी। अिससे अधिक स्पष्टीकरण करूं क्या?

मुई पुस्तकोंकी सूची मैंने मांगी है यह ध्यान रखना। अब तो यह पत्र तुम्हें कब मिलेगा और तेरा अुत्तर मुझे कब मिलेगा यह निश्चित

नहीं है। अनिश्चितता में निश्चितता पैदा करना और निश्चितता देखना हमारा काम है।

बापू

८४

२४-७-३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। अब मैं कितने पत्र लिख सकूंगा यह कहा नहीं जा सकता। पत्रोंके ऊपर तलवार झूल रही है। यहांसे पत्रोंके निकलनेमें जो देर होती है वह अगर होती रहे, तो पत्र लिखनेमें मुझे कोओी सार नहीं दिखाओी देता। आनेवाले पत्र मुझे तो अब नियमपूर्वक दिये जाने लगे हैं। जानेवाले पत्रोंके बारेमें अभी पत्रव्यवहार चल रहा है। मगर मेरे पत्र बिलकुल न आयें तो समझना कि मेरी गाड़ी अटक गओी है। लेकिन अिससे घबराने या अुदास होनेका कोओी कारण नहीं है। लिखने देना या न लिखने देना सरकारके हाथमें है। कैदी अधिकारके रूपमें पत्र लिखनेकी मांग नहीं कर सकता। जितने दिन तक लिखते रहे अिससे कोओी अधिकार नहीं पैदा हो जाता। और जिस चीजके बारेमें हमें कोओी अधिकार नहीं है वह हाथसे चली जाय तो दुःख मानना ही नहीं चाहिये।

तेरी वर्षगांठके अुपलक्ष्यमें लिखा आशीर्वादका मेरा पत्र अब तो तुझे मिल ही गया। देरसे मिला अुसकी क्या चिन्ता? शायद अिससे अुसकी कीमत बढ़ गओी। नहीं मिला अिसमें अपशकुन माननेकी तो कोओी बात ही नहीं थी। मुझे तेरा पत्र मिले और मैं आशीर्वाद न भेजूं यह तो हो ही नहीं सकता। अनसोचा विघ्न खड़ा हो जानेके कारण न मिले या देरसे मिले तो अिसमें अपशकुन कैसा? और सच पूछा जाय तो अनासक्तके लिअे अपशकुन जैसा कुछ होता ही नहीं। अिसलिअे यह कभी न मानना कि तेरा नया वर्ष अच्छा नहीं बीतेगा। बुरा तो तब बीते जब हम कुछ बुरा सोचें बात या करें। और वह तो हमारे बसकी बात है।

गलेकी गिल्टियाँ कटवानेकी डॉक्टरकी राय है तो कटवा डालना। पहले भी अैसी ही राय थी न? जिसमें देर नहीं लगती। कोअी खतरा हो अैसा भी नहीं जाना। तेरा शरीर बिलकुल रोगरहित हो जाना चाहिये। मैं मानता हूँ कि आखिर तो अपने शरीरका पता खुद हमें ही ज्यादा होता है।

डॉक्टरोंको रोगीके कहने पर बहुत कुछ आधार रखना पड़ता है। यही बताता है कि अगर बीमार अपने शरीरको न पहचाने तो डॉक्टरको ठीक जवाब नहीं दे सकता। सिर दुखता है जितना कहनेसे डॉक्टर क्या कर सकता है? सिर किस कारणसे दुखता है जिसकी जानकारी बीमारको होनी चाहिये। अैसा और कष्टोंके बारेमें भी होता है, जिसे हम समझ सकते हैं। यही बात अुपचारको भी लागू होती है। अमुक अुपचारका क्या असर हुआ यह डॉक्टर अपने आप नहीं जान सकता। अुसे बीमार पर आधार रखना पड़ता है। लेकिन सभी बीमार अुपचारके असरको नहीं पहचान सकते। भोजन शरीरके लिअे प्रतिदिनका अुपचार है। अुसका असर तो खानेवाला ही जान सकता है। जिसलिअे जिसने हवा पानी और आहारके असरको पहचाना है वह अपने शरीर पर जितना काबू रख सकता है अुतना डॉक्टर कभी नहीं रख सकता। जिसलिअे मुझे लगता है कि हम सबको शरीरके बारेमें सामान्य ज्ञान प्राप्त कर ही लेना चाहिये। जिसी प्रकार हवा पानी और आहारके बारेमें भी ज्ञान लेना चाहिये। यह ज्ञान प्राप्त करने जितना साहित्य तो आश्रममें है ही। सारा साहित्य पढ़नेकी जरूरत नहीं है। अुसमें से थोड़ा पढ़ लिया हो तो काम चल जायगा। शिवाजीने अपने प्रयत्नसे अपना शरीर अुत्तम बनाया था। अपने बारेमें तो मैं यह मानता ही हूँ कि अगर मैंने अपना काम चलाने लायक ज्ञान जिस विषयमें प्राप्त न कर लिया होता तो मैं जिस दुनियासे कभीका कूच कर गया होता। मेरा दुर्बल शरीर भी मेरी सावधानीसे ही टिका हुआ है। अुसमें डॉक्टरोंका बहुत ही थोड़ा हाथ है, अैसा मेरा विश्वास है।

८५

[पूज्य महात्माजीने आश्रममें यह नियम बनाया था कि हर कार्यकर्ता अपना बारीक सूत आश्रमको यथार्थ दे दे और अपने कपड़े बुनवानेके लिये थोड़ा मोटा सूत आश्रमसे मिले तो ले ले। पूज्य बाको अपनी साड़ियोंके लिये पूज्य महात्माजीके सूतकी जरूरत थी। बाको वह सूत मिलना ही चाहिये यह दलील मैंने पूज्य महात्माजीसे की थी। क्योंकि अन्य चीजोंके साथ साथ महात्माजीका सूत भी अुस समय मैं संभालती थी।

किसीका न्याय मत करो नहीं तो दूसरे तुम्हारा न्याय करेंगे अिस कहावतका मैंने अुस समय कुछ अैसा अर्थ किया था "दूसरे मेरी आलोचना करेंगे अिस डरसे मैं दूसरेकी आलोचना न करूं तो मैं डरपोक सिद्ध होअूंगी। मुझे डरपोक नहीं बनना है। चाहे सारी दुनिया मेरी आलोचना करे, लेकिन जो मुझे ठीक लगता है वह मैं क्यों न कहूं? मुझे दुनियासे डरनेका क्या कारण है? मैं दुनियाकी परवाह नहीं करती।]

१—७—१२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरी मूर्खताका पार ही नहीं दीखता। क्रोधमें आती है तब तुझे भान ही नहीं रहता। अिस पत्रमें क्रोधको जीतनेके बारेमें लिखती है, अुसीमें तू क्रोध करती है और वह भी बिना कारण। मेरे मीठे अुलाहनेका कारण ही तू नहीं समझी। जो अंगूरवाली पत्ती लिफाफे पर तूने चिपकाअी थी अुसमें सजावट या कला नहीं थी अैसी मेरी शिकायत थी। जो कला पर समय खर्च करता है अुसे मैं अुलाहना नहीं देता। अिसमें तो कोअी कला ही नहीं थी। लिफाफे पर अिस तरह पत्ती चिपकानेमें क्या कला हो सकती है? फिर अुसे चिपकाया भी अिस तरह कि आधी तो अुखड़ ही गअी। अिसलिअे तूने बिना विचारे क्रोध किया। मुझे तो अिस पर हंसी ही आअी। पास होता तो अेक चपत लगाता। लेकिन तू गिरी अुसका क्या? अिसमें जितना समय गंवाया। न करने जैसी दलील की और अपना शरीर

बिगाड़ा। क्योंकि क्रोधका शरीर पर बहुत बुरा असर होता है यह भौतिक-शास्त्रियोंने प्रयोग करके साफ दिखाया है। हमारे यहां तो अैसा माना ही जाता है। तेरा पत्र दूसरा भी अलग। दुबारा अैसा क्रोध मत करना। और, मेरी आलोचना तो मीठी आलोचना थी। मुझे समझने जितनी बुद्धि भी तू खो बैठी।

मेरे पत्रोंका तू भरोसा मत रखना। पता नहीं कब तक लिख पाअूंगा। अिसलिअे न मिलें तो दुःखी मत होना। बल्कि तो लिखती ही रहना। मुझे लिखना बंद हो जायगा तो मैं लिखूंगा। अितनी-सी खबर भी न दी जा सके तो भी लिखा हुआ बेकार नहीं जायगा।

नये फूलोंको मेरी ओरसे प्रणाम करना। किसी दिन अुनके बीच सोनेकी आशा रखता हूं अैसा कहकर अुन्हें आश्वासन देना।

तू बड़ी मानिनी है। क्योंकि आसपास थोड़े टमाटर और हरी भाजी बो दे, तो तुझे बारहों महीने खानेको मिलें और तेरे शरीरको लाभ हो। शरीर तेरा नहीं है तुझे सौंपी हुअी अीश्वरकी वस्तु है यह तू समझ ले तो तू अुसकी रक्षाके लिअे समय जरूर दे। अैसे पौधोंको बहुत समय नहीं देना पड़ता। ये जमीन भी बहुत थोड़ी रोकते हैं। मेरे अेक अंग्रेज मित्र जो दक्षिण अफ्रीकामें मेरे साथ रहते थे बिना मेहनत किये थोड़े ही दिनोंमें कच्ची खाअी जानेवाली लैस नामकी हरी भाजी अुगाया करते थे।

लड़कियोंकी बीमारीके बारेमें तो मैंने तुझे लिखा है। गहराअीमें जाकर (कारण) मालूम करना। रामभाअूके बारेमें मुझे तो डर था ही। लेकिन तुझे अुसने सब कुछ कह दिया है, अिसलिअे तू अुसे (प्रेमसे) जीतना।

तेरा वजन घट गया है, तो तुझे फल लेने ही चाहिये। थोड़ा ज्यादा खर्च हो तो होने देना। खर्च बचानेका लोभ करके शरीरको बिगड़ने देनेमें क्या लाभ है? जो खानेके बारेमें सच है वही आरामके बारेमें भी है। तुझे दोपहरको थोड़ा आराम आग्रह रखकर लेना ही चाहिये। कितना समय कैसे बच सकता है यह मेरे बतानेकी जरूरत नहीं है। कितना समय बचाना ही है यह निश्चय कर ले तो तू बचा सकती है।

अब तेरी कठिनाअियोंके बारेमें।

(१) व्यक्तिपूजाके बदले गुणपूजा करनी चाहिये। व्यक्ति बुरा भी निकल सकता है और अुसका नाश तो होता ही है। गुणका नहीं होता।

(२) आश्रमके संचालक-वर्गके ज्यादातर लोग अच्छे नहीं लगते तो अुन्हें सहन करना सीखनेका यह सुनहरा मौका है। दोषरहित तो कोभी नहीं है। और हमारे वैसे ही सबको माननेकी जिच्छा रखें तो अच्छा लगने न लगनेका सवाल ही अुड़ जाता है।

(३) आश्रमके तत्त्व यदि मान्य हैं, तो अुसके बाह्य स्वरूपके बारेमें पैदा होनेवाले मतभेदकी चिन्ता नहीं होनी चाहिये। हमें काम तत्त्वके साथ होना चाहिये बाह्य स्वरूपके साथ नहीं।

(४) तेरे स्वभाव-दोष निकालनेके लिये आश्रममें रहना तेरा धर्म है।

(५) तेरे ध्येय तक तू आश्रममें न पहुंच सके तो दोष तेरा है। आश्रममें पूर्ण स्वतंत्रता है।

(६) तेरे प्रियजनोंका आकर्षण तुझे आश्रमसे बाहर किसलिये ले जाय? अुनका प्रेम अुन्हें जरूरत पड़ने पर आश्रममें ले आयेगा। प्रेमको भौतिक सान्निध्यकी जरूरत नहीं होती। और अगर हो तो वह प्रेम क्षणिक ही माना जायगा। अेकके शुद्ध प्रेमकी कसौटी दूसरेके वियोगमें— दूसरेकी मृत्युके बाद—होती है। लेकिन यह सब तो बुद्धिवाद हुआ। तेरा हृदय जहां रहेगा वहीं तू रहेगी। तेरा हृदय यदि आश्रमको अपने भीतर न समा सके तो मैं क्या कर सकूंगा और तू भी क्या कर सकेगी?

मेरे सूतकी साड़ियां तो बुन ही जानी चाहिये। मैंने सूतके बारेमें अपने विचार प्रगट किये अुससे पहलेका यह सूत है। सच पूछा जाय तो वह आके लिये रखा गया है। जिसलिये अुसका त्याग तो बाको करना है। मुझे नहीं करना है। बा बहुत मोटी साड़ियां पहन ही नहीं सकती। जिसलिये आश्रमकी ओरसे भी अुसे सामान्य रूपसे बारीक साड़ियां ही मिलती। जिस दृष्टिसे भी मेरे सूतकी साड़ी बा खुशीसे पहने। अब आगेके सूतके बारेमें तो कड़ाओीसे नियमका पालन होना चाहिये। लेकिन

अुसमें भी मैं आ पर जबरदस्ती नहीं करूंगा। मैं चाहता हूं कि आ अुसीसे अुसका त्याग करे और अुसके हिस्सेमें जो आ जाय अुसीसे सन्तुष्ट रहे। लेकिन यह तो दूसरी भविष्यकी बात। अभी तो मेरा नया सूत सारा नहीं है। चाहे जो हो मेरा सूत पड़ा नहीं रहना चाहिये। किसीका भी नहीं पड़ा रहना चाहिये। अुतने जितना हो जाय कि तुरन्त अुसका ताना पड़ जाना चाहिये।

बुनकरके बारेमें तो तुझे मालूम है। लीलावती[1] कातती है, जैसा मैं मानता हूं। लेकिन तूने लिखा वह तो ठीक है ही। बहुत-सी बहनें कताअी छोड़कर कशीदेका काम पसन्द करेंगी। यह तो जैसा खानेमें है वैसा ही काममें है। रोटी छोड़कर पकौड़ीकी तरफ जानेवालेका मन दौड़ेगा। रोटी पर कायम रहनेमें संयम है, त्याग है, पकौड़ी पर जानेमें स्वच्छंदता है। अिसी तरह कताअी पर कायम रहनेमें संयम है, दूसरी वस्तुओं पर जानेमें (अनुपातमें) स्वच्छंदता है।

किसीका न्याय मत करो नहीं तो दूसरे तुम्हारा न्याय करेंगे —पर तेरी आलोचना तुझे शोभा नहीं देती। तू अुसका अर्थ ही नहीं समझी। तेरी आलोचनामें बहुत अहंकार भरा है। नहीं तो दूसरे तुम्हारा

---

1 दोनों जेलमें थे। आश्रमकी जो बहनें जेल गअी थीं वे जेलमें कताअीकी अपेक्षा कशीदेका काम ज्यादा पसन्द करती थीं अैसी खबर मिली थी।

लीलावतीबहन बाल-विधवा थीं। बाअी-कूचसे कुछ महीने पहले आश्रममें संस्कार ग्रहण करनेके लिये आअी थीं। श्री गंगाबहनके साथ वे आन्दोलनमें शामिल हो गअीं। अनेक बार जेल गअीं। अुन्हें पढ़नेका बहुत शौक था। डॉक्टर बननेकी आकांक्षा थी। सन् १९१ में शुरू हुआ आन्दोलन स्थगित हो गया अुसके बाद वे काफी समय तक राजकोटमें रहीं और पूज्य महात्माजी सेवाग्राममें रहने लगे अुसके बाद वे महात्माजीकी अिजाजत लेकर वहां गअीं। पढ़नेका शौक बहुत होनेसे पूज्य महात्माजीने संयमीय अुन्हें सारी सुविधायें दिला दीं। लगनसे पढ़कर अुन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। डॉक्टर बननेके बाद वे बरसोंसे अलग अलग अस्पतालोंमें काम कर रही हैं।

न्याय करेंगे का अर्थ तो यह है कि हमें अैसे दोषमें नहीं पड़ना चाहिये जिसका दूसरे न्याय करें। जगतके सामने हम मुजरम न बनें। भले दुनियाकी जो कहना या करना हो सो कहे या करे वैसा विचार या अैसा वचन हम कैसे प्रकट कर सकते हैं? दुनियाके सामने हम रंक हैं यानी हम सत्यमार्ग पर चलते हैं तब भी जगतको दंड नहीं देने मुखका न्याय नहीं करते परन्तु जगतके दंडको न्यायको हम सहन करते हैं। जिसीका नाम नम्रता या अहिंसा है। तूने जो लिखा वह स्वप्नमें या क्रोधमें लिखा गया हो तो भी मैं चाहूंगा कि तू अैसा न लिखे। मुझ पर तूने जो क्रोध निकाला है मुझकी चिन्ता नहीं है। मुझे तो मैं हंसकर टाल सकता हूं। लेकिन तेरा यह वचन मुझे डंककी तरह चुभता है। तेरी कलमसे अैसे वाक्य नहीं निकलने चाहिये अर्थात् अैसे विचार भी तेरे मनमें नहीं आने चाहिये। जो विचार आया खुम मेरे सामने रख दिया यह ठीक हुआ। मेरे सामने रखा जिसलिये तो मैं मुझे सुधार सकता हूं। यह मैंने जिसलिये नहीं लिखा कि तू मुझसे अपने विचार छिपाये। मैं तो पागल मुझत या नम्न जैसी भी तू है वैसी ही तुझे देखना चाहता हूं। लेकिन मेरी तो मांग यह है कि अुपरोक्त विचार भी तू अपने हृदयमें न आने दे।

लड़कियां जोरसे मालिश न कर सकती हों तो अुन्हें सिखाना चाहिये। मालिशमें शरीर-बलकी नहीं युक्तिकी जरूरत है।

अब तू जो साहित्य पढ़ रही है अुसके बारेमें। तुझे जिन्दी जैसी मान्यता अेक समय थी आज नहीं है। मेल्थस[1] की जिन्नी कुछ बातें ठीक समझो नहीं और कुछ बातें गलत हैं। जो नियम मनुष्येतर प्राणियों पर लागू होता है वह मनुष्य पर नहीं होगा। मनुष्येतर प्राणी दूसरे जीवोंको मारते हैं और अुन्हें खाकर जीते हैं। मनुष्य जिस स्थितिमें से निकलनेका प्रयत्न करता है। जिसीमें अुसकी अहिंसा है। शरीर है तब तक वह पूर्ण अहिंसा सिद्ध नहीं कर सकता लेकिन भावनाके रूपमें अहिंसाका पालन

१ टॉमस रॉबर्ट मेल्थस (१७६६–१८३४)। अेक अंग्रेज अर्थशास्त्री दुनियामें पुराककी अपेक्षा आबादीकी वृद्धि ज्यादा तेजीसे हो रही है, जिस बारेमें अुनका निबन्ध प्रसिद्ध है।

करे तो कमसे कम हिंसासे वह अपना निर्वाह कर सकता है। खुद मर कर दूसरोंको जीने देनेकी तैयारीमें मनुष्यकी विशेषता है। जैसे जैसे मनुष्य बढ़ते हैं वैसे वैसे खुराक भी बढ़ती है। अभी भूमिमें और भी बढ़नेकी शक्ति है। डार्विन[1]की खोजके बाद तो बहुतसी नयी खोजें हुअी हैं। जो पुस्तक तू पढ़ रही है वह पुरानी मालूम होती है। नयी हो या पुरानी बड़ीसे बड़ी संख्याका भला और जिसकी लाठी अुसकी भैंस के सिद्धान्त पसन्द हैं।

अहिंसा सबके भलेका विचार करती है। ओश्वरके यहां सबके भलेका ही न्याय होता है। यह न्याय कैसे किया जाय और वैसे न्यायमें मनुष्यका कर्तव्य क्या है यह खोजना हमारा काम है। अिस नीतिसे विरुद्ध नीति प्रस्तुत करना हमारा काम नहीं। लेकिन यह विषय बड़ा है। मैंने तो संक्षेपमें थोड़ासा बताया है। तुझे अिस पर ज्यादा चर्चा करनी हो तो प्रश्न करना।

बापू

८६

[पूज्य महात्माजी बहुत बार 'अन्तरकी आवाज' की बात करते थे। मैंने अुसका स्पष्टीकरण मांगा था।

आश्रमके पुस्तकालयमें मैं पुस्तकोंकी सूची बना रही थी। नयी पुस्तकोंका बाहरी रूप आकर्षक तो था ही नहीं मजबूत भी नहीं था। अिसलिये मैंने आलोचना की थी।]

यरवडा मंदिर
१–८–३२

चि. प्रेमा

तेरा पहली तारीखका पत्र मिला। आश्रममें होनेवाली चीजोंसे तू घबराती नहीं होगी। अच्छी लड़कियां हों तो कोअी तकलीफ नहीं

1 चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन (१८०९–१८८२)। प्रसिद्ध अंग्रेज प्राणिशास्त्री।

होगी। और अगर हम मनःशास्त्रका पाठ अच्छी तरह सीख सके हों तो भी कोअी दिक्कत नहीं आयगी। दूसरे लोग तो तेरे शरीरके लिये मुख्यतः बाहरी अुपाय ही बता सकते हैं। अन्तरकी बात तो तू ही ज्यादा जान सकती है। मनोवैज्ञानिकों पर मुझे बहुत विश्वास नहीं है। चाहे जैसे अनुभवी शास्त्री भी क्यों न हों मनुष्यके मनको वे भी आखिर कहां तक जान सकते हैं? अिसलिये तेरी तबीयतका मनके साथ जो संबंध हो अुसे तो तुझे ही पहचान लेना चाहिये और जरूरी अुपचार करना चाहिये। लेकिन किसी पत्रमें तूने यह भी लिखा है कि हलके या भारी कामका और नींदका या अुसके अभावका शरीर पर असर हुअे बिना नहीं रहता। अिसलिये सच तो यह है कि भीतरी और बाहरी दोनों वस्तुओंका शरीरके स्वास्थ्यके साथ संबंध है। बाह्य साधनोंकी अुपेक्षा करके केवल मनसे कोअी भी अपने शरीरको नीरोग नहीं रख सका है। अिसलिये नींद आराम और कामके बारेमें नारणदास जो कहे अुसे तू सुन और मनके बारेमें तू स्वयं मालूम कर ले। किसी भी अुपायसे शरीरको तू फौलाद जैसा बना ले। मासिक धर्म चालू हो तब गरम पानीमें नहीं बैठना चाहिये यह मुझे पहले ही लिखना चाहिये था।

अन्तरकी आवाज अवर्णनीय वस्तु है। लेकिन कुछ अवसरों पर हमें ऐसा भास हो जाता है कि अन्तरमें से अमुक प्रेरणा हुअी है। जब मैंने अन्तरकी आवाजको पहचानना सीखा वह काल मेरा प्रार्थना-काल कहा जा सकता है। यानी १९ ६ के आसपास। तूने पूछा है अिसलिये याद करके यह लिखा है। वैसे मेरे जीवनमें ऐसा कोअी अवसर नहीं आया जब मुझे लगा हो कि अरे, आज तो कुछ नया ही अनुभव हुआ। जैसे बिना जाने हमारे बाल बढ़ते हैं, वैसे ही मेरा आध्यात्मिक जीवन बढ़ा है ऐसा मैं मानता हूं।

नामजपसे पापोंका हरण किस तरह होता है। शुद्ध भावसे नाम जपनेवालेमें श्रद्धा तो होती ही है। नाम जपनेसे पाप-हरण होता ही है ऐसे निश्चयसे वह आरम्भ करता है। पाप-हरणका अर्थ है आत्मशुद्धि। श्रद्धापूर्वक नाम जपनेवाला कभी थकता ही नहीं। अिसलिये जो जिह्वासे बोला जाता है वह आखिर हृदयमें अुतरता है और अुससे शुद्धि होती

है। अैसा अनुभव निरपवाद है। मनोवैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। रामनाम जिसका अनुसरण करता है। नामजप पर मेरी अटूट श्रद्धा है। नामजपकी खोज करनेवाला अनुभवी मनुष्य था और यह खोज अत्यन्त महत्त्वकी है अैसा मेरा दृढ़ मत है। निरक्षर मनुष्यके लिये भी शुद्धिका द्वार खुला होना चाहिये। यह नामजपसे होता है। (देखना गीता ९–२२ १ –१)। माला अित्यादि गिनती करके अेकाग्र होनेके साधन हैं।

विद्याभ्यास सेवाके लिये ही होना चाहिये। लेकिन सेवामें अपूर्व आनन्द रहता है, जिसलिये विद्या आनन्दके लिये है अैसा कहा जा सकता है। लेकिन कोअी भी आज तक सेवाके बिना केवल साहित्य-विलाससे अखंड आनन्द अनुभव कर सका हो अैसा जाननेमें नहीं आया।

कला किसी देश या व्यक्तिका अेकाधिकार नहीं होती। जिसमें छिपानेकी जरूरत है वह कला नहीं है।

प्रत्येक देशको अपने गुणोंकी रक्षा करनेका अधिकार है और यह अुसका धर्म है।

निराश्रितको आश्रय देना अहिंसक मनुष्यका धर्म है। निराश्रित कौन है, यह तो प्रत्येक परिस्थिति परसे ही बताया जा सकता है।

जो बाहरसे बुरा दिखता है वह अन्दरसे भी बुरा ही हो अैसा कोअी नियम नहीं है। अुर्दू पुस्तकें बाहरसे बुरी दिखती हैं यह प्रकाशित करनेवालेकी गरीबीको प्रकट करता है। लेकिन अुनके अन्दरके लेख अुत्तम क्यों नहीं हो सकते? कुछ पुस्तकोंमें होते ही हैं। लेकिन यह सूची बनानेमें रसकी बात ही क्यों अुठनी चाहिये? सूची बनानी है जिसलिये अुसमें रस आना ही चाहिये क्योंकि कर्तव्यमें रस है। तू कभी थोड़ी अुर्दू सीख लेनेकी मेहनत करे, तो स्वतंत्र रूपसे भी तुझे अुसमें रस आ सकता है।

बापू

[पूज्य महात्माजी मुझे आश्रमको अपना समझनेकी और अपनेको आश्रमकी समझनेकी सख्त शिक्षा देते रहते थे। मैं लिखती थी "आप मुझे प्रिय हैं इसलिये आपका आश्रम मुझे प्रिय है। आश्रमका स्वतंत्र रूपसे मेरे हृदयमें स्थान नहीं है।" प्रेमको आलम्बन चाहिये प्रेमको रूपोंकी आवश्यकता होती है, क्योंकि यह मानव स्वभावके लिये सहज होता है। ऐसी ऐसी दलीलें मैं किया करती थी। पूज्य महात्माजी मेरी इस भावनाका ऊर्ध्वीकरण (Sublimation) करनेका प्रयत्न करते थे।

प्रेम और भक्ति दोनोंमें थोड़ा भेद है। प्रेममें विकार दोषरूपमें पैदा हो सकते हैं। भक्ति तो शुद्ध प्रेम है। जिसमें विकार हों वह भक्ति ही नहीं है। भक्तिको योगोंकी भी रानी कहते हैं। नारद मुनिसे लेकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस तक सभी भक्त और सन्त पुरुष भक्तिप्रेममें ओतप्रोत थे। आत्म-साक्षात्कार होनेके बाद जीवन्मुक्तिकी अवस्था तक पहुंचनेके बाद भी उन्होंने सगुणोपासना चालू रखी थी। ऐसा न करते तो वे सब कर्मोंके देह छोड़कर शिवरूप हो जाते। देहधारियोंके मनकी यह मर्यादा है कि प्रेमभक्तिके लिये उन्हें कोई आलम्बन जरूर चाहिए। और भगवान ही उनका आलम्बन है। केवल मनके लिये ही आलम्बनकी आवश्यकता नहीं रहती लेकिन शरीर तथा इन्द्रियोंके लिये भी आलम्बनकी आवश्यकता रहती है। सन्तोंका साहित्य पढ़नेके बाद उनका चिन्तन-मनन करनेके बाद मेरा यह मत कायम हुआ है।

यह सर्व जगन्मिथ्या कहकर मायावादका — विवर्तवाद — का मंडन करनेवाले तत्त्वज्ञानियोंके चक्रवर्ती शंकराचार्यने भी गाया है दामोदर गुणमंदिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द। उन्होंने ब्रह्मको सगुण रूपमें प्रस्तुत किया यह उनका लोगों पर महान उपकार है। आलम्बन आंख कान जीभ स्पर्श सभी इन्द्रियाँ द्वारा ईश्वरकी प्रतीतिका मधुर अनुभव करनेकी कामना रखती हैं। इन्द्रियोंके स्पर्शमें दोष नहीं है उसके पीछे रही भावनामें दोष हो सकता है। ऐसा मेरा मत था और है।

यही चीज मैं पूज्य महात्माजीके सामने रखनेका प्रयत्न अपनी अुस समयकी शक्तिके अनुसार करती थी। लेकिन मेरी छोटी अुमर और कच्चे अनुभव अिन दोनोंके कारण मेरी दलीलोंका कोअी मूल्य नहीं आंका जाता था अिसमें पूज्य महात्माजीका दोष नहीं था। अुस समय यही परिणाम स्वाभाविक था।

पूज्य महात्माजी भक्तिकी बातें तो करते थे। अपने सर्वसंहारक के सामने हम सब बालक हैं, यह भी कहते थे। फिर भी भक्तिमार्गी संत भगवानके सामने जिस तरह लाड़ले बालक बन जाते थे अुसी तरह पूज्य महात्माजीने अपने मनमें भी किसी दिन अपने आपको अुस भूमिका पर रखा हो अैसा मुझे नहीं लगता। भगवानके सामने भी वे प्रौढ़ और समझदार बालक बनकर ही बैठे होंगे अैसी मेरी मान्यता है।

अेक समय अैसा था जब भी विनोबाजीको बहुतसे लोग वैराग्यमात्र जड़ और रूखा मानते थे। अब भूदान-यज्ञकी यात्रामें सबने देख लिया है कि वे गद्गद हो जाते हैं और भक्तिप्रेमकी अुमंगमें अुनकी आंखोंसे अश्रुधारा बहने लगती है। पूज्य महात्माजीमें हृदयकी कोमलता तो थी ही। लेकिन दुःख करुणा या भक्तिप्रेमकी अुमंग — जिसमें वे अेक भी भावनाके कारण अुनकी आंखोंसे आंसू बहनेका दृश्य मैंने कभी नहीं देखा। और किसीने अैसा दृश्य देखा हो तो मुझे निश्चित मालूम नहीं है।

अिससे मुझे लगता है कि भगवानने पूज्य महात्माजीके लिये जिस अवतार-कार्यकी योजना कर रखी थी अुसके अनुकूल ही अुनकी मानसिक रचना भी की होगी। भारतका स्वातंत्र्य ही अुनका अवतार-कार्य था। अुसके लिये देशव्यापी राजनीतिक संगठन तथा अन्य प्रकारसे भी प्रजाका संगठन करनेका काम अुनके कंधों पर आ पड़ा था। अिसलिये भगवानको विराट रूपमें देखनेका और अुसीकी भक्ति सेवाके रूपमें करनेका अुन्होंने अपना धर्म मान लिया था। अुनकी सारी मानसिक रचना ही भिन्न थी।

कितनी ही बार अुनके मानसको समझ लेनेकी मेरी जिज्ञासाने भिन्न भिन्न अुपनेवाले प्रश्न अुनसे पूछनेके लिये मुझे प्रेरित किया है। पूज्य महात्माजी अवतारी पुरुष हैं अैसा मैं तो मानती थी। और अवतारी

पुरुषोंका मानस हमारे जैसा ही होता है या भिन्न होता है, यह जाननेके लिअे मैं प्रयत्नशील रहती थी।

मैंने बहुत बार देखा था कि पूज्य महात्माजी छोटे बच्चोंको खेलाते हैं, अुन्हें पुचकारते हैं, लेकिन कभी अुन्हें चूमते नहीं। श्री विनोबाजीका मत था कि चूमना गंदी चीज है। मांको अपने बच्चेको भी नहीं चूमना चाहिये। पूज्य महात्माजीके भी अैसे विचार हैं या नहीं? अथवा यह संयमकी परिणति है? —यह जाननेकी जिज्ञासासे मैंने अेक दिन अुनसे पूछा : "महात्माजी आपने जीवनमें कभी बच्चोंको चूमा है?" वे हंसे और कहने लगे : "अरे, चूम चूम कर थक गया हूं!"

दांडी-कूचसे पहले आश्रमके पास बने हुअे लाल बंगलेमें अुमिया गांधीका विवाह-संस्कार हुआ। पूज्य महात्माजीके साथ मैं भी वहां अुपस्थित थी। संस्कार पूरा होनेके बाद हम बाहर निकले। रास्तेमें चलते चलते मैंने अुनसे पूछा : "महात्माजी यह विवाह-संस्कार देखते ही आपको अपना विवाह प्रसंग याद आया या नहीं?"

अुन्होंने हंसते हंसते कहा : "अपना विवाह प्रसंग कोअी भूल सकता है! मुझे वह अच्छी तरह याद है। मजेकी बात तो यह थी कि विवाह-संस्कार हो रहा था अुस समय बाका हाथ पकड़नेका मौका मुझे मिलता तब मैं अुसे दबाता ही रहता था। और बाको मेरा हाथ पकड़नेका मौका मिलता तब वह भी मेरा हाथ दबाती रहती थी।"

मेरे प्रश्नोंमें थोड़ा भी दोष निकाले बिना वे जिस सहज स्वाभाविकतासे अुनका जवाब देते अुससे मुझे बड़ा सन्तोष होता था। लोकोत्तर होते हुअे भी महात्माजी पूरे मानव हैं मेरी यह भावना जैसे जैसे दृढ़ होती गयी वैसे वैसे मेरा आकर्षण भी अुनके प्रति बढ़ता गया।

पूज्य महात्माजी जब व्यक्तिपूजा शब्दका अुपयोग करते तब मैं *विभूति-पूजा* कहती थी।

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।

तबमें मैंने पूछा था कि कुछ लोग आपसे द्वेष करते हैं और लाखों लोग आपकी पूजा करते हैं। अिन दोनों तरहके लोगोंके बारेमें आपकी प्रतिक्रिया (reaction) कैसी रहती है?]

यरवडा मंदिर
१२-८-३२

चि॰ प्रेमा

नीचेकी पुस्तकें परचुरे शास्त्रीके लिये चाहिये। अिनमें से जो वहां हों वे भेजना। जो नहीं होंगी वे दूसरी जगहसे मंगा लूंगा। जरा जल्दी भेज सके तो अच्छा हो। मणिबहन[1]को देना या मृदुबहन[2]को। वे डाह्याभाअी[3]को भेज देंगी। परचुरे शास्त्री आश्रममें थे। बहुत विद्वान हैं। यहांके जेलमें हैं। अुन्हें कोढ़का रोग हो गया है। अिसलिये अुन्हें पुस्तकें देनेकी जल्दी है। वे रोग काटते हैं। मैं अुन्हें देख तो नहीं सकता लेकिन पत्र लिख सकता हूं। अुनकी पत्नी भी रोगशय्या पर पड़ी है। वे बाहर हैं। पुस्तकें ये हैं (१) Imitation of Christ, (२) Works of Swami Vivekanand (जो हों वे) (३) Works of Sister Nivedita, (जो हों वे) (४) Essays of Tolstoy (५) व्याकरण-महाभाष्य (६) यजुर्वेद-भाष्य (७) Dispensations of Keshavchandra Sen.

ये आश्रममें रह चुके हैं, अिसलिये अुन्होंने लिखा है कि आखिरी तीन पुस्तकें तो आश्रममें हैं ही। लगता है कि ये पुस्तकें अुन्होंने वहां पढ़ी हैं।

तेरा पत्र मिला। तू अैसा मानती मालूम होती है कि मैं चाहूं तब रसपूर्ण पत्र लिख ही सकता हूं। लेकिन अब तू समझ गयी कि अैसा कुछ है नहीं। कौनसा पत्र रसपूर्ण है और कौनसा नीरस अिसका भी मुझे पता नहीं चलता। बिलकुल सच कहता हूं। और जिसे तू रसपूर्ण मानती है वह वस्तुतः रसपूर्ण ही है, यह भी कौन कह सकता है? अैसा लगता है कि रसिकता नापनेका स्वतंत्र गज परमेश्वरने अपनी पेटीमें ही ताला बन्द करके रखा है। अिसलिये अभी तो रसिकताका नाप सबका अपना अपना होता है। तेरे नाप तक पहुंचनेका प्रयत्न करने बैठूं तब तो मेरी शामत ही आ जाय। अुसीमें मेरा समय चला जाय। अगर यह पत्र

---

१ सरदार वल्लभभाअी पटेलकी पुत्री।

२ अहमदाबादके सुप्रसिद्ध स्व॰ डॉक्टर बलवन्तराय कानुगाकी पत्नी।

३ सरदार वल्लभभाअी पटेलके पुत्र।

नीरस क्या तो — असी शंका रखकर दूसरा फिर तीसरा लिखता ही रहूं? और तुझे जैसे रसपूर्ण पत्र लिखने चाहिये वैसे ही औरोंको भी। और आखिरमें दिवाला!!! जिसके बजाय मैंने सीधा नियम बनाया है। सरस-नीरसका खयाल किये बिना जो मनमें सूझे अुसे वैसी ही भाषामें लिखते बने लिख देना। लेकिन तू ठहरी मूर्ख और अुस पर अभिमानी। असी सीधी बात तू थोड़े ही समझनेवाली है। और अब देखता हूं कि तू सर्वज्ञ होनेका भी दावा करती मालूम होती है। असा लगता है कि जो भी समाजी बात मैं लिखता हूं यह तू जानती ही है। लेकिन बात ठहर। जो मानते हैं कि वे जानते हैं, लेकिन अुस पर अमल नहीं कर सकते वे जानते ही नहीं या जानने पर भी नहीं जानते। जिसलिये जब तक तू नादानीकी बातें लिखेगी क्रोध करेगी अभिमान रखेगी तब तक मेरी दृष्टिमें तो तू मूर्ख ही रहनेवाली है। जिसका अर्थ यह नहीं है कि तू अपने अभिमान क्रोध या पागलपनको छिपाकर लिखे। जब तक यह सब तुझमें है तब तक तो लिखना ही चाहिये। तेरे पत्रकी कीमत तू जैसी है वैसी दिखानी देनेमें ही है। पागल तू भले ही रहे। परन्तु क्रोध तो निकालना ही चाहिये। और अभिमान थोड़ा कम करना चाहिये। अभिमानको पूरी तरह निकाल देना लगभग असंभव है।

तू नारद मुनिका अुदाहरण देती है। लेकिन अुनके वचनका[1] रहस्य तू क्या जानती है? अुनके जैसी व्यक्तिपूजा तू जरूर कर। यह करने योग्य है। जैसे वैकुंठके भगवान अैतिहासिक हैं, वैसे ही अुनके कृष्ण हैं। नारद मुनिके भगवान अुनके कल्पना-मन्दिरमें विराजते थे। वे नारद मुनि तो आज भी हैं और अुनके कृष्ण भी हैं। क्योंकि वे दोनों हमारी कल्पनामें रहते ही हैं। मेरी दृष्टिमें जितिहासकी अपेक्षा कल्पना अधिक अूंची है। रामकी अपेक्षा अुनका नाम बड़ा है, जैसा जो तुलसीदासजीने कहा है, अुसका यही अर्थ सम्भव है।

तू व्यक्तिपूजाके भंवरमें पड़ी हुअी है, जिसीलिये मुझे चिन्तामें डालती है न? आश्रमके बारेमें तू मुझे निर्भय नहीं कर सकती। नारद

---

१ श्री नारद मुनिका भक्ति-विषयक यह सूत्र प्रसिद्ध है सा तु अस्मिन् परमप्रेमस्वरूपा।

दास कर सकता हूँ। असे और भी अुदाहरण मैं दे सकता हूँ। वे भी व्यक्तिपूजक तो हैं ही। कौन नहीं है? लेकिन आखिरमें वे व्यक्तिको पार करके अुसके गुणोंके यानी अुसके कार्योंके पुजारी बन जाते हैं। यह अमूल्य वस्तु भूलकर हमने अपनी मूढ़ताके कारण स्त्रियोंको सती होना सिखाया। यह व्यक्तिपूजाकी पराकाष्ठा है!! जब कि पत्नीका धर्म तो यह है कि वह पतिके कार्यको अपनेमें अमर बनाये। पति-पत्नीमें से विकारको और "नर-नारी-भेद" को निकाल फेंके तो यह आदर्श सारे संसारके लिये प्रत्येक स्थितिमें लागू होता है? अर्थात् (पति-पत्नीका) यह प्रेम व्यापकमें जाकर मिलता है। लेकिन अब जिस विषयको छोड़ दूँ।

तू बीलके जानेकी खबरसे परेशान क्यों होती है? अुसे भी वशमें करनेकी हिम्मत रख जितना विश्वास रख। प्रेम सबको जीत लेता है, यह अमर वाक्य तू हृदयमें अुतार ले। चाहे जो आये हमारा धर्म तो शुद्ध रहनेका ही है। हमें तो हो सके जितनी सेवा ही करनी है न? तू असा क्यों नहीं मानती कि दूसरे बच्चे अगर सचमुच सुधरे होंगे तो वे बीलको सुधारेंगे? संभव तो यह भी है कि बील अब सयाना हो गया होगा। मैंने तो असी आशा रखी ही है।

लड़कियोंके लिये परेशानी अुठाना तेरा कर्तव्य है। अगर वे किसीसे पूरी बात ही न करें, तो सब बीमार ही पड़ेंगी। आनन्दीको लिखा हुआ पत्र पढ़ना। अगर आनन्दी वह पत्र दे तो असी सब लड़कियोंको जो समझदार हो गयी हैं, वह पत्र पढ़कर सुनाना चाहिये।

केलेमें वायु पैदा करनेका गुण है असा मैंने तो कभी अनुभव नहीं किया। मेरे जितने केले शायद ही किसीने खाये होंगे। बहुत वर्षों तक केला मेरी मुख्य खुराक रहा। दूध नहीं रोटी नहीं। केले और जैतूनका तेल तथा मूंगफली और नीबू — जितना ही मैं लेता था। लेकिन वायुकी शिकायत मुझमें नामको भी नहीं हुअी। वर्षों बाद अब फिर लेता हूँ। लेकिन कोअी खराब असर अपने शरीर पर नहीं देखता।

केले खानेका अेक नियम जरूर है। या तो केले भाप पर पकाये हुअे हों या बिलकुल पक्के हों। कच्चे केलेमें केवल स्टार्च होता है। स्टार्च पकाये बिना नहीं खाया जा सकता यह शुद्ध भोपाकशास्त्रके प्रयोगमें

देख किया। जिसलिओ केले नरम न बनें पक्के न बनें तब तक नहीं खाने चाहिये। दो तीन दिन पड़े रहें तो पक जाते हैं। खानेकी जल्दी हो तो अुन्हें भूनना या अुबाल लेना चाहिये।

मेरी पढ़ी हुअी पुस्तक मले ही १९२४ में छपी हो लेकिन अुसमें दी हुअी बात बहुत पुरानी हो गअी है।

मेरे विरोधी पहले भी थे और आज भी हैं, लेकिन मुझे अुनके प्रति रोष नहीं हुआ। स्वप्नमें भी मैंने अुनका बुरा नहीं चेता। परिणाम स्वरूप बहुतसे विरोधी मेरे मित्र बन गये हैं। किसीका भी विरोध मेरे सामने आज तक काम नहीं कर सका। तीन बार तो मुझ पर व्यक्तिगत हमले हुमे फिर भी आज तक मैं जिन्दा हूं। जिसका यह अर्थ नहीं है कि विरोधी कभी भी अपनी सोची हुअी सफलता प्राप्त नहीं करेंगे। प्राप्त करें या न करें, जिसके साथ मेरा संबंध नहीं है। मेरा धर्म अुनका भी हित चाहता है और मौका आने पर अुनकी भी सेवा करता है। जिस सिद्धान्त पर मैंने यथाशक्ति अमल किया है। मैं यह मानता हूं कि यह चीज मेरे स्वभावमें रही है।

लाखों लोग मेरी पूजा करते हैं तब मुझे थकान लगती है। किसी भी दिन जिस पूजामें मुझे रस नहीं आया या मैंसा नहीं लगा कि मैं जिस पूजाके योग्य हूं। हमेशा मुझे मेरी अयोग्यताका ही भान रहा है। मान-सम्मानकी भूख मुझे कभी रही हो भैसा याद नहीं आता। लेकिन कामकी भूख रही है। मान देनेवालेसे मैंने काम लेनेका प्रयत्न किया है और जब अुसने काम नहीं किया तो मैं अुसके मानसे दूर भागा हूं। मैं कृतार्थ तो तब होअूंगा जब कि जहां मुझे पहुंचना है वहां पहुंच जाअू। लेकिन भैसा दिन कहांसे?

दुनियाके विरुद्ध खड़े रहनेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिये अभिमान या अुद्धतता पैदा करनेकी जरूरत नहीं है। औसा दुनियाके विरोधमें खड़े रहे बुद्धने भी अपने मुल्का विरोध किया महावीरने भी भैसा ही किया। वे सब नम्रताकी मूर्ति थे। जिसके लिये आत्म-विश्वास और प्रभु पर श्रद्धाकी जरूरत है। अभिमानी बनकर दुनियाके विरुद्ध खड़े होनेवालोंका अन्तमें पतन हुआ है। तेरा अभिमान और तेरा क्रोध कभी बार केवल

ढोंग होता है। लेकिन यह ढोंग भी बुरा है। ढोंग आखिरमें आलसका रूप ले बैठता है, जिससे कभी बार धर्ममें गलतफहमीके कारण भूलें हो जाते हैं। अैसा न हो अिसके लिये मनुष्यको बहुत सावधानीसे चलनेकी जरूरत है। मैं मानता हूँ कि अत्यधिक नम्रताके बिना अन्त तक अकेले टिके रहनेकी शक्ति प्राप्त होना असंभव है। और यह शक्ति आ गयी हो तो ही यह सच्ची चीज मानी जायगी। अुसकी परीक्षा विरोधमें होती है। बहुतसे मनुष्य जो बहादुर माने गये हैं वे सचमुच बहादुर थे या नहीं यह परखनेका अवसर ही समाजको नहीं मिलता। अब तो अस्पृश्यताका पत्र भी पढ़ना।

बापू

८८

[लोकमत के विषयमें मैंने अपने पत्रमें चर्चा की थी। लोकमतका किस हद तक आदर करना चाहिये? रामायणमें धोबीका किस्सा आता है। राम-द्वेषसे भरे हुअे अेक मामूली धोबीकी निन्दा सुनकर राजा रामने अपनी निष्पाप पत्नी सीताका त्याग कर दिया। अिसके सिवा अेक बार तो सीताजीकी अग्नि-परीक्षा हो चुकी थी फिर भी अुन्हें वनवास भोगना पड़ा। अैसे लोकमत की कीमत आखिर कितनी है? यह मेरा प्रश्न था। पूज्य महात्माजीने अिस पत्रमें मेरे प्रश्नका जो अुत्तर दिया अुससे मुझे संतोष नहीं हुआ। मैंने छोटी अुमरमें वाल्मीकिकी रामायण पढ़ी थी। अिससे अुसकी सारी विगत तो याद नहीं थी। अिसलिये अनुकूल समय मिलने पर यह ग्रंथ मंगाकर मूल वृत्तांत पढ़ जानेका मैंने संकल्प किया। अुस संकल्पको पूरा होनेमें अनेक वर्ष लग गये। लेकिन ग्रंथ मिलने पर अुसमें (अिस किस्सेसे सम्बन्ध रखनेवाला) जो वृत्तान्त मैंने पढ़ा वह बिलकुल अलग ही था।

रामायणके अुत्तरकांडके तैंतालीसवें सर्गमें यह प्रसंग आता है। राजा राम अपने समवयस्क मित्रोंके बीच बैठकर बातचीत कर रहे थे।

वाल्मीकिकी रामायणके बाद दूसरी रामायणें रची गयीं। भवभूति जैसे प्रतिभाशाली लेखकने रामकी कथा पर नाटक लिखे अुनमें धोबीका किस्सा दाखिल कर दिया गया।

अहल्याको अुसके पति गौतम ऋषिने शाप देकर हजारों वर्ष तक पत्थरकी शिला बनाये रखा, शबरीने रामको जूठे बेर खिलाये, रामके पुत्र लव और कुशने रामके अश्वमेध यज्ञका घोड़ा पकड़ लिया और अपने पिताके साथ युद्ध किया — आदि कथाओंके लिअे वाल्मीकिकी रामायणमें कहीं भी कोअी आधार नहीं है। ये सब कथायें बादके काव्योंमें रची गयी मालूम होती हैं। अिसलिअे वाल्मीकिकी रामायण अितिहास-ग्रन्थ है, जब कि बादकी रामायणें भक्तिकाव्य हैं।

यह अनुसन्धान करनेके बाद बाजी मेरे हाथमें आयी। और किसी दिन यह सब महात्माजीको सुनानेका मैंने संकल्प किया।

पू. महात्माजी सेवाग्राममें रहने लगे अुसके बाद अेक बार मैं कुछ दिनके लिअे अुनके साथ रहने वहां गयी थी। अेक दिन हम कुछ बहनें पूज्य महात्माजीके साथ घूमने गयीं। बात-बातमें अेक बहनने धोबीका किस्सा सुनाकर राजा रामकी निन्दा शुरू कर दी। तब महात्माजी अुनके सामने वही दलीलें पेश करने लगे जो अुन्होंने अिस पत्रमें की हैं। अिसलिअे मुझे जोश आ गया। बीचमें पड़कर मैंने वाल्मीकि रामायणमें पढ़ा हुआ पूरा वृत्तान्त पू. महात्माजीको सुनाया और कहा, “वाल्मीकिने तो रामके साथ अन्याय हो अैसा कुछ नहीं लिखा है। लेकिन लोग गहराअीमें अुतरते नहीं, खोज करते नहीं और अकारण ही रामकी निन्दा करते हैं।” मेरे मुंहसे रामायणका मूल वृत्तान्त सुनकर महात्माजीको आनन्द तो जरूर हुआ, लेकिन अुन्हें ताना मारनेका मौका मैंने हाथसे जाने नहीं दिया। मैंने जरा आवेशमें अुनसे कहा, “महात्माजी, मुझे बहुत बार अैसा लगता है कि आप अैतिहासिक दृष्टिसे विचार नहीं करते।”

अुनका विशिष्ट स्वभाव प्रकट करनेवाला अुत्तर महात्माजीके मुंहसे निकला, “जहां नीतिके साथ सम्बन्ध नहीं होता वहां मैं अैतिहासिक दृष्टिको नहीं मानता।”]

१८-८-३२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला।

राखी मिली दो दिन देरसे। लेकिन मैंने तो मान लिया था कि सोमवारको मिल गयी।

जैसे अनुकूल न आवें तो जबरदस्ती खानेसे लाभ नहीं होगा। हरअेकके पेटकी विशेषता तो होती ही है।

तेरे प्रेमके पृथक्करणको मैं अच्छी तरह समझ गया हूं। तू मुझे जीतना। तू मुझे जरूर जीतेगी असा मेरा विश्वास है। अपने पत्रमें से जो भाव तूने वापिस नहीं लिया अुसे मैं समझा। वापिस नहीं लिया यह ठीक ही था। अपनी कोअी जरूरत हो तो अुसे न कहनेमें भारी अभिमान और अन्याय है और अिससे प्रियजनों पर बहुत बोझ भी पड़ता है। विनय और निरभिमानता तो हमारी जरूरतें जाननेके कष्टसे प्रियजनोंको बचा लेते हैं। यह विनयका पहला पाठ है। अब अिसे सीख।

कृष्ण नायरको लिखना कि अुसे मैं बहुत याद करता हूं।

तू राजकोट गयी यह तो ठीक ही हुआ। जितना (आराम) तेरी तन्दुरुस्तीके लिये जरूरी है असा मालूम होता है।

लोकमत यानी जिस समाजके मतकी हमें जरूरत है अुसका मत। यह मत नीतिके विरुद्ध न हो तब तक अुसका आदर करना हमारा धर्म है।

धोबीके किस्से परसे शुद्ध निर्णय करना कठिन है। हमें तो आज यह बिलकुल नहीं रुचेगा। असी आलोचना सुनकर अपनी पत्नीका त्याग करनेवाला पुरुष निर्दय और अन्यायी ही कहा जायगा। लेकिन रामायणमें कविने अिस घटनाको किस दृष्टिसे स्थान दिया है, यह मैं नहीं कह सकता। हमारा काम अुस विवादमें पड़ना नहीं है। मैं तो अिस झगड़ेमें नहीं पड़ूंगा। रामायण जैसी पुस्तकोंको भी मैं अिस दृष्टिसे नहीं पढ़ता।

लड़कियोंके साथ मेरी छूटसे आश्रमवासियोंको यदि आघात पहुंचे तो मुझे अुस छूटका अुपयोग करना बन्द कर देना चाहिये असा मैं

समझता हूं। अैसी छूट लेनेका न तो कोअी स्वतंत्र धर्म है और न छूट लेनेमें नीतिका भंग है। लेकिन अैसी छूट न लेनेसे लड़कियों पर बहुत बुरा असर पड़े तो मैं आश्रमवासियोंको समझाअूंगा और छूट लूंगा। लड़कियां ही मुझे न छोड़ें तब देखना मेरा काम होगा। मैं जो छूट जिस तरह लूं अुसकी नकल दूसरे किसीसे नहीं हो सकती। यह चीज स्वाभाविक हो जानी चाहिये। आजसे मुझे छूट लेनी है अैसा विचार करके कृत्रिम रूपसे कोअी छूट नहीं ले सकता और यदि कोअी ले तो वह पकड़ा ही जायगा। नारणदासको जैसा अुचित लगे वैसा करनेके लिअे वह स्वतंत्र है। मुझे अुसकी आलोचना करनेकी जिच्छा भी नहीं होगी। मूल बात यह है कि जो मनुष्य विकारवश होकर निर्दोषसे निर्दोष लगनेवाली छूट भी लेता है, वह आगीमें गिरता है और दूसरेको भी गिराता है। हमारे समाजमें जब तक स्त्री-पुरुषका संबंध स्वाभाविक नहीं हो जाय तब तक जरूर सावधानीसे चलनेकी जरूरत है। जिस बारेमें सब पर लागू हो सके अैसा कोअी राजमार्ग नहीं है। तेरे अपने ब्याह बारेमें तालीमका अभाव मालूम होता है। तेरी स्वाभाविक निर्दोषता तुझे बचाती है। लेकिन तू अुस पर अभिमान करती है और अुसे हठ-पूर्वक पकड़े रहती है, यह बिलकुल ठीक नहीं है। जिसमें अविचारीपन है। आज जिसका नुकसान तुझे दिखाअी नहीं देता। लेकिन किसी दिन जरूर पछताना पड़ेगा। अभिमान किसीका भी नहीं टिका है। सारी जीविकें मर्यादामें पुरी है यह कहकर समाजको आघात नहीं पहुंचाया जा सकता। अब लोकमतके बारेमें कुछ समझी?

पुरुषरस कहता कि मेयरकी स्त्री हमी बातको याद रखे। मुझे स्वयं भाअियोंका घूमता-फिरता विज्ञापन बन जाना चाहिये[1]।

बापू

---

१ भाजी पुरुषार मोनासमोके अभ्यासी थे और जहां जाते वहीं लोगोंमें अुनका प्रचार करते थे।

८९

[पत्रके पूर्वार्धमें रचनात्मक सेवाके क्षेत्रमें काम करनेवाले अेक भाअीके बारेमें महात्माजीकी राय है। अुनकी पत्नी सुन्दर पत्नी थी। बरसों बाद अेक युवतीके साथ अुनका प्रेम हुआ। अुनके बारेमें अपनी अपेक्षा पूज्य महात्माजीने बताअी है। आगे ता० ११-९-३२ के पत्रमें अिसी विषय पर ज्यादा लिखा है।]

यरवडा मन्दिर,
२९-८-३२

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे विशेषण प्राप्त करनेके लिये ही तो तू अुन अलग अलग विशेषणोंके लायक गुण प्रगट नहीं करती न? अैसा करेगी तो विशेषणोंकी कोअी कीमत ही नहीं रह जायगी।

काठियावाड़में जितना दंभादि दिखाअी देता है अुतना और जगह नहीं दिखाअी देता। अिसलिये तूने अिसका प्रदर्शन भी देखा अिसमें मुझे कोअी आश्चर्य नहीं लगता। दंभादिका प्रदर्शन वहां बिना तैयारीके देखनेमें आता है। और अिसमें   जैसा तो स्वप्न ही हो जाय। लेकिन   के   में होने हुअे भी यह   की ग्लानि दूर न कर सके यह विचित्र बात है। श्रावणी पूर्णिमाके दिन अुसने राखी तो बांधी ही होगी। लेकिन यह काम क्या अुस सूतके डोरेसे ही पूरा हो गया?   के दोषका कारण जान लिया और अुसे दूर करना   की शक्तिके बाहर नहीं होना चाहिये।   अपनी पत्नी   की पूजा करता था। मैं यह मानता हूं कि दोनों विवाहित होने पर भी ब्रह्मचर्यका पालन करते थे।   के चल बसनेसे   को भारी आघात पहुंचा है।   की अन्दर ही अन्दर विवाह करनेकी शायद अिच्छा हो लेकिन अपनी स्थितिको वह स्वयं भी नहीं जान सकता। लेकिन अुसे स्वयं अपने जैसी ही भावना-वाली स्त्री चाहिये। अैसी स्त्री तो मिले या न मिले लेकिन अिसके बदलेमें भावना-प्रधान बहन मिल जाय तो शायद   का विकास हो

और यह तुझे।   को मैंने पूर्ण ब्रह्मचारिणी माना है। मुझको
के प्रति मित्रताका भाव है। मुझमें भी भावना है। तूने   की
मित्रताके बारेमें लिखा है। जिसलिअे लिखना लिखनेकी मुझे प्रेरणा
हुअी।   को मैंने अच्छी तरह पहचाना है। तुझे जैसा लगे और
यह भी लगे कि अूपर बताया काम मुझकी शक्तिसे बाहर नहीं है तो
यह पत्र तू खुशीसे अुसे भेजना। यह काम मुझकी शक्तिसे बाहर या
मुसके क्षेत्रसे बाहर लगे तो पत्रका जितना हिस्सा तू भूल जाना।
शुद्ध प्रेमका भूखा है। लेकिन   में राग और विराग भरे हैं। बहुत
थोड़े लोगोंको ही वह चाह सकता है। जिसलिअे मन ही मन घुटता रहता
है। जैसे आदमीको पत्नीकी जरूरत कम रहती है। पत्नीमें वह फंस सकता
है। मुसके लिअे विकारशून्य बहनकी जरूरत है। यह मिले तो
का जीवन सुधर जाय।

हमारे समाजमें स्त्रियां विकारशून्य होनेका यह गुण अपनेमें पैदा
नहीं करतीं। अुन्हें पत्नी बनना आता है, बहन बनना नहीं आता।
बहन बननेमें बहुत बड़ी त्यागवृत्तिकी जरूरत होती है। जो पत्नी बनती
है वह पूरी तरह बहन बन ही नहीं सकती यह मुझे तो स्वयंसिद्ध लगता
है। सच्ची बहन सारे जगतके लिअे हो सकती है। पत्नी तो अपनको
अेक पुरुषके हाथोंमें सौंप देती है। पत्नीके गुणकी जरूरत है, लेकिन वह
पैदा नहीं करना पड़ता क्योंकि वहां विकार-प्राप्तिके लिअे अवकाश है।
जगतकी बहन होनेका गुण कष्टसाध्य है। अैसी बहन तो वही हो सकती
है जिसमें ब्रह्मचर्य स्वभावसिद्ध हो और जिसमें सेवाभाव मूर्तरूप स्थितिको
पहुंचा हो।   जितनी दूर तक पहुंची है अैसी छाप मेरे अूपर नहीं
पड़ी। लेकिन वहां तक पहुंचनेकी शक्ति अुसमें है, अैसा मुझे जरूर लगता
है। अैसी छाप पड़नेमें तू स्वयं कारणभूत है। तो मेरे मनमें जो कुछ
आया वह सब मैंने यहां लिख दिया है। तू खुद अैसी आदर्श बहन बने
यह तो मेरी कोशिश है ही। काम कठिन है। लेकिन प्रभुको करना होगा
तो करेगा।

तूने प्रदर्शनका वर्णन ठीक किया है। तेरे वर्णन तो हमेशा पढ़ने
विचारने योग्य होते ही हैं।

जन्माष्टमीके लिये तू आश्रममें पहुंच गयी यह ठीक ही हुआ।

देख ओखकी जीवला। ओख तेरे साथ आलेको तैयार ही नहीं हुआ यह तू जानती है? ओख पर कोप मत करना। वह बालक है तू बालक नहीं है। ओखको जीतनेमें तेरी जीत है। मुझे न जीतनेमें तेरी हार है।

अच्छे संस्कारोंवाले माता-पिताकी परीक्षा कौन कर सकता है? जब गर्भ रहे तब माता-पिताकी स्थिति कैसी थी यह कौन कह सकता है? जिससे मुझे लगता है कि अच्छेका फल अच्छा ही होता है, जिस निरपवाद नियमसे चिपके रहनेमें ही लाभ है। हर बार हम अमुक व्यक्तिके बारेमें यह नियम सिद्ध न कर सकें तो जिसमें हमारा अज्ञान हो सकता है, नियमकी अपूर्णता नहीं।

दैवको मैं मानूं तो भी मुझे मिथ्या नहीं किया जा सकता।[1] दैव अर्थात् पूर्वकर्मोंका प्रभाव।

वेश्याका सुधार करनेके लिये पुरुषोंको अपनी पशुता छोड़नी होगी। जब तक पुरुष-पशु जिस जगतमें रहेंगे तब तक वेश्यायें भी रहेंगी ही। वेश्या अपना धंधा छोड़े और सुधरे, तो उसके साथ कुलीन कहे जाने वाले पुरुष जरूर विवाह करें। अेक बार वेश्या बन जानेवाली हमेशा वेश्या ही रहेगी अैसा नियम नहीं है।

सेनाके लिये लड़कियोंको भगाया ही जाता है अैसी मान्यतामें मुझे अतिशयता लगती है। सुव्यवस्थित राज्यमें अैसा कभी नहीं हो सकता।

मलाबार तटके रहनेवाले लोग अैसी आबहवा छोड़नेके बाद भी नारियल हजम कर सकते हैं, अैसा मानना गलत है। तांदलजाकी भाजीमें नारियल डालकर तूने तांदलजाका असर कमजोर कर दिया। मैंने खुद तो नारियलका प्रयोग बहुत किया है। मुझे उससे लाभ नहीं हुआ। लेकिन जहां वह पैदा होता है वहां दूसरी चीजोंके साथ उसे मिलाना आवश्यक हो सकता है।

बापू

---

[1] आप दैवको मानते हैं? —मेरे जिस प्रश्नका यह उत्तर है। दैवको मैं न मानूं तो भी अैसा वाक्य होना चाहिये था अैसा मुझे लगता है।

य मंदिर,
११-८-३२

चि. प्रेमा

अिस बार तुझे कौनसा नया विशेषण दूं यह सूझ नहीं रहा है। तू जो मांगेगी वही दे दूंगा।

परचुरे शास्त्रीके लिअे मंगाओी हुओी पुस्तकें अभी मिली नहीं हैं लेकिन अब मिल जायंगी।

मैं यह नहीं मानता कि अुन दो बहनोंके आनेसे अैसा कहा जा सकता है कि पढ़ी-लिखी बहनें (आश्रममें) आने लगीं। अैसे तो कोओी भूली भटकी आ ही पहुंचती है। अुनमें से किसीका अभी तक हम संग्रह नहीं कर सके। तुझे पढ़ी-लिखी मानें और आश्रममें संगृहीत मानें तो मान सकते हैं। लेकिन यह तो अपवाद हुआ। अेक चिड़ियाके आनेसे गरमी आ गयी अैसा थोड़े ही कोओी मानेगा?

के बारेमें मुझे अफसोस है। मुझे कसाओी बननेकी छूट दे दी। लेकिन तुझे भूल मत जाना। अुसके अूपर नजर रखकर सीधे रास्ते ला सके तो लाना। अीश्वरके बारेमें तेरी परेशानी मैं समझा। तेरे भीतर अुदारता और हिम्मत हो तो अुसके बारेमें सीधी और स्पष्ट-तया तुझे बात करनी चाहिये और अुसके हितका कोओी मार्ग निकालना चाहिये। अपने मार्गमें हम खुद ही कांटे बोते हैं और फिर अुनके अुगनेकी शिकायत करते हैं। अपनी खुदकी शक्तिको लेकर चलें तो हम शायद कहीं भी सफल न हों लेकिन अीश्वरकी शक्तिको लेकर चलें तो घोर अंधकारमें भी हमें प्रकाशके दर्शन हो सकते हैं। "मेरे अंदर प्रेम हो तभी न?" — यह कहकर तू नाराज हो जाय तो मेरा कहना निरर्थक है। अिसके सिवा मैं मानता हूं कि मेरे अंदर प्रेम है। फिर भी मैं बहुतोंको क्यों नहीं जीत सका? तब फिर तुझसे कहनेका मुझे क्या अधिकार है? अैसा कुछ सुनाकर तू अपना हृदय-द्वार बन्द कर ले तो भी मैं लाचार हो जाअूंगा। अपनी अपूर्णताको मैं स्वीकार करता हूं। अगर

अनुकरण तुझे क्यों करना चाहिये? अपने अनुभवोंमें से मैं तुझे जो कुछ दूँ, अुसका तू अुपयोग कर। साथीके दोषोंको अपनाना नहीं चाहिये बल्कि अुन दोषोंसे बचना चाहिये और अुसमें जो गुण हो अुन्हें ग्रहण करना चाहिये। फिर मैं तेरी तरह हारकर नहीं बैठता लेकिन कठोरतम हृदयको भी औश्वरकी कृपासे पिघलानेकी आशा रखता हूँ और अुसके लिओ प्रयत्नशील रहता हूँ।

तू रसोओघरमें अखबार पढ़कर सुनाती हो और आनन्द लेनेके लिओ मजाक भी करती हो तो मैं अुसे खराब ही मानूँगा। रसोओघरमें तो मौन ही रखना चाहिये। वहाँ क्या सुनाना? जिसके सिवा मारवाड़ासका ध्यान तो चारों तरफ लगा हुआ होना चाहिये। वहाँ तू पढ़े और सुनाये जिसे म ठीक नहीं मानता। तेरा पढ़ना भी रसोओघरमें तो गम्भीरतासे ही होना चाहिये। जिसलिओ जितना सुधार तो तू कर ही लेना। अगर तू रसोओघरमें विनोद और मजाक करे, तो छोटे बच्चोंका क्या होगा? और वे सब भी वैसा ही करने लगें तो रसोओघर रीछोंका बाग* बन जाय और वहाँका अनुशासन भंग हो जाय। यह सब स्मार्ट लिटल गर्ल के 'स्मार्ट' दिमागमें अुतरा या अुसकी सारी स्मार्टनेस आश्रममें चोरी हो गयी?

जिस बार जिससे ज्यादा नहीं।

बापू

९१

११-९-३२

चि॰ प्रेमा

तू धीरज और विश्वास रखेगी तो मेरी स्वभाव-पुस्तक के सारे पृष्ठ तेरे सामने खुल जायेंगे। जो गुप्त (मनमें) प्रेमपूर्वक सतत जपता है अुसे मैं बुद्धियोग देता हूँ। यह सत्य-भगवानका वचन है। जिसके पालनसे मेरे स्वभावके सब पृष्ठ खुल जाते हैं। पुस्तक सामने पड़ी हो तो भी अुसे पढ़ना न आवे या पढ़नेकी कोओ तकलीफ न अुठाये तो

* Bear garden रीछोंका स्थान।

दोष किसका? लेकिन यह तो बहुत कह दिया। फिर भी मैंने तुझे यह पुस्तक पढ़नेका तरीका बता दिया। तू कहेगी कि यह तो तू जानती ही थी। ऐसा कहे तो मैंने तुझे जो सर्वज्ञ कहा है, वह सच ही लिखा माना जायगा न?

तू को मेरे सब पत्र भेजती है, अुसमें मुझे कोअी आपत्ति हो ही नहीं सकती। आखिरी पत्र तो अुसीसे संबंधित था अिसलिअे मैंने (अुसके पास भेजनेकी) विशेष अिच्छा प्रकट की। अब जो लिखने जैसा लगे सो लिखना। की औषधि मैं नहीं खोज सका ऐसा लिखती है वह सच है। लेकिन यह अधूरा वचन है। औषधि तो मैंने खोज ली। लेकिन वह मेरे पास न हो तो मैं क्या करूं। अुसकी औषधि स्त्री थी — ऐसी स्त्री जो अुसे पसन्द आये और जिसके साथ वह विवाह कर ले या जो अुसके लिअे सगी बहनसे भी बढ़कर हो जाय। के अूपर मेरी नजर तभीसे थी जबसे मैंने का अुसके प्रति और अुसका के प्रति राग देखा। अिस रागकी निर्मलता मैंने मान ली थी। फिर भी किसी मौकेके बिना के अूपर मैं जिम्मेदारी कैसे डालूं? तेरे पत्रने मुझे यह मौका दे दिया। मेरा निदान ठीक है या नहीं यह औषधि है या नहीं यह मैं नहीं जानता। शायद भी नहीं जानती। यह तो प्रयोग करने पर ही मालूम हो सकता है। मैं तो की स्वस्थता चाहता हूं। जिसके बिना अुसकी शक्ति बंधी रहती है और वह क्षीण होता जाता है। काम तो वह करता जाता है, लेकिन अुसमें अुसे रस आता है या नहीं अिसका भी अुसे पता नहीं चलता।

मेरे बचपनकी बातें शायद तू काफी सुना आयी है।[1]

रमाबहन बीमार है। यह तू जानती है? अरे, अुसके साथ बात तो कर। हमारी कल्पना हमें जितना डरपोक बनाती है, अुतने डरका कारण वस्तुस्थितिमें कभी होता ही नहीं है। कल्पना भूत और शंका डाकिन यह कहावत बिलकुल सच्ची है। सत प्रतिशत सच्ची है।

---

[1] श्री नारणदास काकाकी मार्फत मैं मिली तब अुनसे पूज्य महात्माजीके बचपनकी कअी बातें सुननेको मिली थी। अुनमें से कुछ मजेदार होनेसे मैंने महात्माजीको पत्रमें लिख भेजी थीं।

सब मजी बहनोंकी तू अच्छी तरह देखभाल रखती होगी। दूसरे काम कम करके भी यह काम अच्छी तरह करना।

किशनके बारेमें अखबारमें पढ़ा था। पुरन्दरका काम सुन्दर है। लेकिन मुझे शरीरको मजबूत बनाना चाहिये। मुसका वजन कितना है?

तेरे बारेमें आनन्दीके पत्रमें मैंने क्या किया है, कौशल्यादीसे क्या कहा है, मुझे याद नहीं है। मुझे तेरे आजके ब्रह्मचर्यके बारेमें जरा भी शंका नहीं है। कलकी बात मैं नहीं जानता। तू जानती हो तो मारदकी और रामजीसे भी तू विशेष कही जायगी। जिसके बावजूद भी तेरे संकल्पका तो मैंने हमेशा स्वागत ही किया है। तुझे झट कोअी फूसला के अैसा मैं नहीं मानता। लेकिन तेरे जैसी ही दृढ़ स्त्रियोंको भी मैंने विवाह करते देखा है। जिसमें भूलका भी क्या दोष? जिसलिये अभी तो मैं तेरे बारेमें अैसी जिच्छा ही रख सकता हूं। तुझे आशीर्वाद दूंगा। मुझसे हो सकेगी अुतनी तेरी मदद करूंगा मुझसे हो सकें अुतने प्रहार भी तुझ पर करूंगा। अंतमें तो तेरे और भगवानके हाथमें (सब) है।

तेरे पत्र जैसे आते हैं, वैसे ही मुझे चाहियें। तू कृत्रिम बन जाय तो मेरे लिये बेकार हो जायगी। तेरे भीतर गाठें पड़ी हुआी हैं। मैं जैसे जैसे अुन्हें देखता जाऊं वैसे वैसे ही अुन्हें खोलनेका प्रयत्न कर सकता हूं। लेकिन मैं खोलनेवाला कौन? यह काम मनुष्यके बसका नहीं है। मुझे भगवान जिस हद तक निमित्त बनाने दे अुसी हद तक मैं बन सकता हूं। जिसमें मेरा स्वार्थ है क्योंकि तुझसे तो मुझे बहुत ज्यादा काम लेना है। तेरे भीतर जो बातें मैं अुड़ेल रहा हूं वे व्यर्थ जानेवाली हैं, यह मान लूं तो जितने लंबे पत्र लिखनेकी तकलीफ अुठाअूं?

किसी व्यक्ति या समाजकी अवनतिका कारण ठीकसे खोजा गया हो अैसा जाननेमें नहीं आया। अनुमान तो बहुत लगाये जाते हैं। तात्कालिक कारण मिल भी जाते हैं और वे हमेशा अेकसे नहीं होते। लेकिन सामान्य रूपसे यह जरूर कहा जा सकता है कि अवनतिके मूलमें धार्मिक न्यूनता जरूर होती है। परतंत्रता कभी मूल कारण नहीं हो सकती क्योंकि वह स्वयं दूसरे कारणोंका दुर्बलताओंका परिणाम होती है।

पड़ोसीका कर्तव्य हमेशा पड़ोसीकी धार्मिक रीतिसे मदद करना है।

अहंकारके बीज [अपनी] शून्यता अनुभव करनेसे ही [नष्ट] होते हैं। अेक सबके लिअे भी कोअी ब्रह्माण्डोंमें जाकर विचार करे, तो अुसे अपनी अति अल्पताका भान हुअे बिना न रहे। पृथ्वीके प्राणियोंकी तुलनामें हम जंतुको तुच्छ मानते हैं, किन्तु अिस जगतकी तुलनामें मनुष्य-प्राणी हजार गुना अधिक तुच्छ है। मनुष्यमें बुद्धि है, अुससे अिस स्थितिमें कोअी फर्क नहीं पड़ता। अुसकी महिमा ही अपनी तुच्छता अनुभव करनेमें है। क्योंकि अिस अनुभवके साथ ही दूसरा भान पैदा होता है, वह यह कि जैसे वह मनुष्यके रूपमें तुच्छ है वैसे ही भगवानका तुच्छतम अंश होते हुअे भी जब भगवानमें अुसका लय होता है, तब वह भगवान-रूप बन जाता है और अुस सूक्ष्म अणुमें भगवानकी शक्ति भरी हुअी है।

मायावादको मैं अपने ढंगसे मानता हूँ। कालचक्रमें यह जगत माया है। लेकिन जिस क्षण तक अुसका अस्तित्व है अुस क्षण तक वह सत्य है। मैं अनेकान्तवादको मानता हूँ।

अगर कोअी भी वस्तु मनुष्यके सामने प्रत्यक्ष हो तो वह मृत्यु तो है ही। अैसा होते हुअे भी अिस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तुका भारी डर लगता है, यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है। अुस डर जानेका धर्म अकेले मनुष्यको ही सुलभ है।

पाप-पुण्य मृत्युके बाद भी जीवके साथ जाते ही हैं। जीव जीवके रूपमें अुन्हें भोगता है। फिर भले वह दूसरे स्थूल शरीरमें हो या सूक्ष्म शरीरमें।

अब तो बहुत हो गया न?

बापू

१२

१९-९-३२

चि. प्रेमा

आज तो पत्र लिखते लिखते थक गया हूँ। डाक निकलनेका समय भी हो गया है। अिसलिअे छोटा ही पत्र लिखता हूँ। दूसरा कारण। हमारे पास अभी बिल्ली है। वह स्मार्ट किस्म [illegible] है। अिसलिअे अुसका

नाम तेरा कॉलेजका स्मरण बनाये रखनेके लिअे प्रेमा रखा है। तू कितनी स्मार्ट रहती है जिसकी परीक्षा अब हो जायगी।

पास होगी या नहीं?

बापू

दूसरा पत्र समय मिला तो बादमें लिखूंगा।

९६

[पू. महात्माजीके हरिजनोंसे सम्बन्धित ११ दिनके पहले अुपवासके कारण पत्रव्यवहार बीचमें बन्द रहा। अुपवास समाप्त होते समय मैंने अीसाजी स्तोत्र Abide with me में से दो कड़ियां लिख भेजी थीं। अुपवास २ सितम्बर, १९३२ के दिन शुरू हुआ था।]

य. मं.
२-१०-३२

चि. प्रेमा

आज लम्बा पत्र नहीं लिखा जायगा। तेरे काटनेसे कौन डरता है? हमारी बिल्ली बहुत अपने बच्चोंको जैसे जैसे काटती है, वैसे वैसे वे अुसकी गोदमें घुसते हैं। बिल्ली अपने दांतोंके बीचमें जब सोमाको लेती है तब सोमा रोता नहीं लेकिन अपनेको सुरक्षित मानता है। वैसे ही तेरा काटना होगा।

तूने सुन्दर कड़ियां लिख भेजी हैं। तेरे संयमको भी सुंदर मानता हूं। लेकिन तेरे लिअे या आश्रमवासियोंके लिअे दुःख होनेका कोअी कारण नहीं है। बूढ़े अब्बासजी[1] रेहाना वगैरा अुपवासके बारेमें जानकर आये। मेरे पास आनेकी अिच्छा भी प्रगट नहीं की। अीश्वरका हाथ मेरे सिर पर है ही अैसा अुन्होंने माना और अपने अपने काममें लगे रहे। अैसा दूसरोंने भी किया। लेकिन खास अुपवासके दिनोंमें तूने कितना वजन बढ़ाया?

बापू

---

१ श्री अब्बास तैयबजी। बड़ौदाके अेक समयके न्यायाधीश। दांडी-कूचमें पूज्य महात्माजीके साथी। अुनकी पुत्री श्री रेहानाबहन।

९४

[पू. महात्माजीके पत्र 'पत्र-विचार' नामक पुस्तकके रूपमें छपकर श्री नारणदास काकाने अुसकी प्रस्तावना लिखी थी। अुस पर मैंने विनोद किया था।]

८-१०-३२

चि. प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। प्रस्तावना लिखकर प्रसिद्ध होना हो तो अुसके लिअे योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। यह योग्यता कैसे प्राप्त की जा सकती है, यह नारणदाससे पूछ लेना।

मुझे आराम मिल ही रहा है। ६ अुपवास मेरे जीवनमें कोअी बड़ी बात नहीं है। गअी हुअी शक्ति लगभग वापस आ गअी है। पथ्याहारमें तो अब कोअी कठिनाअी नहीं होती।

आश्रममें बीमारी आये यह मुझे जरा भी पसन्द नहीं है। कहीं भी बीमारी लापरवाहीसे ही आती है। बीमारीके अिस महीनेमें खुराककी ठीक तरह संभाल रखनी चाहिये। बहुतसी बीमारियोंका कारण बिगड़ा हुआ पेट होता है।

मालती[1] तो मजबूत लड़कियोंमें गिनी जाती थी। वह भी कमजोर हो गअी! मैं देखता हूँ कि तेरे पास कुछ लड़कियाँ कठिनाअी पैदा करनेवाली हैं। शान्ताके बारेमें ज्यादा जाने बिना यहाँसे मार्गदर्शन नहीं कर सकता। नारणदासके साथ सलाह करके जो अुचित लगे करना।

का किस्सा भी विचारने जैसा तो है ही। दस वर्षकी लड़कीको मासिक धर्म हो यह भयंकर बात है। [अुसकी बुआ] के साथ बात करके अुसके बारेमें ज्यादा जान लेना। संभव है कि वह शालामें जाती थी तब बुरी आदत सीखी हो।

---

१ विद्यालयकी अेक लड़की जिसका विवाह कुछ वर्ष बाद श्री लक्ष्मीदासभाअी आसरके पुत्र पृथ्वीराजके साथ हुआ।

अपनी प्रेमीसे तो हम अलग हो गये हैं, क्योंकि हमें दूसरी जगह पर रखा गया है। अुसका वियोग खटकता तो है, लेकिन क्या करें? जिन्दगी वियोगका समुदाय ही है न?

बापू

९५

य. मंदिर,
१५-१०-१२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। सबके समाचार दिये यह ठीक किया। लीलावतीका काम कठिन है। तुम पर मुझे श्रद्धा है, जिसलिये तू कुछ कर सके तो करना। वह है भली, अुसका हेतु शुभ है, लेकिन बहुत विह्वल और अव्यवस्थित चित्तवाली है। प्रेमसे जो किया जा सके करना।

तेरा वजन घट रहा है, जिसका कारण खोजकर तुझे दूर करना चाहिये। दूध वगैरा कम लेती हो तो ज्यादा लेना चाहिये। हठ करके सारे शरीरको कमजोर मत कर डालना। तुझे कोअी टूटी कमरवाली कहे तो मुझे सहन नहीं होगा।

ने माफी मांगी यह ठीक किया। अुसे आश्रय दे सके तो देना। वह बहुत होशियार है यह मैंने देख लिया है। अपनी होशियारीका वह ठीक अुपयोग करे तो कितना अच्छा हो!

आश्रमके पैसेका अुपयोग जिसके लिये होना चाहिये अुसीके लिये होता है। फिर वह चाहे जो हो। लेकिन आलोचना तो चाहे जिस कामकी हो सकती है। भूलें होती होंगी लेकिन आश्रमका हेतु हमेशा तटस्थतासे व्यवस्था करना रहा है।

आश्रमकी पाओी पाओीका हिसाब देखनेका लोगोंको अधिकार है। आश्रम व्यक्तिगत संस्था नहीं है। खर्चकी मर्यादा अुसकी आयसे संबंध रखती है। आश्रमके पास कौड़ी न हो तो भी अुसका काम चलेगा करोड़ों हों तो वे भी आश्रम खर्च करेगा। देनेवालोंको विश्वास है तब

तक ले लेवे। संस्थाको बीमार बनाता है। वेनेजालोंको बड़ी प्रेरणा देता है।

मेरी दृष्टिसे तो जो भी बाहर जाय अुसे मंत्रीसे अिजाजत लेनी चाहिये।

बापू

९६

२१-१०-३

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला है।

जमनादासकी बात दुःखद है। क्या किया जाय? आखिर दै भाग्य तो कदम आगे रहता ही है।

किसनका मेरे नाम लम्बा पत्र आया था। अुसने अपने पत्र सहनका अच्छा वर्णन किया है। वह अैसी कर्तव्य-निष्ठ है कि सुब तीन बजे अुठकर पत्र लिखने बैठी। मैं अपनेको ही अैसा कर्तव्य-नि मानता था। किसन अैसी लड़कियां भी मेरा गर्व अच्छी तरह अुतार मालूम होती है। तू नहीं अुतार सकती क्योंकि आश्रममें तो सब अुठनेकी आदत होती है। अिसलिये अुसमें नयापन नहीं लगता। लेकि अस्पतालमें जो सुबह ४ बजे अुठे वह मेहरबानी करेगा। अिसमें तेरा गरीब मजदूर नहीं आते। लेकिन किसन कोअी मजदूरिन नहीं है।

कुछ समय यदि तू बचा सके तो बचाकर आश्रमसे बीमारी निकालनेकी कला तुझे हस्तगत कर लेनी चाहिये। लेकिन तेरा पह काम अपना शरीर बनानेकी कला हस्तगत करना है।

मक्का अपने खेतमें न होती हो तो मंगानी नहीं पा सकती अुसीसे वजन बढ़ता हो तो यह तो सरल बात हो गअी। जेलमें मैं पढ़ा जरूर जाता है कि मकाके आटेकी राब (कांजी) से वस्त ता होता है और वजन भी बढ़ता है। कैदियोंको हमेशा सवेरे मकाकी राब ही दी जाती है। अुसमें नमक डाला जाता है। मकाके आटे

से शायद निकालनेकी जरूरत नहीं होगी। कैदियोंको साथ देनेके लिये और प्रयोगके रूपमें कुछ दिन तक यह प्रयोग करने लायक जरूर है। आजकल सुबह क्या दिया जाता है? अगर पहलेकी तरह मक्कीके आटेकी राब दी जाती हो तो ज्वारकी देकर देखना बिलकुल सरल है। बहनोंको विट्ठल कान्ति वगैराको तो व्यक्तिगत अनुभव है। वे जो कहें वह सच्चा। मैं तो दूसरोंका कहा हुआ कहता हूं।

शान्ताने जो लिखा है उसमें से कुछ समझा नहीं। मुझे तो उसने कुछ लिखा नहीं। मुझे अपना रहस्य बताये तो ठीक हो। शान्ता जो गुप्त रखना चाहे उसे मैं जरूर गुप्त रखूंगा।

तूने जो प्रश्न पूछे हैं उनका जवाब नहीं दे सकूंगा। फिलहाल अभी धीरज रखना।

तेरी शक्ति और योग्यताका पार ही नहीं है। लेकिन उनका मैं उपयोग करूं तभी न? अभी तो एक सुन्दर फूलकी तरह वे जंगलमें बिखर जाती हैं।[1]

हमारी बिल्ली बहनसे हम मिले तब वह सचमुच ही पागल बन गयी। हमें छोड़ती ही नहीं थी। उसे हमारा वियोग जरूर बहुत खटका होगा। अब शान्त है।

बापू

१७

[साबरमती आश्रम शहरसे दूर और अलग था। रोज सुबह सारे लोगोंकी प्रार्थना होती थी। लड़के और लड़कियां गरबा गाते थे और मैं [illegible] नीचे-ऊपर कर गरबे सिखाने लगी थी। लड़कियोंको गरबों भी जिन्हें ज्यादा रुचि लगती थी। बरसातके मौसममें बरसात हो रही हो और कोई गाने वाला गा रहा हो तब भी यह काम मैं करने लगी थी। जिसका असर पर असर हुआ और

१ अंग्रेज कवि ग्रे की वन-पुष्पसम्बन्धी पंक्तियोंका मतलब है।
Full many a flower is born to blush unseen

दर्द शुरू हो गया। बादमें मैं अच्छी गयी और डॉक्टरकी दवा भी न
मिला। परन्तु ऐसा याद आता है कि सात आठ महीने तक उसने मुझे
खूब तकलीफ दी।]

४-१०-'३२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। कृष्ण नायरके बारेमें तूने लिखा है सो ठीक है।
            के साथ मुझसे जानेसे पहले कोई बात हुई? वह मुझकी
होशियारीका दुरुपयोग करता है। जिससे मुझे बचा लिया जाय तो अच्छा।

तेरे पास लड़कियोंका अच्छा जमघट हो गया दीखता है। तुम
उनको संभाल लेने अर्थात् उन्हें प्रेमसे पूरा करने और पूरा रखनेकी शक्ति
ईश्वर तुझे दे।

लीलावतीकी संभाल रखना। वह दुःखी लड़की है।

गाँवका पाक तुझे खाना हो तो खाकर देख लेना। मुझे तो डर है
कि उसे तू पचा भी नहीं सकती। तुझे जरूरत ठेठ मक्खनकी और
कटिस्नानकी है। साथ ही पीठ भी मलवानी चाहिये।

पुराने वर्षके साथ ही तूने अपना क्रोध भी दफना दिया हो तो
कितना अच्छा हो!

आश्रमके रुपयेके बारेमें संतोष न हो तो उसकी चिन्तामें न पड़।
कभी अपने आप संतोष हो जायगा। अन्तमें किसी दिन आश्रमका प्रबंध
हाथमें लेगी तब तो होगा ही।

फूलोंकि पौधोंके साथ मेरी तरफसे बात करना आश्वासन देना। उनसे
कहना कि अपने जैसा सौंदर्य अपने जैसी सुगन्ध अपने जैसा नियम,
अपने जैसी दृढ़ता अपने जैसी नम्रता अपने जैसी समता और सरलता
हमें प्रदान करो और अपनी मित्रता सिद्ध करो।

बापू

१८

मरवडा मंदिर,
६-११-३२

चि प्रेमा

मुझ पर अब बोझा अितना आ गया है[1] कि आश्रमको लम्बे पत्र शायद ही भेज सकूं। अुसमें तेरा नंबर पहला आया है। परन्तु मैं जानता हूं कि अब मेरे लम्बे पत्र अखबारोंमें पढ़कर तुझे संतोष होगा।

दीवालीके दिनोंके अनोखे वर्णन पढ़कर वहां अुड़ आनेका जी हुआ। परन्तु देखा तो पिंजड़ा अूपर, नीचे और चारों ओर बन्द ही है। अिसलिअे पंख फड़फड़ाकर बैठा रहा।

तू मक्खनकी मात्रा बढ़ाकर अच्छी हो जाय तो अिसे मैं सस्ती दवा मानूंगा।

तेरी जिम्मेदारी बढ़ती जा रही है, यह मैं समझता हूं। अीश्वर तुझे निभा लेगा तू आत्म-विश्वास न खोना। मेरी अितनी ही सलाह है कि तू धीरज न छोड़ना।

अेक शिकायत तो रमाबहनने की सही मालूम होती है। तूने चिढ़कर कह दिया — 'तो चला जा पालनपुर।'[2] अैसा किसीसे नहीं कहा जाता। बालकोंके साथ सभ्यतासे ही काम लेना चाहिये। आश्रममें रहनेवाला कोअी भूल करे तब तुरन्त 'तो रास्ता नापो' कह देना बहुत अपमान-कारक है। अैसा किसीसे न कहना। और रमाबहनको संतोष दिलाना।

कृष्ण नायरका संवाद मधुर है। तेरे अुत्तर तो तूने मुझे पूरा अधिकार दिया हो तो मैं भी दे दूं।

किसनका वर्णन अच्छा है।

हमारा गीत हमें शोभा देनेवाला है।[3] सपनोंका पृथक्करण मुझे नहीं आता।

---

१ हरिजन साप्ताहिक निकालनेका।

२ यह वचन मैंने बालक बीरूसे कहा था।

३ हमारा गीत = राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्'। यह प्रार्थना-गीत है, राष्ट्रगीत जैसा नहीं लगता अैसी आलोचना मैंने की थी।

नारणदासकी दी हुआी भेंटका अर्थ समझी न?

भावना कब प्रगट की जाय, अिसका कोआी नियम नहीं है। यह कहूंगा कि जब सत्यनारायण प्रेरित करे तब प्रगट की जाय।

बापू

९९

११-११-३२

चि० प्रेमा

आज भी छोटासा ही पत्र लिखूंगा। अब हरिजन भाओी-बहन मेरा बहुत समय लेते हैं।

कमला बाओी[2] जो नओी आओी है, शिकायत करती है कि मुझे अपनी लड़कीके लिअे समय नहीं मिलता और न पढ़नेके लिअे मिलता है। देख लेना।

तू मोद हजम कर गओी।[3] यह खुशीकी बात है। कितना खाया? साथमें क्या मिलाया था?

तेरे कामकी कठिनाअियोंको मैं अच्छी तरह समझता हूं। भगवान तुझे हिम्मत देंगे और आवश्यक शक्ति भी देंगे।

बीमारीका कारण ढूंढ लिया है तो अब अिलाज भी कर ले।

मेरी भावनाके बारेमें तू पूछती है अिससे कुछ काम नहीं होगा। क्योंकि कोओी अपनी भावनाका पृथक्करण पूरी तरह कर नहीं सकता।

जब तत्त्व व्यवहारमें आता न दिखे तब जान लो कि हमने तत्त्वको अच्छी तरह नहीं पहचाना है। शुद्ध तत्त्व हमारे व्यवहारमें उतरता ही

---

१ दीवाली पर प्रतिपदाके दिन श्री नारणदास काकाने मुझे सत्-विचार और आश्रमवासियोंके प्रति पुस्तकें भेंट की थी।

२ महाराष्ट्रके अेक खादी-कार्यकर्ताकी पत्नी अपनी बच्चीके साथ आश्रमके संस्कार लेने आयी थी।

३ कमरके दर्दके अिलाजके लिअे खाया था। श्री रामदासभाओीकी पत्नी श्री निर्मलाबहनने मुझे अिसकी सिफारिश की थी।

चाहिये। पूरी तरह तो कोअी तत्त्व व्यवहारमें नहीं अुतारा जा सकता। परन्तु जो व्यवहार तत्त्वके निकट नहीं जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है।

बापू

१००

२०-११-३२

चि॰ प्रेमा

अभी भी मेरे पत्र छोटे ही रहेंगे। तेरे लम्बे हों तो अुसकी मुझे चिन्ता नहीं। मुझे तेरे वर्णन जरूर चाहिये। मैं अुत्तर तो दे ही नहीं सकता। मैं विनोद करूंगा या प्रश्न करूंगा। अुलाहना दूंगा और देना आयेगा तो कभी कभी लाड भी दे दूंगा। परन्तु तुझे तो अपना हिसाब देना होगा सुख-दुःखकी बातें कहनी होंगी।

रमाबहन[1]के बारेमें मैं तुझे तंग नहीं करना चाहता। तेरा वर्णन ही ऐसा है कि अुसमें से प्रेम निकाल सकना मुश्किल है। गनीमत यही है कि तेरे वचनोंमें *जितना कषाय होता है अुतना तेरे कामोंमें नहीं आता।* मेरे पास समय होता तो जिस पर बड़ा व्याख्यान दे देता। परन्तु मुझे हरिजनोंने बचा लिया है क्योंकि अुन्होंने मेरा सारा समय ले रखा है।

अमीना[2] खूब परेशान करा रही है। अुसका दर्द पहचाना जा सके तो पहचानना। अुसे शान्ति दे सके तो देना।

संयमका हाल जैसा ही है जैसा तूने लिखा है।

बापू

---

१ श्री रमाबहन श्री छगनलाल जोशीकी पत्नी। [illegible]

२ श्री अमीनाबहन श्री अिमामसाहबकी लड़की। अिमामसाहब आश्रमके अन्तेवासी थे।

२७-११-'३१

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। जो संयमका मूल्य समझता है अुसे तो आहारके परिवर्तनमें मजा ही आता है। अखबारोंमें किसने लिखाया कि आश्रममें बेसनका भोजन शुरू किया गया है? यह बात सच होती तो कोअी हर्ज नहीं था। परन्तु हम तो दूध घी वगैरा बहुतसी चीजें लेते हैं। फिर भी बेसनका भोजन शुरू किया है, यह कैसे कहा जा सकता है? इस बातकी जड़ ढूंढ सकी हो तो लिखना।

तेरी शिकायत सही है कि कठोर नियम भी मैं बनाता हूं और विलासी मनुष्य आश्रममें आ पहुंचते हैं अुसका कारण भी मैं हूं। मैंने तो यह है कि अुनका विरोध तुम सब कर सकते हो और शक्तिसे अधिक नियम लेनेके लिये बंधे नहीं हो। मैं तो केवल सलाह ही दे सकता हूं। अमल करना न करना केवल तुम लोगोंके हाथमें है। इतना मुझे आवश्यक लगता है कि स्वयं कड़े नियमोंका पालन करते हुये भी कोअी अनियमित रहनेवाला व्यक्ति आ ही जाय तो अुसे निभानेकी अुसके प्रति अुदारता रखनेकी शक्ति हममें होनी चाहिये।

तेरी नसीहतको ध्यानमें रखूंगा।

... का सारा किस्सा दुःखद है। किमहं किं करिष्यामि?

नारणदासके साथ बैठकर अिन्दुका विचार कर लिया।

बालूकी मुझे चिन्ता नहीं है। वह तो ठिकाने आ ही जायगा।

आज तो कह सकता हूं कि जब आना हो तब तुम दोनों[1] आ जाना। आगेकी राम जाने।

छोटी बड़ी जो भी प्रतिज्ञा लें अुसका पालन हम कर सकें तो समझना चाहिये कि यह अीश्वरकी ही कृपा है।

लक्ष्मीके साथ बात करके देखना। अुसे विवाह तो नहीं करना है?

बापूके आशीर्वाद

---

१ पू॰ महात्माजीसे मुलाकात करनेके लिये मैंने सुशीलाके साथ जानेकी मांग की थी।

१०२

मरवडा मंदिर,
५-१२-३२

चि० प्रेमा

यह पत्र प्रार्थनाके बाद लिखता हूं। लम्बे पत्रकी मुझे आशा नहीं रखनी चाहिये। परन्तु तुम्हे तो लम्बे पत्र लिखने ही चाहिये। अुनमें से मुझे बहुत कुछ मिल जाता है। यह सब मुझे चाहिये।

तारादेवीका[1] क्या हाल है? क्या पंजाब जानेका विचार कर रही है?

अमीना जो कहे सो सुनना। सच तो यह है कि जो भी कोअी अपनी बात कहे अुसे सुनना चाहिये। जिम्मेदार आदमीको अैसा करना ही पड़ता है। अिस प्रकार शान्तिपूर्वक सुननेसे ही बहुत कुछ बातें निपट जाती हैं।

किसनके समाचार आते थे पर अब अुसका तबादला हो जानेसे नहीं आ सकते। परन्तु वह मजेमें होगी। सुशीलाका पत्र साथमें है अुसे भेज देना।

छारा[2] लोगोंमें तू, लक्ष्मीबहन[3] वगैरा क्यों नहीं जातीं? यह सच है कि तुम्हें किसीको समय नहीं रहता। परन्तु थोड़े समयके लिये कोअी काम छोड़कर भी जा सकती हो। वे लोग कितने हैं? दिनभर क्या करते हैं?

अुपवासके बारेमें नारणदासके पत्रमें लिखा है।

पुरंदरका पत्र अब मुझे मिलना चाहिये। कृष्ण नायरका मेरे पास कोअी पत्र नहीं आया। ब्रजकिसन[4]को लिखकर पुछवाना।

बापू

---

१ श्री प्यारेलालजीकी मां।

२ छारा लोग जरायम-पेशा (Criminal) कहलाते थे। अुस समय सरकारने छारोंकी अिच्छाके विरुद्ध अुनकी बस्ती आश्रमके पास बसाअी थी जिसलिये आश्रममें चोरियां बढ़ गअी थीं। रातको आश्रममें चारों ओर बारी बारीसे पहरा लगाना पड़ता था।

३ श्री पंडित खरेकी पत्नी।

४ श्री ब्रजकिसन चांदीवाला थोड़े दिन आश्रममें रह गये थे। दिल्लीके कार्यकर्ता। आज भी वहीं हैं। कृष्ण नायरके मित्र।

१०३

यरवडा मंदिर
११-१२-'३२

चि. प्रेमा

तेरे गलेकी गिल्टियां कट गयी होंगी। पूरे वर्णनकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

पतकी राय अधिक अनुकूल पड़े तो वही लेना। मेरा कहना अितना ही है कि सबेरे राब ही लेनेसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे लाभ हो सकता है। परन्तु अेक भी बातके लिये मेरा आग्रह नहीं है। अुबाला हुआ साग लेनेकी आवश्यकता जान पड़े तो वह लिया जाय। पानी भी धीरे धीरे पीनेमें लाभ जरूर है।

दुर्गाबहनको पूनियां भेजी होंगी।

अिस मासके अन्तमें तेरी और सुशीलाकी राह देखूंगा।

किसनको पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिख भेजना।

लक्ष्मीका मन अच्छी तरह जान लेना। पद्माको समझानेका प्रयत्न करना।

क्या शान्ता आयी है? अुससे सब जान लेना। मुझे यह तौर तरीका पसन्द नहीं आया। मैं अुसे लिख रहा हूं।

मेरे पत्र कितने ही छोटे क्यों न हों तो भी तुझे तो पुराण जैसे ही लगना है।

बापू

१०४

[गलेकी गिल्टियां कटवानेकी सिफारिश पू. महात्माजी कर रहे थे। ऑपरेशन करनेसे पका ज्यादा बिगड़ेगा अैसी मान्यता होनेसे कुछ दिन तक मैंने अिस ओर ध्यान नहीं दिया। बादमें पू. महात्माजीका तार मिला तो मैंने अस्पताल जाकर गिल्टियां कटवा लीं। दो दिन वहां रहकर वापस आ गयी और फिर काममें लग गयी। ऑपरेशनके समयका और अस्पतालके अनुभवोंका वर्णन पू. महात्माजीको मैंने लिख भेजा था।]

१७–१२–३२

चि० प्रेमा

तेरा सुन्दर पत्र मिल गया। अस्पतालसे जबरन् जाओगी तो अुसे मैं दोष मानूंगा। अस्पतालमें पड़े पड़े भी सेवा हो सकती है, यह मान ता है न? कम बोलना। अभी दूध और फलों पर ही रहना। बीमार आदमी काम नहीं कर सकता यह नियम कहांसे निकाला? पत्रबाजी करके बीमार न पड़ना।

बापू

१०५

[पूज्य महात्माजीका यह मत था कि पत्र अैसे होने चाहिये आश्रममें किसीका पत्र कोअी पढ़े तो भी कोअी हर्ज नहीं होना चाहिये। मुझे यह पसन्द नहीं था। मैं पढ़ती थी तभीसे अैसा मानने लगी थी कि पत्रकी विशेष पवित्रता होती है। अिसलिअे अेक व्यक्तिके पत्र दूसरे लोग अुसकी अिजाजतके बिना नहीं पढ़ सकते। अिस नियमका मैंने आज तक पालन किया है। महात्माजीका दफ्तर अनेक लोगोंके हाथमें रहता था। अिसलिअे दूसरोंके लिखे भी पत्र पढ़ लिये जाते थे यह वस्तुस्थिति थी। अंग्रेजी शब्दका प्रयोग करें तो secrecy (गुप्तता) नहीं परन्तु privacy (खानगीपन) तो जरूरी है और अुसका आग्रह रखनेमें दोष नहीं है, अैसी मेरी मान्यता थी। आज भी है।

अुन दिनों श्री छगनलालभाअी जोशीको जेलमें पूज्य महात्माजीके पास ही रखा गया था। आश्रमके अेक परिवारकी अेक युवा लड़कीको प्लूरिसी हो गयी थी। वह मेरे पास अंग्रेजी पढ़ने आती थी। वह बीमार पड़ी तब कभी कभी समय निकालकर मैं अुसके पास बैठने जाती थी। बात बातमें अुसने मुझे बताया कि बीमारीमें अकेलापन अुसे अखरता है। अुसके हालचाल पूछनेके लिअे अुसके पास कोअी भी नहीं जाता था। अुसका बड़ा भाअी भी जो आश्रमका अेक होनहार कार्यकर्ता गिना जाता था अुसकी अुपेक्षा करता था अैसी मेरे मन पर छाप पड़ी थी। अिसलिअे पत्रमें पूज्य महात्माजीको यह किस्सा मैंने लिख भेजा था।]

यरवडा मंदिर,
१८-१२-३२

चि० प्रेमा

बीचमें तुझे पत्र लिखे तो है। यह साप्ताहिक पत्रका ञुत्तर है।

कदमकाकाको तेरा पत्र न पढ़ने देनेकी तेरी निषेध-आज्ञाको मैंने स्वीकार किया है। निषेध-आज्ञा मुझे पढ़नी ही पड़ी। मैं अैसा मानता हूं कि ञुनके बारेमें तूने जो लिखा ञुसे वे न जानें यह तो तू भी नहीं चाहती होगी। जितना पढ़ाकर बाकी भाग न पढ़नेके लिये ञुनसे कहा। लेकिन तेरी आज्ञा मुझे अच्छी नहीं लगी। आत्मवत् अेक व्यक्ति आत्मवत् ही दूसरे व्यक्तिसे कैसे कुछ छिपा सकता है? छोटी बालिका अैसी लिफ्सा रखे यही ञुसकी नासमझ कोअी अैसा चाहे, यह भी समझमें आ सकता है। लेकिन तेरे पास छिपानेका क्या हो सकता है? दूसरे कोअी तेरा पत्र पढ़ें जिससे ञुसकी पवित्रता कम नहीं होगी परन्तु बढ़ती है। तेरे विचार दुनिया जाने जिसमें तुझे संकोच होना ही नहीं चाहिये। हमें अैसे विचार करनेका अधिकार नहीं है। अैसी आदत डालनेसे हमारे विचारों पर स्वभावतः अंकुश लग जाता है। मनुष्यमात्र अीश्वरके प्रतिनिधि हैं। अीश्वर तो हमारे सब विचार जानता ही है। लेकिन ञुसे हम प्रत्यक्ष नहीं देखते जिसलिये हम निश्चित रूपसे नहीं कह सकते कि वह हमारे विचार जानता है। लेकिन अगर मनुष्यको ञुसके प्रतिनिधिके रूपमें हम पहचानें तो हमारे विचार वह जाने जिसमें हमें संकोच नहीं होना चाहिये। और प्रतिनिधि प्रत्यक्ष है जिसलिये हम अपने विचारों पर सहज ही नियंत्रण रख सकते हैं। मैं चाहता हूं कि तू ज्ञानपूर्वक अपनी निषेध-आज्ञा वापस ले ले। (मुझे आशा थी कि दायें हाथसे लिख सकूंगा। लेकिन देखता हूं कि मुझे जिस हाथका ञुपयोग नहीं करना चाहिये। जिसलिये जितना सोचा है ञुतना शायद नहीं लिख सकूंगा।) रमाबहनके लिये तेरी मरजी हो वह तू लिख सकती है। तू जो भी लिखेगी वह देवभावसे नहीं लिखेगी जितना तो मैं जानती ही है। अब तू जो चाहे सो लिखना। जो लिखेगी ञुस पर मैं अमल करूंगा।

मालूम होता है कि तू अस्पतालसे बरसबाकी करके आजी है। डॉक्टरकी हिदायतोंका तू पूरी तरह पालन करती हो तो कोजी दिक्कत नहीं होनी चाहिये। ऑपरेशनका सोचा हुआ फल निकले तब तो बहुत ही अच्छा हो।

का किस्सा दुखद है। का पता चले बिना अुसका दोष निकालनेके लिये मैं तैयार नहीं हूं। स्वच्छ है, निर्दय नहीं है। वह अपना धर्म समझता है।मेरे पास ज्यादा समय होता तो ज्यादा समझाता। तुझसे जितनी हो सके अुतनी तू की सेवा करना। अगर अकेली पड़ गञी है तो जिसमें अुसका दोष कम नहीं है। परन्तु जिस दोषके कारण अुसकी सेवामें कमी नहीं होनी चाहिये। में तुम भी बहुत हैं।

बिंदु तो बेचारा है ही। वह भोला और खिलाड़ी है। मैंने अुसके पिताको लिखा है कि अुसे अपने पास ही रखें।

दूध और फलको औषधि समझकर अभी ठेठ रहना। दाल वगैरा अभी मत लेना। भाजकी जिच्छा हो तो खा सकती है। डॉक्टरको दिखाती रहना।

सुशीलाका पत्र जिसके साथ है।

बापू

१०६

[श्री छगनलालभाजी पर कुछ समय मैंने जो दोष लगाये थे वे आज तो पूरे याद नहीं आते। अेक बात याद आती है। मैंने पूज्य महात्माजीको लिखा था "आपको मैं जो पत्र लिखती हूं अुनमें अपना हृदय अुंडेलती हूं। साथ ही आश्रम और बाहरके व्यक्तियोंके बारेमें निजी राय भी लिखती हूं। अुसमें बहुतसे किस्से भी आ जाते हैं। ये सब व्यक्तिगत माने जाने चाहिये। विचार दुनियाके सामने रखे जा सकते हैं व्यक्तिगत मत नहीं। जब रखे जायं तब जिसके लिये वे रखे गये हैं अुसीको अुन्हें पढ़नेका अधिकार होता है। श्री छगनलालभाजीको अनेक बातें करनेकी आदत है। अुनके मित्रोंका क्षेत्र भी विस्तृत है। मेरे पत्रोंमें की गयी बातोंकी वे बाहर चर्चा करें, तो पक्षपक्षमी पैदा हुअे बिना नहीं

रह सकती।" मेरी दलीलके समर्थनमें मैंने गीताजीके अठारहवें अध्यायका लिये ते नातपस्काय श्लोक अुद्धृत किया था।

अुस समयकी मेरी अुमरमें मेरे रागद्वेष तीव्र होनेके कारण जब मैं विकारोंके वशीभूत हो जाती थी तब मेरी भाषामें कभी कभी संयमकी मर्यादा भंग हो जाती थी। अिस पत्रमें भी अैसा हुआ था अिसलिये पूज्य महात्माजी नाराज हुअे।

यह पत्र मुझे मिलनेसे पहले मैं पूना जाकर पूज्य महात्माजीसे मिल आयी थी। आश्रम लौटने पर मुझे यह पत्र मिला। और मेरा मिजाज हाथसे चला गया। मुझे लगा "दूसरे लोग पूज्य महात्माजीसे मेरे विरुद्ध शिकायत करते हैं तब वे मुझे डांटते हैं। लेकिन मैं किसीके विरुद्ध अकारण शिकायत नहीं करती हूं तब भी मुझे डांट पड़ती है। किसीके बारेमें शिकायत करनेका मुझे कोअी अुत्साह तो है नहीं। यहां काम करते हुअे रास्तेमें जो अड़चनें आती हैं, तरह तरहके लोगोंके विरोधी स्वभावोंका जो अनुभव होता है, अुसे महात्माजी कैसे जान सकते हैं? अुनके पास तो सब कोअी पोशाक — साधु बनकर ही जाते हैं।" मेरी यह दलील मूर्खतापूर्ण थी अुसमें अविवेक था यह मैं अब समझ रही हूं। अुस समय तो मैं फिरसे क्रोधके कारण रूठ गयी थी। मैंने अुन्हें लिखा "मेरे भीतर जहर है अैसा आप कहते हैं, तो आजके बाद मैं पत्र ही नहीं लिखूंगी! मेरा जहर आपको किसलिये पिलाअूं?"]

य. मंदिर
२५-१२-३२

चि. प्रेमा,

तू लिखने ही वाली है, अिसलिये अिस बार पत्र लिखनेकी जरूरत नहीं है। तूने मुझसे पहले लिखनेका जवाब मांगा लेकिन तेरे लम्बे हुअे प्रतिबन्धके कारण तेरा पत्र मैं तुरंत पढ़ ही नहीं सका। ब्रह्मचर्य मुझे पढ़ नहीं सकता था अिसलिये अुसी समय मुझे सुनना संभव नहीं था। बादमें मैं काममें लग जाता था। तूने खुद होकर असुविधा मोल ली है और मुझे असुविधामें डाला है। ब्रह्मचर्यके बारेमें लिखा तेरा पुराण मुझे पढ़ाया है। मुझे तो तू छिपाना नहीं चाहती न? मैं तो हर्गिज

नहीं छिपा सकता। लेकिन अुसमें कितना जहर है! छगनलालको जिन दोषोंका ज्ञान ही नहीं है। तेरे कथनसे हुओ दोष अगर अुसमें होते तो वह कभी आश्रममें रह ही नहीं सकता था। और सुरेन्द्र?[1] अुसके जैसे स्वच्छ मनुष्य आश्रममें शायद ही कोअी होंगे। शास्त्रभावसे कही हुअी बातका तू आज तक संग्रह करके रख सकी! अैसे जहरकी तेरे भीतर मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। तेरे हृदयके अुद्गार तू लिखे यह मुझे प्रिय है। लेकिन अैसे विचार तू किसीके बारेमें भी अपने मनमें संग्रह करके रख सकती है, यह मेरे लिअे अत्यन्त दुःखदायी है। तेरा धर्म जिस महादोषके लिअे भगवानसे क्षमा मांगकर शुद्ध होना है। तू शुद्ध होना और मेरा दुःख दूर करना।

बापू

१०७

यरवडा मन्दिर,
१-१-३३

चि॰ प्रेमा

तू और सुशीला आ गयी यह अच्छा हुआ। आज मुझे लम्बा पत्र लिखनेकी जरूरत नहीं है। तेरे अनुभवोंकी राह देखूंगा।

पुरन्दरकी तबीयतके समाचार लिखना। मुझे पत्र लिखनेके लिअे कहना।

तेरी कमर (कमरदर्द) का कारण ढूंढ निकालना। हरिभाअूजीको तो लिखना ही। चिट्ठियां फट गयी जिसका व्यर्थ शोक मत कर। बहुत बोलकर गला मत बिगाड़ना। फूटी आवाजसे बोलनेकी आदत ही छोड़ देना।

बापू

---

१ आश्रममें नैष्ठिक ब्रह्मचारीके रूपमें तीन व्यक्तियोंका विशेष आदर था। अुनमें से अेक सुरेन्द्रजी थे। दूसरे दो थे बालकोबाजी और थे छोटेलालजी। सुरेन्द्रजी प्रार्थना भूमि पर पेड़के नीचे रहते अुपनिषद्के श्लोक गाते और चर्मस्मिम बजाते थे। व्रतीके रूपमें अुन्होंने मान्यता प्राप्त की थी। सन् १९३४ के बाद वे खेड़ा जिलेमें बोरियावीमें रहकर सेवा कार्य करते थे। आजकल बोधगयामें समन्वयाश्रमके संचालक हैं।

१०८

यरवडा मन्दिर,
५-१-३३

चि प्रेमा

तेरे दोनों पत्र मिले। आज मुझसे लम्बे अुत्तरकी आशा मत रखना। दायां हाथ थक गया है। बायेंकी गति चार गुनी कम तो है ही। जिसके सिवा अब मुझे 'हरिजन' के लिये हाथ (दोनों) और समय बचाना पड़ेगा। फिर भी तुझसे तो मैं पूर्ण पत्रकी आशा रखूंगा ही। सब बहनोंके समाचार तो तू ही देती है।

तेरे गलेके बारेमें मैंने जो लिखा अुस पर तूने अमल किया होगा।

तू कामकी चिंता छोड़कर शान्तिसे काम करना सीख जाय तो तेरा शरीर दुर्बल न हो। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि यह कहना जितना सरल है करना अुतना ही कठिन है। फिर भी कभी कभी मेरे वचन गले अुतर जाते हैं और अुनका अमल होता है, जैसा मैंने अनुभव किया है।

लक्ष्मीके बारेमें खोज करती रहना।

नर्मदाके क्या हाल हैं?

पुरन्दरेका शरीर कैसा रहता है?

किसनके क्या समाचार हैं?

बापू

७-१-३३

चि. प्रेमा

तू जैसी भोली है वैसी ही रूठनेवाली भी है। पर पिताके साथ पुत्री कितने दिन रूठ सकती है? पिताका प्रेम उसका गर्व उतार देता है। तू कब तक रूठनेवाली है? शायद तू पत्र लिखकर ही पछतायी होगी। तू जानती है कि तेरी चिट्ठीसे तूने जले पर नमक छिड़का है? लेकिन तू अपने आपको जितना पहचानती है, उसके बनिस्बत मैं तुझे शायद ज्यादा पहचानता हूं। मुझे पहले तो बहुत दुःख हुआ। फिर तुरंत हंसा। तेरे पत्रमें तू जितनी बुरी दिखती है उतनी बुरी तू है नहीं। मैंने तुरंत निश्चय किया कि जैसे पहले तू रूठकर दुःखी हुई थी वैसे ही अब भी पछताकर माफी मांगेगी। लेकिन मेरा अनुमान गलत हो तो अब माफी मांग और तेरे जीमें आवे वैसे पत्र लिख। मेरा उलाहना तो मनमें जहर रखनेके बारेमें है। जब तक तेरे मनमें जहर हो तब तक उसे मेरे सामने नहीं उंडेलेगी तो कहां उंडेलेगी? मैं तेरे कान न पकड़ूं तो और कौन पकड़ेगा? जहर है तब तक तो मुझे पीने ही देना। तेरी दृष्टिमें शायद वह जहर न हो। अपने स्वभावको कोई शायद ही पहचानता है। तू पहचान और जाग।

बापू

११०

य. मं.
८-१-३३

चि. प्रेमा

बिलकुल पागल मत बन।

तेरा दोहरा धर्म है यह मत भूलना। एक तेरा हृदय उंडेलनेका। जिसका तो नियमवत् पालन नहीं हो सकता। स्रोत सूख गया हो तो तू क्या करेगी? दूसरा तेरे कार्यके बारेमें हिसाब देनेका। यह हिसाब तो नियमवत् दिया ही जा सकता है। इतना तो करना।

बापू

१११

१५-१-३१

चि० प्रेमा

तेरा रूठना बताता है कि तू बहुत नादान है। मेरा कुछ कहना तू सहन न करे, तो दूसरोंका तो मुझसे भी क्यों कभी? मेरे अूपर तू जो छाप डाले अुसके लिअे अुपकार मानना तो दूर, अुलटे क्रोध करती है। तेरा धर्म तो मेरे आक्षेपको न समझ सकी हो तो मुझे मुझसे समझनेका है, मेरे साथ झगड़नेका नहीं। यहां तो तेरी शिक्षा और बुद्धिमत्ता पानीमें गयी मालूम होती है। तेरे रूठनेके पीछे तेरा महा अभिमान है यह भी तू नहीं देख सकती। यह निश्चित मानना कि यह स्वतंत्रता नहीं परन्तु स्वेच्छाचार है। मैं चाहता हूं कि तू अपनी आंखें खोल मेरे प्रेमको समझ और तेरे बारेमें मेरी परीक्षाको गलत सिद्ध मत कर। यह समय तेरे रूठनेका नहीं है, बल्कि मुझे दुःख देनेके लिअे पछताने और रोनेका है। तुझे जितना भी भान नहीं है कि मैं तुझे कड़वे वचन कहूंगा तो वे तेरे भलेके लिअे ही होंगे? अैसा करनेमें मेरी भूल ही रही हो तो नम्रतासे भूल बताना तेरा फर्ज है। तेरी निर्दोषता पर तुझे विश्वास हो, तो अुसे मेरे सामने सिद्ध करनेकी श्रद्धा तुझमें होनी चाहिये। अिसके बजाय रूठकर तू अपने दोषकी पुष्टि करती मालूम होती है। तुमसे अैसी आशा मैंने कभी नहीं रखी थी। जाग और रूठनेके लिअे माफी मांग।

बापूके आशीर्वाद

११२

२२-१-३१

चि० प्रेमा

तेरा पत्र आने पर मैं चिन्तामुक्त हुआ हूं। चिन्ता भी अज्ञानकी प्रजा है। पत्र न मिलनेसे चिन्ता क्यों? और मिला तो मुक्ति क्यों? अिसका अुत्तर तू मांगे तो मैं नहीं दे सकता। या दूं तो यह कहूंगा, "यह मेरा मोह है।

तू मुझे पागलपनमें कुछ लिखे अुससे मैं नहीं अकुलाता। लेकिन मुझे तेरी जो भूल मालूम हो अुसे तेरे सामने मैं न रखूं तो मैं तेरा हितेच्छु साथी मित्र या पिता नहीं कहला सकता। मुझे विचित्र तो यह लगता है कि मैं जो बात शुद्ध भावसे कहता हूं अुससे तू रूठती कैसे है? मेरा अुपकार क्यों नहीं मानती? हमारे बारेमें किसीके मनमें जो लगे वह यदि हमसे कहे, तो हम अुसका अुपकार नहीं मानेंगे? मैंने तो यह पाठ बचपनसे सीखा है। अितना तो तू मुझसे सीख ही ले। मेरी परीक्षा गलत होगी तो मैं दयाका पात्र बनूंगा अगर सच्ची होगी तो तेरा भला होगा। तुझे तो दोनों ओरसे लाभ ही होगा क्योंकि जिसके साथ तेरा पाला पड़ा है अुसे तू ज्यादा अच्छी तरह जान सकेगी। मैं यह चाहता हूं कि तुम सब मेरे दोषोंको मेरी कमजोरीको पूरी तरह जानो और अुन्हें बतानेकी मेरी हमेशा कोशिश रहती है। मैं अपने विचारोंको भी ढकना नहीं चाहता। अुन्हें मिटानेकी मेरेमें शक्ति हो तो मैं अुन्हें जरूर मिटा डालूं। लेकिन यह संभव नहीं है, असे मैं जानता हूं। मैं नहीं मानता कि विचारोंकी गतिको पहुंच सके असी कोअी शक्ति जिस जगतमें हो सकती है। कोअी अुसे नापनेका यंत्र खोजे तो पता चले। अितना लिखते लिखते तो मेरे विचार ब्रह्माण्डकी पांच-सात प्रदक्षिणा कर आये।

तू स्वीकार करेगी कि हमारे भीतर जहर है या नहीं अिसकी परीक्षा हम स्वयं अचूक रूपमें कर सकते हैं असा नियम नहीं है। जहरका संग्रह करनेकी हमारी अिच्छा भले न हो लेकिन अुससे यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे भीतर जहर नहीं है। वह हमारे न चाहने पर भी हम पर सवारी करता है। जिसमें क्रोध है अुसमें जहर तो है ही यह बात शायद तू स्वीकार न करे। यह स्वीकार न करे तो कहना होगा कि जहरका हम दोनों अेक ही अर्थ नहीं करते। बाने मुझे बहुत बार जहरीला माना है, असा मुझे याद है। मैं अुनके आक्षेपका जिनकार कैसे कर सकता हूं? मैं अपने वचनोंमें जहर न मानूं अिससे क्या? अुसे मेरे वचन चुभे यही मेरे लिअे साक्षी होना चाहिये। जो वचन पूर्णतः सत्य और अहिंसा-मय हैं, वे कभी किसीको चुभते नहीं। चुभनेवाले मालूम हों यह

अलग बात है, लेकिन अैसा अनुभव करनेवाला ही बादमें अुसके अमृतको स्वीकार करता है।

मैं चाहता हूँ कि तू सब बातोंमें अपनी परीक्षिका न बन। यह हो सकता है कि दूसरे लोग तेरी ज्यादा अच्छी परीक्षा करें। बहुतेरे प्रकरण मैं यही बरताव करता हूँ।

तेरे आश्रम छोड़नेका प्रश्न अभी अप्रस्तुत है। मैं छूट जाअूँ और आश्रममें आकर रहने लगूँ तभी यह प्रश्न अुठ सकता है, अैसा तेरे पत्रसे मैं समझा हूँ। नीतिकी दृष्टिसे तो अुसी समय अुठ सकता है। मैं आश्रममें न रह सकूँ तब तक तो आश्रमकी दृष्टिसे जेलमें होनेके बराबर ही माना जाअूँगा। और, मैंने जब आश्रमसे विदा ली थी तब तुम जो वहाँ थे [थे] मैं वापस आअूँ तब तक वहाँ रहनेके लिअे अुसी समय बंध चुके थे। अगर मेरा यह मत सही हो तो मेरे वहाँ रहने आनेके बाद क्या करना ठीक होगा अुसका विचार अभी करना अनुचित और समयका दुर्व्यय है।

आश्रमके बारेमें जो समाचार तूने दिये वे मेरे लिअे बहुत अुपयोगी हैं। लक्ष्मीके बारेमें नारणदाससे बात कर लेना। तुम दोनों विवाह कर देनेके निर्णय पर पहुँचो तो विवाह कर देना चाहिये। यह बेचैन रहती हो तो भी गहराअीमें अुसकी विवाह करनेकी ही अिच्छा होना सम्भव है। अब वह विवाहके योग्य तो हो ही चुकी है। और विवाह अुसे करना ही है। मेरे छूटनेके मोहको बिलकुल मिथ्या मानना चाहिये। लक्ष्मीको तू अच्छी तरह समझा देना। अुसकी हाँ की राह देखने तक रुकना जरूरी नहीं है। अिस संबंधमें लक्ष्मीबहन और दुर्गाबहनकी[1] सलाह लेना ठीक लगता है। वे तेरी अपेक्षा अिस बातको ज्यादा समझेंगी। विवाह करनेवालीके मनमें क्या चलता है, यह तेरे अनुभवसे बाहर है, अैसा तुमसे मैं समझा हूँ। अर्थात् तुझे विवाह करनेकी अिच्छा भी नहीं हुअी नहीं होती। अैसी कुछ कुमारियोंको मैं जानता हूँ। दूसरी प्रयत्नपूर्वक कुमारी रहती हैं। वे विवाह करनेके अर्थको जानती हैं।

---

१ श्री दुर्गाबहन। महादेवभाअीकी पत्नी।

तेरी तबीयतके बारेमें तो क्या कहूं? थोड़ी आवश्यकता तो लगती ही है। बाहर क्यों कि तेरा वजन बड़ा आश्रममें आओ कि प्राप्त किया हुआ खोता। यह बोझ तुझे दूर करना ही चाहिये। बोझ कैसे दूर हो यह तो तू ही जान सकती है। बोझमेंमें तो अब कोअी कठिनाओी बिलकुल नहीं आती होगी।

मैं किसीको अपने जालमें फंसाना नहीं चाहता। सब मेरे ही पुतले बन जायं तो मेरा क्या हाल हो? अैसे प्रयत्नको भी मैं तो बेकार समझूंगा। लेकिन शायद मैं किसीको फंसानेका प्रयत्न भी करता होअूं, तो तुझे क्यों आत्म-विश्वास खोना चाहिये? तू तो सावधान है ही अैसा तेरे पत्रोंसे साबित होता है। हां जितना सच है कि तुझे मेरे जालमें फंस जानेका डर हमेशा रहा करता है। यह बुरा चिह्न है। निश्चय करनेके बाद डर किसलिये? अथवा क्या यह संभव नहीं है कि फंसना शब्दका अर्थ भी हम अेक न करते हों?

बापू

११३

२९-१-३१

चि प्रेमा

तेरे पत्र पाससमय भरे हों या जैसे भी हों, लेकिन मुझे अुनकी जरूरत है। जिसलिअे तू अेक भी सप्ताह मुझे पत्रके बिना मत रखना। अब तू कैसी है?

बापू

११४

१-२-३१

चि प्रेमा

तुझे गलेके बारेमें चेतानेकी जरूरत है। मैंने तो पहलेसे ही चेताया था कि गलेका तुरन्त अुपयोग तुझे नहीं करना चाहिये। अब मेहरबानी करके डॉ हरिभाअीको गला दिखा दे और वे कहें अुसके अनुसार चलकर अुसे सुधार ले। अुसकी अुपेक्षा करके दुःख मोल न ले। जिसमें

है। जिसके अलावा यह विधाश्रम है और वहाँ भी है क्योंकि वह कुटुम्ब है जिसलिये सामान्य लिखाके बाह्य नियम बुझ पर अक्षरशः लागू नहीं किये जा सकते। नियमकी आत्माकी रक्षाके लिये नियमके देहका — बाह्य स्वरूपका त्याग करना पड़ता है।

अब यह बात जरा विस्तारसे समझाता हूँ। अक्मीके पालन-पोषणमें हमारी तेरी परीक्षा है। कुटुम्बके बच्चोंके बारेमें हम क्या करते हैं? तेरी सभी बहुतके बारेमें तू क्या करती है? अक्मी नियमका पालन न करे, नियम न जाने जिसमें दोष मेरा है, बादमें तेरा है। बीचके और लोगोंको मैं छोड़ देता हूँ नारणदासको भी छोड़ देता हूँ क्योंकि बुसे प्रत्यके लिये जिम्मेदार मानकर बुससे बुसके धर्मका पालन नहीं कराया जा सकता। यह काम ही स्त्रीका है। और बुसमें भी जिसके हाथमें वह आया हो बुसका अधिक है। मेरा अपराध पहला है, क्योंकि (आश्रमकी) कल्पनाका पिता मैं हूँ और माता भी मैं हूँ। पिताके धर्मका तो मैंने पालन किया परन्तु माताके धर्मका पालन नहीं किया क्योंकि मैं यहां वहां फिरता रहा। जिसलिये शायद मुझे अक्मीको रखना ही नहीं चाहिये था। परन्तु मैं कौन? ओीश्वरका दास। मैं अक्मीको ढूंढने नहीं गया था। बुसे बीश्वरने भेजा। वही बुसकी रक्षा करेगा। बुसे संभालनेवाली पहले बा बादमें संतोक फिर गंगाबहन और अब तू है। तुममें से किसीने बुसे मांगा नहीं था। समय और परिस्थितिवश वह तुम लोगोंके हाथोंमें आयी। अब तुमसे जो बने सो कर। जहां पूछना बुचित हो वहां मुझे पूछ। बच्चा नहीं निराश न होना अद्धा रखना और बुस पर प्रेम बुड़ेलना। अन्तमें जिसका हल बीश्वर निकालेगा। वह हरिजनोंकी प्रतिनिधि बनकर हमसे भूल चुकवाने आयी है। वह अधूरी और आलसी है, जिसका पाप तेरे, मेरे और सबके हिन्दुओं पर है। जैसा किया वैसा भरें। बुसका विवाह करनेकी व्यवस्था कर रहा हूँ। मारुतिके बारेमें लक्ष्मीदास पुछवाया है। दूदाभाईको भी लिखा है।

दूसरी लड़कियां और लड़के आते जा रहे हैं जिससे घबराना मत। जितने नियमोंका पालन वे करें बुतना ही लाभ समझना। अब तक बुनका

व्यवहार सहन हो तब तक अुन्हें रहने दें। सहन न हो तब छुट्टी दे दें। धर्मशालामें किसीका मुकाम स्थायी नहीं होता। कुटुम्बीजन भी स्थायी रूपसे नहीं रहते। जो आश्रमके चौखटेमें समायेंगे वे रहेंगे। जो नहीं समायेंगे वे चले जायेंगे। जिसका हर्ष-शोक क्या? फिर, अभी तो हम और कुछ कर भी नहीं सकते। जहां तक शक्ति है वहां तक जो काम आये और जिस पर हमारी आंख जरा जम जाय अुसका संग्रह कर लें। बहुतसे तो अपने आप ही भाग जायेंगे। हमारे नियम ही बहुतोंको भगा देंगे। जो आयेगा अुसे मेहनत तो करनी ही होगी। पाखाने साफ करने होंगे। भोजन दवाके तौर पर खाना होगा। वहां गुड़ भी नहीं मिलता और गेहूं भी जब चाहिये तब नहीं मिलते। आश्रम गरीबों, कंगालों और भूखों मरनेवाले लोगोंका प्रतिनिधि है, यह हम रोज याद करते रहें तो सदा सुरक्षित और सुखी रहेंगे। अिसलिअे आश्रममें रोज सादगी बढ़नी चाहिये नियमोंका पालन रोज कड़ा होना चाहिये। अग्नि अपने स्वरूपमें रहे तो जो चीज अुसमें मिल न सकें वे रह ही नहीं सकते। यह अग्निका दोष नहीं परन्तु गुण है। अिसी तरह हम स्वयं ही अपने स्वरूपमें नहीं रहते अिसलिअे सारी मुसीबतें पैदा होती हैं। सादगी वगैराकी कड़ाअीकी जो बात लिख रहा हूं वह हमारे ही लिअे है। हममें अिसकी मात्रा रोज बढ़नी चाहिये। हमने अपनी रक्षाका मार्ग हमारे अंतरमें ढूंढ़ा है, बाहर नहीं। और हम यानी आश्रममें समझ-बूझकर रहनेवाले लोग। अर्थात् मैं, तू और प्रत्येक व्यक्ति। सब आश्रमवासी जो नियम पालें वही मैं पालूं यह बात ठीक नहीं है। मुझसे जिन नियमोंका अधिकसे अधिक पालन हो सके अुनका पालन मुझे तो करना ही चाहिये। अिसमें आश्रमकी अुन्नतिकी कुंजी है। दूसरेके प्रति अुदारता रखनी चाहिये अपने प्रति कृपणता। अैसा करते हुअे भी हम अपने प्रति अुचितरूपसे ही किंचित् विवेकसे बरतेंगे। क्योंकि बहुत बार दूसरोंके प्रति दिखाअी जानेवाली अुदारता सच्ची अुदारता नहीं होती। और अपने प्रति दिखाअी जानेवाली कृपणताका आडम्बर होना बहुत सम्भव है।

लड़कियोंके लिअे आदर्श अखंड ब्रह्मचर्यका होना चाहिये। अुसीमें आदर्श विवाह समाया हुआ है। विवाहकी तालीम देनेकी जरूरत नहीं

होती। यह संयम देहधारीके स्वभावमें ही रहता है। अिस स्वभावको कुछ नियंत्रणमें रखनेके लिअे विवाह-विधिकी रचना हुआी। अिस स्वभाव पर पूर्ण अंकुश ब्रह्मचर्य है। जो पूर्ण अंकुशका पालन करेगी वह विवाह रूपी मर्यादित अंकुशका तो पालन करेगी ही। परन्तु विवाह जिसका पहलेसे ही आदर्श बना हुआ है वह विवाहका स्वरूप भी नहीं समझेगी। विकारोंके लिअे तालीम कैसी? वे तो अपने आप फूट निकलेंगे। परन्तु जो लड़की ब्रह्मचारिणी है अुसे घरकी व्यवस्था चलानेका ज्ञान जरूर प्राप्त करना होगा। शिशु-पालनका ज्ञान लेना ही चाहिये। वह गुफामें बैठकर कुमारी नहीं मानी जा सकती। कुमारी सारे जगतसे विवाह करती है सारे जगतकी माता बनती है पुत्री बनती है सारी दुनियाका कारबार चलाने लायक बनती है। भले ही अैसी कोआी कुमारी पैदा न हुआी हो। परन्तु आदर्श तो यही है। अिसलिअे शिक्षा सबके लिअे अेक सी ही होगी। मुझे लगता है कि मैंने यह स्पष्ट कर दिया है। लेकिन न हुआ हो तो फिरसे स्पष्ट करा लेना।

अिसमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि अुस मुसलमान बहनके बारेमें हमारा क्या कर्तव्य है।

लड़कियोंको जो फिट आते हैं अुनकी जड़ हमारा अपूरापन है। यदि हम जरा भी ठीकस आगे बढ़े हों तो नौजवानोंकी हस्ती हमें भयंकर नहीं लगेगी। परन्तु जहां खतरा मालूम हो वहां नौजवानोंको छुट्टी दे देनी चाहिये। लड़कियोंको लेना बन्द करना हो तो किया जा सकता है।

मेरी सारी आशायें नारणदासमें समाअी हुअी हैं। मेरी कल्पनाका नारणदास ही आश्रमका मंत्री हो तो सब कुशल ही समझना चाहिये। अुनके विषयमें मेरी श्रद्धा बढ़ती जा रही है। वह नहीं सिद्ध होगी तो जो दूसरे पुराने आश्रमवासी हैं वे आगे बढ़ते ही रहेंगे और सबका कल्याण ही होगा। आश्रममें आदमी बहुत हैं परन्तु आश्रमी थोड़े हैं। अिसलिअे मन पर बोझ बना रहता है। अैसी अत्यन्त अपूर्ण स्थितिमें तुम सबसे जो हो सके अुतना करो।

आश्रम मुझे खानेवाला अेक गज है। मैं जहां होता हूं वहां आश्रमको साथ लेकर घूमता हूं। शरीर कहीं भी हो आत्मा मेरी वहीं रहती है।

अुसमें जो दोष हैं वे सब पूर्ण अथवा अपूर्ण रूपमें मुझमें होने ही चाहियें। तुम सबको पहचाननेमें मेरी भूल हुआी हो तो वह दोष मेरा नहीं तो किसका है? परन्तु मैं अपनेको ही न पहचानूं तो तुम सबका माली कैसे बन सकता हूं? जब नाम चुनता हूं तो छगनलाल[1] और मगनलालके सिवा मैं किसीको ढूंढने नहीं गया। अुन्हें अीश्वरने मेरी परीक्षा लेने या मेरी सहायता करनेके लिये भेजा है।

यह तेरी भूल है कि तू डॉ. पटेलके पास नहीं गयी। डॉक्टरसे जिस प्रकार चिट्ठी द्वारा नहीं पूछा जा सकता। तू नीम ले ले। डॉक्टरको गला दिखाकर जो वह कहे वैसा ही कर। जिसमें हठ करना ठीक नहीं।

बापू

११६

य. मं.
१९-२-'३२

चि. प्रेमा

आज तो अब लंबा पत्र नहीं लिखूंगा।

मैचोंको तू जीत ले और तीनों बहनें अच्छी ही जायं तो भी मैं तेरी और आश्रमकी विजय ही मानूंगा। नारणदासने तो प्रेमका प्रयोग किया है। सफल हो जाय तो अच्छा।

तूने देखा होगा कि लक्ष्मीका तो अब विवाह कर ही देना है अथवा वह आश्रमसे चली जाय। मैं मानता हूं कि अुसका बोझा अब तुम्हारे किसीके सिर पर नहीं रहना चाहिये। मारुति बढ़िया लड़का है। अुसके निर्णयमें लक्ष्मीदासका हाथ तो है ही। तूने देख लिया कि अुसके बारेमें मोतीने तुमसे जो कहा वह ठीक नहीं था।

---

१ श्री छगनलालभाओी। मगनलाल गांधीके बड़े भाओी।

मालूम होता है कि लड़कियोंकी व्यवस्था तूने ठीक कर दी है। निर्मला[1] के बारेमें तेरा सुझाव मुझे तो पसंद आया। महादेवके साथ अुसकी चर्चा नहीं कर सका। पृथुराज की बात भी समझ ली। मुसलमान बहनके बारेमें मैं अधिक जाननेको अुत्सुक हूँ। जिस अंग्रेज भाओीको लेना है अुससे अच्छी तरह परिचय करना। मुझसे तो वह त्यागी मालूम हुआ है। अुसकी जरूरतोंका खयाल रखना।

सुशीलाके साथ तू मिलने आयी अुस समय मेरे किस व्यवहारके बारेमें तूने सवाल किया था? मैं तो भूल गया हूँ। फिर सवाल करे तो जवाब देनेकी कोशिश करूँगा।

डॉक्टरोंकी बात मैं समझा। अेक बार अुनके हाथमें चले जानेके बाद अुनसे जो वस्तु प्राप्त करनी हो वह हमें प्राप्त कर लेनी चाहिये। अैसा न करें तो अुनके साथ न्याय नहीं होता और हमें हानि होनेकी संभावना रहती है। यह बात तो हमें स्वीकार करनी ही होगी कि कुछ काम अुनके हाथों अच्छे होते हैं। हाँ अभिमानसे अज्ञानसे वे अनेक भूलें करते हैं, यह तो जग जाहिर है। कोओी अुनकी सहायता कभी न लेनेकी प्रतिज्ञा करे तो अुसका मैं जरूर आदर करूँगा। करोड़ोंको तो अुनकी मदद मिलती ही नहीं। परन्तु मैंने माना है कि अैसा त्याग आश्रमकी शक्तिके बाहर है। जिसलिअे अच्छे माने जानेवाले डॉक्टरोंकी मदद हम लेते हैं। तू जिसमें मामा की सहायता जरूर ले।

बापू

---

१ महादेवभाओीकी बहन। अुनकी आश्रममें रहनेकी अिच्छा हुओी थी।

२ आनंदीका भाओी। श्री लक्ष्मीदास आसरका पुत्र।

३ ये डॉक्टर थे। जब मैं बम्बअीमें थी तब जरूरत पड़ने पर अुनकी मदद लेती थी। अनुभव अच्छा होता था। मेरी कमरका दर्द अुनके अुपचारसे मिट गया था।

११७

२१-२-३१

चि॰ प्रेमा

आज लंबे पत्रकी आशा न रखना। दाहिना हाथ लिख-लिखकर, काफी थक गया है। समय भी नहीं है।

तेरी पूनियाँ पहुँच गयी हैं। कल शामको आयीं। आज कातीं। तेरा (दिया हुआ जिनका) वजन ठीक है, यह मानूँ तो देव-कपासकी पूनियोंसे १ अंकका सूत निकला असा कहा जा सकता है। जिनमें ८ आधी पूनियाँ महादेवसे कतवाअूँगा। पूनियों पर अुनका काबू मुझसे बहुत अधिक है। संभव है महादेव पहले ही प्रयत्नमें १ अंकका सूत निकालें।

तूने अपने स्वास्थ्यके समाचार नहीं दिये। पसेकी आवाज ठीक काम देती है? कमर कैसी है?

भाओ अंकन[1] का अनुभव बताना।

बापू

११८

य॰ मं॰
९-३-३१

चि॰ प्रेमा

यह पत्र मैंने ठीक पाँच बजे (मौनवार) हाथमें लिया है। आश्रमके पत्रोंमें तेरा अंतमें पढ़ता हूँ।

तेरी पूनियोंसे मैं ७५ अंकसे आगे नहीं जा सका। ७५ अंकका सूत बहुत अच्छा माना जायगा। पूनियोंका जो वजन तूने दिया अुसी परसे सूतका अंक निकाला है। सूक्ष्म वजन यहाँके कांटे पर नहीं लिया जा सकता। मेरा हाथ अच्छी तरह काम दे तो मैं मानता हूँ कि १ अंक तक जरूर जाअूँ।

---

१ अंकन दक्षिण अफ्रीकासे अेक यूरोपियन भाओ आश्रममें आये थे। अुनका अुल्लेख अूपरके पत्रमें हुआ है।

सुशीलाके बारेमें तू जो लिख रही है वह मेरे लिये स्वप्नवत् है। अुसके प्रति जरा भी अुपेक्षा बतानेका मुझे भान तक नहीं है। अुसीने मुझ पर यह छाप डाली थी कि मुझे न तो कुछ पूछना बाकी है और न कहना। यह तू मुझे [बता देना]। मैं क्या जानूं कि वह तेरी ही तरह डांट चाहनेवाली या खुशामद करानेवाली है। तेरी सहेली तेरे जैसी ही होनी चाहिये यह मुझे जानना चाहिये था। यही तू कहना चाहती है न? परन्तु सुशीला कदाचित् यह बात स्वीकार न करे। क्या मेरे लिये अेक ही अैसा काफी नहीं है? दूसरी भी है तो सही। परन्तु अुनमें थोड़ा थोड़ा अंतर है। खैर, अैसी गलती फिर न हो अिसका ध्यान रखूंगा।

विजयाकी अुमर कितनी है? अुसका बरताव कैसा है?

लक्ष्मीको अच्छी तरह तैयार करना।

फुन्सि फोड़े अभी तक नहीं मिटते अिससे मुझे संदेह होता है। वह मुझे हमेशा पत्र लिखती थी लेकिन अब बिलकुल नहीं लिखती। अिससे भी मैं मानता हूं कि वह कुछ न कुछ छुपा रही है। जांच करना अुसे कोअी दूसरा रोग तो नहीं है?

कच्चे शाक और खजूरसे वजन बढ़ना ही चाहिये। अुसके साथ रोज २।। तोला ताजा कच्चा दूध लेना चाहिये। कच्चे शाकमें टमाटर, मूली गाजर या लेटिस जैसी चीज ली जा सकती है। नमक न लिया जाय। दो-तीन नीबू पानीके साथ या खजूरके साथ लेकर देखना चाहिये। पानीके साथ नीबू अलग पीना शायद ज्यादा अच्छा होगा। अिससे दांत खट्टे जायं तो न लिये जायं। अुसमें सोडा डालकर पिया जा सकता है।

राजाजी वगैराके प्रसंगकी चर्चा मैं नहीं कर सकता। अुसमें समयका भंग होगा। वह तो कभी अवसर आयेगा तब। मेरे लेखोंमें तो अेक अेक पंक्तिका जवाब है।

आश्रमकी त्रुटियां तो तू जितनी बतायेगी अुतनी मैं स्वीकार कर लूंगा। परन्तु अुसीके साथ तू अुपाय भी ढूंढ़ दे तो वह अधिक अुपयोगी होगा। न ढूंढ़ सके तो भी तेरी आलोचना तो मुझे चाहिये ही। मेरी बुद्धि

य मं
१२-१-३१

चि० प्रेमा

तेरी दलील अेम अे को शोभा दे अैसी ही है। कोअी औंधे सिर लटके तो मैं क्यों न बाजा बजाअूं? अिस तरहके जो प्रश्न रखने हों वे रखे जा सकते हैं। और अुत्तर यही मिलेगा कि अैसा न करनेका कोअी कारण नहीं मिल सकता। अेक आदमी अेक काम कर सकता हो तो दूसरा आदमी दूसरा काम क्यों न करे?

परन्तु यह जरूर है कि कुछ लोग स्वयं औंधे सिर लटकें तो अपने अिस कार्यके लिअे भी दूसरोंके समझने लायक कारण वे बता सकते हैं और औंधे लटकनेवालोंको देखकर मेरे जैसे जो लोग बाजा बजाने बैठ जायं वे संभव है अपने बाजा बजानेका कारण किसीके गले न अुतार सकें। मगर ठीक है। अब तू आश्रमवासियोंके सामने अपना प्रस्ताव रखना और बहुमत हो जाय तो जरूर सारी तैयारियां कर लेना। मैं ठहरा कैदी अिसलिअे मुझसे तो अिस बारातमें आया नहीं जा सकता। और कैदीको मताधिकार भी नहीं होता अिसलिअे मुझसे पूछनेकी भी जरूरत नहीं हो सकती। अिसलिअे सब सिद्ध है (Q.E.D)।

दुर्लभरके पत्रकी धीरज रखकर राह देखूंगा।

तू अुत्तर दे या न दे मैं तो तेरे स्वास्थ्यके विषयमें पूछता ही रहूंगा। अब तबीयत अच्छी रहती है न? पचा चलता है या नहीं? कमर दुखती है? वजन बढ़ रहा है?

तेरी पूनियोंका जो सूत मैं कात रहा हूं अुसे देनेका समय आयेगा तब तेरी योग्यता बनी रहेगी तो तुझे जरूर दूंगा। अिस अुत्तरको तो तू ठीक मानेगी न? सूतका अंक ७५ से अूपर नहीं जा सकता। पूनियोंमें गांठें काफी हैं। संभव है देव-कपासके लिअे वैसूका अंक भी पूरा काम न देता हो। देव-कपास साधारण पींजनसे तो धुना ही नहीं जाता यह तू जानती है न?

महादेवको कुछ लगा है जिसका मुझे जरा भी पता नहीं। महादेवने कुछ लिखा है यह भी मैं नहीं जानता था। नारणदासके पत्रसे

मैंने जिस विषयमें कुछ बाना। तिरस्कारकी बात तो तेरे पत्रसे ही मालूम हुआी। महादेवसे जिस संबंधमें मेरी कोअी बात नहीं हुआी। मैंने जब महादेवसे तेरी पूनियां कातनेको कहा तब मुझे धर्म-संकट मालूम हुआ यह भी मैं नहीं जानता था। जिसमें मुझे तेरी बात बिलकुल सच लगती है। तेरे लिखनेके ढंगमें या मांगमें मुझे तिरस्कारकी गंध तक नहीं लगी। मुझे पता नहीं कि महादेवको यह पंथ कहांसे आओी। जिस समय तो मेरा मौन है वहीं तो पूछता। तेरी मांगमें मैंने मोह जरूर देखा। मेरे प्रति मोह कैसा? जो किसीका बनने योग्य न रहे जो रोज सबका बननेका ही प्रयत्न करे, अुसके विषयमें मोह त्याज्य है निरर्थक है। परन्तु यह अेक बात है। जिसमें से दूसरेके प्रति तिरस्कारका भाव निकालना बिलकुल दूसरी बात है।

संस्कारके बचनमें तो अुनकी प्रकृतिके अनुसार विनोद ही था अैसा मैं मानता हूं।

अब यह देख कि तेरे प्रेमकी मैंने कैसी कदर की। तेरी पूनियोंका मुझे वही अुपयोग करना चाहिये न जिसे मैं अच्छेसे अच्छा मानूं? अुसीमें प्रेमकी कदर मानी जायगी न? कोअी वैद्य बहुत प्रेमसे मेरे लिअे सुवर्ण-भस्म भेजे और अुसका मेरे लिअे जितना अुपयोग हो अुसकी अपेक्षा मेरे पड़ोसीके लिअे अधिक अुपयोग हो तो भस्म मुझे दे देना क्या ठीक नहीं होगा? अथवा कोअी मेरे बजानेके लिअे बाजा भेजे और मेरा पड़ोसी मेरे बजाय मुझे अधिक सुन्दर ढंगसे बजाये जिसलिअे मुझे बजाने देकर मैं अुसका अुपयोग करूं तो मैंने बाजेकी प्रेमकी सच्ची कदर की अैसा माना जायगा न? यही बात पूनियोंकी है। अैसी बढ़िया पूनियोंका सबसे अच्छा अुपयोग हमारी मंडलीमें महादेव कर सकते हैं। जिसलिअे आजी मैंने अुन्हें कातनेको दे दीं। जिससे अुनकी शक्तिका पता लगेगा देखका बल बढ़ेगा और मेरा संतोष बढ़ेगा। जिसलिअे तुझे यह चाहना अपना स्वभाव बदलना चाहिये कि जिसे तू भेंट भेजे अुसीको अुसका अुपयोग करना चाहिये। भेंट देनी ही तो बिना किसी शर्तके देनी चाहिये। तुझे सुधीजाने की अुपाधि दी वह सच्ची थी। जिसके लिअे दिये गये फल यह समय पर न पा सके तो तेरे या जेलमें ही

[पत्र सं० १५ ता० १८-१२-३२ में जिस कार्यकर्ताका अुल्लेख है अुसके बारेमें जिस पत्रमें और आगे पत्र सं० १२३ ता० २-४-३३ में लिखा गया है। कुटुम्बियोंकी बड़ी अुमरकी लड़कियोंमें यह कार्यकर्ता अधिक अुच्छृंखल-मिलता था। यह बात मुझे ठीक नहीं लगी तो मैंने श्री नारणदास काकाको अपनी शंका बता दी। परन्तु अुनका अुस पर बहुत विश्वास था। सबका ध्यान रखनेवाले अुन्हें ये जिसलिये मैं अुदासीन रही। बादमें परिणाम यह हुआ कि सोलह वर्षकी अेक लड़कीके साथ अुसका प्रेम बढ़ा और जब वह बाहर गयी थी तब अुसने पत्र लिखकर अुससे पूछा "तू मेरे साथ शादी करेगी?" लड़की अुस समय बीमार थी जिसलिये वह पत्र अुसकी मौसीके हाथमें पहुंचा। अुसने पत्र पढ़ा और स्वयं पू० महात्माजीसे मिलने गयी और वहां अुनके हाथमें पत्र रख दिया। अुसे पढ़कर पू० महात्माजीको भारी आघात पहुंचा क्योंकि कार्यकर्ता और लड़की दोनोंसे पू० महात्माजी बड़ा स्नेह रखते थे। अुन्होंने कार्यकर्ताको बुलाकर पत्रके बारेमें जरूर पूछा। अुसने जवाब दिया "पत्रमें मैं अुस लड़कीकी परीक्षा ले रहा था।" जिस अुत्तरसे पू० महात्माजीको बड़ा दुःख हुआ क्योंकि यह असत्य कथन था।]

२९-१-३३

चि० प्रेमा

तेरा सुन्दर पत्र मिला। यह भावना तुझमें स्थिर हो। सूत तो मैंने तेरे लिये रखनेको कहा है न? वह रखूंगा। अुस (मांग)का तिरस्कार करनेकी भी जरूरत नहीं। मुझसे कुछ भी मांगनेका तुझे जरूर अधिकार है। तेरी मांग निर्मल है। जिस ढंगसे तूने मांग की अुसमें दोष था। अुसे तूने सुधार लिया जिसलिये अब कहनेको कुछ नहीं रहता।

तू देखती है कि मेरी आशामें राख होती जा रही है। और के बारेमें तो क्या कहूं? अुनके बारेमें मुझे शंका हो ही नहीं सकती थी? अुन पर मैंने आश्रमोंका पाया चुना था परन्तु वह रेतकी बुनियाद पर खड़ा था। आश्रमके आदर्श तक कैसे पहुंचा जाय? कोजी किसीको

स्वेतपत्रके बारेमें मैं कुछ भी नहीं लिख सकता। यहां बैठे तुम्हें मेरा यह क्षेत्र भी नहीं है, जिसलिये मैंने अुसे पढ़ा भी नहीं।

बापू

१२२

[ता. २१-१-३३के पत्रमें पू. महात्माजीने मुझसे ब्रह्मचर्य-जीवनकी भिक्षा मांगी, जिसलिये मेरे मनमें यह भावना पैदा हो गयी कि मुझे कुछ भी लिखकर अुन्हें सन्तोष देना चाहिये। यह बात सच है कि कॉलेजमें तथा युवक-आन्दोलनके समय बहुतसे पुरुष साथियोंसे मेरा परिचय होता था, अुनके साथ घुलने-मिलनेके प्रसंग भी आते थे, परन्तु मुझे न तो किसीके प्रति आकर्षण हुआ और न किसीके प्रति काम-विकार अुत्पन्न हुआ था। छोटी आयुसे मैं आजन्म ब्रह्मचर्यके सपने देखती थी, जिसलिये प्रणयकी ओर मेरा मन गया ही नहीं था। सोलह वर्षकी आयु हुआी तब अेक बार मैं भागवत पढ़ रही थी। अुसमें कपिल-देवहूतिका संवाद पढ़ा तब मुझे पता लगा कि बच्चे कैसे पैदा होते हैं। मुझे याद है कि अुस समय मेरे शरीर पर रोंगटे खड़े हो गये थे। अपने जन्मकी कल्पना मुझे आयी और अपने शरीरके प्रति तथा अपने माता-पिताके प्रति भी अेक तरहकी घृणा मेरे मनमें पैदा हुआी थी! कैसा गंदा लगा था! यह घृणा बहुत वर्षों तक बनी रही। अैसा याद है कि जीवनमें मुझे तीन चीजोंसे घृणा रही: (१) स्त्री-पुरुष-संभोग (२) वितंडावाद (३) चुनाव। फिर समय बीतने पर वाचन और चिन्तन करनेके पश्चात् तथा विद्वान सज्जन पुरुषों और स्नेहियोंके साथ बहुत चर्चा करनेके पश्चात् जैसे जैसे मनुष्य-स्वभावका ज्ञान बढ़ता गया वैसे वैसे संभोग के बारेमें अेक वैचारिक भूमिका मनमें दृढ़ हो गयी:

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।

प्रजननके लिये ही संभोग, बाकी संयमी जीवन — यह भूमिका दृढ़ होनेके बाद घृणा कम हो गयी। लेकिन अन्य दो वस्तुओंके प्रति आज

भी बनी हुअी है। हाँ मेरी यह मान्यता जरूर है कि सत्यनिष्ठ अहिंसक समाजमें आदर्श चुनाव हो सकता है। परन्तु आजके कोअर्टसमें जो निर्वाचन-पद्धति है वह अपरिहार्य होने पर भी मुझके प्रति मनमें अरुचि जरूर है।

पू महात्माजीका पत्र आया तब विचार करने और भावना मुताबिक —यह परिस्थिति थी। मेरा आदर्श तो आमरण ब्रह्मचर्य-जीवन पालन करनेका था। भविष्यकी बात अुस समय तो मैं कह ही नहीं सकती थी। परन्तु मुझे लगा कि २५ वर्ष तक यदि मैं पुरुषोंके संपर्की जिज्ञासा किये बिना रह सकी तो दूसरी लड़कियोंको भी वैसा करनेमें क्या कठिनाओ हो सकती है? अभी १६ वर्ष भी पूरे न हुअे हों तब काम-विकार कैसे अुत्तेजित हो सकता है? मेरे सामने यही समस्या थी। कॉलेजमें पढ़ती थी तब Sex Literatureकी कोओ तीन पुस्तकें मैंने पढ़ी थीं। परन्तु वे अच्छी नहीं लगीं जिसलिये मैंने वैसी पुस्तकें फिर हाथमें नहीं ली। डॉ ऑमसको मैंने वैसे पढ़ा परन्तु तब अुसके कुछ मत मुझे अतिरंजित लगे। खैर! अपनी भावनाके वश होकर मैंने कहीं पढ़ा हुआ या किसीके मुँहसे सुना हुआ अेक वाक्य अपने पत्रमें लिख डाला I may sleep with any man on the same bed during the whole night and get up in the morning as innocent as a child! (किसी भी पुरुषके साथ सारी रात अेक शय्या पर सोकर मैं दूसरे दिन सवेरे निर्दोष बालक जैसी ही अुठूँगी।) जिसमें पू महात्माजीको अभिमानकी गंध आओ। आज मुझे लगता है कि वह मेरा अविवेक था अभिमान नहीं। अनुभवहीनता तो थी ही। पू महात्माजीके सामने मैं अपना अन्तर खोल कर रख देती थी। परन्तु मेरी अुमर बहुत बढ़ जानेके बाद भी मैंने किसी दूसरे व्यक्तिके सामने आमरण ब्रह्मचर्य-पालनका दावा किया हो अैसा मुझे स्मरण नहीं है। पचास वर्षकी अुमरमें भी विवाह करनेकी चीज आ जाय तो मैं विवाह कर लूँगी यही मैं कहती थी। परन्तु आज मैं कह सकती हूँ (आज तो मुझे बेपन वर्ष पूरे हो गये) कि ब्रह्मचर्य-पालनमें जो भी टूटी-फूटी सफलता मिली है, वह पू महात्माजीके रूपमें मीरबापकी जो कृपा व्यक्त हुअी अुसीके कारण मिली है। श्री सद्गुरुके प्रति अनन्य निष्ठा और स्नेहवश पर चलते हुअे साधनाकी

सतत सहायता — अिन दोनोंके ही कारण (मैं) पंगु पहाड़को लांघ सकी! वैसे मेरा कर्तृत्व तो शून्य ही है।

पूर्ण ब्रह्मचारिणीको मासिक धर्म नहीं होता पू. महात्माजीकी यह मान्यता शास्त्रीय हो सकती है जिसमें मुझे शंका है। मैंने बहुतसे स्त्री और पुरुष डॉक्टरोंकी सलाह ली है। अेक अपवादके सिवा किसीने अिस मान्यताका समर्थन नहीं किया। अपवादस्वरूप डॉक्टरने भी कहा कि मनन-शक्ति और अिन्द्रिय तथा गर्भाशयका अुपयोग किया ही न हो तो मासिक धर्म बन्द हो जानेकी संभावना है परन्तु तब स्त्रीका पुरुषमें रूपान्तर हो जायगा अुसे मूंछें आ जायेंगी वगैरा।]

२-६-३१

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। अच्छा है। आज ज्यादा नहीं लिख सकता। पत्र अच्छा है, फिर भी अुसमें ब्रह्मचारिणीको शोभा न देनेवाला अभिमान है। नारदकी कथा याद कर। नारदने ब्रह्मचर्यका अभिमान किया कि तुरन्त अुनका पतन हो गया। ब्रह्मचारीका आधार ठेठ ईश्वर पर रहता है। अिसलिअे वह नम्र होता है। वह अपना भरोसा नहीं करता। जो जन्मसे निर्विकार है वह मनुष्य नहीं। वह या तो परमेश्वर है अथवा पुरुष अथवा स्त्रीकी शक्तिसे रहित है। अिसलिअे अपूर्ण है, रोगी है। परमेश्वरको अभिमान किस चीजका? पत्थरको पत्थरपनका अभिमान हो सकता है? रोगीको रोगका अभिमान नहीं हो सकता। स्त्री-पुरुष अपने विकारोंको वशमें रखनेकी शक्ति पैदा कर सकते हैं और अिसलिअे संग्रह की हुअी शक्तिका सदुपयोग कर सकते हैं। परन्तु जिसे अिस शक्तिका अभिमान होता है अुसकी अिस शक्तिका अुसी क्षण नाश हो जाता है। तुझमें जो ब्रह्मचर्य होगा अुसका कितना क्षय हो रहा है, अिसका क्या तुझे भान है? तेरे ब्रह्मचर्यमें न्यूनता तो है ही। तेरे लिअे स्वाभाविक क्या है? तू विकारको जानती ही न हो तो क्या तू कोअी देवी है? देवीके लक्षण भिन्न होते हैं। तू देवी नहीं है। तुझे रोग हो अैसा मैं मानता नहीं क्योंकि तुझे मासिक धर्म होता है। तू जांच करके देखना और मुझे लिखना।

बापू

१२३

य मं
२-४-३१

चि प्रेमा

आज सुबह अेक पत्र तो तुझे लिखा ही है। वह अिससे पहले मिलना चाहिये।   और   के विषयमें तू जो लिखती है वह सब सत्य है। भूल सब करते हैं। भूलका दुःख नहीं मानना चाहिये। परन्तु भूलको कोअी छिपाकर रखे भूल करनेवालेकी अनिच्छा होते हुअे भी वह प्रगट हो जाये और बादमें वह भूलका अनुचित बचाव करे, तब दुःख होना ही चाहिये। यदि न हो तो अैसी घटनाओंको रोकनेका अुपाय ही हमको न मिले। अगर यह मान लें कि अैसी घटनायें होती ही रहेंगी अिसलिये अुन्हें रोकनेका अुपाय ही नहीं किया जाना चाहिये तो समाजका नाश हो जायगा। अिसलिये अुन्हें रोकनेके अुपाय तो करने ही चाहिये। ये अुपाय हृदयको आघात पहुँचे तो ही किये जा सकते हैं। जो मिथ्या दुःख करते हैं, क्रोध करते हैं वे ठीक नहीं करते अैसा कहा जायगा और मेरे बयानसे तू भी अितना ही कहना चाहती है। अिससे अधिक कहना चाहती हो तो वह भूल है अिस बारेमें मुझे शंका नहीं। दुःख आघात वगैरा शब्दोंके बजाय दूसरा कोअी शब्द मिले तो मैं जरूर अुसे स्वीकार कर लूं। परन्तु तेरे पत्रमें कहीं न कहीं मोह छिपा हुआ है। मोह शब्दका अुचित अुपयोग हुआ है या नहीं यह मैं नहीं कह सकता। मेरा आशय तू समझ गयी हो तो काफी है।

मुझसे जो भूल हुअी है वह तो मैंने मान ही ली है।

मैं तुझसे चाहता हूं सरलता मृदुता नम्रता धीरज सहनशीलता और अुदारता। यह तो मुझे तब मिले जब तू आकाशसे नीचे अुतरे। तू कुछ भी नहीं है, यह तू कब मानने लगेगी? रोज धरती-माताकी वन्दना करना और रोज अुसे लात मारना यह क्या है? यदि सचमुच हमारी अिस प्रार्थनामें सत्य हो तो हमें रजकण बन जाना चाहिये और

पूनियाकी कात सहन करने लगना चाहिये। तब धरती-माताको हमारे चरणोंका स्पर्श नहीं होगा क्योंकि तब हम जीतेजी राख बन गये होंगे। दूधीकी धूम बुझाता था।

तेरी पूनियाँ अभी चल रही हैं। अुनमें गाँठें आती हैं यह तेरा दोष नहीं है। यह कुछ पींजनका दोष है और कुछ कपासका। अधिक धुननेसे रेसे कमजोर हो जाते। दूसरी पूनियाँ बहुत बारीक सूत नहीं देतीं परन्तु अुनमें गाँठें कम हैं।

परचुरे शास्त्रीके लड़केको तूने हाथमें ले लिया यह बहुत ठीक किया।

शान्ताने तूने ठीक कहा। अब अुसे जो अच्छा लगे वही करे।

बापू

१२४

[जब मैं सत्याग्रहाश्रममें रहती थी तब आश्रम-जीवनकी तपस्याके बारेमें मेरी कुछ विशेष कल्पनायें थीं। पू॰ महात्माजीके विचारोंका प्रभाव भी अुसका कारण था। "बीमारी होना अपराध है" अैसा वे कहते थे। अिसलिअे किसी समय मैं बीमार पड़ती तब अथवा अुपवासमें भी मैं रोजकी तरह ही काम करती रहती थी। फिर पू॰ महात्माजी कहते कि "हमें गरीबोंकी तरह रहना चाहिये।" अिसलिअे अधिक रुपया खर्च करके अच्छा भोजन खानेको जी न करता था। अिसके सिवा अेकान्तमें खाना अच्छा न लगता। रसोअीघरमें पंगतमें बैठकर साथियोंसे अधिक घी-दूध लेना या फल आदि खाना मुझे पसंद नहीं था। पू॰ महात्माजीने लिखा आश्रममें रहनेको जेलमें रहने जैसा ही मानना चाहिये। तब मुझे लगा "हम जेल नहीं गये। हमने कुछ भी त्याग नहीं किया। तो फिर आश्रम-जीवन अधिक कठोर क्यों न बनाया जाय?" अिस तरहके विचारोंके कारण विशेष सुविधायें लेनेकी पू॰ महात्माजीकी अेक भी सूचना मेरे गले न अुतरती थी। वे दलील करते थे और मैं भी विरोधमें दलीलें करती रहती थी। यह हाल था।]

चि॰ प्रेमा

तू मूर्ख भी है और सयानी भी, अिसलिये अेक ही विशेषण नहीं दे सकता। बोलना लगभग बन्द होना ही चाहिये। ऊँची आवाजसे बोलना बिलकुल ही बन्द। गाना भी सर्वथा बन्द। काम न चलने पर ही धीमी आवाजसे बोलना पड़े तो बोला जाय, अन्यथा जो कहना हो वह लिखकर कहना चाहिये। अैसा नहीं करेगी तो तुझे पछताना होगा।

तेरी खुराकमें ज्वार-बाजरा अनुकूल न पड़ें तो वे बन्द हो ही जाने चाहिये। मेरी अिच्छा तो तुझे कच्चे दूध पर रख देनेकी होती है। दूधके साथ थोड़ेसे मुनक्के चबाकर चूसनेसे सन्तोष रहेगा। टमाटर तो हमारे यहां बारहों महीने पैदा होने चाहिये। और जब भाजी मिले तब हरी भाजी अुबाल कर ली जाय। अितने पर तू रहे तो और किसी चीजकी मुझे जरूरत नहीं मालूम होती। तेरी शक्ति जरूर कायम रहेगी। जांच करके देखना क्या हो सकता है।

विमलके समाचार दुःखद हैं।

बापू

१२५

१०-४-३१

चि॰ प्रेमा

नरहरिके हाथों भेजी हुई पूनियां मिलीं। हिसाब बादमें। कुल पूनियां १८ तोला हैं।

शान्ताके[1] बारेमें समझा। अुसने अभी तक मुझे कुछ नहीं लिखा है। अिन दोनों बहनोंके बारेमें तू जमनालालजीको वर्धा लिख दे तो अच्छा हो।

---

१ शान्ता — पिछले पत्रोंमें अिन बहनका अुल्लेख आ गया है। ये जमनालालजीने दो महाराष्ट्रीय बहनोंको भेजा था। अुनमें से अेक थी शान्ता वालवलकर और दूसरी नर्मदा गुरव। दोनों मैट्रिक तक पढ़ी हुई थीं। नर्मदा महाराष्ट्रके खादी-कार्यकर्ता श्री ना॰ म॰ जोशीकी पत्नी जमनाबाईकी (जिनका अुल्लेख पीछेके अेक पत्रमें है) छोटी बहन।

लक्ष्मी शिकायत करती है कि मुझे कोभी पत्र नहीं लिखता। मालूम करना। तू तो लिखती है न?

दुःखों और कष्टोंका मैं आदी हो गया हूं। ओीश्वर मेरी परीक्षा अनेक प्रकारसे ले रहा है। तपे बिना मनुष्यका निर्माण कैसे हो? तू कर्तव्यका पालन नहीं करती अितना कष्ट तो जरूर देती है। तुझसे ही मनको आराम देनेके लिये मैं लिखता रहा हूं। शरीरको भी आराम देनेकी बात मैंने लिखी है। लेकिन तू दोनों आज्ञाओंका अनादर करती है। ये आज्ञायें देनेमें स्वार्थ तेरा नहीं आश्रमका है। तेरा गला हमेशाके लिये बिगड़े तेरा शरीर कमजोर हो तो तुझे जितना नुकसान होगा अुसकी अपेक्षा आश्रमको ज्यादा नुकसान होगा। यह सादा सत्य समझमें आता है? अगर समझमें आ जाय तो नम्र बनकर शरीरको अच्छा रखनेके लिये जो कुछ कहा जाय अुस पर तू अमल कर। अिसी तरह क्रोधके बारेमें समझना। क्रोध भी अेक व्याधि है। अुसे भी दूर कर। अधीरताको भी दूर कर।

किसन कुछ ठीक है अैसी खबर मिली है। अुसे हिस्टीरियाका दौरा (फिट) हो यह बात समझमें नहीं आती।

बापू

१२६

१२–४–३१

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मैंने तुझे चेतावनी दी अितना काफी है। तेरा यह मानना ठीक नहीं कि मैं तेरे पत्र अच्छी तरह नहीं पढ़ता। तेरी बात मैंने समझ ली थी। अितने अधिक आत्म-विश्वासमें ही अभिमान या गर्व निहित है। तेरा अभिमान तेरी भाषामें मौजूद है। यह लिखकर मैं अैसा नहीं चाहता कि तू अपने विचारोंको छिपाये अथवा अुन्हें दबा कर मेरे सामने रखे। जैसे आते हैं वैसे तू लिख भेजती है, यह मुझे पसन्द है। तू जैसी भीतर और बाहर है वैसी मुझे देखने देती है, अिसे मैं तेरा गुण समझता

हूं। तू कृत्रिम बन जाय तो मैं लाचार हो जाअूं और तुझे कुछ भी न कह सकूं।

स्वतंत्र बननेका पाठ मैं नहीं दे सकता। अीश्वरको समझनेके प्रयत्नमें हम स्वतंत्र हो ही जाते हैं। यह स्थिति अपने आप आनी होगी तब आ जायगी।

तुझे किसीका कुछ सहन नहीं करना पड़ता यह बात भी नहीं है। परन्तु दुःख यह है कि तू मुझे [illegible] खो सकती है।

तू मानती है कि मेरे आसपास तेरे विरुद्ध वातावरण बना दिया गया है। जिसमें तू घुट रही है। सरदार तो तेरे विरुद्ध हरगिज नहीं हैं। अुनके विनोदको तू विरोध न मान। महादेव तेरे विरुद्ध हैं, अैसा मुझे बिलकुल नहीं लगता। जमनालालने तेरे बारेमें जो कहा वह नया नहीं है। वे तेरा मूल्य जानते हैं परन्तु कहते हैं कि जब तक तू अपनी जीभको वशमें नहीं कर सकती तब तक तुझ पर जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिये। यह अुनकी पुरानी बात है। तू जान ले कि मैं अपने तीन साथियोंके साथ शायद ही बातें करता हूं। चलते या टहलते समय थोड़ेसे विनोदके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता। प्रसंगके बिना हम शायद ही किसी व्यक्तिकी चर्चा करते हैं। अपने काममें मुझे चर्चा करनेका होश भी नहीं रहता और व्यर्थकी चर्चा करके मैं अपनी शक्तिका व्यय भी नहीं करना चाहता।

और   की करुण कथाकी चर्चा भी मैं मुश्किलसे ही कर सका हूं। विचारोंका कमसे कम आदान-प्रदान करके ही मैंने सन्तोष कर लिया है। न तो तेरे विरुद्ध मेरे आसपास कोअी वातावरण है और न मेरे मनमें है। मैं तुझे सख्त अुलाहना जिसलिअे देता हूं कि मैं तुझे अपनी पुत्री मानता हूं और तुझे पूर्ण देखना चाहता हूं। जिसलिअे मेरी आलोचनासे तू दुःखी क्यों होती है? अुसमें से जो लेना हो वह लेकर बाकीको भूल जा क्योंकि यह तो सर्वथा संभव है कि मेरी आलोचनामें अज्ञान हो तेरी भाषा मैं न समझ सका होअूं।

अेक ही वस्तुको भिन्न भिन्न मनुष्य भिन्न भिन्न रीतिसे देखें यह ठीक है। अेक ही शक्तिका अुपयोग भिन्न भिन्न प्रकारसे होता है, यह हम रोज देखते हैं।

मेरा यह विचार जरूर है कि मासिक धर्मके समय किसीको नियत कार्य न सौंपा जाय। जब मुझे दर्द अनुभव होता यह दूसरे किसीको पता नहीं लग सकता। अुस समय स्त्री पर किसी प्रकारका बाहरी भार न होना अच्छा है। अपने आप जो काम वह करना चाहे खुशीसे करे। कुछ स्त्रियोंको जिस धर्मका असर मालूम ही नहीं होता और वे अपना काम करती रहती हैं। कुछको असह्य वेदना होती है। कुछको वेदना तो नहीं होती परन्तु अुनका शरीर काम करने लायक नहीं रहता। जो स्त्री अुस धर्मका सदुपयोग कर सकती है वह प्रति मास नयी शक्ति प्राप्त करती है। ये तीन या चार दिन नयी शक्ति प्राप्त करनेके लिये हैं और अुसे प्राप्त करनेके लिये स्त्रियोंको हर तरहकी जिम्मेदारीसे मुक्त कर देना अुचित है। मुझे लेटे रहना हो तो लेटनेकी स्वतंत्रता होनी चाहिये। नासमझीसे कुछ स्त्रियां अुस समय भी दौड़धूप नहीं छोड़तीं। वे ज्ञानहीन हैं। अुन्हें समझानेकी जरूरत है। जिसलिये अमतुस्सलामकी बात कुछ मिलाकर मुझे अच्छी लगती है।

किसनके बारेमें तू जो लिखती है वह संभव है। अुसके स्वस्थ हो जानेकी बात जान कर मुझे बड़ी खुशी हुआी। मालूम होता है किसनने मेरे पत्रकी प्रतीक्षा की है। परन्तु मुझे याद नहीं कि अुसके अेक भी पत्रका जवाब बाकी रहा है।

तेरी पूनियोंके बारेमें लिख चुका हूं।

कच्चा दूध पीनेसे वजन घटना नहीं चाहिये। दूधका हुआा साग अेक बार लेगी तो शायद काम ही होगा। संभव है तेरे फलोंकी अुसकी जरूरत हो। मैं मानता हूं कि कच्चे दूधकी तो है ही। आजमाकर तो देख।

बापू

१२७

१९-४-३३

चि. प्रेमा

तूने अुस लड़कीको क्यों मारा? शिक्षिका शिष्यासे माफी मांगे तो अपना स्वाभिमान नहीं खोती। अुलटे वह बढ़ता है। शिष्य भी अुसे अधिक चाहते हैं। अिसलिअे यदि तूने माफी न मांगी हो और अुसे मारनेका दोष तेरी समझमें आ गया हो तो अुस लड़कीसे माफी मांग लेना। अिसमें तेरा श्रेय ही है।

तेरा आहार ठीक है। किसी प्रकार अिससे तो गला जरूर अच्छा हो जायगा। डॉ. शर्माकी सलाह लेना। अुन्हें पता लगेगा तो कुछ बतायेंगे।

काम करनेमें अधीरता कैसी? जितना धीरे धीरे करते हुअे हो जाय अुतनेसे संतुष्ट रहें, तो कामकी गति और स्वच्छता बढ़ती है। अैसा अनुभव मैंने तो हजारों बार किया है।

बापू

१२८

२१-४-३३

चि. प्रेमा

दायां हाथ काफी थक गया है, अिसलिअे जो कुछ शक्ति अुसमें बाकी हो अुसे हरिजन के लेखोंके लिअे सुरक्षित रखना चाहता हूं। मेरा खयाल है कि पूरे आरामकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

बीचमें अेक पत्र तो मैंने तुझे लिखा ही है। अिसलिअे यह छोटा हो तो चलेगा।

परचुरे शास्त्रीके लिअे मैं पुस्तकोंकी तलाश कर रहा हूं।

मैंने तकलीफ देखी। अगर वह सुधरनेवाली होगी तो सहन करनेसे और प्रेमसे ही सुधरेगी। तुझे थकान कभी महसूस नहीं होनी चाहिये।

मासिक धर्मके लिअे जो छूट रखनी अुचित हो वह रखी जाय। अुसका दुरुपयोग कोअी या बहुत करें तो अुसके लिअे आश्रम जिम्मेदार नहीं होगा। नीदके समयका कोअी दुरुपयोग करेगा अिस कारणसे हम वह समय काट नहीं सकते।

तू अपना धीरज टूटने न देना। सुधारकका सेवकका काम अितने बिना घड़ीभर भी नहीं चलता अिसे हमेशा याद रखना अपनी दीवार पर लिख रखना अुसका तावीज बनाकर पहन लेना।

वहाँसे मंसूरी आ जायगी तो नीला नागिनी[1] थोड़े ही दिनमें आश्रममें आयेगी। अुसने खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार किया है, कर्ज किया है, असत्य बोला है। अब वह साध्वी जैसी बन कर बैठी है। मुझे अुसमें कृत्रिमता नहीं लगी। अुसने अपने दोषोंका वर्णन किया अुसके बाद जितना मैंने अुससे कहा अुतना ही अुसने किया है। यदि अुसे अपने शुभ निश्चय पर स्थिर रहनेका मौका मिलनेवाला हो तो वहीं मिलेगा। और नहीं तो वह सूख जायगी अथवा फिरसे स्वेच्छाचारमें फँस जायगी। अुसमें शक्ति बहुत है। वह बहुत बातें जानती है। महाभारतका अुसे खूब परिचय है। वह आये तो अुसे पहचानना। दूसरी बहनोंसे भी अुसे पहचाननेको कहना। अुसके भूतकालकी बात न कराना। वह अैसी है कि खुद ही करेगी। परन्तु अुसकी बात करने-करानेमें दोष है। विषयका स्मरण हानिकर है। अपने विषयी भूतकालकी बात वह रसपूर्वक करे, तो जान लेना कि विषय अुसमें से गया नहीं। अुसे छोटी बहन समझ कर प्रेमपूर्वक अुसके हालचाल पूछना। अुसके जीवनके बारेमें मुझसे जो पूछना हो वह तू पूछ सकती है। अुसे भेजनेका समय आये तब कदाचित् मुझे बहुत लिखनेका समय न मिले अिसलिअे आज ही अितना लिख डाला। अुसका लड़का बहुत अच्छा है।

बापू

---

१ नीला नागिनी २४ वर्षकी अमरीकी युवती। अेक यूनानीके साथ अुसकी शादी हुअी थी। अुसे छोड़कर स्वेच्छाचार करती थी। काश्मीरमें आकर हिन्दू हो गअी थी अैसा वह खुद कहती थी। अुसे सुधारनेके लिअे पू. महात्माजीने आश्रममें भेजा था।

२५-४-३३

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तू मेरे पत्रके बहुत गहरे अर्थमें अुतर गयी। अैसा अुसमें कुछ था नहीं। नारणदासके नाम मैंने जो पत्र लिखा अुसमें तेरे संबंधकी शिकायतोंका अुल्लेख था। तुझे ध्यानमें रखकर मैंने लिखा कि तेरे अनेक गुणोंमें अुदारतापूर्वक सहन करनेकी शक्ति आ जाय तो कितना अच्छा हो! मुझे नारणदासको लिखना पड़ा कि यह पत्र तुझे न बतायें तो अच्छा हो। अुन्हें दुःख हुआ और मैंने अपने अुद्गार प्रगट किये। अुसमें तुझे अुलाहना देनेकी तो बात ही नहीं थी। मनुष्यके स्वभावको पलटनेकी भी हद होती है, अिसलिये तुझे कुछ लिखना मुझे ठीक नहीं लगा।

अितना स्पष्टीकरण काफी हुआ न? अब तुझे यह पत्र देखना हो तो देख लेना।

तुझे अेक मासकी छुट्टी लेनी चाहिये या नहीं अिसका निर्णय तू ही कर लेना। यह जरूर है कि नागिनीका वहां आना हो तब तू वहां रहे तो मुझे अच्छा लगेगा। परन्तु जैसा नारणदास कहें वैसा करना।

तेरे गलेके बारेमें मुझे चिन्ता तो होती ही है। परन्तु क्या हो सकता है? यह बिगड़ेगा तो दोष जरूर तेरा ही निकालूंगा। तू पूर्ण मौनव्रत ले ले तो मुझे अच्छा लगेगा। अिससे तेरा काम कम नहीं होगा। ट्रेपिस्ट साधु और साध्वियां मौनव्रत लेने पर भी सतत काम करते हैं। कच्चा साग भले ही खा परन्तु अुसे पीसकर लेना चाहिये। कच्चा दूध और फल हो तो सागके बिना भी काम चल सकता है।

बापू

१९०

२६–४–३३

चि. प्रेमा

तुझे अेक पत्र तो बीचमें लिखा है। आजकल जब वातावरण खूब डांवाडोल हो रहा है, तब तेरे विचार समय समय पर आते रहते हैं। तुझे दिलासा देनेकी मिच्छा नहीं होती और तेरे साथ चर्चामें पड़नेकी हिम्मत नहीं होती। मेरी स्थिति गजेन्द्र जैसी है। जरासी सूंड बाहर रही है। वह भी पानीमें डूब जाय तो सांस बंद जाय। मिसलिअे मिनके विषयमें आजकल मनमें विचार आते हैं अुनके लिअे केवल प्रार्थना ही करता रहता हूं। परन्तु किससे करूं? जो सदा ही जागता रहता है, जिसे आकस्म नामको भी नहीं है, जो नखसे भी निकट है, जो सब कुछ सुनता है, सब कुछ देखता है, वह तो मेरी प्रार्थनायें जानता ही है।

मिसलिअे अुसके आधार पर सूंड पानीके बाहर थोड़ीसी रही है। अुसे जो करना हो सो करे, जैसे रखना हो वैसे रखे।

बापू

१९१

[मिस पत्रमें पू. महात्माजीने मेरे नीचेके सवालोंके जवाब दिये हैं:

(१) हमसे अुमरमें बड़ा, हमारी अुमरका अथवा हमसे छोटी अुमरवाला व्यक्ति चोरी करता हो, अुद्धतापूर्वक जवाब देता हो या गालियां देता हो, समझाने पर भी न मानता हो और मिसका दूसरों पर खराब असर पड़ता हो, समय और काम बिगड़ते हों तो हम क्या करें? अपनी अधीरताको हम किस प्रकार जीतें?

(२) अपना फर्ज अदा करते समय यदि अपनी किसी कमजोरीके कारण आश्रमके नियम या अनुशासनका भंग हो तो अुसका दूसरों पर क्या असर होगा? बुरा असर होनेकी संभावना हो तो हमें अपनी कमजोरीका त्याग करना चाहिये या नहीं?

(३) लोकाचारका सत्याग्रहके मार्गमें कहां तक आदर किया जाय?

(४) आप जैसे पुण्यश्लोक महात्माके और मेरे बीच किसी बातमें मतभेद हो, मुझे अपना मत अन्तःप्रेरणासे सही लगता हो और अुस पर अमल करनेमें आपकी संस्थाके आचार-धर्ममें बाधा होती हो तो सत्याग्रहीके नाते मेरा क्या कर्तव्य है?

(५) संस्थाके कारण व्यक्ति प्रिय लगना चाहिये अथवा व्यक्तिके कारण संस्था प्रिय होनी चाहिये?

(६) दूसरोंके बारेमें हमें बुरे विचार आते हैं, अिसे जाननेकी कसौटी क्या है?

(७) जो मनुष्य अनेक प्रसंगों पर झूठा, आलसी या स्वार्थी पाया गया हो अुसके विषयमें शिकायत होने पर अुसके बारेमें हमें सन्देह हो तो वह सत्याग्रहीको शोभा देगा या नहीं?

(८) सादे जीवनकी मर्यादा क्या हो सकती है? साड़ी पर कसीदा करना, फैशनवाला जोड़ा पहनना, हाथमें या गलेमें फूलोंका कंगन या माला पहनना, कसीदेके कामकी चप्पलें पहनना — जिनमें कला-रसिकता मानी जाय या आश्रमके सिद्धान्तोंका भंग समझा जाय?

(९) आश्रममें अेक आदमी दूसरेकी आलोचना करता है और स्वयं वही दोष करता है, तब जिस व्यक्तिकी वह आलोचना करता है वह आलोचकको ताने मारता है या अुसके दोष बताता है। अिसे निन्दा या हिंसा कहा जा सकता है?

(१०) आश्रममें आनेवाले सब लोग अलग अलग विचार मनमें रखकर आते हैं। अैसी स्थितिमें क्या अुनके जीवनको और हमारी दृष्टिसे अलग अलग ढंगसे देखना चाहिये या नहीं?]

१-५-३१

चि० प्रेमा,

मेरा अुपवास अब आश्रमवासियोंके लिये होगा। अत: तेरे लिये भी होगा, यह जान कर तू अपने सारे रोगोंको निकाल फेंकना।

तेरे प्रश्न तेरे पास होंगे, यह मानकर अुनके अुत्तर ही संक्षेपमें दे रहा हूं। मेरे पास आज समयकी बड़ी कमी है।

(१) बड़े या छोटे कोओी भी हों भुन्हें नम्रतापूर्वक न समझाया जा सके तब मौन धारण करके हृदयसे भुनके लिये प्रार्थना की जाय। औसा करनेसे अधीरता मिट जायगी।

(२) यहां जरूरतकी व्याख्या जाननी चाहिये। मैं श्लोक बुलवा रहा होभूं भुस समय मैं आपको देखूं और मुझे पकड़नेकी जरूरत हो तो मुझे श्लोक बुलवानेके नियमका भंग करना चाहिये। भुसी समय मुझे पाखानेकी सख्त हाजत मालूम हो तो भी मुझे भुस नियमका भंग करना चाहिये। लेकिन मुझे पानी पीनेकी हाजत हो तो जिस जरूरतको दबाकर मुझे श्लोक बुलवाना जारी रखना चाहिये। तुझे भिसमें कुछ हो गया हो तो भी तू श्लोक चालू रखे यह शायद मूर्खतासे भी कुछ अधिक बुरा कहा जायगा।

(३) सत्यकी खोजमें जो लोकाचार रुकावट डाले भुसे तोड़ा जाय।

(४) यदि तुझे मेरे प्रति अनन्य श्रद्धा हो तो तुझे मानना चाहिये कि जिसे तू अन्तर्प्रेरणा मानती है भुसमें भूल होनेकी संभावना है। परन्तु अन्तर्प्रेरणा श्रद्धासे भी आगे जानेवाली प्रत्यक्ष वस्तु जान पड़े तो कुछ भी संकट झेलकर भुसीके अनुसार किया जाय।

(५) जिसका अेकांगी भुत्तर हो ही नहीं सकता।

(६) यह प्रश्न समझमें नहीं आता।

(७) स्वयं किसीको बार बार झूठा या आलसी पाया हो तो आगे भी भुसके वैसा होनेका सन्देह तो सत्यार्थीको भी होगा। परन्तु सत्यार्थी सन्देह होने पर भी आलसी या झूठे पर प्रेम रखेगा और भुसे (सुधरनेके) अवसर देता रहेगा।

(८) जिसमें सबके लिये कोओी अेक नियम नहीं हो सकता। प्रत्येकके मन पर जिसका आधार है। परन्तु कलाके बहाने सादगीका त्याग नहीं किया जा सकता।

(९) ताना मारनेकी वृत्तिसे अेक-दूसरेको जवाब देना निन्द्य है। तू भी वैसा ही है, यह कहनेमें हीनता है।

(१) यह वस्तु अहिंसाके मर्ममें ही निहित है।

यह मानकर कि तेरे पास अपने प्रश्नोंकी नकल रखनेका समय न रहा हो प्रश्न मैं डाकमें भेज रहा हूं।

दो बहनोंको भेज रहा हूं। संकोच तो खूब हुआ है, परन्तु भेजनेका धर्म समझकर भेज रहा हूं। आशा है कि वे तेरा काम बढ़ायेंगी नहीं बल्कि तेरे काममें मददगार होंगी। अुनके लिये हिन्दी सीखनेकी सुविधा कर देना।

मैं चाहता हूं कि सुशीला अपनी अिस बारकी छुट्टी आश्रममें बिताये। तुम दोनोंको अिससे आराम मिल सकता है। मुकामका परिवर्तन ही आराम है, यह अंग्रेजी कहावत जानती है न? अिसमें काफी सत्य है। अिसे तो लिखते लिखते ही मनमें अुठ आनेवाला खयाल समझना। सुशीलाने कोअी खास कार्यक्रम बना रखा हो तो मेरी अिच्छाके खातिर अुसे रद करनेकी बिलकुल जरूरत नहीं।

बापू

१९२

[डांडी-कूचके समय सत्याग्रह-आन्दोलनमें मुझे भेजनेकी मैंने पू. महात्माजीसे प्रार्थना की थी। वह अुन्होंने स्वीकार नहीं की। आश्रममें सेवाकार्य करने लगी। अुसमें असफल सिद्ध हुअी। अिसलिये मुझसे जिम्मेदारी ले लेनेकी मैंने दूसरी प्रार्थना की। वह भी स्वीकृत नहीं हुअी। बादमें मैं जैसे जैसे काम करती जाती वैसे वैसे मेरे सम्बन्धमें शिकायतें भी अुनके पास पहुंचती रहतीं। पू. महात्माजी देशकी आजादीका विचार करें, या हरिजन-सुधारका विचार करें या मेरे बारेमें की गयी शिकायतोंका विचार करें? जेलमें अुनकी जो मर्यादा थी अुस पर भी भार पड़ने लगा। यह मुझे दुःसह प्रतीत हुआ। मेरे प्रयत्नोंके बावजूद मैं आश्रममें सबको और पू. महात्माजीको भी संतोष नहीं दे पाती थी अिसका भी मुझे दुःख हुआ। अब काम और जिम्मेदारीका भार और आराम तथा वाचन-चिन्तनके लिये समयाभाव आदिसे मेरा जीवन जड़ यंत्रवत् होने लगा था। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्यके लिये मैंने अेक महीनेकी छुट्टी मांगी परन्तु दो यूरोपियन बहनें आनेवाली थीं अिसलिये छुट्टी नहीं मिली। श्री नारणदास काकाको परेशानीमें डालना भी मुझे पसन्द नहीं था। मैं दूसरोंकी सेवा करती थी परन्तु स्वयं किसीसे सेवा नहीं लेती

थी। जिससे बीमारीमें कभी कभी तकलीफ तो होती थी। जिस तरह चल रहा था कि पू महात्माजीके ता २५–४–३३ और ता २६–४–३३ के दो पत्र मिले। अुन्हें पढ़कर मैं बहुत घबराजी और दूसरा मार्ग न सूझनेसे भगवानकी शरणमें जाकर मैंने अुपवास शुरू कर दिया। हेतु यह था कि भगवान कुछ न कुछ मार्ग बतायेंगे। जितनेमें पू महात्माजीका ता १–५–३३ का पत्र मिला। वे २१ दिनका अुपवास शुरू करेंगे यह समाचार पाकर मैंने अपना अुपवास तीन दिनके बाद छोड़ दिया। परन्तु अुपवासमें पू महात्माजीको पत्र लिखकर मैंने प्रार्थना की थी कि मैं आश्रममें अधिक रहूंगी तो आपको मेरी ओरसे कष्ट ही हुआ करेगा। जिसलिये मुझे हमेशाके लिये आश्रमसे जाने दीजिये।"]

१–५–३३

चि प्रेमा

तेरा हृदयद्रावक पत्र मिला। तुझे मैं किस प्रकार सन्तोष दूं? तुझे जाने देना मेरे लिये बहुत कठिन है। मैंने तो तुझ पर आशाका भेद बांधा है। परन्तु जिसका श्रेय आश्रममें रहनेसे सिद्ध न हो अुससे आश्रममें रहनेका मैं आग्रह करूं तो मैं स्वार्थी बनता हूं और आश्रमका पतन होता है। आश्रममें रहनेवाले सभी लोगोंकि अधिकसे अधिक श्रेयका सूचक और सुखे साधनेका स्थान आश्रम है। जिसलिये तेरा श्रेय और आश्रमका श्रेय परस्पर विरोधी हो ही नहीं सकते। परन्तु तुझे मेरी यह बात नहीं न जंचे तो तुझे भाग जाना चाहिये जिसमें मुझे बिलकुल शंका नहीं है। अगर अभी तक तेरे अुपवास चल रहे हों तो मेरा अनुरोध है कि अब छोड़ दे। तू जो निर्णय करेगी अुसे मैं स्वीकार करूंगा। अंतिम निर्णय मैं नहीं करूंगा तुझे करना है।

जैसे मैंने नारणदास पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी डाली है वैसे ही नारणदासने तुझ पर डाली है। नारणदास तो टूटे नहीं। तू टूट जाती तो मुझे दुख होगा। तेरे टूटनेमें मेरा भी बुरा भाग जरूर माना जायगा। नारणदास क्या करे?

तू रहनेके निर्णय पर पहुंचे तो भी अपने अुपरका बोझ तू अवश्य कम कर लेना। शक्तिसे अधिक भार लेना ही अधर्म है अुसमें अनि

भाव भी है। जितना बोझ शक्तिसे अधिक खानेमें है अुससे ज्यादा बोझ शक्तिसे अधिक भार लेनेमें है। यह फर्क जरूर है कि सौमें से निन्नानवे आदमी शक्तिसे अधिक खाते हैं। सौमें से साढ़े निन्नानवे शक्तिसे कम ही बोझ अुठाते हैं। जिसलिअे हमें ही सदा जिस बातका पता नहीं रहता कि कब अधिक बोझ अुठाया और कब कम। जितने पर भी परिणाम तो वही आता है जो मैंने बताया। मैं अधिक खाअूं तो अुसका परिणाम मुझीको भुगतना पड़ेगा। मैं शक्तिसे अधिक हरिजन-कार्य अपने सिर ले लूं तो अुसका परिणाम चार करोड़ हरिजनोंको तो भुगतना पड़े ही शायद सारी दुनियाको भी भुगतना पड़े।

अीश्वर तुझे शान्ति प्रदान करे और सही रास्ता दिखाये।

बापू

१३३

७–५–३३

चि॰ प्रेमा

मेरे पत्र तुझे मिले होंगे। तेरे अुपवास बन्द हो गये होंगे और तू शान्त हुअी होगी। तेरे अुपवासका परिणाम जितसे अधिक आये वैसा मैं चाहता हूं। यह तू जानती है।

नारिणीसे खूब परिचय करना। मैं मानता हूं कि पूर्ण प्रेम अुसे शुद्ध कर देगा और शुद्ध रखेगा। अुसके पापकी सीमा नहीं थी। अुसकी शुभ भावनाओंकी सीमा नहीं है। परन्तु व्यभिचारमें अुसने सब कुछ खो दिया है। मन पर यह कालू जो बैठा है। अुसके जीवनमें अेक क्षणमें महान परिवर्तन करानेकी जिम्मेदारी मेरी है। जिसलिअे जिज्ञासा बनी रहती है कि अुस परिवर्तनको वह हजम कर सके तो अच्छा।

बापू

१३४

८—५—३३

चि॰ प्रेमा

तुझसे अब कुछ कहना बाकी है क्या? जिसमें तूं अपना कल्याण समझे अुसे सारे जगतके विरुद्ध जाकर भी करना। मेरी दृष्टिसे यह वस्तु आश्रममें सुसाध्य है। परन्तु तेरे लिये वही चीज सही है जो तुझे सूझे।

बापू

१३५

[यह पत्र पूनामें पर्णकुटीसे लिखकर भेजा हुआ है। अिक्कीस दिनके अुपवासमें भी पुरन्दर पू॰ महात्माजीकी सेवामें थे।]

१०—६—३३

चि॰ प्रेमा

तेरे पत्र क्यों नहीं आते? तेरा शरीर कैसा है? मन कैसा है? भजन कैसा है?

सुशीलाके क्या समाचार हैं?

पुरन्दर तो मुझसे फिर मिल गये थे।

बापू

१३६

[अिसी मासमें २१ दिनके अुपवासके सिलसिलेमें पू॰ महात्माजी जेलसे छूटे अुसके बाद मैं अुनसे मिलनेके लिये पूना पर्णकुटीमें गयी थी। तब अुनका अुपवास पूरा हो चुका था। अुसके बाद व्यक्तिगत सत्याग्रहकी योजना सामने आयी। पू॰ महात्माजीने आश्रमको यज्ञमें होम दिया। हम अंतिम सत्याग्रही बहुत करके ११ जुलाअीकी रातको पकड़े गये और

अहमदाबाद सेंट्रल जेल पहुँचे। हमें कोओी आठ दिनकी हवालात मिली। बादमें छह महीनेकी सजा हुआी। पूज्य महात्माजी और महादेवभाआीको पूना ले गये। वहीं दोनोंको सजा हुआी। पू महात्माजीने फिर अपवास किया छूटे और हरिजनोंकी सेवा करनेके लिओे बाहर ही रहे — यह मानकर कि अेक वर्षकी सजा अिस प्रकार हरिजन-सेवा करके भुगतेंगे।

अिस पत्रमें मेरी वर्षगांठके आशीर्वाद हैं।]

१-७-३३

चि प्रेमा

तेरा पत्र मेरे पत्रके साथ टकरा गया। मैंने कल ही लिखा और तूने भी कल लिखा।

हम सबके वर्ष अेकके बाद अेक बढ़ रहे हैं। हम छोटे हो रहे हैं, यह कहना कदाचित् अधिक सही नहीं होगा? जितने वर्ष चले गये अुतने आयुमें से कम हो गये। अिस हद तक क्या हम छोटे हुअे नहीं माने जायंगे? अिसमें से मैं तो सार यह निकालना चाहता हूं कि हम अधिक सावधान बनें। हमें सौंपी हुआी पूंजी कम होती जा रही है। जो रही है अुसका पूर्ण अुपयोग करना हम सीखें। मैं चाहता हूं कि तेरे विषयमें अैसा ही हो।

बापू

१३७

८-७-३३

चि प्रेमा

के बारेमें तेरा अनुभव बताना। बहुत लोग कहते हैं कि यह प्रमुखपदके लिओे अयोग्य है। नारणदासकी भी यही राय है। तेरी राय बताना।

बापू

१३८

१७—७—३३

चि. प्रेमा

मेरा पत्र तो तुझे मिला ही होगा। मेरी भावनायें तू जानती है। नारणदासको लिखे मेरे पत्रसे अधीरता नहीं पैदा होनी चाहिये। अभी तो असे कदम[1] के लिये तत्परताकी जरूरत है। वह समय कब आयेगा यह तो दैव ही जानता है।

बापू

१३९

[पू. महात्माजी १९३३ में जेलसे छूटकर आश्रमसे दूर अेलिस ब्रिजके पास श्री रणछोड़लालभाजीके बंगलेमें रहते थे। आश्रमका प्रबन्ध देखनेके लिये अेक दिन मैंने तुम्हें सन्देश भेजा था। तब वहाँसे आनेके पहले लिखी गयी चिट्ठी — बहुत करके जुलाजीमें।]

शनिवार

चि. प्रेमा

अकस्मात बाधा न आये तो आज तीन बजे पहुँचूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१४०

[ता. २१–१०–३३ से १७–९–३४ तकके पत्र मुझे जेलमें मिले। छह महीनेकी सख्त सजा भुगतकर (जिसमें ११ दिनकी माफी मिली) मैं २२ जनवरी १९३४ को छूटी। बादमें २६ जनवरीको श्री काका साहबके नेतृत्वमें फिर सत्याग्रह किया। अुसमें पकड़ी गयी और फिर मुझे छह मासकी सजा हुआी। यहाँ तक याद है मैं १ जुलाजी १९३४को

---

१ आश्रमको सत्याग्रहके यज्ञमें होम देनेका कदम।

जेलसे छूटी। सजाकी मियाद पूरी नहीं हुई थी। परन्तु पू. महात्माजीने आन्दोलन वापस लेनेका वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसलिये सरकारने बहुतसे कैदियोंको जल्दी छोड़ दिया।]

फिरसे नहीं पढ़ा।

वर्धा
२१-१-३३

चि. प्रेमा,

अपने किसी पत्रमें मैंने लिखा था कि मैं तुझे जान-बूझकर पत्र नहीं लिख रहा हूं ताकि दूसरोंके पत्र तुझे मिलते रहें। परन्तु अम्तुलके पत्रसे देखता हूं कि तू मेरे पत्रकी आशा रखती है और वे तुझे मिल भी सकते हैं। लिखनेका विचार कर ही रहा था कि जितनेमें कल सुशीलाका कार्ड मिला। जिसलिये यह पत्र प्रातःकालकी प्रार्थनासे पहले लिख रहा हूं।

मैं देखता हूं कि तेरी गाड़ी बहुत अच्छी चल रही है। तू लिखनेकी स्थितिमें हो तो मुझे अपनी दिनचर्या भेजना और खाने-पीने वगैराका ब्यौरा जो हाल लिख सके वह भी लिखना।

मेरे पास अभी बा और चंद्रशंकर[1] और नामर हैं। काका अभी यहां हैं। किशोरलाल और गोमती[2] चले गये। स्वामी[3] अब आयेंगे। ताराबहन[4] भी आयेंगी। पन्नालाल[5] नानीबहन गंगाबहन अहमदाबादमें

---

१ श्री चंद्रशंकर शुक्ल। श्री काकासाहबके विद्यार्थी और गुजरात विद्यापीठके कार्यकर्ता। थोड़े वर्ष पहले गुजर गये।

२ श्री किशोरलाल मशरूवाला और उनकी पत्नी श्री गोमतीबहन।

३ स्वामी अर्थात् स्वामी आनंद। अेक समय नवजीवन मुद्रणालयके और 'यंग जिंडिया' नवजीवन तथा हिन्दी नवजीवन साप्ताहिकोंके व्यवस्थापक थे।

४ श्री ताराबहन श्री रमणीकलालभाजी मोदीकी पत्नी।

५ श्री पन्नालालभाजी झवेरी आश्रमके पास स्वतंत्र बंगलेमें रहते थे। उनकी पत्नी श्री नानीबहन और सौतेली मा श्री गंगाबहन झवेरी। श्री महादेवभाजीकी पत्नी श्री दुर्गाबहन मेरे साथ जेलमें थी। तू बाको

है। आश्रम सदाके लिये हरिजन-निवास हो जायगा। अुसमें अुनका (हरिजन-सेवक-संघका) दफ्तर वगैरा चला जायगा। यह सब तूने पढ़ा होगा। तुझे और दूसरी सब बहनोंको अच्छा लगा होगा।

महादेवके लम्बे पत्र आते रहते हैं। वे बेलगांवमें पुस्तकालय खोलकर बैठे हैं। अुनकि पास अुनके पत्र आते होंगे। देवदास मुलतानमें आनन्द कर रहा है। प्यारेलाल नासिकमें है। बा तैयारी कर रही है।

लक्ष्मीबहनके पास ४ से अधिक लड़कियां हो गयी हैं। द्वारकानाथ अुनके सहायक हैं।[2] नर्मदा नालवाड़ीमें विनोबाके पास है।

प्रभुदासका विवाह बुधवारको हो गया। अुसे संगिनी जैसी चाहिये वैसी मिली है। २४ वर्षकी है। गुरुकुलमें पढ़ी है। होशियार मालूम होती है।

मेरी यात्रा ८ तारीखको शुरू हो रही है। सब बहनें आनंदमें होंगी और प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करती होंगी। अधिक तेरा पत्र आने पर।

बापूके सबको आशीर्वाद

हमारे साथ सजा हुयी थी परन्तु महात्माजीके अुपवासके समय अुन्हें छोड़ दिया गया था। बादमें पू महात्माजीके हरिजन-कार्यमें लगते ही पू बा भी जेलमें आ गयी। पत्रमें तैयारी का जो सुझाव है वह जेल जानेकी तैयारीका है।

१ बेलगांवकी जेलमें अनासक्तियोग का अंग्रेजी करनेके लिये अुन्होंने बहुत अध्ययन किया था।

२ आश्रमकी तमाम लड़कियां तथा श्री लक्ष्मीबहन खरे वर्धा जाकर महिला-आश्रममें रही थीं। लक्ष्मीबहनकी सहायता श्री द्वारकानाथ हरकरे करते थे।

१४१

२९-११-३३

चि॰ प्रेमा

तेरे समाचार सुशीला देती है। और लोग भी देते हैं। मेरा पत्र तुझे मिल गया यह बहुत अच्छा हुआ। तूने कमाया या खोया जिसका सही हिसाब तो तू बाहर निकलकर ही लगा सकेगी। लेकिन अनुभव अमूल्य है, जिसमें संदेह नहीं।

तेरा कार्यक्रम मैं समझ सका हूं। तू शरीरको संभालकर रख सकी यह बहुत अच्छा हुआ। जिसकी कुंजी तेरे हाथमें थी। उसका उपयोग तूने ठीक किया दीखता है।

हरिजन-सेवाके बारेमें तो क्या लिखूं? (प्रयत्न) चल रहा है। लोगोंका अपार प्रेम अनुभव कर रहा हूं। मेरा शरीर भी खूब काम दे रहा है। वजन ११ तक पहुंच गया है। यह कैसी वैसी बात नहीं है। चंद्रशंकर महादेवकी जगह लेनेका महाप्रयत्न कर रहे हैं। मीराबहन तो है ही। रामनामको तू नहीं जानती। जानकीबहनकी ओम[1] है। वह बहादुर लड़की है। और उसकी बुद्धि भी सुन्दर है। ईश्वरने उसे शरीर भी बढ़िया दिया है।

अब अधिक लिखनेका समय नहीं है। दूसरे बहुतसे पत्र लिखने हैं। मौनमें ही अधिकांश पत्रव्यवहार कर सकता हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१ ओम अर्थात् उमा — श्री जमनालाल बजाज और श्री जानकी देवीकी छोटी पुत्री।

१४२

[मैंने अेक पत्रमें पू. महात्माजीको बताया था कि जेलसे छूटनेके बाद लम्बा पत्र लिखूंगी।]

१५-१-३४

चि. प्रेमा,

तुझे तो अितना ही लिखना है कि तूने जो लंबा पत्र लिखनेका निश्चय किया था अुसकी मैं प्रतीक्षा करूंगा।

किसन[1] आनंदमें है। जितनी मेरी अिच्छा है अुतना ध्यान मैं अुस पर नहीं दे सकता।

'हरिजन' के सारे अंक पढ़ लेना। गुजराती और अंग्रेजी दोनों।

बापूके आशीर्वाद

१४३

[छूटनेके बाद तुरंत ही जेल जानेकी सलाह महात्माजीने हम सबको दी थी। अिसलिअे मैं अुनसे या सुशीलासे भी मिलने नहीं गयी। अहमदाबादके पास भी काकासाहबके साथ ही छावनीमें रही और चौथे दिन पकड़ी गयी। भी गुरुवार मुझे मिलने आये थे। चार दिन साथ रहे। मेरी गिरफ्तारीके बाद वे बम्बई गये। मैं बाहर थी अुस अरसेमें पू. महात्माजीको मैंने लम्बा पत्र लिख डाला। लीलावतीबहन मेरे साथ पकड़ी गयी। बाकी बहनें बादमें आ पहुंचीं।]

---

१ किसन आन्दोलनका काम करती हुअी पकड़ी गयी और नासिक जेलमें पहुंच गयी। वहां अुसकी तबीयत बिगड़ गयी थी। वहांसे छूटनेके बाद अुसके कुछ मास शरीर और मनको सुधारनेमें बीते। फिर पू. महात्माजी हरिजन-यात्रा पर निकले तब अुनकी अनुमति लेकर किसन यात्रामें शामिल हो गयी और लगभग पांच महीने तक अुनके साथ भ्रमण करती रही।

२८-१-३४

चि० प्रेमा

तेरा पत्र अभी अभी पूरा पढ़ सका। तीन बारमें पढ़ना पड़ा।

मैं तो जानता ही था कि तू मुझसे मिलने आनेका विचार नहीं करेगी। परन्तु जब मैंने सुना कि तेरी आनेकी अिच्छा हुअी है तब मैंने संयमकी आवश्यकता बताअी परन्तु आनेसे रोका नहीं। तुरंत मन्दिरमें पहुंच जानेका विचार ही तुझे और दूसरे प्रतिज्ञा लेनेवालोंको शोभा देता है। परन्तु जिनके मन विह्वल हो गये हों अुन पर जबरदस्ती थोड़ी ही की जा सकती है?

तेरे पत्रसे मनमें प्रश्न अुठता है कि यह पत्र तुझे मिलेगा या नहीं।

तेरी पूनियोंका सूत बहुत प्रेमसे संभालकर तो रखा ही था। अुस पर महादेवके सुन्दर अक्षरोंमें लिखी हुअी चिट्ठियां भी हैं। परन्तु अुपवासमें अुसका क्या हुआ जिसका मुझे ख्याल नहीं है। संभव है महादेवने संभालकर कहीं रख दिया हो। महादेवको अिस समय पत्र लिखनेकी सख्त मुमानियत है, अिसलिअे पूछताछ भी जरा मुश्किल है।

तेरा काता हुआ जो सूत है, मुझे तो अुसको रखना चाहिये। रामजी सुन लेगा।

मैं देखता हूं कि तू काफी पढ़ रही है। अिच्छा हो तो तुलसीकृत रामायण, बाअिबल और कुरान ध्यानपूर्वक पढ़ लेना। अुर्दू शुरू किया है, अुसे पूरा किया जा सके तो कर लेना। तूने समयका सुन्दर अुपयोग किया है।

तेरे पत्रमें अभी बहुत कुछ बतानेको रह गया है। मुझे आशा है कि तूने दूसरा पत्र लिखा होगा।

शीलावतीका तो जैसा ही हाल है जैसा तूने लिखा है। अुसके भविष्यके बारेमें कुछ नहीं कहा जा सकता।

हरिजन के अंक पढ़ लेनेकी सिफारिश मैंने अिसीलिअे की थी कि अिन महीनोंमें अिस प्रश्नके बारेमें जो हुआ अुसे तू जान ले। परन्तु फुरसत न मिली हो तो पढ़नेकी कोअी बात नहीं।

अब शायद मुझे क वर्ग मिलेगा।[1] अगर मिले तो मुझे अच्छा लगेगा।

किसनका मन और शरीर ठीक ही गया दीखता है। अभी कमजोर तो वह है। अुस पर कामका बोझ डाला जा सके अैसा मुझे नहीं लगता। अुससे जितना हो सकता है अुतना काम कर लेती है। परन्तु वह जल्दी ही थक जाती है। अुसे खूब सोनेकी जरूरत है। यहाँ अुसे जो सोहबत मिलती है वह अुसके अनुकूल दीखती है। ओमसे अुमरमें लगभग दुगुनी होने पर भी किसन अुसके साथ खूब घुल-मिल गयी है। जिसमें मुख्य भाग किसका है, यह कहना कठिन है। दोनों बहुत मिलनसार दीखती हैं। किसन मुझे २८ वर्षकी लगती ही नहीं।

तेरा बेलसे लिखा हुआ पत्र मिला ही नहीं। अपने बारेमें तो क्या लिखूं? मेरा शरीर अच्छा है और कामका बोझ काफी अुठा सकता है। लिखनेका समय मुश्किलसे ही मिलता है।

बापूके आशीर्वाद

१४४

[मैंने अुपवास किये और औश्वरसे प्रार्थना की कि वह मुझे मार्ग बताये। अैसा भान पड़ा कि औश्वरने मेरी प्रार्थना मंजूर की। ५ महात्माजी जेलसे छूटे। व्यक्तिगत कानून-भंगकी योजना तैयार की गयी और आश्रमको अुसमें होम दिया गया। अुसके साथ ही आश्रमकी अंतिम टोली (बाकी रही सब बहनें और कुछ बड़ी लड़कियां) जेल पहुंची। हमें तो गांवसे बुलाकर पकड़ा गया जिसलिये कानून-भंगका 'रोमांस' अनुभव करनेका सौभाग्य कहांसे मिलता? परन्तु जेलमें मुझे बहुत आराम मिला और वाचन-लेखनके लिये काफी अवकाश मिला। दो बारके कारावासको मिलाकर ११॥ महीनेमें मैंने लगभग ६ ग्रंथ पढ़े। जेल की मेस्सके दो बड़े ग्रंथों (१) Outline of History (२) The Work, Wealth and Happiness of Mankind का मराठी अनुवाद किया।

---

[1] मुझे दोनों ही बार जेलमें क वर्ग मिला था।

में रोज भी कक्षामें छेड़ी थी स्वयं बुई भरती थी सूत कातती थी और जेलका काम नियमानुसार करती थी। आश्रममें ११८ पौंडसे अधिक वजन कभी नहीं हुआ था। जेलमें वह १२८ पौंड तक पहुंचा! जेलके अधिकारी छोटे-बड़े तथा अपराधी कैदी मेरे प्रति सद्भावनासे सद्व्यवहार करते थे और मेरे साथकी बहनें भी जो आश्रममें मेरे प्रति अविश्वास या अरुचि प्रगट करती थी निकट परिचयमें आकर प्रसन्न हुयी और सारी गलतफहमी दूर हो गयी! जैसा बहुत ही सुन्दर अनुभव मिला।

बात यह थी कि जेलमें मैं भी सबकी तरह साधारण कैदी थी और सबके साथ रहती थी। मेरे पास किसी प्रकारकी जिम्मेदारी नहीं थी। मैंने अनुभवसे देखा है और मैं जिस निर्णय पर पहुंची हूं कि सत्ताभाव क्रमावह और विद्वेष फैलानेवाली वस्तु है। फिर वह राजनीतिक हो या सामाजिक शिक्षा-सम्बन्धी हो या धार्मिक। आम तौर पर लोग अनुशासनका पालन करनेवाले वस कार्य-तत्पर और सुघनी नौकरोंको चाहते हैं। परन्तु जैसा मालिक मिल तो मुझे पसन्द नहीं करते! वे यह तो चाहते हैं कि सेवा-तत्पर साथी मिलें परन्तु स्वयं जैसे बनना नहीं चाहते। अपने पर दूसरोंका या अपना किसी भी तरहका अंकुश मुझें अच्छा नहीं लगता परन्तु यह विच्छा वे अकर रखते हैं कि दूसरे मर्यादाकी रक्षा करें। सार यह कि प्रत्येकको स्वच्छाचार अधिक पसन्द होता है! मानव-मन अेक पहेली ही है।

आश्रममें मेरे पास किसी प्रकारकी सत्ता या अधिकार था ही नहीं। फिर भी अनेक कामोंकी जिम्मेदारी मेरे सिर पर आ पड़नेसे समुदायसे काम करवानेका कर्तव्य पैदा हुआ था। दिन-रात बजनेवाले आश्रमके घंटेके कम्पन टकोरोंके साथ कामोंका मेल बिठाना ही पड़ता था। पीढ़ियोंसे हमारे समाजमें सामूहिक वातावरणका मान नहीं रहा है। यह नया ढंग आश्रमवासियोंको सिखाने जितना नैतिक अधिकार अथवा योग्यता भी मुझमें नहीं थी। जिसलिये अब जिम्मेदारी वापस ले लेनेकी मेरी प्रार्थना पू० महात्माजीने स्वीकार नहीं की तो मेरी दशा सरौतेके बीच सुपारी जैसी हो गयी। परन्तु भगवानने लाज रख ली। अन्तमें यह सारा पाप धुल गया और मैं मुक्त हो गयी।

/

मैंने देख लिया कि सत्ताके पद पर व्यक्ति रहा कि अुसके दोष ही देखे जाते हैं। मुझमें जो दोष थे वे ही आसपासके लोगोंको काटेकी तरह लटकने लगे। जिम्मेदारीसे मुक्त हुभी कि तुरन्त ही परिस्थितिमें परिवर्तन हुआ। भिससे मने यह सार निकाल लिया कि न मतस्यावो मच्छेत् । मैं नेता या अधिकारी होनेके योग्य नहीं हूं।

बहनोंके साथ मेरे स्नेह-संबंध बढ़ हुअे। यों तो सब बहनें सज्जन ही थीं परन्तु आश्रममें हमारे बीच अेक प्रकारका आवरण आ गया था।

प्रारंभमें मुझे आन्दोलनमें जाने देनेसे पू महात्माजीने अिनकार कर दिया। वह भी औश्वरीय योजनाके अनुसार ठीक ही था अैसा मैं मानती हूं। आश्रममें मुझे जो तालीम मिली जो अनुभव प्राप्त हुअे पू महात्माजीसे निरंतर वात्सल्यभरा मार्गदर्शन मिलता रहा अुससे मेरा जीवन समृद्ध हुआ है। मैंने अपना जीवन अुन्हें अर्पण कर ही दिया था। तब मेरे लिअे तो वे जिस परिस्थितिमें रखें मुसीमें रहना और वे जो संस्कार दें अुन्हें शिरोधार्य करना धर्म-पालन जैसा हो गया था। प्रारंभमें मैं कारावासकी अपनाती तो जिस अमूल्य धनकी प्राप्ति मुझे होती ही नहीं। मैं तो तालीम लेने ही आश्रममें आभी थी। वह तालीम मुझे आश्रममें मिली और जीवनभर काम आभी। अुस समयकी मेरी आयु तालीम लेकर योग्य बननेकी ही थी। मुझमें निष्ठा थी अुत्साह था शक्ति थी। जिसलिअे मैं पूज्य महात्माजीके पास समय पर ही पहुंची और योग्य संस्कार ही मैंने प्राप्त किये। यदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् अैसा सात्त्विक सुख मैंने प्राप्त किया।

किशन पू महात्माजीके साथ पांच महीने रही। बादमें परमीकी छुट्टियोंमें सुशीला पू महात्माजीके पास अेक महीने रह आभी। तब अुनकी हरिजन-यात्रा मुल्कमें चल रही थी। सुशीलाके साथ मेरा पत्रव्यवहार नियमित रूपसे होता था। पू महात्माजीके साथ तो बीच बीचमें पत्र व्यवहार होता रहा।

आन्दोलनके पूरे जोरके समय मुझे अेक जानेका मौका नहीं मिला था परन्तु व्यक्तिगत सत्याग्रहके समय अेक जाना नसीब हुआ। अुसमें केवल सैनिकका कर्तव्य पूरा करना था रोमांस जैसी कोभी चीज

अुसमें नहीं थी। दूसरे कारावासका समय आधा बीता था कि पू. महात्माजीका वक्तव्य पढ़नेको मिला। अुन्होंने आन्दोलन वापस ले लेनेका निर्णय घोषित किया था। जिससे मुझे बहुत बड़ा आघात लगा। मुझे लगा — हम बिलकुल नालायक साबित हुअे! पू. महात्माजी जैसे महान आध्यात्मिक शक्ति रखनेवाले कुशल संग्राम-वीरको हार स्वीकार करनी पड़ी! देशकी सारी तपस्या पर पानी फिर गया!" वहां मुझे अंग्रेजी अखबार 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' मिलता था। तमाम साथी बहनोंको वह वक्तव्य मैंने पढ़कर गुजरातीमें समझाया। मगर मुझे अपार दुःख हुआ। अुस समय मुझे तंबूमें रखा गया था। तंबूमें जाकर मैं रो पड़ी। मुझे सांत्वना देनेके लिअे वहां जानेकी हिम्मत कोअी बहन न कर सकी। जेलर भी घुलाकर अुस दिन जेल-समितिके सदस्योंको साथ लेकर वहां आये थे। मेरा मुंह देखकर मेहमानोंको शंका हुअी कि मुझे कुछ न कुछ दुःख है। वे पूछने लगे — आपको कोअी शिकायत है? हमें बताअिये। हम अुसे दूर करेंगे।" परन्तु मैंने सिर हिलाकर अिनकार कर दिया। सारा दिन रोनेमें गया। दूसरे और तीसरे दिन भी मेरी यही स्थिति रही। मनमें पू. महात्माजीके ही विचार आते थे। "असहकार-सत्याग्रहके समयकी परिस्थिति कितनी भव्य थी! और आज कैसी गमगीनी है! देशकी ताकत बिलकुल घट गअी है। हमारे नेताओंको कितना दुःख होता होगा!" अैसे विचारसे मैं बेचैन हो गअी थी। दूसरे दिन जेलर मुझेलकर मुझे मिलने और सांत्वना देने आये और कहने लगे "मुझे आश्चर्य होता है। यहां पुरुष-विभागमें सभी संतोष मान रहे हैं और जल्दी छूटनेकी बातें कर रहे हैं। और आप अितनी गमगीन क्यों हैं? दुनियामें अुतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं! वगैरा। जेलके सब अधिकारियोंको अिस घटनाका पता चला अिसलिअे सभी मेरे प्रति विशेष सहानुभूति दिखाने लगे। जेलमें साथी बहनने कहा "आपकी गमगीनीके कारण यहांका वातावरण भी गंभीर हो गया है। नहीं तो हम सब छूटनेका आनन्द लूटतीं।

मैंने सुशीलाको पत्र लिखा तब अपनी हालत मुझे दताअी। अुसने पू. महात्माजीसे बात की। अुन्होंने तुरंत पटना जाते समय रेलसे मुझे पत्र लिख भेजा और छूटनेके बाद मिलनेकी आज्ञा दी।

मेरे स्मरणके अनुसार १९३४ की जुलाजीकी पहली तारीखको हम छूटे। स्मरण सिलसिलेमें रहा कि अंग्रेजी तारीखके अनुसार अुस दिन मेरी वर्षगांठ थी। जेलर श्री व्यासने मुझे गुलाबके फूलोंका अेक सुन्दर गुलदस्ता विदाजीके समय भेंट किया।

पू. महात्माजी अुस समय भावनगरमें थे। श्री नारणदास काका हम सबसे मिलनेके लिये साबरमती आश्रममें आ गये थे। अुनसे मिलनेके बाद हम अधिकांश बहनें पू. महात्माजीसे मिलने भावनगर गजी। बातें हुजी। पू. महात्माजीने सबसे कह दिया कि "सत्याग्रह आश्रम तो बंद हो गया है। वह फिरसे शुरू होनेवाला नहीं है। मैं भी अब यहाँ रहूँगा। तुम सब अपने अपने भावी जीवन-क्रमके बारेमें स्वतंत्र निर्णय कर लेना।"

आन्दोलन वापस लेनेका निर्णय पढ़ा तभीसे मेरे मनमें भविष्यके विचार भी प्रवेश तो कर ही रहे थे। अैसा लगता था कि छूटनेके बाद हमें अपना पथ स्वयं ही खोज लेना पड़ेगा। रोज प्रातःकालीन प्रार्थनाके बाद मैं बगलामुखी धरणमें जाकर भविष्यका मार्ग बतानेके लिये दीनतापूर्वक प्रार्थना करती थी। जिस प्रकार अंत तक चलता रहा। बादमें ग्रामसेवाके लिये पू. महात्माजीने पुकार की जिससे मुझे भी लगा कि महाराष्ट्रमें जाकर ग्रामसेवाके काममें लग जाअूं तो अच्छा। जिसलिये जब भावनगरमें पू. महात्माजीने मुझसे कहा कि "मैं जमनालालजीका सन्देश तुझे कहना चाहता हूं। महिला-आश्रमका संचालन करनेके लिये अुन्होंने तेरी माग की है, और अपनी जिच्छा तुझे बतानेको मुझे प्रेरित किया है। तब मैंने अुनसे कहा "सत्याग्रह आश्रममें संस्था-संचालनका अनुभव मैंने तीन वर्षसे अधिक किया। अुस कामके लिये मेरी अयोग्यता सिद्ध हो गजी। अब अैसा काम मैं कभी पसन्द नहीं करूंगी। मैं महाराष्ट्रमें बसकर ग्रामसेवा करना चाहती हूं।" जिस पर अुन्होंने कहा ग्रामसेवा तो मुझे प्रिय ही है। जिसलिये अगर तू वह काम करना चाहती है तो मुझे पसन्द है। अैसा ही करना और मुझे लिखती रहना।

मुझसे विदा लेकर मैं राजकोट गजी और सुशीलाके पास थोड़े दिन रही। महाराष्ट्रका परिचय मुझे नहीं था जिसलिये श्री पुरन्दरेको बंबजी पत्र लिखकर मैंने अपनी जिच्छा बताजी और मेरा मार्गदर्शन

करनेकी प्रार्थना की। अुनका जवाब आया महाराष्ट्रमें तुम्हें सेवाकार्य करना हो तो अेक ही व्यक्ति है जिसकी मददसे तुम काम कर सकती हो। वह है श्री शंकरराव देव। अुनसे मिलकर मैंने तुम्हारी बात की है। वे महाराष्ट्रमें आश्रमकी स्थापना करके सेवाकार्यका संगठन करना चाहते हैं। अुसमें तुम्हें प्रवेश देनेमें अुन्हें आनंद होगा। वे १५ तारीखको बम्बअी आनेवाले हैं। अिसलिअे तब तक तुम यहां आ जाना। यह पढ़कर मुझे बड़ा सन्तोष हुआ और मैं तुरन्त ही बंबअी पहुंच गअी। मैं जिसनके घर ठहरी थी। वहां श्री धुरन्धर श्री शंकरराव देवको ले आये और परिचयके पश्चात् अुनके आश्रममें शामिल होनेका मैंने निश्चय कर लिया। अुसी दिन शामको मैंने श्री धुरन्धरके साथ महाराष्ट्रके मुख्य नगर पूनामें प्रवेश किया। मुझे शंकररावजीके पास पहुंचाकर और बातचीतके बाद निर्णय हो जाने पर दूसरे दिन वे बम्बअी लौट गये।

खोजके बाद पूनासे १९ मील दूर घाट पर बसा हुआ सासवड़ गांव आश्रमके लिअे पसन्द किया गया और ५ अगस्तको दूसरे आश्रमी बन्धुओंके साथ मैं वहां पहुंची। अेक बड़ा पुराना मकान आश्रमको मिला था। अुसमें हम चार पहले सदस्य रहने लगे। धर्माध्यक्ष थे आचार्य भागवत। श्री शंकररावजी महाराष्ट्र प्रांतीय कांग्रेसके अध्यक्ष थे। अिस-लिअे अुनका मुकाम तो पूनामें ही रहता था। परन्तु वे समय समय पर सासवड़ आ जाते थे। अिस प्रकार मेरे नये जीवनका प्रारंभ हुआ।

पूज्य महात्माजीने व्यक्तिगत सत्याग्रहकी आज्ञा देनेसे पहले आश्रमी बहनोंको हमारी आखिरी टोलीको अुपदेश दिया था "यद्यपि सत्याग्रह आश्रम बन्द होम दिया गया है फिर भी अुसने तुम सबके जीवनमें प्रवेश कर लिया है। स्थावर आश्रम मिट गया है, परन्तु अुसका जंगम स्वरूप तुम सब हो जिसलिअे जहां जाओ वहां तुम आश्रमका वातावरण पैदा करना। ये शब्द मेरे हृदय पर हमेशाके लिअे अंकित हो गये। अिसलिअे क्या जेलमें और क्या बाहर, मैं अपने भीतर और आसपास आश्रमका वातावरण पैदा करनेका प्रयत्न करती थी। अतः जेलसे मुक्त होनेके बाद फिरसे पारिवारिक जीवनमें प्रवेश करना मेरे लिअे असंभव था। आश्रमके नियमोंका मैं सख्तीसे पालन करने लगी।]

१७-५-३४

चि॰ प्रेमा

अितने महीने किसन मेरे पास रही अब सुशीला है। अिसलिअे तेरे बारेमें कितनी कैसी और कितनी बार चर्चा हुअी होगी अिसकी कुछ न कुछ कल्पना तो तुझे होनी ही चाहिये। यह वस्तुस्थिति होनेसे तुझे सन्देशा भी क्या भेजे जाते? आज लिख रहा हूं अिसके दो कारण हैं। अेक तो यह कि सुशीला लिखनेके लिअे मुझे प्रेरित कर रही है। दूसरा अुसकी दी हुअी खबर। मेरे निर्णयसे तू तीन दिन रोअी? मैं मानता था कि यह निर्णय सुनकर तुझे आघात तो पहुंचेगा परन्तु साथ ही तू नाचेगी और गायेगी क्योंकि तू अुसका रहस्य महत्त्व और पूर्ण सत्य समझे बिना नहीं रहेगी। अनुभव प्रतिदिन अुसका औचित्य सिद्ध कर रहा है। अिसमें साथियोंकी अयोग्यताकी बात नहीं है। कोअी भी अयोग्य साबित नहीं हुअे। परन्तु जो कुछ प्रगट हुआ वह सूचक था और अुसने मुझे यह निर्णय करनेको प्रेरित किया। समय आने पर — और समय तो आयेगा ही — सभी साथी फिर जूझेंगे। बात अधिक शक्ति प्राप्त करनेकी अधिक संयमकी आवश्यकताकी थी। मेरे हथियार अिस समय काम न दें तो अिससे वे अयोग्य नहीं ठहरते। अुन्हें अधिक तेज करनेकी जरूरत रही होगी अुनका अुपयोग असमय हुआ होगा। अिससे अधिक नहीं समझाया जा सकता। तू छूटे तब मुझे खोजकर सीधे मेरे पास चली आना और न समझी हो तो जी भरकर मुझसे झगड़ना और मेरी बात समझना। अिस निर्णयके पीछे सबकी कसौटी है। मेरी कसौटी भी अुसमें आ जाती है। परन्तु अीश्वरकी कृपासे हम सब अुसमें पास होंगे। अब ज्यादा नहीं।

बापूके आशीर्वाद

यह पत्र चलनेवाली रेलमें लिखा है। परन्तु भी आजकी रेलें हमेशा जैसी सरल गतिसे चलती है कि अुसमें लिखनेमें दिक्कत नहीं होती।

१४५

[नये कार्यक्षेत्रकी खोजमें कुछ समय गया। क्षेत्र निश्चित हुअे बिना पू० महात्माजीको लिखती भी क्या? यह सोचकर मैंने पत्र नहीं लिखा था। परन्तु अुनका धीरज टूट गया और मुतावलीमें अेक पत्र अुन्होंने श्री सुरेन्द्रके मारफत मुझे भेजा। जिसलिअे जवाब लिखना ही पड़ा। वर्षगांठके आशीर्वाद भी मुझे चाहिये थे।]

११-७-१४

चि० प्रेमा

तूने पत्र लिखनेका वचन दिया था फिर भी नहीं लिखा। यह दुःखकी बात है। मैंने आशा रखी थी कि तू भविष्यमें क्या करना चाहती है जिस बारेमें कुछ लिखेगी। अब भी रखूं क्या?

बापूके आशीर्वाद

१४६

११-७-१४

चि० प्रेमा

तेरा काफी लंबा और स्पष्ट पत्र मिला।

माता-पिता बच्चोंके स्वास्थ्यका स्मरण या वर्णन नहीं करते। अुनकी व्याधियोंका स्मरण-वर्णन करते हैं। व्याधि केवल शारीरिक ही नहीं।

तू आश्रमके नियमोंका पालन कर रही है, जिससे मुझे आश्चर्य नहीं होता। न करती तो जरूर आश्चर्य होता।

तेरे शुभ मनोरथ पूरे हों।

वर्षगांठ तो रोज होती है। हम रोज जन्म लेते हैं और रोज मर कर फिर जन्म लेते हैं। परन्तु रूढ़िके वश होकर हम अमुक दिनको ही जन्मदिन मानते हैं। अुस दिनके और सदाके मेरे आशिष तेरे पास हैं ही।

तुझे सुन्दर नारणदासके मारफत लिख रहा हूं। जिसलिअे पांच पैसे बचा रहा हूं। नारणदास तो तुझे मिलेंगे ही। अुन्हें मुझे आज लिखना

पड़ रहा है। अिसलिअे यह पत्र सुरेन्द्रके मारफत न भेजकर नारणदासके मारफत भेज रहा हूं।

तू स्थिरता रखना। वहांका वर्णन अच्छा है। यह पत्र सुबहकी प्रार्थनासे पहले लिखवा रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

१४७

[सासवड़का आश्रम शुरू होनेके बाद वहांके जीवन-क्रमका वर्णन मैंने महात्माजीको भेजा था। श्री जमनालालजी बंबओी आये हुओे थे। मुझे बुलाकर वर्धा जानेका अुन्होंने बड़ा आग्रह किया किन्तु मैंने विनकार किया। फिर भी अुन्होंने प्रसन्न होकर ग्रामसेवा-कार्यमें भी मदद देनेका आश्वासन दिया। मेरे पिताजीका रोष अब शान्त हो गया था। अुन्होंने मुझे घर बुलाकर आशीर्वाद दिया। यह बात मैंने पू० महात्माजीको लिखी।

मैं जब सासवड़ गयी तब महाराष्ट्र और बम्बओीके लोगोंसे यह प्रवाद सुननेको मिला कि "सत्याग्रह आश्रम पू० महात्माजीके आदर्शको नहीं पहुंच सका अुसमें बहुत दोष थे। अिसलिअे अुन्होंने आश्रमको होमकर प्रकरण खतम कर दिया। यह बात मैंने पू० महात्माजीको पत्रमें लिखकर बताओी थी।]

२१-८-३४

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरी अुदारता अपार है। मैं न लिखूं तो भी तेरा काम चलेगा। परन्तु अिस अुदारताका अुपयोग करनेकी जरूरत नहीं दिखती। फिर भी बधाओी तो देनी ही चाहिये। जमनालालजीसे मिल आओी यह ठीक किया। अुनके साथ प्रार्थना की यह भी अच्छा हुआ। अुन्होंने खुश होकर खर्च अुठानेको कहा यह तो सुन्दर ही कहा जायगा। जैसा सुन्दर तेरा आरंभ है वैसा ही बादका समय भी रहे। अंत तो होगा ही कैसे?

तुम रोज चरखा देते हो यह कहकर मुझे तेरी वाक्पटुता प्रकट नहीं करनी थी। मैंने सपनेमें भी अैसी कोओी बात सोची नहीं थी। मैं तो

अभी तो जो जो काम तू कर रही है अुनके गुण-दोष ग्रामवासियोंके सामने रखने चाहिये। कांग्रेसके कामके बिना अुसका नाम मिथ्या है। काम हो तो नाम अनावश्यक है। जो लोग कृष्ण कृष्ण कहते हैं वे अुसके पुजारी नहीं हैं। जो अुसका काम करते हैं वे ही पुजारी हैं। रोटी रोटी कहनेसे पेट नहीं भरता रोटी खानेसे भरता है।

तेरा कहना ठीक ही है। अगर गांव छोड़नेका हुक्म मिले तो अुसका खुशीसे पालन करना चाहिये।[1] जो अहिंसक कानूनोंका भी विनयपूर्वक पालन करते हैं अुन्हींको कभी कानून-भंग करनेका अधिकार मिलता है। यह बात शायद ही याद रखी जाती है।

यह न मान लिया जाय कि मेरा कांग्रेसमें जाना होगा ही। मगर बहुतसी बातें पक रही हैं। वे सब लिखनेका समय नहीं मिलता। जो हो यह देखती रहना। तेरा कार्य निश्चित हो गया अितना काफी है।

किसन कभी कभी लिखती रहती है। अम्तुस्सलाम[2]के नाम तेरा पत्र[3] अच्छा है।

रामदास बीमार है, यह तो तू जानती ही है। सबको लेकर वह साबरमती गया है। बा अुसके साथ गयी है — अुसकी सेवा करने।

बापूके आशीर्वाद

---

१ स्थानीय पुलिसने ग्रामसभाकी जांच-पड़ताल शुरू की थी।

२ अेक मुसलमान बहन। अुनके पिता किसी समय पटियालाके दीवान थे। ये बहन परदा तोड़कर आश्रमवासीके रूपमें रहने और सेवा करने साबरमती आयी थीं। अुनसे मैंने अुर्दू सीखी थी। शरीरसे कमजोर होने पर भी सेवा करनेकी अुनमें बड़ी शक्ति थी। बादमें तो १९३३ में वे जेल भी गयी थीं। अुन्होंने नोआखालीमें भी बड़ा काम किया था।

३ अुर्दूमें लिखा था।

१४९

वर्धा
२०–९–३४

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। आज भी सुबहकी प्रार्थनासे पहले यह पत्र लिख रहा हूं। यह तुझ पर मेहरबानी करनेके लिअे नहीं परन्तु जितना ही बतानेके लिअे है कि अब नियमानुसार प्रातःकाल तीन बजे अुठकर मैं काममें लग जाता हूं। दिनमें पत्र लिखनेकी फुरसत कम मिलती है। मुझे कोअी जगाता नहीं और अलार्म भी नहीं है। ज्यादातर यों ही अुठ जाता हूं। यहां तो सोनेके लिअे छत है। आसपास अम्तुस्सलाम वसुमति अमला[2] या ही सब या मीरा और प्रभावती सोती हैं।

तू अपना काम बढ़ाती जा रही दीखती है। थोड़ा परन्तु खूब पक्का काम करनेकी मेरी सिफारिश है। क्योंकि काममें अधीरता काम नहीं देती। हरिजन या हरिजनबन्धु या दोनों नियमपूर्वक पढ़ना। अुनमें जिस समय दूसरे विषयोंकी चर्चा होती है।

रामदासकी देखभाल करनेके लिअे आके साबरमती जानेकी बात लिख चुका हूं न?

गीताजी की प्रति चाहिये तो भेजूं। मेरे वक्तव्य पढ़के जो विचार आयें वे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

---

१ तब पू महात्माजी मगनवाड़ीमें रहते थे।

२ जर्मन बहन कों स्पीगल जिन्हें पू महात्माजीने यह भारतीय नाम दिया था।

१५०

५-१०-३४

चि. प्रेमा

तेरे पिछले पत्रका अुत्तर मैंने नहीं दिया अैसा मेरा खयाल है।

तू मेरे मन्तव्यको पूरा समझ सकती है, जिससे मुझे सन्तोष होता है। तेरा काम तो विकसित हो रहा मालूम होता है। विस्तार न बढ़ाना जो काम हाथमें लिया है अुसकी जड़ें गहरी जमाना। हमारे कंगाल मुल्कमें हम घासके बीज बोकर अुस पर गुजर करते हैं। गेहूं आदि घासके बीज ही हैं। फल बोनेका हममें धीरज नहीं है जिसलिये गरीब अुन्हें पाते ही नहीं अमीरोंके लिये फल पोषक नहीं होते। अुनके लिये वे भोजनके बाद मुख सुवासित करनेकी वस्तु हैं। अिसी तरह हम सेवाके क्षेत्रमें कंगाल होनेके कारण घाससे सन्तुष्ट रहते हैं। जिस भूलसे हम थोड़े भी बच जायंगे तो जो फलझाड़ खड़े होंगे वे छाया देंगे और अुनके फल पीढ़ी दर पीढ़ी खाये जायेंगे। आज तो अितना ही।

बापूके आशीर्वाद

१५१

[जब बम्बअीमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ तब महाराष्ट्रके प्रतिनिधिके रूपमें मैं भी वहां अुपस्थित थी। अुस समय पू. महात्माजीसे मेरी मुलाकात हुअी थी।]

वर्धा
७-११-३४
दीवाली

चि. प्रेमा

तू मिली भी और नहीं भी मिली। तेरे अंतिम पत्रका अुत्तर तो वहीं देना था परन्तु वह हुआ ही नहीं। अब देनेकी जरूरत है या नहीं यह मैं नहीं जानता। तेरे पत्रकी मैंने आशा रखी थी। अब तुझे वही प्रश्न

अथवा अन्य प्रश्न पूछने हों तो पूछना। जिस महीने तो मैं नहीं हूं। बादका मुझे कुछ पता नहीं। सुशीलाके साथ भी बात नहीं हुआी। किन्तु अंतिम दिन बा मिली यह मुझे बहुत अच्छा लगा। अुसके साथ भी बात तो हुआी ही नहीं।

अभी नहीं है। कल राजकोट जायगी। अुसकी शिथिलता काफी बढ़ी हुआी है। शायद पहलेसे अधिक होगी। अेक भी विचार पर वह स्थिर नहीं रह सकती।

बा शनिवारके दिन रामदासको लेकर वापस आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

१५२

[बम्बआी कांग्रेसके समय श्री चंपाबहन वैद्य और श्री लीलावती बहन आसर मुझसे मिली थी। पू० महात्माजीकी माताजीके अपने अनुभव अुन्होंने मुझे बताये थे। कांग्रेस अधिवेशनमें अुपस्थित होनेसे दोनोंको पू० महात्माजीने मना कर दिया था। बहुत करके यह अनुभव अुसीके सिलसिलेमें हुआ होगा।

पू० महात्माजी जब यरवडा जेलमें थे तब मैं अुनके लिये पूनियां खुद बनाकर भेजती थी। मैंने अुनके सूतकी मांग की थी और अुन्होंने मुझे वचन भी दिया था। फिर भी अभी तक अुस पर अमल नहीं किया गया था। अब मैंने फिर याद दिलाआी। बादमें सूत मिल गया।

बम्बआीके अधिवेशनके समय डॉ० हर्डीकर (कर्णाटकवाले) से मुलाकात हुआी थी। वे दुखी थे। सेवादलके कार्यकर्ता घरबारका त्याग करके आन्दोलनमें पड़े थे परन्तु आन्दोलन बन्द होनेके बाद बहुतोंकी आर्थिक स्थिति दयाजनक हो गआी थी। जिसका अुन्हें दुःख था। खुद अुनकी कोआी मदद नहीं कर सकते थे जिसलिये भी लाचार थे। अुनका दुःख मैंने पू० महात्माजीको बताया और मार्गदर्शनकी प्रार्थना की।

पत्रोंको जानगी रखनेकी मेरी दलील पू० महात्माजीने जिस पत्रमें स्वीकार की।

श्री शंकररावजीने सासवडमें आश्रम तो खोला परन्तु सासवड कस्बेका गांव था। अुसकी आबादी अुस समय ५ थी। अिसलिये बिलकुल छोटे गांवमें आश्रम ले जानेके विचार अुनके मनमें अुठने लगे थे। अिसके बारेमें पू महात्माजीने अिस पत्रमें आलोचना की है।]

वर्धा
४-१२-१४

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरे प्रश्नोंके सयाने अुत्तर दूं तो वह सच्चे सयाने पनकी निशानी ही होगी अैसा थोड़े कहा जा सकता है!

मेरा गुस्सा तुम कोअी नहीं जानते। अुसका साक्षी मैं ही हो सकता हूं। लीलावती या गंगाबहनने जो अनुभव किया होगा अुसे मैं थोड़े ही गुस्सेमें गिना सकता हूं? मुझमें जो गुस्सा भरा है अुसे बहुत-कुछ तो मैं पी जाता हूं। पीते पीते जो बाकी रहता है वही गंगाबहन वगैरा देख सकी होंगी। जितना भी अुन्हें न देखने दूं तो मैं दंभी बन जाअूं अथवा सूखकर हाड़-पिंजर हो जाअूं। अैसा नहीं होता जिसका कारण यह है कि मैं अपने गुस्सेको जान-बूझकर रोकता हूं और आगे रास्ता करता हूं। आस पास रहनेवालोंके प्रति सावधान रहनेकी आवश्यकता नहीं समझता अिस लिये वे मेरे गुस्सेकी झांकी कर लेते हैं और मुझ पर अुनकी दया रहती है, जिसलिये वे अुसे भूल जाते हैं।

मेरे पास जो सूत बाकी रहा होगा अुसे प्रभावती भेज देगी। मेरा हिसाब तो गलत निकला। प्रभावती जिस समय बम्बअीमें है। स्वरूपरानीकी सेवा करने और जयप्रकाशसे मिलने गयी है।

के बारेमें अैसा तू मानती है, वैसा होना बहुत ही कम संभव है। किसीकी निन्दाकी बात माननेमें खूब हिचकिचाना अुसे न सुने तो अधिक अच्छा हो।

वहां दूरीकर पैसोंके लिये क्या हो सकता है? अुनके मत भिन्न मनोरथ भिन्न। जो प्रवृत्ति अुन्हें अच्छी लगे अुसे सरकार नहीं चलने देती जो चलती हो अुसमें अुन्हें रस नहीं आता। प्रजाके तंत्रमें तो जो नहीं की जा सके अुनीका समावेश हो सकता है। अुनके पैसोंकी किसी न किसी

जगह जमकर हो सके वह सेवा करनी चाहिये। जिस प्रकार मैं बहुतोंका मार्गदर्शन कर रहा हूं।

जो अीमानदारीसे धंधा करते हैं वे भी देशकी सेवा करते हैं। सेवाका दावा करनेवाले लोग भाररूप हो सकते हैं और धंधा करके कमानेवाले लोग शुद्ध सेवक हो सकते हैं।

तेरे पत्रोंके बारेमें तूने जो लिखा है वह ठीक है। जो पत्र मुझे मेरे ही पढ़नेके लिअे लिखने हों अुन पर तू खानगी लिख सकती है। जिन्हें मेरी मरजी पर छोड़ेगी अुन पत्रोंका मुझे ठीक लगेगा वही करूंगा। मैं मुश्किलसे ही पत्रोंका संग्रह करता हूं।

बुढ़ियोंका तो जो हो सके वह करना।

भगवान तुझे बहुत जिधर-अुधर न घुमाये तो अच्छा। अेक क्षेत्रमें टिका जा सके तो ही कुछ काम हो सकता है। जहां तू रहती है वह पूनाका अुपनगर ही हो तो बहुत काम नहीं होगा। परन्तु वहां जम रही है तो अेकाअेक वह जगह न छोड़ी जाय यह अच्छा होगा। परन्तु अिसमें मेरी जवाबदारी बेकार समझना। यदि वहां रहनेमें भूल हुअी हो तो वहीं चिपटे रहनेमें कोअी औचित्य हो ही नहीं सकता। भूल साबित हो जाय तो भुसे सुधारना ही चाहिये।

अहिंसासे स्वराज्य दिलानेवाला मैं कौन? यदि मुझमें अहिंसा सचमुच होगी तो अुसकी छूत लगे बिना हरगिज नहीं रहेगी। मुझे अपने पर कम श्रद्धा है, लेकिन अहिंसा पर अटूट श्रद्धा है। जगतने अिस महान सिद्धान्तको पास किया है। परन्तु अुसका आचरण बहुत थोड़ा हुआ है। मुझे तो रोज अुसके नये घूंट पीनेको मिलते हैं क्योंकि मेरे लिअे तो वही कल्पवृक्ष है। अिस दुनियामें मेरे लिअे और कुछ सम्भव नहीं है। क्योंकि सत्यनारायणसे मिलनेका दूसरा कोअी मार्ग मुझे मिला नहीं है। और अुसके मिले बिना जीवन व्यर्थ लगता है। अिसलिअे अहिंसाका मार्ग कठिन हो या सरल मुझ तो अुसी मार्गसे जाना है। यदि मेरी मृत्युके बाद मारकाट ही मचे तो समझना कि मेरी अहिंसा बहुत थोड़ी अथवा झूठी थी — अहिंसाका सिद्धान्त कभी झूठा नहीं हो सकता। अथवा यह भी हो सकता है कि अहिंसा सिद्ध करनेसे पहले रक्तकी वैतरणीमें से

हमें गुजरना पड़े। सन् २ में राजनीतिमें अहिंसा मानी मुझके बाद क्या चौरी-चौरा जिरयादिकी घटनायें नहीं हुमीं सरकारने अपने जुल्मोंमें कोअी कसर रखी है? परन्तु मेरा विश्वास है कि यह सारी हिंसा होते हुअे भी अहिंसाने अपना प्रभाव खूब डाला है। फिर भी यह समुद्रमें बिन्दु मात्र है। मेरा प्रयोग आगे बढ़ता ही जाता है। भगवान करे तेरी श्रद्धा कभी विचलित न हो।

हमारी जिन्द्रियां जो कुछ देखती हैं वह सत्य ही है, अैसी बात नहीं। अक्सर तो वे असत्य ही देखती हैं। जिसीलिअे अनासक्तिका मार्ग ढूंढा गया। अनासक्ति अर्थात् जिन्द्रियोंसे परे जाना। यह तो मुनमें रहनेवाली आसक्तिको छोड़नेसे ही हो सकता है। आजका प्रमाण मानें तो पृथ्वी समतल ही सिद्ध होगी न? सूरज सोनेकी थालीके सिवा क्या है? आंखें देखती हैं वही मगर प्रेमा हो तो मेरी मुसीबत हो जाय न? कानोंसे मेरे बारेमें जो कुछ तू सुने वह सब सच मान बैठे तो!

अब तो बहुत हुआ। मौनवाक्‌का अकाल बज गया। अब प्रार्थनाकी घंटी बजेगी। जितनेसे जो चिंत सीखा जा सके वह सीखना। १९ तारीखके बाद दिल्ली जानेका जिरादा है। वहां थोड़े समय हरिजन-आश्रममें रहनेका विचार है।

अन्तमें तो अभी अेक ही नजर आती है।

बापूके आशीर्वाद

दुबारा नहीं पढ़ा।

१५१

१६-१२-१४

चि० प्रेमा

तेरे पत्र वारपवाडाको भेजूंगा। आज भी सुबह १-४५ बजे मुठकर पत्र लिख रहा हूं। दो बजेके आसपास मुठनेकी आदत ही हो गयी है। सोना भी नौ बजेसे पहले होता है। दिनमें अेक दो बार मिलाकर आधेसे अेक घंटे तक सोनेको मिल जाता है। जिसे काफी मानता हूं।

५

दुबारा नहीं पढ़ा। लिखकर अपने लिये और जिसको लिखता हूं अुसके लिये न्याय प्राप्त कर लिया हूं। कहीं अनमेल का भास भर हो जाय तो सुधार किया जाय और शंका हो तो पूछ लिया जाय। दुबारा न पढ़ा हुआ पत्र अधूरा ही मानना चाहिये। परन्तु तेरे जैसीको न लिखनेकी अपेक्षा अधूरा लिखूं तो भी मुझे तो अच्छा लगेगा और तुझे भी अच्छा लगेगा।

मेरा दिल्ली जाना बहुत करके २७ तारीखके आसपास होगा। मैं न लिखूं अथवा अखबारमें तू न देखे तब तक वर्धाके पते पर ही लिखती रहना।

स्वप्नमें असंयम हो अुसका प्रायश्चित्त आम तौर पर अधिक सावधानी रखना और जाग्रत होने पर रामनाम जपना है। स्वप्नमें होनेवाले दोष हमारी अपूर्णताके चिह्न हैं। मतलब भी हम अुन विषयोंका मनके किसी न किसी कोनेमें सेवन करते हैं। अिसलिये निराश हों तो भी अधिकाधिक प्रयत्नशील बनें। निराशा विषयासक्तिकी निशानी होती है अभिमानकी तो होती ही है। जो रामनाम लेनेसे थक जाय — निराश हो जाय — अुसकी श्रद्धाको हम समाप्त हो चुकी ही कहेंगे न? जब कोलम्बसके साथियोंकी श्रद्धा खतम हो गयी तब वे अुसे मार डालनेको तैयार हो गये। कोलम्बस श्रद्धाकी आंखसे किनारेको स्पष्ट देख रहा था। अुसने थोड़ीसी मोहलत मांगी और वह अमरीका पहुंच गया!!' न लानेकी चीज सपनेमें आती जाय तो अुसका भी यही अर्थ है। जैसे मर्जोंके बाहरी चिह्न होते हैं। अुसका पता चले तब अुन्हें दूर करना चाहिये। “जो सब अवस्थाओंको जानती है वह निष्कल ब्रह्म मैं हूं” ऐसा हम गाते हैं। ऐसा जाननेका हम गाढ़ प्रयत्न करें तो ही अिसे गा सकते हैं। ऐसे हम नहीं बने हैं अिसीके चिह्नस्वरूप सपने आते हैं। वे हमारे लिये दीपस्तम्भका काम करते हैं।

अीश्वरकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता परन्तु प्रयत्नरूपी निमित्तके बिना भी वह नहीं हिलता। प्रार्थनामात्रकी गुंजन अैसा ही साक्षात्कार है।

विमल तेरे साथ रहती यह बहुत अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

१५४

बिड़ला मिल्स
दिल्ली
११-१२-३४

चि॰ प्रेमा

अिस समय सुबह बजनेको है। परन्तु घोर अंधकार है। हाथ ठिठुर गये हैं। यहां शिमला जैसा है। हरिजन-आश्रम बसाना है। दो कमरे खास तौर पर बनाये गये हैं। और तीन चार तंबू हैं।

तेरा पत्र मिल गया। तेरे जीमें आये वही प्रश्न पूछती रहना। मेरी फुरसतसे जितने उत्तर दे सकूंगा देता रहूंगा।

किसन कैसी है? तेरे पास कुछ समय रहने आनेवाली थी उसका क्या हुआ?

तेरा काम आगे बढ़ता ही रहेगा और रुपयेकी मदद मिलती ही रहेगी।

रामनाम रामबाण है, यह अटल विश्वास तू रखती है अतः अिस सत्यका अनुभव करेगी। सर्वत्र अंधकार दिखाओ देता हो तो भी रामनामका रटन करती ही रहना। अिससे भला ही होगा।

किसानोंकी जमीनके टुकड़ोंका प्रश्न बहुत बड़ा है। हमारे हाथमें सत्ता हो तो भी यह कठिन ही रहेगा। अभी तो हमारा प्रयोग यही देखनेका है कि सत्ताके बिना क्या करना संभव है। छोटे टुकड़े पर भी बुद्धिपूर्वक खेती हो तो उसका काम चल सकता है। यह सब प्रयोगोंसे ही करके बताया जा सकता है। (खेतीका) हमारा अपना ज्ञान भी छिछला है, अिसलिये हम पंगु जैसे हैं। अिसीलिये हम खेतीके प्रश्नको सीधे नहीं छूते। आसानीसे सुलझनेवाले और आसानीसे चलाये जा सकनेवाले उद्योगोंको ही अभी तो हमें हाथमें लेना है, ताकि किसानोंका आलस्य मिटाया जा सके और उद्योगके साथ बुद्धिका मेल साधा जा सके। दूसरा सब अपने आप हो जायगा।

आजकलकी अपेक्षा पहले लोगोंकी स्थिति अच्छी तो थी ही। यह बात सिद्ध की जा सकती है। पहले बाहरसे धन बहुत चला आता था। जमीनके अितने टुकड़े नहीं थे अितना धन कभी बाहर नहीं जाता था। कुदरत अपना काम कुदरती ढंगसे करती रहती थी। अब हमने पूरे ज्ञानके बिना प्रकृतिके काममें हाथ डाला है। और वह भी निरंकुश ढंगसे। अिसलिअे हम दुःख पा रहे हैं।

रामराज्य अवश्य काल्पनिक है, परन्तु वैसा ही कुछ न कुछ तो पहले था ही यह भी हम सिद्ध कर सकते हैं। वैसे असत्य और दारिद्र्यका पूरा पूरा लोप बिलकुल तो न पहले किसी समय हुआ और न भविष्यमें कभी होना संभव है।

पहाड़ोंकी गुफाओंमें भाग जानेकी प्रथामें दुनियासे अूब अुठनेकी बात तो भरी ही है। अिसका कुछ तो दुरुपयोग जरूर रहा होगा। परन्तु आज बिलकुल नहीं है। ऐसा करते हुअे मर जाना गुफामें रहनेके बराबर ही है।

जैसा अपने बारेमें वैसा ही दूसरोंके बारेमें। अपने बारेमें अनासक्त रहने पर भी सरदी-गरमीका भान तो रहेगा ही। ठंडमें गरमी और गरमीमें ठंड तो हम ढूंढेंगे ही परन्तु खोज सफल न हो तो रोने नहीं बैठेंगे — यही अनासक्ति है। यही बात सरदीसे कांपनेवालोंके लिअे भी है। अुनके लिअे प्रयत्न तो हम जरूर करेंगे। अुन्हें कांपते देखकर हमारे पास जो कपड़े होंगे वे अथवा अुनमें से कुछ अवश्य हम अुन्हें दे देंगे। अितने पर भी अगर वे कांपें तो हम अुसे सहन करेंगे। अुससे अधीर होकर मारामारी नहीं करेंगे। असत्याचरण नहीं करेंगे। यही अनासक्ति है।

खाली पेटका धंधा है भी और नहीं भी है। मैंने अुसे भ्रमपूर्ण कहा है।

हिंसाको छोड़कर सबसे बहुत कुछ लेने लायक है ऐसा मैं मानता हूं। परन्तु संभव है कि जो जिस समय केवल बलात्कारसे संभव होता जान पड़ता है वह स्वेच्छासे स्वीकार्य न हो सके। परन्तु हम सब पढ़ी हुअी बातों परसे अनुमान लगाते हैं यह ठीक नहीं। हमें अपना विचार स्वतंत्र रूपमें करना चाहिये। हमारे लिअे क्या हितकर है यह हमीको सूझ सकता है।

विषमताका सर्वथा नाश होना असंभव है। परन्तु अधिकसे अधिक समता तक पहुंचनेका अेक ही मार्ग है, जो मैंने बताया है। मैंने जो बताया है वह नया नहीं है। पुराना ही (कदाचित् नये रूपमें) मैं बता रहा हूं।

किसानोंके लिये यह बड़ा आश्वासन है कि सहायक सुयोग फुरसतके समयमें करके वे अपनी आयमें अच्छी वृद्धि कर सकते हैं।

कर्मका नियम समझना आसान है। जो कानून हम यंत्रशास्त्रमें सीखते हैं वही जिसमें है। सूक्ष्म शक्तियां अेक साथ काम करती हैं अुनका अेक ही सूक्ष्म परिणाम हम देख सकते हैं। यही बात कर्मोंके विषयमें भी है।

तुझे बिलकुल छोटे गांवमें जाना हो तो मजे ही जा। परन्तु जिसमें है मुसीबत तू चिपटी रहेगी तो भी काफी है। अेक जगह पूरी सफलता मिले तो वह अेक मापदण्डका काम करेगी। आज हमारे पास अैसा मापदंड नहीं है।

यहां २ तारीख तक रहूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१५५

[मेरे मुंह पर फुन्सियां हो जाती थीं। अुनका अुपाय मैंने पूछा था। पत्रमें महात्माजीने जो अुपाय बताया अुसे मैंने करके देखा। परिणाम बहुत अच्छा आया। फुन्सियां अेक बार मिटी तो फिर कभी नहीं हुईं।

हरिजन-सेवाकार्यका विरोध करनेवाले भी सनातनियोंको भार पड़ी जिसलिये पू० महात्माजीने सात दिनका अुपवास किया था।]

वर्धा
१–२–३५

चि० प्रेमा

तेरे पत्रका अुत्तर जिस बार बहुत देरसे दे रहा हूं। समय नहीं मिलता।

आज लिख-लिखकर ही हाथ थक गया है। अिसलिये बायां काममें ले रहा हूं।

मेरा शरीर दुर्बल तो हुआ होगा। परन्तु मुझे अैसा अनुभव नहीं होता। अुपवासका असर कमजोरी बढ़ानेवाला सिद्ध नहीं हुआ नहीं होना चाहिये यदि अुपवास छोड़नेके बाद सावधानीसे काम लिया जाय।

मैं मानता हूं कि मेरे मौनका असर मेरे शरीर पर अच्छा ही हुआ है। मैं अुसका पृथक्करण नहीं कर सकता।

माता-पिता अित्यादि तुमसे भिन्न गये यह बहुत अच्छा हुआ।

फुन्सियोंका अिलाज जरूर है। थोड़े दिनों तक केवल फलों और कच्ची भाजी पर रहना चाहिये। भाप लेनेसे तुरन्त मुरझा जायगी। भाप लेनेके बाद ठंडे पानीसे नहाना चाहिये। तीन बार दिनमें चमड़ी साफ हो जानेकी संभावना है। अुसके बाद दूध अथवा बिलकुल फीका दही और फल तथा कच्ची भाजी लेना चाहिये। भाजीमें मेथी पालक लोणी मठार अुत्तम है। मैं तो सरसोंकी पत्ती और मुलायम डालियां भी खाता हूं।

अीश्वरसे याचना करनेका अर्थ है तीव्र अिच्छा करना। अीश्वर हमसे भिन्न भी है और अभिन्न भी है। भिन्न है क्योंकि वह संपूर्ण है, अभिन्न है क्योंकि हम अुसके अंश हैं। समुद्रसे अलग पड़ जानेवाली बूंद यदि समुद्रसे विनती न करे तो किससे करे? परन्तु समुद्रके लिये कुछ करने या न करनेकी बात है क्या? प्रार्थना वियोगीका विलाप है, अुसके बिना देहधारी जी ही नहीं सकता।

राष्ट्रकी प्रगतिकी कुंजी हमारे हाथमें है भी और नहीं भी है। यदि हम शून्यवत् हो जायं तो ही प्रगति होगी। शून्यवत् होना हमारे हाथमें है परन्तु प्रगति हमारे हाथमें नहीं है। क्योंकि शून्य बने कि प्रगति अेकमात्र परमात्माके हाथमें रहती है।

अूधो करमनकी गति न्यारी यह शुद्ध सत्य है। कर्मका नियम है जितना हम जान सकते हैं परन्तु हम यह नहीं जानते कि वह नियम किस ढंगसे काम करता है। अितनी प्रभुकी कृपा है। सामान्य राजाके नियम भी जब हम नहीं जानते तो फिर नियमकी मूर्तिके समान परमात्माके [सारे] नियमोंको हम कैसे जान सकते हैं?

अिस लड़ाअीके शुरूमें जो जीत दिखाअी देती थी वह अेक कल्पना ही थी। पराजय भी केवल दिखावा ही था। सत्यकी नित्य विजय ही होती है अैसी जिसकी अटल श्रद्धा है, अुसके शब्दकोशमें हार जैसा कोअी शब्द ही नहीं होता।

बापूके आशीर्वाद

१५६

वर्धा,
७-१-३५

चि० प्रेमा

पत्रोंके जवाब निबटानेके लिअे मौन लिया है, अिसलिअे अितना मुझे ही लिखना पड़ रहा है। वैसे तेरा पत्र तो मेरे पास रखा ही है। आगे हाथ काममें लेने बनूं तब अथवा पूरा समय मिले तब अुसका अुत्तर दे सकूंगा।

तेरे पास जो सूत है अुसका छोटासा भी कोअी कपड़ा बुनवा सके तो बुनवाकर सीधे मणिलालको फिनिक्स भिजवा देना। अैसा हो तो ही कपड़ा अुसके पास वर्षगांठ पर पहुंचेगा। किसीके लिअे तो सुशीला मांग रही है।

मैं कारणवश पत्र न लिख सकूं तो भी तुझे नियमानुसार अपने कामका विवरण भेजना छोड़ नहीं देना है। वजन तू काफी बढ़ा रही है। यही सुन्दर है।

बापूके आशीर्वाद

१५७

[सासवड़के आसपासके खेतोंमें मैं किसानोंके साथ काम करने जाती थी। आठ बैलोंके हल चलाती थी चार बैलोंका चरस चलाती थी निराअी करती थी कटाअी करती थी ज्वारके मोटे डंठल जमीनसे अुखाड़ लेती थी। ये सब काम करनेसे मेरी हथेलियां सख्त और छाले पड़कर चमड़ी निकल जानेके कारण खुरदरी हो गयी थी। अिससे पू

वर्धा
१४-३-३५

चि. प्रेमा

अब तो तेरा दूसरा पत्र आ जानेके कारण हाथसे लिखनेका लोभ छोड़कर यह पत्र लिखवा रहा हूं।

तेरे पास रखे हुअे सूतका जाल न बन सके असमें तुझे माफी क्यों मांगनी चाहिये? मैंने जो सूत भेजा वह पूरा न हो तो असका तू क्या करे?

बसन्तकी वर्षगांठ अप्रैलमें किसी दिन है। मुझे याद नहीं। सुशीलाके पत्रमें तारीख थी।

तेरे हाथोंकी तुलना शायद मीराके हाथोंसे की जा सकती है। जिन हाथोंमें घट्ठे न पड़े हों जिनमें कभी छाले ही न पड़े हों वे हाथ किस कामके?

यहां जमनालालजीके पास जैसी मोटर नहीं घोड़ागाड़ी और बैलगाड़ी ही है।

कच्चे दूध मलाईकी पट्टियां और मिट्टी पर रखकर देखना। फुन्सियां शायद सब मिट जायेंगी।

यहां तेलकी घानी चलती है। अलसीका तेल निकालते हैं। बा वगैरा सब बहनें सारा अनाज साफ करती हैं। नौकर कोअी नहीं है। सारा काम हाथसे ही होता है। मैं हमेशा पंगतमें ही खानेको बैठता हूं।

यहांसे अेक मील पर सिंदी नामक अेक गांव है। महादेव मीरा बहन, जमनालालजीकी मदालसा और रामकृष्ण रोज असे साफ करने जाते हैं। मैं भी अेक बार हो आया था। फिर जानेका विचार है। गांवकी सफाईका सवाल हम स्वयं भंगी बनें तो ही हल होगा।

गांवका जो चित्र तूने दिया है वह जितना सजीव है अुतना ही करुणाजनक है। हमें अैसे गांवोंसे निपटना है। यह काम न तो बुद्धिबलसे होगा न पशुबलसे। केवल हृदय-बलसे ही यह हो सकता है।

आज तो जितनेसे ही जितना सन्तोष मान सके अुतना मान लेना। तेरी प्रगतिका वर्णन तो मुझे चाहिये ही।

बापूके आशीर्वाद

दुबारा नहीं देखा।

१५८

[कल्याणजीके भी नरीमानके साथ अहिंसाके विषयमें मेरी बातचीत हुआी थी। श्री नरीमानका कहना यह था कि कांग्रेसने अहिंसाको नीतिके रूपमें स्वीकार किया है, धर्मके रूपमें नहीं। जिसलिअे जब देश स्वतंत्र होगा तब सेना और सैनिक शिक्षा तो रहेगी ही। मैंने जब पू. महात्माजीको पत्र लिखा तब जिस बातचीतका वर्णन करके पूछा था कि "कांग्रेस अहिंसाको नीतिके रूपमें मानती है फिर भी अुस संस्थाका नेतृत्व आप कर रहे हैं। अैसी स्थितिमें क्या यह नहीं कहा जायगा कि आपने अहिंसाके सिद्धान्तके साथ समझौता किया है?"

पू. महात्माजी कहते थे कि अेक भी पूर्ण सत्याग्रही पैदा होगा तो वह दुनियाको हिला देगा, वह जगतका अुद्धार कर देगा। जिसका मैंने स्पष्टीकरण चाहा था। सरकार यदि यंत्र है तो यंत्रमें अहिंसासे परिवर्तन कैसे हो सकता है? यह सवाल किया था।

सासवड़ चले जानेके बाद मेरा वजन बहुत बढ़ने लगा था। लगातार आश्रममें ११८ पौण्डसे ज्यादा नहीं बढ़ता था। जेलमें १२८ तक बढ़ा गया था। परन्तु आन्दोलन वापस लेनेकी खबर आने पर घट्‌ता गया और जेल छोड़ते समय ११८ पर पहुंच गया था। सासवड़में शरीर श्रमका काम बहुत करती थी ४ बजे अुठती थी १ बजे सोती थी फिर भी वजन बढ़कर १३५ तक बढ़ा गया। जिससे मुझे संकोच होने लगा। पत्रोंमें तो महात्माजी सन्तोष प्रकट करते थे परन्तु अेक बार वर्धा गयी तब मुझे देखकर अुन्होंने आश्चर्य प्रकट किया और विनोद करने लगे। मेरी पीठ पर जोरसे अेक धप लगायी और बोले "जेलमें वजन बढ़े तो समझना चाहिये कि तेरा कारावास नहीं विलास है! सासवड़में भी यही बात है!

मेरा खयाल है कि कोओी जिम्मेदारी सिर पर न होनेसे तथा चिन्ताके बिना किसीका रोष मोल लिये बिना और प्रसन्न चित्तसे स्वाभाविक आनन्दमें मेरा काम चल रहा था जिसलिये मेरा वजन बढ़ता गया।

दिल्लीकी असेम्बलीमें बहुमतको ताकमें रखकर मंत्रीय सरकारने राज प्रतिनिधिके हुक्मसे सरकारी बिल पास कर दिया था (बिल किस बारेमें था यह याद नहीं है।) अुसके सिलसिलेमें मैंने लिखा था।]

वर्धा
५-४-३५

चि प्रेमा

आज तेरे ता ८-२-३५ और ता १०-३-३५ के दोनों पत्रोंका अुत्तर देने बैठा हूं। अब किसन कैसी है? क्या करती है? समय किस प्रकार बिताती है?

तेरा दूध बढ़ाने और चरस खींचनेका धंधा अब भी जारी है?

जिन लोगोंमें तेरा असर कम आय अुन्हें जन्म-मरणके चक्रोंसे तुझे बचाना चाहिये। सब न मानें तो भी कुछ तो मानेंगे ही।

नरीमानका और तेरा संवाद अच्छा है। यह सच है कि अधिकतर लोग अहिंसाका नीतिके रूपमें ही पालन करते हैं। परन्तु तेरे जैसे कुछ तो हैं ही जो धर्म समझकर अुसका पालन करनेका महाप्रयत्न कर रहे हैं। अन्तमें तो यह अहिंसा ही काम देगी।

भारतके स्वतंत्र होने पर भी सेना तो रहेगी ही। मेरी अहिंसामें मैं अभी जितनी शक्ति नहीं पाता जिससे लोग सेनाकी अनावश्यकताकी बात मान लें। और सेना होगी तो सैनिक शिक्षण भी होगा ही। यह तो अनुमान हुआ। अैसा होना असंभव नहीं कि यदि हम सचमुच अहिंसासे स्वतन्त्रता ले लें तो सेनाकी जरूरत न रह जाय। जैसे अहिंसाकी शक्ति अपार है, वैसे ही अहिंसककी शक्ति भी अपार है। अहिंसक खुद कुछ नहीं करता। अुसका प्रेरक अीश्वर होता है जिसलिये वह स्वयं कैसे कह सकता है कि भविष्यमें अीश्वर अुससे क्या काम करायगा? जिसलिये

यहाँ सिद्धान्तके साथ समझौतेका प्रश्न नहीं शक्तिके मापका प्रश्न है। सांपसे डरकर मैं सांपको मारूं तो मैं कोओी समझौता नहीं करता। अपनी अशक्तिका प्रदर्शन करता हूं। ओीश्वरने जितने ज्यादा शक्ति मुझे नहीं दी अथवा अैसी शक्ति पाने लायक बुद्धि मैंने नहीं की — तब नहीं किया यह कहा जायगा। समझौता तो मनुष्य जान-बूझकर करता है।

पूर्ण सत्यागही अर्थात् ओीश्वरका पूर्णावतार। तेरे मनमें क्या जिस बारेमें शंका है कि अैसा पूर्णावतार जगतको हिला सकता है? यह कहनेमें अतिशयोक्ति नहीं कि यह जगत अैसा अवतार पैदा करनेकी प्रयोगशाला है। हम सब अंधकारमें तैयारी करेंगे तो किसी दिन पूर्णावतार जरूर प्रगट होगा अैसा हमें विश्वास रखना चाहिये। तब मुझे सेनाका प्रश्न पूछना नहीं पड़ेगा।

सरकार अंध है मगर मुझे बचानेवाला तो मालिक है न?

गायन सुनने अथवा नृत्य देखनेमें दोष नहीं यदि वह अश्लील न हो। परन्तु हमारे लिये कोओी पैसे दे और हम कामें यह जरूर खटकेगा। अेकको देगा अनेकको कौन देगा? हम तो अनेक हैं। परन्तु जिसमें सब अपनी शक्तिके अनुसार बरतें।

पावरोटी सम्बन्धी महादेवका लेख संग्रहणीय है।[1]

कुओंकी सफाओीका प्रश्न बहुत बड़ा है। सीढ़ियोंवाले कुओंकी सीढ़ियां तू बन्द करा सके तो बड़ा काम हुआ माना जायगा।

तेल छाननेकी क्रिया मुझे अच्छी तरह लिखकर भेज ताकि मैं मुसे आजमा सकूं।

तेरा वजन मले ही बढ़े। खटाओीकी जरूरत है। मैंने तो यहां जिमली और प्याज दोनों शुरू किये हैं।

सुशीला परीक्षिका नियुक्त हुओी तो अपनी फीसका हिस्सा दे और परीक्षा-पत्र मौलिक तथा सरल बनाये।[2]

---

१ जेलसे भी महादेवभाओीने पावरोटी बनानेके बारेमें अेक लेख हाथसे लिखकर मुझे भेजा था।

२ मैट्रिककी परीक्षाके लिये।

मासिक धर्मके बारेमें मैंने जो लिखा है वह ठीक है। अैसी स्थिति कारिछा आनेमें बहुत देर लगती है। यह विकार अैसी सूक्ष्म वस्तु है कि हम अुसे हमेशा पहचान नहीं सकती।

जवाहरलालको छुड़वानेकी दौड़-धूप यूरोप करे यह ठीक है।

असेम्बलीके मतका आदर नहीं किया जाता जिससे मुझे निराशा नहीं होती। यह परिणाम तो ध्यानमें था ही। यह प्रवेश आवश्यक था और है।

हिन्दू-मुस्लिम अैक्यके बारेमें मौन रखता हूं क्योंकि मैं कुछ भी करनेमें असमर्थ हूं। जवराज थक गये तो अुन्होंने मौन धारण कर लिया और प्रार्थना शुरू कर दी। *अुनकी प्रार्थना फली। मेरी स्थिति जवराज जैसी* समझ। मेरी प्रार्थना चल रही है। मोक्ष तो जब आये तब सही। अुसका काल-निर्णय जाननेकी अनासक्तको क्या अुतावली है?

यहां नये आदमी बहुत हो गये हैं। रसोअीघर बिलकुल सादा हो गया है। सब कुछ भापसे पकाया जाता है। अिसलिये अेक ही बरतनमें तीनों जातके बरतन साथ साथ चढ़ते हैं। समय तो खूब बच जाता है। रोटी बनाने जितना ही पकानेको रह जाता है। रोटी बनानेकी क्रियाको भी आसान बनानेकी खोज कर रहा हूं।

तेलकी घानी चल रही है। पाखाना भी रोज साफ होता है। मैं तो अेक ही बार गया था। महादेव रोज जाते हैं।

तुझे फुरसत मिले और तेरी अिच्छा हो तब तू आ सकती है। अिन्दौर जानेकी अिच्छा हो तो तू वहां भी जा सकती है।

अब बस।

बापूके आशीर्वाद

---

१ असेम्बलीमें।

१५९

[पू. महात्माजीने अपने आहारमें प्याज शामिल किया था और लोगोंसे भी खानेकी सिफारिश करते थे। अिस पर मैंने पूछा था कि "पहले आप प्याजको ब्रह्मचर्य-पालनकी दृष्टिसे निषिद्ध मानते थे। अब क्यों अुसकी सिफारिश करने लगे?"

सासवड़में जो सेवाकार्य शुरू किया था अुसे बीचमें ही छोड़कर कहीं जाना मुझे पसन्द नहीं था।]

वर्धा,
१८-४-३५

चि. प्रेमा

आज मेरा मौनका अन्तिम दिन है। मौनमें पीछेका काम काफी निबटा लिया है। तेरा पत्र आज ही मिला।

तेरे आनेके बारेमें तेरा लिखना बिलकुल ठीक है।

लहसुन, प्याज वगैरा खानेके लिये मैं किसीको मजबूर थोड़े ही करता हूं? लोग जो चीजें खाते हैं अुनके गुण-दोष मैं बताता हूं। अिनमें मैं तो कच्चे शाकके साथ ही खाता हूं। अुसे पीसकर अुसका सत्व निकाल लेता हूं। कच्चा शाक भी मुझे तो पिसवाकर ही खाना पड़ता है।

गांवोंके लोगोंकी खुराकमें प्याजका बड़ा स्थान है। वह अेक शाक है जो अुनके लिये अमूल्य है। प्याज जहां होता है वहां घी वगैराकी अितनी जरूरत नहीं रहती। अिसलिये मैंने प्रयोगके रूपमें शुरू किया है। जिनकी मरजी हो वे खाते हैं। प्याजके बारेमें मैंने अपना विचार अिस हद तक बदला है कि जो अिसे औषधिके तौर पर खाते हैं अुनके ब्रह्मचर्यमें अिससे बाधा नहीं होती। अिसके लिये मेरे पास कोअी प्रमाण नहीं है।

लाठी वगैराके शिक्षणसे अहिंसाकी वृत्ति मंद पड़ जानेकी संभावना तो अवश्य है। लाठी रक्षाके लिये सिखाओी जाती है न? परन्तु जो सिखाना चाहता है अुसे लाठीका अुपयोग न सिखानेका नियम बनानेकी अिच्छा नहीं होती।

सफेद खादीके बजाय रंगीन खादी इस्तेमाल हो न की जाय जैसा तो मैंने नहीं किया। किया हो तो मुझे भूल समझा जाय।

स्वराज्य मिलने पर बहुतसी वस्तुएं जैसी बदल जायंगी कि आज देशी राज्योंके बारेमें निश्चयपूर्वक कुछ भी कहना कठिन है। परन्तु आम तौर पर देशी राज्योंकी शक्तिको स्वराज्य तंत्र रोकेगा नहीं ऐसा कहा जा सकता है।

कुम्हार, सुनार वगैरा सब माने जायंगे।

कल इन्दौर जा रहा हूं। २५ तारीखको वापस आ जाऊंगा।

बापूके आशीर्वाद

१६०

[सासवड़के मुसलमान समाजमें मैं मिलने-जुलने लगी थी और मुसलमान बहनोंको कुरानका मराठी अनुवाद पढ़कर समझाती थी।]

वर्धा
१-५-३५

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र अभी ही मिला। सारे वर्णन सुन्दर हैं। तू बहुतसी बातें तो निबटा ही लेगी। कुरानका अनुवाद उर्दूमें हुआ है, वह तुझे पढ़ लेना चाहिये। तब तुझे मूलकी ध्वनि मिलेगी। और उर्दू पाठावलियां भी पढ़ लेनी चाहिये। वे पंजाबमें प्रकाशित हुई हैं। हैदराबादमें भी हुई।

तेल खानेकी बात समझ ली। यहां तो मानी है। फिर भी थोड़ी मात्रामें तेल निकालना हो तो तेरी रीति काम देगी। आजमाऊंगा।

शायद ६ तारीखको मुझे यहांसे बोरसद जाना पड़ेगा। वापस यहां १७ तारीखको आनेका विचार है। बीचमें १६ तारीखको कुछ घंटे बंबईमें बीतेंगे। यह सब निश्चित हो जायगा तो तू अखबारोंसे भी जान लेगी।

बापूके आशीर्वाद

१६१

[मेरी माता मुझे दस महीनेकी छोड़कर परलोकवासी हुअीं तब मुझके कोअी तीन हजारके गहने थे। अुनसे अपना स्मारक बनवानेकी अिच्छा अुसने प्रगट की थी। वे गहने बरसों तक पड़े रहे। बादमें मेरे नाना और पिताजीके बीच यह निर्णय हुआ कि अुनमें से आधे स्मारकके लिअे काममें लिये जायं और आधे मुझे दिये जायं — अिस शर्त पर कि मैं विवाह करूं। परन्तु मैंने तो विवाह करनेसे अिनकार कर दिया और दोनोंसे कह दिया कि सारे गहने पू० महात्माजीको सौंप दिये जायं। स्मारकके लिअे अुनका अुचित अुपयोग वे ही करेंगे। दोनोंने अिस कथनका विरोध किया। मुझे समझाने लगे कि देशसेवासे रुपया नहीं मिलता अुल्टे मनुष्य कंगाल बनते हैं। तेरे शरीरमें ताकत होगी तब तक शायद लोग तेरा पालन करेंगे। परन्तु वृद्ध या अपंग होने पर कौन तेरी मदद करेगा? गहने बेचकर हम अुसका ट्रस्ट बना दें और अुसके ब्याजका अुपयोग तेरे लिअे हो अैसी व्यवस्था करनेकी हमें सहमति दे। परन्तु सच्चा सेवक अपने निर्वाहके लिअे अीश्वर पर निर्भर रहता है आगामी पूंजी नहीं रखता। सेवकके लिअे यही जीवनका आदर्श कहा जायगा? पू० महात्माजी अैसी शिक्षा देते थे अिसलिअे मैंने यही दलील देकर दोनोंकी योजना अस्वीकार कर दी। अिस पर दोनों नाराज हो गये। पू० महात्माजीको मैंने यह बात बताअी तब अुन्होंने अिस पत्रमें मेरे दोनों पूज्यजनोंके लिअे आश्वासन दिया। परन्तु अिससे अुनका समाधान नहीं हुआ। यह बात यहीं रह गअी। सन् १९४४ के बाद नाना गुजर गये। मेरे पिताजीने सभी गहने बेचकर अुनके रुपयोंका ट्रस्ट बना दिया और अुसके ब्याजसे हमारे मूल गांव कारवारके अेक हाअीस्कूलमें मेरी मांके नाम पर छात्रवृत्तियां तथा पारितोषिक देनेकी व्यवस्था कर दी जिसमें हरिजन बालकोंके प्रति विशेष पक्षपात किया गया था।]

वर्धा
११–९–३५

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। यह अुपाय हो सकता है। गहने अथवा अुनके जैसे तेरे लिअे पिताजी मुझे सौंप दें। जिसका अर्थ यह हुआ कि अुससे जो मासिक आय हो वह मैं तेरे लिअे काममें लूं। तेरी मृत्युके बाद आश्रमके ट्रस्टी अुसका अुपयोग आश्रमके लिअे करें। अैसा करनेमें तुझ पर कोअी दोष नहीं आता। तू तो अपना जीवन अीश्वर पर ही अब अर्पित रखती है। पिताजीके और मेरे बीच जो समझौता हो अुसके प्रति तू अलिप्त रह सकती है। मीराबहनका यही तो होता है। अुनके लिअे १५ से २ पौण्ड आते हैं। वे आश्रमके खातेमें जाते हैं। अुनका खर्च आश्रम अुठाता है। मेरे सुझावमें पिता निर्भय रह सकते हैं और तू अलिप्त रह सकती है।

मैं वहां २२ तारीखको आअूंगा। अुसी रातको बोरसदके लिअे रवाना हो जाअूंगा। तू बम्बअीमें तो मिलेगी ही। परन्तु बोरसद आना हो तो आ सकती है। वर्धा तो है ही।

बापूके आशीर्वाद

१५२

[मेरी माके गहनोंमें से थोड़े मेरे पास थे। अुन्हें मैंने माता तथा पिताजीकी सहमतिसे पू. महात्माजीको अर्पण कर दिया — यह कहकर कि अिस दानको मेरी स्वर्गवासी माका नाम दिया जाय।

अेक स्नेही मुझे बंबअीमें मिले थे। वे पांडिचेरी जाकर श्री अरविन्दबाबूके दर्शन कर आये थे। अुनके कुछ अनुभव और मत मैंने पू. महात्माजीको पत्रमें बताये थे और श्री अरविन्दबाबूके बारेमें अुनकी राय भी पूछी थी।

अीश्वरका कौनसा स्वरूप आपको विशेष प्रिय है, यह प्रश्न भी पूछा था।]

बोरसद
२८-५-३५

चि० प्रेमा,

तुझे पाँच घंटे कैसे ठहरना पड़ा? मगर मैंने यह नहीं सोचा था कि तू भाग जायगी। बहुत दिन बाद मिली, जिसलिये कुछ सवाल पूछनेकी और जी भरकर तुझे देख लेनेकी जिच्छा थी। तू अपने स्थान पर पहुँच गयी यह तो ठीक ही हुआ। कुछ दिन तो यहाँ रही ही थी, जिसलिये मनमें क्षोभ था।

अरविन्दबाबूके बारेमें मैं कुछ कहनेमें असमर्थ हूँ। जितना ही कह सकता हूँ कि मुझे अपना मार्ग पक्का है। हम अुनके काजी न बनें। हाँ जितना स्वीकार करें कि अुनकी छायामें रहनेवाले २ लोगोंमें ऐसे भी हैं जिनके जीवनमें अुनके सम्पर्कसे महान परिवर्तन हुअे हैं।

सब अपने अपने स्वभावका अनुसरण करते हैं।

पश्चिममें व्यक्तिगत जीवनकी पवित्रताकी आवश्यकता नहीं मानी जाती यह कहना पूरी तरह सही नहीं है। यह बात भी नहीं कि हमारे यहाँ सभी लोग अुसकी आवश्यकताको मानते हैं। हम केवल अुसकी आवश्यकताको ही स्वीकार नहीं करते बल्कि यह मानते हैं कि अन्तःशुद्धिरहित बुद्धिसे होनेवाले कार्य कितने ही सुन्दर क्यों न लगते हों तो भी अुनमें स्थायित्व कभी नहीं रहेगा। तात्कालिक परिणामोंके आधार पर ऐसे कार्योंकी तुलना की ही नहीं जा सकती। हाँ जिनका नीतिके साथ संबंध न हो अुन कार्योंमें अन्तःशुद्धिकी जरूरत नहीं होती। व्यभिचारी वकील समकोणवाली रेखा बना देगा। परन्तु अन्तःशुद्धिरहित मनुष्य अस्पृश्यताको नहीं मिटा सकता न वह लोगोंको चरखेकी तरफ मोड़ सकता है, क्योंकि दोनोंमें हृदयकी जरूरत होती है। ऐसे कामोंमें समयकी गिनती कामकी नहीं होती। सत्यनिष्ठासे किये गये कामोंके परिणाम अवश्य आयेंगे जिस बारेमें शंका ही नहीं हो सकती। जितना विश्वास न हो तो हम नीतिकी रक्षा कभी कर ही नहीं सकते।

अीश्वर तो कल्पनातीत है। जिसलिये हम जिसे पाते हैं वह हमारी कल्पनाका अीश्वर है। सच्चे अीश्वरको किसीने देखा नहीं। जिन्होंने

करने लगे। पू. महात्माजीके विचार अुन लोगोंको मैं अच्छी तरह समझा न सकी अिससे मुझे जो दुःख हुआ वह मैंने अुन्हें लिखकर बताया था।]

बापू

२१-१-३४

चि. प्रेमा

तेरे अधिकांश पत्रका अुत्तर तुरन्त नहीं दिया जा सकता था। बायां हाथ आराम चाहे तब काम पूरा हो ही नहीं सकता।

मेरी बातें जैसी नहीं होतीं जिन्हें लिखकर पूछूं। जैसी बातें तो मैं (मिलने पर) पूछ ही लेता हूं। जिससे अुस समय पूछनेकी बातें अुसी समय खतम हो जाती हैं।

(तुझे) बोरसद के बारेमें (अुद्देश्य यह था कि वहांका काम पूरा देख ले तो) भविष्यमें जैसा काम करनेमें तुझे सरल मालूम हो तुझे यह भी बताना था कि महामारीके निवारणमें भी मेरा हाथ था ही।

भूकम्पका पापके साथ क्या संबंध है, यह तो 'हरिजन' में लिख चुका हूं। अुसे पढ़ लेना। बिहारमें किसीको क्रोध नहीं आया था जितना ही नहीं सबने समझ लिया था कि यह पापका फल है। अैक्य (विश्वात्मैक्य) के सिद्धान्तसे यह सब फलित होता ही है।

सर्पादिके विषयमें भी 'हरिजन' में लिखा है। वह पढ़ लेना। आजकल लिखे जानेवाले 'हरिजन' के लेख न भाते हों तो अुन्हें ध्यानपूर्वक पढ़नेकी मेरी सिफारिस है। तेरे पास आता तो है न?

जो पति अत्यंत दुःख पा रहा है, जो सेवासे भी शांत नहीं हो सकता अुसकी मृत्यु चाहनेमें मैं पाप नहीं देखता। परन्तु यदि भानमें हो तो अुसे पूछ लेना चाहिये। वह अति दुःख पाते हुअे भी जीना चाहे तो अुसे जीने देना चाहिये।

मालिक ट्रस्टी बनें जिसका अर्थ यह है कि अपनी कमाअीका अमुक भाग रखकर बाकी सब गरीबोंको अर्थात् राज्यको अथवा जैसी ही लोकोपयोगी संस्थाको दे दें।

सब लोग अपनी कमाअी राज्यको दे दें तो किसीको साहस करनेकी प्रेरणा न मिले और मनुष्य केवल जड़ यंत्र बन जाय।

धनिक लोगोंके साथ मेरा संबंध पहले ही आया है। अुन्हें मैं दुष्ट नहीं मानता। और गरीबोंको फरिश्ते नहीं मानता। पूर्व और पश्चिममें बहुतसे अैसे धनिक मौजूद हैं जो परोपकारके लिये कमाते हैं। वे पूजाके योग्य हैं। मैं अैसे बहुतसे गरीबोंको जानता हूं जिनका संग त्याज्य है। मेरी कल्पनाके स्वराज्यमें शेर और बकरी अेक सरोवरमें अेक ही समय पानी पियेंगे। यह निरी कल्पना ही रहे, तो भी क्या? मुझे क्या चाहिये यह भी मैं न पाअूं तो मैं प्रयत्न किसके लिये करूंगा?

यह तो सच है कि मैं मनुष्योंको अच्छी तरह परखता नहीं परन्तु दूसरे जो परखनेका दावा करते हैं वे भी कहां परखते हैं? अिसलिये अपने अज्ञानके लिये मुझे खेद नहीं है। मनुष्योंको नहीं परखता अिसीलिये अुन पर विश्वास रखता हूं।

तुझे कोअी पूछे तब मेरे विषयमें तुझे अुत्तर देना ही चाहिये यह जरूरी नहीं है। तू अैसा क्यों नहीं कहती? मुझे जवाब देना नहीं आता। अुनका काम और विचार मुझे पसन्द है। जो हमें पसन्द हो अुसके पसन्द होनेके कारण हमेशा थोड़े ही बताये जा सकते हैं? अिसलिये प्रश्न तो आप अुनसे ही पूछिये। अिस प्रकारका अुत्तर दे तो बहुतसी झंझटोंसे बच जाय। मुझसे की हुअी होने पर भी जिस वस्तुको तू पचा सकी हो वह तो तू जरूर दूसरोंको देना। परन्तु जो वस्तु हमने पचा ली वह दूसरेकी नहीं हमारी ही हो गयी। जो हमारी हो गयी हो अुसके बारेमें शंका नहीं होती और अुसके बारेमें हमारे पास जवाब भी बहुत होते ही हैं।

आज अितना ही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

१६४

वर्धा
११—७—३५

चि. प्रेमा

तेरा पत्र अभी अभी मिला। तेरी वर्षगांठके दिन लिखा गया पत्र है, जिसलिये आशीर्वाद तो तू ले ही ले।

कैसी है ? कौनसी वर्षगांठ है, यह तो तू लिखती ही नहीं। तेरी शुभकामनायें अवश्य पूरी होंगी। शुभ प्रयत्न करनेवालोंके प्रयत्न निष्फल होते ही नहीं। और अशुभ प्रयत्न करनेवालोंके कभी फलते ही नहीं। फलते दीखते हैं वह केवल आभासमात्र है।

दूसरा अवकाशसे।

बापूके आशीर्वाद

१६५

[सासवडके हरिजनोंमें से महारोंकी बस्तीमें मैंने अेक सेवाकार्य किया था। अुसका वर्णन पू. महात्माजीको पत्रमें लिख भेजा था।]

वर्धा
११—८—३५

चि. प्रेमा

पत्रोंको निपटानेके लिये आज मैंने अढ़ाई घटिका मौन लिया है। अभी अेकके बाद अेक पत्रका अुत्तर देते हुये तेरा ९—७—३५ का पत्र मेरे हाथमें आया है।

केळकर[1] से मिली यह बहुत अच्छा किया। अुन्हें तेरा काम देखने दे तब तो अच्छा हो।

---

१ स्व. श्री नरसिंह चिन्तामणि केळकर। लोकमान्य तिलक महाराजके अवसानके बाद वर्षों तक महाराष्ट्र कांग्रेसके नेता।

पूरे कामका यही हाल है जो तूने लिखा है। महारोगवाला भाग मैं हरिजनबन्धु में दे रहा हूं। तेरा नाम-पता नहीं दूंगा।

पूनाके प्रस्तावका अमल होने पर मुझे लिखना।

हिटलरके विषयमें दूसरी पुस्तक कौनसी है?

अब तेरा प्रश्न — रूसके दृष्टांतका नमूनेके तौर पर अुपयोग करनेमें खतरा है। अेक तो यह कि हमें अुसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है, दूसरा यह कि अुसे बहुत समय नहीं हुआ है, तीसरा यह कि वहां जो कुछ होता है वह बलात्‌ कराया जाता है। अिसलिये हम रूसको अलग रख कर सोचें। हमारे बीच निर्णय करना अनिवार्य है। हिंसाके द्वारा न तो कुछ करना चाहिये न कराना चाहिये। अर्थात्‌ धनिकोंसे न्याय प्राप्त करनेका आसानसे आसान अुपाय यह है कि वे अपने प्राप्त किये हुये धनका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करें। अिससे यह परिणाम आ सकता है कि वैसा करते हुये वे बहुत धन अुपार्जन करनेका लालच ही छोड़ दें। यह परिणाम आये तो कोओी हानि नहीं। न आये तो भी ठीक ही है। अुन्हें जितना धन संभालकर रखनेकी झंझट किये बिना अुसका काम मिल जाता है। और यदि बहुतसे धनिक ट्रस्टी बन जायं तो हमारे लिये कहनेको कुछ रह ही नहीं जाता। तेरी दलीलकी तहमें यह शंका भरी हुअी है कि धनिक कभी अपनी संपत्तिके ट्रस्टी नहीं बनेंगे। यह शंका सच हो तो चिन्ता नहीं क्योंकि अन्तमें तो सत्यकी विजय है ही। जो अपनी जरूरतसे ज्यादा सम्पत्ति रखते हैं वे चोरी करते हैं। और चोरीका धन कच्चा पारा है। वह पच नहीं सकता। अन्तमें वह चोरका नहीं रहेगा यह विश्वास रखकर हम तो अहिंसक अुपाय ही करते रहें।

अितनेसे संतोष न हुआ हो तो फिर पूछना। तेरा प्रश्न महत्वका है / और अहिंसाको तूने पूरी तरह समझ लिया हो तो मेरा अुत्तर तुझे पूर्ण लगना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

लक्ष्मी बारडोली गयी है। प्रभावती यहां है, अमतुस्सलाम भी। बा दिल्लीमें है। लक्ष्मीको लड़का हुआ है।

१६६

[सासवड़में बहनोंके काते हुअे सूतकी खादी आश्रममें बुनवाकर सबकी अिच्छानुसार पू. महात्माजीके लिअे भेंटके रूपमें भेजी थी। पू. महात्माजी अपना सूत मुझे देनेका आश्वासन बरसोंसे दे रहे थे परन्तु वह अभी तक मेरे हाथमें नहीं आया था। अुससे पहले सासवड़से खादीकी भेंट अुनके लिअे रवाना हुआी।

पू. महात्माजी लिखते समय हाथके कागज और मोटी कलमका अुपयोग करने लगे। मैं पूनामें कलम खरीदने अेक स्वदेशी दुकानमें गयी थी। वहां दुकान-मालिकने (जो कांग्रेसी कार्यकर्त्ता थे) कहा कि "कलमें सब अरबस्तानसे आती हैं, भारतमें नहीं बनतीं।" यह बात मैंने पू. महात्माजीको पत्रमें लिख भेजी थी।

श्री जमनालालजीकी ओरसे काकासाहबने मुझे महिलाश्रमके संचालनकी जिम्मेदारी लेनेके बारेमें अनेक दलीलोंके साथ समझाया। यह काम करना मेरा धर्म है, अैसी भाषा भी अुन्होंने काममें ली। मैं स्वयं तो ग्रामसेवाका कर्तव्य छोड़नेको राजी थी ही नहीं। परन्तु शायद काकासाहबको पू. महात्माजीका समर्थन मिलेगा, अिस कल्पनासे भी शंकररावजी अस्वस्थ हो गये थे। वे मानते थे कि मैं सासवड़ आश्रम छोड़कर चली जाअूंगी तो वहांके कामको नुकसान पहुंचेगा। अिसलिअे पू. महात्माजीने अुन्हें आश्वासन देकर निर्णय किया।

हिटलरकी स्वलिखित पुस्तक *My Struggle* मैंने पढ़ ली थी और हिटलरके बारेमें अेक दूसरी पुस्तक भी मैंने पढ़ी थी। पू. महात्माजीको मैंने यह बात बताअी थी। वे भी जिज्ञासासे ये पुस्तकें पढ़ गये।

महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस समितिने किसानोंकी हालतका अध्ययन करनेके लिअे अेक किसान-समिति कुछ समय नियुक्त की थी। यह समिति कुछ अरसेमें सासवड़ आअी थी। समितिके कुछ सदस्य समाजवादी थे। आश्रममें ग्रामोद्योगी रसोअी बनी जो अुन्हें पसन्द आअी थी।]

वर्धा
१०-९-४५

चि. प्रेमा

राखी समय पर मिल गयी थी।

युद्धरके कागज मिले। अच्छे थे। मुझसे जिसे अधिक आवश्यकता थी असी खुरशेदबहन को वह भत्ता दे दिया।

खादी मिल गयी। अुसका अुपयोग करूंगा। सूत अिकट्ठा तो हो रहा है। जिस पर बहुतोंकी नजर पड़ती रहती है। और मेरी ख्वाहिश भी कितनी? ११ तार हो जायें वह दिन मेरे लिये आनंदका दिन होता है।

आज तक तो मैं यही समझा हूं कि देशी कलमें बहुत आती हैं। जिससे मैं लिख रहा हूं वह देशी मानी जाती है। तलाश करूंगा।

समाजवादियोंमें बहुतसे भले हैं कुछ त्यागी हैं कुछ तीव्र बुद्धिवाले हैं कुछ ठग हैं। लगभग सभी पश्चिमके रंगमें रंगे हुए हैं। किसीको भारतके गांवोंका सच्चा परिचय नहीं शायद अुसकी परवाह भी नहीं है।

तेरी रसोअी पसन्द आओी यह गनीमत है।

लक्ष्मीबाओी ठुसे का नाम तो याद नहीं।

काकाने मुझे ख्याल दिया है। लेकिन तेरा धर्म तो यही रहनेका है। मैंने अपने विचार नहीं बदले हैं। मुझे कायल किया गया जिससे देव अस्वस्थ हो गये हैं। अुन्हें मेरी ओरसे निर्भय कर देना। तेरी ओरसे तो वे निर्भय हैं ही।

हिटलरकी बात मुझे भी लगभग वैसी ही लगी है जैसी तू कहती है।

---

१ स्व. श्री दादाभाओ नवरोजीकी पोती और बहुत वर्षों तक पू. महात्माजीकी अेकनिष्ठ अनुयायी।

२ पूनाकी पुरानी कांग्रेस कार्यकर्त्री। सत्याग्रहमें अुन्होंने जेल भुगती थी। १९३७ के चुनावमें कांग्रेसकी तरफसे बम्बओ असेम्बलीकी सदस्या चुनी गयी थीं। सासवड आश्रममें दो वर्ष तक प्रति सप्ताह आती रही थीं। विशेषतः अुन्होंने हरिजनोंकी वैद्यकीय सेवा की थी।

' मेरी विचारसरणीमें रही अेक बात याद रखी जाय तो सब कुछ समझमें आ जाय। मेरी तटस्थता परिणामके कामके बारेमें है, कार्यके बारेमें कभी नहीं। परिणामके बारेमें भी नहीं। बल्कि फल छोड़ें या न छोड़ें यह कहनेमें परिणामके विषयमें लापरवाही नहीं है, अुसके विषयमें निश्चिन्तता है। हमारा कदम ठीक होगा तो जाये पीछे, अेक ही परिणाम आयेगा और अवश्य आयेगा।

बन्दरसे मनुष्य पैदा होनेकी बात मेरे मनमें नहीं अुतरती। अैसे मनुष्यका देह धारण करनेवाले जीवने वानरादिकी देह जरूर धारण की है, जिस बारेमें शंका नहीं।

आततायीको मारनेकी बात मुझे पसन्द नहीं। आततायी किसे माना जाय? हत्यारे वगैरा लोगोंको जेलमें डालना पड़ेगा, जिसे फिलहाल तो मैं मानता हूं। परन्तु यह अहिंसा है, अैसा कभी कहनेका मुझे स्मरण नहीं है, मेरी यह मान्यता तो है ही नहीं। मैंने यह कहा है कि आजकी परिस्थितिमें यह अनिवार्य हो सकता है। जिसका अर्थ जितना ही है कि मेरी अहिंसा अभी बहुत अपूर्ण है और जिसलिअे अैसी हिंसाका अुपाय मुझे मिला नहीं है। पतनको पतनके रूपमें देखनेमें ही सत्य है।

अहिंसाके बिना प्राप्त की हुअी सत्तामें दरिद्र-नारायणका स्वराज्य हो ही नहीं सकता। स्वराज्य-प्राप्तिमें जिस हद तक अहिंसा होगी अुसी हद तक दरिद्रोंकी दरिद्रता मिटेगी। पूर्ण अहिंसा तो न मुझमें है, न तुममें या और किन्हींमें है। परन्तु अहिंसाको माननेवाले रोज अधिक अहिंसक बनेंगे और जिससे अुनका सेवाक्षेत्र बढ़ता जायगा। हिंसाके पुजारीका क्षेत्र संकुचित होता जायगा और अंतमें अपने तक ही सीमित रह जायगा।

केळकरको निमंत्रित किया यह अच्छा किया।

बापूके आशीर्वाद

बा देवदासको लेकर शिमला गयी है। देवदास काफी बीमार था। जिस समय यहां काफी लोग रोगशय्या पर पड़े हैं। मीरा बीमार है। अमतुस्सलाम भी बीमार ही कही जायगी। नीमू और अुसके बच्चे मेरे साथ ही हैं। कमी दिल्लीसे आज आ रही है। मद्रास जायगी। प्रभा यहीं है।

१६७

[मैं सासवड़ रहते थी तबसे पहले की बर्षमें मैं किसानोंमें जितनी घुलमिल गयी थी कि बुनके साथ खेतोंमें काम तो करती ही थी अेकिन दो बार अेक किसान भाभीकी झोंपड़ीमें बुनके और बुनकी पत्नीके साथ रहने भी गयी थी। अेक बार अेक महीने तक रही और दूसरी बार पंद्रह दिन तक। वह झोपड़ी बहुत ही सुन्दर थी। और आसपासका प्रदेश जितना रमणीय था तथा वहांका मेरा जीवन भी जितना स्वभाविक था कि बुसका वर्णन पू० महात्माजीको लिखे बिना मुझसे रहा नहीं गया। बुसके अनुसन्धानमें पू० बापूजीने जिस पत्रमें लिखा कि "कोठरीका वर्णन आकर्षक है। तेरा द्वेष करनेके बहुतसे कारण है।"

पू० महात्माजीसे मैं मिली तब द्वेष शब्दका अर्थ मैंने पूछा। श्री महादेवभाभी पास ही थे। पू० महात्माजीके मनमें औीर्ष्या की भावना थी। परन्तु द्वेष शब्दमें मैंने कहा कटुता है और महादेवभाभी भी मुझसे सहमत हुअे। परन्तु पू० महात्माजी अपनी भूमिका पर अटल रहे। कहने लगे "नहीं द्वेष शब्द ही ठीक है।"

पू० महात्माजी टहलते समय लड़कियोंके कंधों पर हाथ रखकर चलते थे। जिस रिवाजका त्याग बुन्होंने जिस समय किया था। बुस त्यागका पत्रमें बुल्लेख है।]

दुबारा नहीं पढ़ा।

वर्धा
२८-९-३५

चि० प्रेमा

आज लिखाता ही रहेगा। बायां हाथ केवल सामवारको हरिजन के लिये कामसें लेता हूं। बाकी दिनोंमें बायें हाथसे लिखता हूं। अैसा करनेमें समय तो लगता है। जिसके सिवा तेरे पत्रका बुत्तर तुरन्त देना चाहिये। १६ तारीखके आसपास चक्कर आया। थोड़ा थोड़ा करके जितना चाहिये बुतना समय मुझे दूंगा। बुसमें समझ थूं तो चलेगा न?

यहां तू आमे तब रहनेके दिन तय करके न आवे तो अच्छा। वो दिन अधिक सर्में तो मले ही कम जायं। यहां पैसे तुझे सब काम तू धीरे धीरे देखे तो अच्छा होगा और बातें भी अलग अलग समयमें होंगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

मेरा सूत प्रभावतीने भिकद्ठा कर रखा है। मेजनेको भी मैंने मुझसे कह रखा है।

तेरी प्रेरणासे हिटलरकी पुस्तक पढ़ रहा हूं। केमिलके विषयमें भी मिस्स्मकी लिखी हुअी पढ़ी। हिटलरके बारेमें अेक और पुस्तक मंगा रखी है।

कोठरीका वर्णन आकर्षक है। तेरा द्वेष करनेके बहुतसे कारण हैं।

मुझे विश्वास है कि मेरे ग्यान[1]का सारा हाल तू जानेगी तब तू भी मुझसे सहमत होगी।

जमनालालजी बहुत करके दूसरी या तीसरी तारीखको आ जायेंगे।

मुझे तो अैसा याद है कि तेरे दोनों प्रश्नोंके अुत्तर मैं अपने पिछले पत्रमें दे चुका हूं। लेकिन तेरे जिस पत्रमें अपने जिस पत्रका कोअी अुल्लेख नहीं देखता। अुत्तर दुबारा संक्षेपमें दे रहा हूं।

जिन्हें कोढ़ आदि रोग हो जायं अुन्हें जबरन नपुंसक बनानेकी प्रथाको पसन्द करनेमें अमुक आपत्तियां आती हैं। जिससे अनेक प्रकारके अनर्थ पैदा होनेकी संभावना है। फिर किसी भी रोगको असाध्य मान लेना भी ठीक नहीं। संयमका प्रचार करके जितना फल पैदा किया जा सके अुतनेसे संतुष्ट रहना ही मुझे तो सुरक्षित लगता है। पग पग पर मुझे कायरताकी गंध आती है। कायर कसाअी सूतमें पड़ी हुअी गांठको चाकूसे निकालेगा। कुशल कसाअी धीरज और कलासे गांठ खोलेगा और सूतको अविच्छिन्न रखेगा। अहिंसक मनुष्य असाध्य मानी जानेवाली व्याधिसे पीड़ित लोगोंके लिये अैसा ही कुछ अुपाय करेगा।

विदेशोंमें हमारा नियमित प्रचार-कार्य मुझे तो रेकगाड़ीके साथ बैलगाड़ीकी प्रतियोगिता जैसा लगता है। हम यदि प्रचार-कार्यमें सच्ची बात पर अेक हजार खर्च कर सकते हों, तो प्रतिपक्षी करोड़ खर्च करनेवा

[1] पाठक परिशिष्टमें यह लेख देख लें।

सामर्थ्य रखता है। जिसलिअे मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि हमें अपने आप होनेवाले प्रचार-कार्यसे संतोष मान लेना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

१६८

[ता २२-९-१५ के हरिजनबन्धु में महात्माजीका अेक त्याग नामक लेख प्रकाशित हुआ। यह लड़कियोंके कंधे पर हाथ रखनेका रिवाज छोड़ देनेके बारेमें था। अुस लेखके कारण लोगोंमें चर्चा हुअी थी। अुसके बाद दिसम्बरमें पू महात्माजी खूनके दबावसे बीमार हो गये। वह सप्ताहका अनिवार्य आराम लेनेके बाद अच्छे हुअे। तब ता १-२-३६ के हरिजनबन्धु में अुनका प्रभु-कृपाके बिना सब मिथ्या नामक लेख छपा। जिस लेखसे भी समाजमें चर्चाका बवंडर खड़ा हुआ। जिस बीच मैंने सुना कि पूनाके अेक महाराष्ट्रीय मौलेसरने पू महात्माजीको अेक पत्र लिखा है। अुसका आशय भी कुछ हद तक जाननेको मिला। जिस पर मैंने पू महात्माजीको लिखकर पूछा कि पत्रकी बात सच है या झूठ?"

साबरमतीकी दो विवाहिता बहनोंने मुझे अपने अनुभव बताये थे। अेक बहनने पतिके साथ चार वर्ष तक और दूसरीने पांच वर्ष तक ब्रह्मचर्यका पालन किया था।]

९-१-३६

चि प्रेमा

अब तू पत्र लिख सकती है। हम ८ तारीखको नंदीदुर्ग जा रहे हैं।

मालूम होता है तूने अच्छे अनुभव किये हैं। हमारे मनमें शंका आनेसे हम जो लोग कांग्रेसके सदस्य-पत्र पर हस्ताक्षर करें अुन्हें मना नहीं कर सकते। बहाने बनाकर तो मनुष्य (कांग्रेसमें) शरीक होंगे ही। अन्तमें अच्छे आदमी अधिक होंगे तो सब कुशल ही होगा।

महाराष्ट्रीय प्रोफेसरके पत्रकी बात बिलकुल सच्ची है। मगर अुनकी कल्पना सर्वथा असत्य है। लड़कियोंके कंधे पर हाथ रखकर मैं अपनी विषय-वृत्तिका पोषण करता था असा अुस लेखकके पत्रका अर्थ किया जा सकता है। अुसका कहना तो भिन्न ही था।

परन्तु बात यह है कि लड़कियोंके कंधे पर हाथ रखना मैंने बंद किया अुसके साथ मेरी विषय-वासनाका कोअी संबंध नहीं। अुसकी अुत्पत्तिका कारण केवल बेकार पड़े पड़े बातें रहनेमें था। मुझे भान हुआ। परन्तु मैं जाग्रत् था और मन अंकुशमें था। मैं कारण समझ गया और तबसे डाक्टरी आराम लेना मैंने बन्द कर दिया। और अब तो मेरी स्थिति वैसी थी अुससे अच्छी कही जा सकती है। अिस बारेमें तुझे अधिक पूछना हो तो पूछ सकती है क्योंकि तुझसे मैंने बड़ी आशायें रखी हैं। अिसलिअे तू मेरे विषयमें जो कुछ जानना हो वह मुझसे जान ले।

अभी अभी मैंने जो लेख लिखे हैं[1] वे सचमुच विचार करने लायक हैं। यदि तू अुन्हें समझ सकी हो तो ब्रह्मचर्यका मार्ग सरल हो जाता है। जननेन्द्रिय विषय-भोगके लिअे हरगिज नहीं है, यह यदि स्पष्ट हो जाय तो सारी दृष्टि बदल जायगी न? जैसे कोअी रास्तेमें जब रोगीके थूकके बलगमको मणि मानकर अुसे हथियानेको ललचाये और वह बलगम है असा जानकर शान्त हो जाय वैसी ही बात जननेन्द्रियके अुपयोगके विषयमें है। बात यह है कि यह मान्यता अितनी दृढ़ या स्पष्ट कभी भी नहीं। और अब तो नयी शिक्षा अिसकी निन्दा करती है मर्यादित विषय-सेवनको सद्गुण मानती है, और अुसे आवश्यक बताती है। अिन सब बातों पर विचार करना।

वहाँका जो अनुभव तूने भेजा है वह सुन्दर कहा जायगा।

अभी तो अितना काफी है।

कदाचित् लीलावती तेरे पास आ जायगी।

बापूके आशीर्वाद

---

१ पाठक ये लेख परिशिष्टमें देख लें।

[पू महात्माजीका ता १-३-११ का लेख (देखिये परिशिष्ट-२) पढ़नेके बाद आचार्य भागवतके और मेरे बीच चर्चा हुआी। अुसमें स्वप्नावस्था, पत्र और अिसका मर्म मुझे जाननेको मिला। यह सबको होता है असा आचार्य भागवतका मत था। मैंने आग्रहपूर्वक कहा कि "पू महात्माजी छत्तीस वर्षसे ब्रह्मचर्य पालन कर रहे हैं। अिसलिअे अुनके बारेमें यह संभव नहीं है।" आचार्य भागवतने अिसे स्वीकार नहीं किया और यह बात पत्रमें छेड़नेकी अुन्होंने मुझे प्रेरणा की। मैंने संकोचपूर्वक पत्रमें पूछा अिसका विस्तृत अुत्तर पू महात्माजीने अिस पत्रमें और अिससे पहलेके पत्रमें दिया। अिससे हरिजनबन्धु के मुख्य लेखमें जो कुछ रहस्य था अुसका भी स्पष्टीकरण हो गया।

मैं साबरमतीके सत्याग्रह आश्रममें सेवाकी तालीम ले रही थी तबसे पू महात्माजी समय समय पर मेरे पत्रोंमें असा लिखते रहते थे कि मैंने तुमसे बड़ी आशायें रखी हैं। मेरी समझमें यह बात नहीं आती थी। मेरी नजरके सामने अुस समय देशकी आजादी ही अेकमात्र ध्येय था और मैं मानती थी कि अुसकी प्राप्तिके लिअे मैं कुछ न कुछ सेवाकार्य कर दिखाअूं अितनी ही आशा पू महात्माजी मुझसे रखते होंगे। बादमें मुझे पता चला कि पू महात्माजी राजनैतिक कार्यक्रम बनाते समय जनताके सामने भले ही केवल सत्य और अहिंसा पर जोर देते थे परन्तु आश्रमवासियोंके सामने वे ब्रह्मचर्यका विशेष आदर्श रखते थे (देखिये ११-२-११ का पत्र) और मुझसे भी वे यही अपेक्षा रखते थे। पहले तो मुझे यह सहज बात लगती थी। परन्तु आगे चलकर आश्रममें और बाहरके समाजमें सेवक-सेविकाओंके जीवनके विचित्र प्रसंग बातोंके भाथे मान लगे तब मुझे बेचैनी होने लगी। और अब तो पू महात्माजीके जीवनका प्रसंग जानकर मुझे कुछ डर लगा। यह बात सच है कि पू महात्माजीके जीवनका यह प्रसंग मुझे बहुत गंभीर नहीं लगा। परन्तु वे स्वयं दूसरोंके और अपने जीवनके असे प्रसंगोंसे बहुत ही गंभीर और दुःखी हो जाते थे जिससे मुझे घबराहट होती थी। अिसके सिवा

मेरा स्वभाव तो भावना-प्रधान और कुछ कुछ मूर्खतावश भी ठहरा। असलिये मेरे मनमें असे विचार आते कि मेरे हाथसे कोअी असी बात हो जाय जिससे पू. महात्माजीको भारी शोक-संताप हो तो मेरी लज्जा और पीड़ा भी अपार होगी। असलिये मैंने पू. महात्माजीसे प्रार्थना की कि "मुझसे आप बहुत बड़ी आशा न रखें। मैं प्रयत्नशील हूं परन्तु आपके आदर्श तक पहुंचनेकी शक्ति मुझमें है असा संपूर्ण विश्वास मैंने तो नहीं रखा है। भगवानको जो करना होगा वही करेगा" अित्यादि।]

नंदीदुर्ग
२१-५-३६

चि. प्रेमा,

नंदीदुर्गमें तो रोजकी डाक लगभग रोज मिलती रहती है असा कहा जा सकता है। तेरा १८ तारीखका पत्र कल शामको पढ़ा। आज अुसका अुत्तर दे रहा हूं।

तुझसे आशा तो जो रखता हूं वही रखूंगा। तू जैसा समझेगी और तेरी जितनी शक्ति होगी अुसके अनुसार तू करती रहेगी।

तूने प्रश्न ठीक पूछा है। और भी अधिक स्पष्टतासे पूछ सकती है। मुझे (स्वप्नमें) वीर्य-स्खलन तो हमेशा हुअे हैं। लेकिन अिधर वर्षोंका अन्तर पड़ा होगा। मुझे पूरा स्मरण नहीं है। यहां महीनोंका अन्तर होता है। स्खलन होनेका अुल्लेख मैंने अपने दो चार लेखोंमें किया है। यदि मेरा ब्रह्मचर्य स्खलन-रहित होता तो आज मैं दुनियाके सामने बहुत अधिक वस्तुयें रख सका होता। परन्तु जिसने पंद्रह वर्षकी आयुसे लगाकर ३० वर्षकी आयु तक — भले अपनी स्त्रीके साथ ही सही — विषय-भोग किया वह ब्रह्मचारी बननेपर वीर्यको सर्वथा रोक सके यह मुझे लगभग असंभव जैसा जान पड़ता है। जिसकी संग्रह-शक्ति पंद्रह वर्ष तक दिन प्रतिदिन क्षीण होती रही हो वह अेकाअेक यह शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। अुसका मन और शरीर दोनों दुर्बल बन चुके होते हैं। असलिये मैं अपनेको बहुत अपूर्ण ब्रह्मचारी मानता हूं। परन्तु जहां पेड़ नहीं होते वहां अरंड ही प्रधान होता है असी ही मेरी स्थिति है। यह मेरी अपूर्णता दुनियाने जान ली है।

जिस अनुभवने मुझे बम्बमीमें सताया वह तो विचित्र और दुःखदायी था। मेरे स्खलन सब स्वप्नमें हुआ मुन्होंने मुझे सताया नहीं। मुन्हें मैं भूल सका हूं। परन्तु बम्बभीका अनुभव तो जाग्रत् अवस्थामें हुआ। मुस विच्छाको पूरा करनेकी तो मेरी वृत्ति बिलकुल नहीं थी मूढ़ता जरा भी नहीं थी। शरीर पर मेरा पूरा काबू था। परन्तु प्रयत्न करते हुए भी मिन्द्रिय जाग्रत् रही। यह अनुभव नया था और अशोभनीय था। जिसका कारण मैंने बताया नहीं है।[1] वह कारण दूर होने पर (मिन्द्रियकी) जागृति बन्द ही हो गमी अर्थात् जाग्रत् अवस्थामें बन्द हो गमी।

मेरी अपूर्णताके बावजूद अेक वस्तु मेरे लिमे सुसाध्य रही है। वह यह कि मेरे पास हजारों स्त्रियां सुरक्षित रही हैं। मेरे जीवनमें अैसे अवसर आये हैं जब अमुक स्त्रियोंको मुनमें विषय-वासना होते हुमे भी मुन्हें या यों कहो कि मुझे अीश्वरने बचाया है। मैं सौ फीसदी मानता हूं कि यह अीश्वरकी ही कृति थी। जिसलिमे जिस बातका मुझे कोमी अभिमान नहीं है। मेरी यह स्थिति मृत्युपर्यन्त कायम रहे यही अीश्वरसे मेरी नित्य प्रार्थना रहती है।

शुकदेवकी स्थिति प्राप्त करनेका मेरा प्रयत्न है। मुसे मैं प्राप्त नहीं कर सका हूं। वह स्थिति सिद्ध हो जाय तो वीर्यवान होते हुमे भी मैं नपुंसक बन जामूं और स्खलन असंभव हो जाय।

परन्तु ब्रह्मचर्यके बारेमें जो विचार मैंने हालमें प्रगट किये हैं, मुनमें कोमी न्यूनता नहीं है, न अतिशयोक्ति है। जिस आदर्श तक प्रयत्नसे कोमी भी स्त्री या पुरुष पहुंच सकता है। जिसका अर्थ यह नहीं कि जिस आदर्श तक मेरे जीते जी सारा संसार या हजारों मनुष्य भी पहुंच जायेंगे। जिसमें हजारों वर्ष लगने हों तो भले ही लगें फिर भी यह वस्तु सत्य है, साध्य है, सिद्ध होनी ही चाहिये।

मनुष्यको अभी बहुत लम्बा मार्ग तय करना है। अभी मुसकी वृत्ति पशुकी है। केवल आकृति मनुष्यकी है। अैसा लगता है कि चारों तरफ

---

[1] यह कि बेकार पड़े पड़े खाते रहनेसे शरीरमें विकार पैदा होते हैं।

हिंसा फैली हुवी है। जगत असत्यसे भरा है। फिर भी जैसे सत्य और अहिंसा-धर्मके विषयमें शंका नहीं वैसे ही ब्रह्मचर्यके विषयमें भी कोमी शंका नहीं है।

जो प्रयत्न करते हुवे भी अकते रहते हैं वे प्रयत्न नहीं करते। वे मनमें विकारोंका पोषण करते हुवे भी भिवक स्खलन नहीं होने देना चाहते स्त्री-संग नहीं करना चाहते अैसे लोगों पर (गीताका) दूसरा अध्याय लागू होता है। वे मिथ्याचारी माने जायेंगे।

मैं अभी जो कर रहा हूं वह विचारशुद्धि है।

आधुनिक विचार ब्रह्मचर्यको अधर्म मानता है। जिसलिये कृत्रिम अुपायोंसे संततिको रोककर विषय-सेवनका धर्म पालना चाहता है। जिसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह करती है।

विषयासक्ति जगतमें जरूर रहेगी परन्तु जगतकी प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्य पर निर्भर है और रहेगी।

बापूके आशीर्वाद

१७०

[सन् १९३६ के दिसम्बरमें कांग्रेसका अधिवेशन महाराष्ट्र प्रान्तके फैजपुर गांवमें करनेका निश्चय हुआ था। श्री शंकररावजीके आग्रहके कारण कांग्रेस अधिवेशनके लिये स्वयंसेविका-दलका संगठन करनेकी जिम्मेदारी मैंने स्वीकार की और अुसके बारेमें पू० महात्माजीको लिखा। अुन्होंने कांग्रेस-अधिवेशनके समय तक काम करनेकी अनुमति दे दी।

पू० महात्माजी पत्रोंके लिये जो हाथ-कागज काममें लेते थे और ग्रामोद्योगी स्याही जिस्तेमाल करते थे अुससे अक्षर साफ नहीं दिखायी देते थे पढ़नेमें बड़ी दिक्कत होती थी। यह शिकायत मैंने महात्माजीसे की थी। फिर थोड़े महीने बाद मैंने अुमदके बढ़िया कागज अुन्हें भेजे थे —यह बताकर कि मुझे लिखे जानेवाले पत्रोंके लिये जिस कागजका अुपयोग किया जाय। परन्तु अुन्होंने वे सब दूसरोंके बहनोंको दे दिये।

श्री महादेवभाओी अेक दिन सवेरे प्रो. त्रिवेदीके साथ साबरमती आकर मुझसे आश्रममें मिल गये। अुस समय अुन्होंने मुझसे कहा कि "मैंने बे बुराओी खिदमतगार नामक पुस्तक गुजरातीमें लिखी है।[1] अुसका मराठी अनुवाद आप करें।" श्री शंकररावजी अुस समय वहीं थे। अुन्होंने प्रकाशनकी सुविधा कर देनेका विश्वास दिलाया। पुस्तकका अनुवाद पूरा हो जानेके बाद मैंने पू. महात्माजीसे अुसके लिअे चार पंक्तियोंकी प्रस्तावना लिख भेजनेकी प्रार्थना की थी।]

सेवाग्राम-वर्धा
२४-६-३६

चि. प्रेमा

कांग्रेस-अधिवेशन तक यह काम करना ठीक है।

कागज संबंधी तेरा सुझाव अुचित है। यह कागज तो ठीक है न?

खाद्य पदार्थ तेलके बारेमें धीरज रखकर प्रचार करती ही रहना। ये चीजें महंगी होने पर भी सस्ती समझी जायं। हम नया अर्थशास्त्र बना रहे हैं। देश देशका अर्थशास्त्र अलग होता है। अिसके सिवा गरीब और अमीरका अर्थशास्त्र भी अलग अलग होता है। अिसलिअे तू हारना मत।

बाजरेकी बात मैं जानता हूं। बीज कैसा भी क्यों न हो तो भी मिट्टी पानी आदि अनुकूल न होने पर बीज अपना गुण खो देता है।

यह है चार पंक्तियोंकी प्रस्तावना

बुराओी खिदमतगार अेक अैसी पुस्तक है जिसका अनुवाद हिन्दकी सब भाषामें होना चाहिये। गुजराती अुर्दू हिन्दीमें तो हो ही गया है। संभव है दूसरीमें भी होगा। अुचित ही है कि अब मराठीमें भी अनुवाद निकला है और अधिक हर्षकी बात यह है कि यह अनुवाद अेक सेविकाने किया है। अिस शुभ प्रयत्नके लिअे अुनको धन्यवाद। मेरी आशा है कि महाराष्ट्रकी जनता

1 यह पुस्तक नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबादकी ओरसे प्रकाशित हुआी है।

वो सुदामो चित्रमत्कार अर्थात् अीश्वरभक्तके चरित्रको प्रेमसे पढ़ें।[1]

मो० क० गांधी

किसी समाधिस्थ मनुष्यके जीनेके बारेमें श्रद्धा न बैठे तब तक अुसे मृतदेह मानकर अग्नि-संस्कार करनेके प्रयत्नमें जितना तथ्य हो सकता है, अुतना ही अीश्वर पर श्रद्धा बैठने तक नास्तिक रहनेमें है।

भावना और श्रद्धामें भेद हो तो भावना न होने पर भी श्रद्धा जमानेके लिये प्रामाणिक रूपसे प्रार्थनामें बैठनेमें लाभ है।

जंगली लोगोंमें हम रहते हों तो अपने धर्मका प्रचार न करके नीतिधर्म (सदाचार) का प्रचार करें। जब अुनके हृदय-द्वार खुलें तब अुन्हें (धर्मका) चुनाव करना हो तो करें। हम तो अुन्हें सभी धर्मोंका सामान्य ज्ञान करायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

१७१

[धर्मपाठके निमित्तसे मैंने महात्माजीके आशीर्वाद मांगते हुअे यथाशक्ति प्रार्थना की थी कि अुनकी सच्ची शिष्या होनेका परमात्मा मुझे बल दे। पुत्रकी अपेक्षा योग्य शिष्यके सामने गुरु अपना हृदय खोल देता है और अपनी गुप्त विद्या भी अुसे दे देता है, जैसे किस्से पुराणों और संत-चरित्रोंमें मैंने पढ़े थे। अुनका हवाला देकर मैंने अुन्हें लिखा था कि "श्री जमनालालजी जैसे आपको अपना पिता भले ही मानें। परन्तु मुझे लगता है कि जब तक मेरे पिता जीवित हैं तब तक दूसरे पिता ढूंढ़नेकी मुझे जरूरत नहीं। आप तो महान गुरु हैं।"

सत्याग्रहाश्रममें सब अुन्हें बापूजी कहते थे। वहां महात्माजी कहनेकी किसीको छूट नहीं थी। परन्तु मैं तो शुरूसे ही अुन्हें महात्माजी कहकर पुकारती थी। मुझे अुन्होंने कभी रोका नहीं। अेक दिन बापूको

१ मूल प्रस्तावना हिन्दीमें ही है और यहां सम्पूर्ण अुद्धृत की गयी है।

अुसी समय लड़कियोंने पूछा "बापूजी आप हमें आपको महात्माजी कहनेसे रोकते हैं, तो फिर प्रेमाबहनको क्यों नहीं रोकते?" अुन्होंने कोअी अुत्तर नहीं दिया। परन्तु मैंने ही अुत्तर दिया "मेरी दृष्टिमें बापूजी तो साधारण सम्बोधन है। अुनके जैसे अलौकिक पुरुषको सामान्य नामसे संबोधित करना मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं जब महात्माजी कहती हूं तब अेक ही मूर्ति मेरी आंखोंके आगे आती है। नाम अैसा होना चाहिये जो विशिष्ट व्यक्तिके लिअे ही काममें लिया जाय और जब काममें लिया जाय तब अेक ही मूर्ति आंखके सामने खड़ी रहे।"

श्री बलवंतसिंह और श्री मुन्नालाल दोनों साबरमतीके सत्याग्रहाश्रममें थे। बादमें सेवाग्राम आश्रममें शरीक हुअे। श्री बलवंतसिंह बरसोंसे राजस्थानमें गोसेवाका काम कर रहे हैं। अुन्होंने 'बापूकी छायामें'[1] पुस्तक लिखी है।

तुकडे बुवा अर्थात् तुकडोजी महाराज। महाविदर्भके संत पुरुष जो अीश्वर-भक्ति और सर्वोदय-विचारका संगठित प्रचार बरसोंसे कर रहे हैं।]

सेवाग्राम
२२-७-३९

चि॰ प्रेमा

तेरी जन्मतिथिके दिन लिखाया हुआ कार्ड मेरे पास पहुंच गया था। मेरे आशीर्वाद तूने मान लिये यह ठीक किया। शिष्या बननेके लिअे तुझे काल्पनिक महात्मा बनाना पड़ेगा। जो जिस नामसे प्रसिद्ध है वह महात्मा तो है ही नहीं परन्तु पिताका स्थान जरूर बहुतोंके लिअे पूरा करता है। और जितनेसे मुझे संतोष है। अनेक लोग मुझे पिता होनेका प्रमाण दें तो मुझे बड़ा सन्तोष होगा।

तेरा काम ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

मेरे साथ बा मनु लीलावती बलवन्तसिंह और मुन्नालाल हैं। तुकडे बुवा भी मेरे साथ रहते हैं।

---

१ नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबादकी तरफसे प्रकाशित हुअी है।

[हिन्दू धर्मके बहुतसे सिद्धान्तोंको पू. महात्माजी नये रूपमें रखते थे तो वे अेक नये ही पंथकी स्थापना क्यों नहीं करते? यह अथवा किसी प्रकारका प्रश्न मैंने अुनसे पूछा था।

ता. २२-७-३६ का पत्र अेक कार्डमें समा जाता अुसके लिअे लिफाफा क्यों काममें लिया गया और अधिक पैसे खर्च क्यों किये गये? यह मैंने पूछा था।

मेरा सवाल यह था: आप वर्णाश्रम धर्मको मानते हैं परन्तु अुसमें तो विषमता है। पहले तीन वर्ण अूंचे कहलाते हैं और शूद्रोंके लिअे तीन वर्णोंकी परिचर्याको ही धर्मशास्त्रोंने धर्म बताया है। महाराष्ट्रमें भी ज्ञानदेवसे लेकर श्री रामदास स्वामी तक सभी संतोंने यह विषमता अपने ग्रंथोंमें मान्य रखी है। पुनि पैरु खपाके न पण्डिता' इत्यादिक महापुरुषोंकी दृष्टि वैसी कैसे हो सकती है?" वित्यादि वित्यादि।]

सेगांव-वर्धा
१-८-३६

चि. प्रेमा

तीन पैसोंका खर्च न लिखनेमें हेतु था।

तेरी राखी मेरे हाथ नहीं लगी। लगती तो मैं जरूर बांधता। परन्तु तूने भेज दी जिसलिअे अुसका रस अथवा पुण्य तुझे मिल गया।

तू नये नये काम हाथमें ले रही है, यह अच्छा है। तेरी पुस्तक अूपर अूपरसे देख तो जाअूंगा।

सेगांवके अनुभवोंमें वृद्धि तो कर सकता हूं परन्तु अभी नहीं। न फुरसत है न जिच्छा। अनुभव किसीको देने जैसे नहीं मानता।

जिस भाषाका मनुष्य अुपयोग करते हैं अुसका स्थूल अर्थ तो होता ही परन्तु अुसका अपना अर्थ अुसमें जरूर होगा जो आगे-पीछेके संदर्भसे घटाया जा सकता है। सत्यको सम्पूर्ण रूपमें किसीने जाना ही नहीं है जिसलिअे जो मनुष्य जिस वस्तुको जिस रूपमें देखे अुसी रूपमें वह वही अुसके लिअे सत्य है। भले ही वस्तुतः वह असत्य हो। जिसी प्रकार प्रत्येक युगमें अेक ही वस्तुके बारेमें विचार बदलते हैं और वे ही

अुस युगके लिअे सत्य माने जाते हैं। यह मर्म अथवा विचार अिसमें या नये समय में समाया हुआ है।

जहां अूंच-नीचका भाव घुस जाता है वहां शूद्र तीस वर्षोंकी सेवा करे, तो अुसमें मुझे दोष दिखाअी नहीं देता। शूद्रको कोअी बनाता [नहीं। सब यदि स्वाभाविक रूपमें] परिचर्या अुसका धर्म हो तो मुझे बदलनेका क्या प्रयोजन?[1] ब्राह्मण और भंगी पेटके लायक ही कमाते हों तो दोनोंमें भेद क्या? भंगीके ज्ञानी बननेमें कोअी रुकावट नहीं है। मेरी कल्पनाके वर्णमें ज्ञानका अेकाधिकार किसीका नहीं है। स्त्रियोंकी प्रार्थनाके श्लोकों[2] पर विचार करना। चार वर्णोंके सामान्य धर्म कौनसे हैं? मानन्य आदिके वचनोंमें अूंच-नीच-भावका समर्थन करनेवाले वचन भले ही मिलें। किसी शास्त्रका न्याय जिस तरह अुसके दो चार वचनोंसे नहीं किया जाता। रामदासके बारेमें तू जो कहना चाहती है वह मैं जानता हूं। ये अुदाहरण यथार्थ सिद्ध हों तो भी मेरी दलीलको आंच नहीं आती।

तेरी प्रार्थना मैं स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि तूने जिस प्रार्थनाकी योग्यताका पूरी तरह विचार ही नहीं किया है। तू प्रचलित प्रवाहमें बह गयी है। तू, मैं और सब अपने अपने माता-पिताके चौखटेमें ही पड़े हैं। अुसे बदलकर नये बदलानेमें जितना अर्थ या अनर्थ है अुतना ही पुराने चौखटेके रहनेमें है। अुसमें रहकर हम अनेक परिवर्तन कर सकते हैं। जिसीका नाम प्रगति या अुन्नति है। सर्वथा नया दीखनेका अर्थ है अुत्पात या नया धर्म। हिन्दू धर्मके लिअे यही ठीक होगा या नहीं? बच्चे रोज पानीमें नये अक्षर बनाते हैं और बनाते ही वे मिट जाते हैं। परन्तु जिसमें भी अुनके लिअे तो आनन्द है ही। अैसा ही आनन्द तू करना चाहती दीखती है। परन्तु पुराने चौखटेमें बने हुअे मुझ ६० वर्षके बूढ़ेसे तू पानीमें अक्षर लिखनेके लिअे कैसे नीचे, मनेगी? ये तो किनारे

---

१ जिस वाक्यमें अधूरापन है। जैसा मूल वैसा अनुवाद है।

२ अहिंसा सत्यम् अस्तेयं शौचम् अिन्द्रियनिग्रहः।
अेतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीत् मनुः॥
अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् अकामक्रोधलोभता।
भूतप्रियहितेहा च धर्मोऽयं सार्ववर्णिकः॥

पर सदा तेरे और तेरे जैसोंके क्षेम देखा करता हूं। आगामी हरिजन में अेक पत्रकी आलोचनामें अिससे सम्बन्धित कुछ तू देखेगी।

मेरा अज्ञान तेरे हाथ ठीक लगा। अभी और खोज करे तो अिससे भी घोर अज्ञान तेरे हाथ लगे। परन्तु जब तुझे मेरे पूर्ण अज्ञानका पता चलेगा तब तू भाग तो नहीं जायगी? अितना वचन दे दे तो मैं साफ कह दूं कि मैं कुछ जानता ही नहीं क्योंकि वैसा अध्ययन मैंने किया ही नहीं है।

साम्यवादके विषयमें अपने सन्तोषके लायक मैंने पढ़ा है। स्वराज्यमें किसकी जरूरत होगी यह तो स्वराज्यको देखूं तभी कह सकता हूं। मेरा विरोध तू जहां देखे वहां सत्य-असत्य तथा हिंसा-अहिंसाके सम्बन्धमें ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

१७१

[सासवड़ जानेके बाद मेरे हाथों लेखन-प्रवृत्ति शुरू हुई थी। दैनिकों मासिक पत्रों आदिके लिये लेख तथा कहानियां लिखकर भेजती थी। बादमें मैंने पुस्तकें लिखना भी शुरू किया। पू. महात्माजीको शायद मेरी यह प्रवृत्ति पसन्द नहीं आयेगी अैसा मानकर मैंने संकोचसे अिस विषयमें अुनकी राय पूछी थी।]

सेगांव-वर्धा
१२-९-३६

चि. प्रेमा,

तेरा पत्र मिला।

महात्माकी सेवा कैसी होनी चाहिये अिसका अर्थ तो तू महात्मा बने तभी जाने। अभी तेरी कल्पना जहां तक तुझे ले जायगी वहीं तक तू जायगी। महात्माको अेक फुंसी भी हो जाय तो दुनिया भरमें शोर मच जाता है। बेचारे सामान्य आदमीको भगंदर हो जाय तो भी वह फुंसी मान लिया जाता है। कोअी अुसके बारेमें नहीं जानता। क्या करें?

आज ही अस्पताल छोड़कर यहां आया हूं। अभी कमजोरी तो खूब है परन्तु अब यहां शक्ति आ जानेकी आशा रखता हूं।

अब वहां बरसात शुरू हुआी मालूम होती है। यहां तो अकसरसे ज्यादा होती रहती है।

तेरे दूसरे वर्णन रोचक हैं। तू अपना काम आगे बढ़ा रही है। परिणाम तो जो आना होगा वह आयेगा।

तेरी ग्रैक्षण-प्रवृत्तिकी आलोचना करनेकी बात ही नहीं है। जो शक्ति अीश्वरने तुझे प्रदान की है असका सदुपयोग तुझे अवश्य करना चाहिये।

लीलावतीका मामला बहुत कठिन तो है ही। अेक प्रयत्नमें तो मैं हार गया। अब दूसरा हाथमें लिया है। मैं बिलकुल तो हारनेवाला नहीं।

तेरा प्रश्न ठीक है। परन्तु मुझे स्वराज्य लेना है। अससे पहले कैसे मरूं?

मीराबहनके बारेमें भी तूने जो लिखा है वह सही है। वह मुझसे दूर बिलकुल नहीं रह सकती। अब जो हो सो सही।

आज अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१७४

[फैजपुर कांग्रेस अधिवेशनमें काम करनेके लिये पूनामें स्वयं-सेविकाओंकी छावनी मैंने शुरू की थी। जिसके लिये पू महात्माजीके आशीर्वाद मांगे थे।]

सेगांव-वर्धा
१४-१०-३६

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तू तो अब गगन-विहारिणी हो गयी है। भले ही शुरू। परन्तु चक्कर खिरना मत।

मेरे आसपास मीरा और लीलावतीके बिस्तर हैं। दोनों मोतीझिरेसे बीमार हैं।

यह कह सकते हैं कि मेरी डाक बन्द है। परन्तु अपनी छावनीके लिये जो आशीर्वाद मांगती है वे तो हैं ही। मेरी आशा है कि सेविका मूक बनकर किसी मार्गदर्शकके बिना सेवा ही करेगी और समझेगी कि सेवाका अिनाम सेवा ही है।

मुझे बम्बअी जाना है यह मैं तो नहीं जानता। अहमदाबाद जाना भी अब तो अनिश्चित हो गया है। मीराको जिस स्थितिमें रखकर तो हरगिज नहीं जा सकता। नाथाभाजीकी तबीयत अब सुधार पर कही जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

१७५

[छावनी समाप्त होते समय मुझे मुम्बाखात पैदा कुछ हो गया था और मैं बेहोश हो गभी थी। जिसलिमे पू. महात्माजी बुलाहना देते हैं।]

सेवाग्राम-वर्धा,
१९-११-३९

चि. प्रेमा

पिछले पत्रमें अुत्तर देने लायक कुछ नहीं था। तुझे लिखनेका कोअी भी निमित्त मुझे अच्छा लगता है। समय ही नहीं था। परन्तु तेरे अंतिम पत्रका अुत्तर तो देना ही पड़ेगा। काकाने तेरी बीमारीके समाचार अेक मिनटकी बातचीतमें दिये थे परन्तु तूने लिखा है वैसी बीमारीके नहीं। अिस प्रकार तुझे बीमार क्यों पड़ना चाहिये? जिसमें मुझे तेरी लापरवाही मालूम होती है। शरीरको अीश्वरकी दी हुअी संपत्ति मानकर तू अुसका अुपयोग करे तो जिस तरह बीमार न पड़े। शरीरसे जितना सहन हो अुतना ही काम करके संतोष क्यों नहीं मानती?

मैं यहां अेक दिसम्बरको आकर बैठूं अथवा जनवरीमें भ्रमण करने निकलूं अैसी कोअी बात नहीं है। हां प्रदर्शनीसे पहले मुझे फैजपुर जरूर जाना है।

बापूके आशीर्वाद

पुनश्च

आपस देवाव आ गयी है। अुसके विषयमें कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अुसके हेतु तो शुभ है ही। मेहनत भी करती है। परन्तु जब तक अधीरता न मिटे तब तक वह सच्ची प्रगति नहीं कर सकती। फिर भी यदि स्वराज्यकी आशा न छोड़ूँ तो   की आशा कैसे छोड़ूँ? मेरे जैसा आशावादी तुझे मुश्किलसे मिलेगा।

हरिलाल[1] तो शराबमें पड़ा है न? अुसकी भी आशा नहीं छोड़ता। फिर क्या? आर्यसमाजी बननेमें तो कुछ नहीं है।

बापू

१७६

[सासवड़में आश्रमके लिये जो मकान मिला था वह वहाँके म्युनीसिपैलिटीके षड्यंत्रसे छोड़ना पड़ा। मालिक नाबालिग था इसलिये अुस पर सरकारी दबाव पड़ा और यद्यपि कानून आश्रमके पक्षमें था (कानूनी माड़ापिट्ठी लिखी गयी थी) फिर भी यह सोचकर कि मालिकको असुविधा नहीं होनी चाहिये मकान छोड़ दिया गया। अेक और छोटा असुविधावाला मकान मिला। वहाँ आश्रम सवा वर्ष तक रहा। बादमें कांग्रेस मंत्रिमंडलकी हुकूमत शुरू होने पर आश्रमको पुराना मकान फिर मिल गया।

श्री विनोबाजी कांग्रेस कार्यकर्ताओंको शिक्षण देनेके लिये कुछ महीने फैजपुरमें रहे थे। अुनके साथ मेरा निकट परिचय किसी कारणसे हुआ। अुनके साथ बहुत विनोद करती थी यह सब पू. महात्माजीको मैं बताती थी। गंभीर प्रकृतिके होने पर भी श्री विनोबाजी मेरे साथ खूब घुलमिल गये थे।]

---

१ पू. महात्माजीके बड़े लड़के। पहले मुसलमान हुअे फिर आर्य समाजी बने।

सेवाग्राम
१२-१२-३६

चि. प्रेमा

जितना लिखनेकी फुरसत न होते हुमे भी यह लिख रहा हूं। पेड़के नीचे पड़ा रहना पड़े तो भी सावधान नहीं छूटना चाहिये। परन्तु मनसे भी कारण वश न होने देना। मनमें भी क्रोध रखोगी तो पेड़के नीचे रहनेका पुण्य या फल नहीं मिलेगा।

कांग्रेस अधिवेशनमें जहां तक देहातको सीमा देनेवाला ठाट करते जाये वहां तक किया जा सकता है। करते जाये सब्दको दोनों अर्थोंमें लेना। जिस ठाटमें कला हो और अुस पर अेक पाओ भी खर्च न की जाय।

मेरा जाना २ तारीखको निश्चित हुआ है। तुम कितने रोज जाओगी यह तो वहांसे आनेवाले अुत्तर पर निर्भर करेगा।

विनोबाका कापड़ी मनोरंजन कर रही दीखती है।

फिर बीमार न पड़ना। अपनी मर्यादामें रहकर काम करनेसे वह अधिक अच्छा और शोभास्पद होता है।

डीलाबहीके मामी खूब बीमार हैं जिसलिये वह विलेपारले गयी है।

बापूके आशीर्वाद

१७७

[फैजपुर कांग्रेसके बाद चुनावके सिलसिलेमें दौरा करते हुमे श्री शंकररावजी मोटर दुर्घटनाके शिकार हो गये थे। अुन्हें काफी समय तक अस्पतालमें (पहले पूनाके फिर बम्बअीके) रहना पड़ा था। वे पूनाके अस्पतालमें थे तब बारह दिन मैं अुनकी सेवा-शुश्रूषामें रही थी।

श्री जमनालालजीने मुझे विवाह करनेके बारेमें सवाल पूछे थे — यह सोचकर कि मेरी पसन्दका पुरुष पतिके रूपमें मिले तो मैं विवाह कर लूंगी। अैसा कोअी पुरुष नहीं मिलता जिसीलिये मैं अविवाहित रही हूं अैसी अुनकी कल्पना थी। जिसलिये नाम देकर अमुक पुरुषके साथ विवाह करना पसन्द है? अैसे सवाल वे पूछने लगे।

[ता० ११-१२-३६ के 'हरिजनबन्धु' में 'चित्त-शुद्धिकी आवश्यकता' नामका पू॰ महात्माजीका लेख प्रकाशित हुआ था। अुसमें अुन्होंने हरिजन-सेवा करनेवाले अेक कार्यकर्ताके नैतिक पतनका वर्णन और अुससे संबंधित अपने विचार दिये थे। अुसने दो स्त्रियोंके साथ अेक ही समयमें अनैतिक सम्बन्ध रखा था और बादमें अुनमें से अेकके साथ विवाह कर लिया था। लेखमें दोनोंके नाम दिये थे। अुसका नाम पढ़कर मुझे लगा कि "यह तो सत्याग्रहाश्रमकी लड़की मालूम होती है!" और अिस विषयमें पू॰ बापूजीसे पत्रमें मैंने सवाल किया। अुन्होंने अुत्तरमें 'हां' लिखा और मेरा अनुमान सही निकला। अुसके विषयमें अिस पत्रमें काफ़ी चर्चा है।]

सेगांव
५-२-३७

चि॰ प्रेमा,

मेरे दायें हाथको आराम देनेकी जरूरत है और बायेंसे लिखनेमें बहुत समय चला जाता है। अितना समय कहांसे निकालूं? काम बहुत बढ़ गया है। अिसलिअे ज्यादातर तो लिखनेका दूसरोंसे ही लिखवाता हूं। सोमवारके दिन दाहिना हाथ काममें ले लेता हूं।

लिखनेका काम करनेवाली विजया और मनु हैं। कुछ हद तक प्रभावती। विजयाको तू नहीं जानती होगी। वह पटेल है। बारडोलीकी है। जबरदस्ती आ गयी है क्योंकि सेगांवमें किसी नये व्यक्तिको न लेनेका आग्रह तो था ही। यह आग्रह विजयाने तुड़वा दिया। अपना मामला अुसने अिस ढंगसे पेश किया कि मैं अुसे मना करके अुसके हृदयको चोट नहीं मारा। अुसे आश्रममें रखनेका अभी तक तो पछतावा नहीं हुआ। वह खूब मनसे काम कर रही है। अिस प्रकार वह [illegible] का करना चला गया है।

अब गणपतराव अच्छे हो गये होंगे। मैंने अुनकी तन्दुरुस्तीके बारेमें हरिभाऊ फाटक[1]से पुछवाया भी है। परन्तु तू मुझे ब्योरेवार समाचार दे सकेगी।

---

१ पूनाके अेक कांग्रेस कार्यकर्ता। १ २ से १९३१ तक महाराष्ट्रके नेताओंमें से थे।

पटवर्धन जब चाहें तब आ सकते हैं, यह मैंने अुनसे कहा था। परन्तु पहाड़ दूरसे ही सुहावने लगते हैं न?

तेरी कड़ी परीक्षा हो रही है। ग्रामीणोंकी जेबमें पैसा डालनेकी बात आसान है भी और नहीं भी है। यदि वे हमारा कहा मानें तो बिना पूंजी अथवा यों कहो कि कमसे कम पूंजीसे सारे गांवोंकी आय दुगुनी की जा सकती है। जिसमें देहातको चूसनेवालोंको गांवोंमें जो आय होती है अुसका समावेश नहीं है। परन्तु यदि वे हमारा कहा न मानें अर्थात् हम कहें अुतनी मेहनत ही न करें, सिवायें यह अुद्योग न सीखें तो आय बढ़ाना कठिन ही नहीं असंभव भी है। अेक और बड़ी कठिनाओी यह है। केवल मुट्ठीभर आदमी ही गांवोंमें जाते हैं। वे भी अनुभवहीन होते हैं। अुनके शरीर गांवोंमें रहने जितने कष्ट हुअे नहीं होते। वे ग्रामीणोंका स्वभाव नहीं जानते। अुनकी आवश्यकताओंसे सर्वथा अनभिज्ञ होते हैं। हाथसे काम करनेकी आदत नहीं होती बुद्धि भी नहीं चला सकते। स्कूल-कॉलेजोंमें प्राप्त ज्ञान देहातमें बिलकुल निरुपयोगी सिद्ध होता है। अैसी स्थितिमें धीरजकी आवश्यकता होती है। आत्म-विश्वास चाहिये। शरीर-सम्पत्ति हो तो अन्तमें देहातकी आर्थिक स्थिति सरकारी मददके बिना बहुत कुछ यों कहें कि ५ प्रतिशत सुधारी जा सकती है। ५ प्रतिशत तो मैं कमसे कम कहता हूं। मेरी मान्यता तो अैसी है कि ९ प्रतिशत सुधारी जा सकती है। शरीर-सुधार, समाज-सुधार, नैतिक सुधार ये तीन मुख्य वस्तुअें हैं। जिनके लिअे तो सरकारी सहायताकी कोअी आवश्यकता नहीं है।

आर्थिक सुधारमें ही थोड़ीसी मदद हो तो काम आसान हो जाय। परन्तु अुपरोक्त तीन सुधारोंके बिना सरकारी मदद कुछ भी नहीं कर सकती। जिसलिअे तू यदि खादी-धामतमें सचमुच निष्णात हो जाय और बड़ेसे बड़े प्रलोभनोंके बावजूद गांवसे न हटे तो अुपरोक्त सब बातोंका प्रत्यक्ष अनुभव करेगी।

---

१ पटवर्धन अर्थात् पु ह अुर्फ रावसाहब पटवर्धन जो फैजपुर कांग्रेसमें स्वयंसेवक-दलके मुखिया थे।

तू गायके दूधका आग्रह नहीं रखती यह ठीक नहीं। बाहर जाय तब तू गायके दूधका घी और पेड़े साथमें रख सकती है। पेड़े बिना शक्करके होने चाहिये। अर्थात् शुद्ध मावेके। अुसके साथ गुड़ खाना हो तो खाया जा सकता है। असा करनेसे खर्च बढ़ता नहीं और दूधकी जरूरत अच्छी तरह पूरी की जा सकती है। पेड़े सूखे खानेके बजाय अुनका चूरा करके गरम पानीमें मिलाकर दूध बनाया जा सकता है। अुसमें कमी सिर्फ विटामिनोंकी रहती है। परन्तु कुछ समय विटामिन न मिले तो कोअी हानि नहीं होगी।

नहीं है। यह सारा किस्सा बहुत करुण है। सभी ब्रह्मचारी न रहें यह तो बिलकुल समझमें आने जैसी बात है। जो विषय-निग्रह न कर सके वह नीतिसे विवाह कर ले। परन्तु विषयोंका गुप्त सेवन करे, यह मुझे असह्य लगता है। मनुष्यका पतन विषयोंके गुप्त सेवनसे होता है। असा करनेसे मर्यादा नहीं रहती। मुझे गृहस्थाश्रमसे जरा भी द्वेष नहीं। वह आवश्यक स्थिति है। सुन्दर है। परन्तु आश्रमका तो अर्थ ही यह है कि अुसके धर्मोंमें धर्म हो। गृहस्थ धर्म सुन्दर है स्वेच्छाचार निन्दनीय है। मेरा सारा विरोध केवल स्वेच्छाचारके खिलाफ है।

जमनालालजीने तुमसे जो प्रश्न किया वह तो ठीक था। अुन्होंने स्त्रीकी दृष्टि जाननी चाही थी। विनोबा मैं और दूसरे पुरुष कुछ भी करें तो भी अनुभवी निष्कलंक स्त्रीका अनुभव जाननेकी आवश्यकता होती ही। और अन्तमें सच्चा योग तो स्त्रीका ही होना चाहिये। ब्रह्मचर्यका महत्त्व और अुसकी आवश्यकता सिद्ध करनेका भार सबल पुरुष पर होना ही नहीं चाहिये। आज तक यह भार ज्यादातर पुरुषने ही अुठाया है। जिसलिये जिस भारने अधिकारका रूप धारण कर लिया है। जिससे ब्रह्मचर्यको नुकसान हुआ है। जितना ही नहीं जो आसान होना चाहिये था वह जितना कठिन बन गया है कि बहुतोंको तो असंभव ही लगता है। जिसमें भी अधिक दोष पुरुषोंका ही रहा है। स्त्रियोंको अुन्होंने किसी न किसी तरह दबाकर रखा है। असा करनेमें (पुरुषकी) स्वार्थ और अनुभवने सदैव काम कर लिया है। कुछ भी हो जिससे स्वतन्त्र मनुष्य-जातिका आधा अंग निर्बल हुआ रहा और रहा। परिणाम यह

हुआ है कि पुरुष अपने बहुतेरे प्रयत्नोंमें असफल सिद्ध हुआ है। और यही ठीक हुआ अैसा कहा जायगा। अब स्त्रियोंमें कुछ जागृति आयी है। लेकिन अभी तो यह जागृति विकृतिका रूप ले रही है। पुरुष स्त्रीकी स्वतंत्रताके नाम पर अुसे लाड़ लड़ा रहा है। अुसके अहंकारका पोषण कर रहा है। स्त्री स्वतंत्रताको स्वेच्छाचार मान बैठी है। जिससे जो स्त्री-पुरुष बच सकें वे बचें। तू बचना।

बापूके आशीर्वाद

दुबारा नहीं पढ़ सका।

१७८

[श्री नरीमान किसी समय (१९२८ से १९३५ तक) बम्बईके माने हुअे नेता थे। अुन पर यह आरोप लगाया गया था कि दिल्लीकी बड़ी विधान-सभाके चुनावमें अुन्होंने पक्षपातीके साथ कांग्रेसके अनुशासनका पालन नहीं किया। जिस बारेमें कांग्रेसमें दो मत थे। जिसलिअे मैंने पू० महात्माजीके सामने पत्रमें यह विषय छेड़ा था।

अप्रैल-मईके बीच हम तीन सहेलियां अुषीका लिमये और मैं श्री पुरंदरेजीको साथ लेकर रत्नागिरी जिलेके अेक सुन्दर स्थान माचोटन गयी थीं। वहां अेक आरोग्यभवन जैसी संस्था थी और गरमीमें वहां बहुत लोग रहने आते थे। अूपरके पत्रमें सत्याग्रहाश्रमकी जिस महिलाका अुल्लेख हुआ है वह वहां अपने पतिके साथ आयी थी। मिलनेके बाद मैंने महात्माजीके लेखमें वर्णित घटनाके बारेमें अुससे पूछा। परन्तु अुसने अपने निर्दोष होनेका दावा किया। बादमें अुसके पतिने अुसका झूठ स्वीकार किया। यह किस्सा मैंने पू० महात्माजीको पत्रमें बताया था।

सासवड़का काम बन्द करके ठेठ गांवमें जानेकी बात चल रही थी, परन्तु अमलमें नहीं आयी थी। सासवड़ स्थायी रूपमें कार्यक्षेत्र रहा।

अुस वर्ष राष्ट्रीय सप्ताहमें (६ अप्रैलसे १३ अप्रैल तक) खादी-सेवकोंका सम्मेलन कर्णाटकके हुदली आश्रममें हुआ था। श्री शंकररावजी अस्वस्थतामें होनेके कारण सम्मेलनमें अुपस्थित नहीं हुअे। परन्तु मानकर

आश्रमके संचालक आचार्य भागवत (जो किसी समय पूनाके राष्ट्रीय महाविद्यालयके अध्यापक थे) मैं और हमारे दो साथी वहां अुपस्थित थे। श्री भागवतकी विच्छा थी कि हम चारोंको पू० महात्माजी थोड़ा समय दें और हमारा मार्गदर्शन करें। परन्तु यह सफल नहीं हुआी।

अुसी सम्मेलनमें विद्यालय-समाके आगामी चुनावमें गांधी-सेवा-संघके सदस्य अुम्मीदवारके रूपमें भाग लें या नहीं विस विषय पर चर्चा हुआी थी। अनेक लोगोंके साथ मैंने भी अेक भाषण किया था। यह पू० महात्माजीको अच्छा नहीं लगा। मुझे अुलाहना मिला कि तेरे विचार कच्चे हैं। अुसके बाद मैंने अेक वर्ष तक सार्वजनिक भाषण न करनेका व्रत लिया था।]

दीपक-बलसाड़
११-५-१७

चि० प्रेमा

आज ही तेरा पत्र मिला और आज ही जवाब दे रहा हूं। तेरा पहलेका पत्र तो मेरे बस्तेमें रखा ही है। और, जिसको तो लिखता हूं। अुसका भी हो जायगा।

सुशीलासे कहना कि यहां तुम सब आते तो हमें जरूर भाते परन्तु वहांका अेकान्त मैं कैसे देता? और वहांकी ठंडक तेरा वहांका वर्णन ठीक ही तो? यहां तो गरमी मालूम होती ही है।

नरीमानके साथ अन्याय होनेकी बात मैं नहीं जानता। यह कैसे हो सकता है कि बम्बअीमें जो नेता हो वह सारे प्रान्तका नेता होना ही चाहिये? और तीन प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंको कौन कहना सकता है, कौन रवा सकता है? यदि अन्याय हुआ हो तो वे ही प्रतिनिधि सब आज भी जीवित हैं वे कैसे बरदाश्त करेंगे? जिसलिअे अन्यायकी बात मेरी तो समझमें ही नहीं आती। सरदारने क्या किया यह भी मेरी समझसे बाहर है। सारा आन्दोलन मुझे तो कृत्रिम लगा है। लेकिन अगर मैं न समझता होअूं तो तू मुझे समझा। मेरा नरीमानके प्रति कोअी दुर्भाव नहीं है। अुनके प्रति जो आरोप लगाये जाते हैं अुनका जिस वस्तुके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। जिन आरोपोंके सच-झूठके बारेमें तो नरीमान जब चाहें तब जांच

हो सकती है। नरीमान तेरे मित्र हैं, यह मैंने आज ही जाना। मेरा मत तो मैंने केवल तटस्थ भावसे प्रकट किया है।

के बारेमें पढ़कर दुःख हुआ। मैंने जो गुण दोनोंमें कहा नहीं प्रकाशित किया है। और यह भी अुनकी अिच्छासे। के मनमें सत्यासत्यका भेद नहीं है, अैसा मुझे लगता है। तू यह पत्र अुसे पढ़नेको दे सकती है।

वैद्यको मैंने पत्र लिखा था। अुसका अुत्तर भी आया है। मैंने तुरन्त ही नहीं लिखा था।

सासवड़ बन्द हो गया यह अच्छा नहीं लगा। अनारंभो हि कार्याणाम् वाली बातको मैं मानता हूँ। अब कुछ हाथमें ले तो अुसे पकड़े रहना।

मुझसे तुम चारों जानेके समय मिली होती तो अच्छा होता। तेरी अिस दलीलको मैं मानता हूँ कि सासवड़की परिस्थिति जाने बिना मैं क्या कह सकता था? तेरा यह कहना भी सही है कि गांवोंके अनुभवका अभी मेरा आरंभकाल ही है। अिसलिये हम सब अेकसे ही हैं। अितने पर भी मेरे विचारोंमें थोड़ी मौलिकता है और अिन सबका बल अहिंसा है। अिसलिये शायद तुम चारोंको ही कुछ न कुछ जाननेको मिल जाता।

तू विचार करनेकी कला सीख रही है यह मुझे पसन्द है क्योंकि हुबलीके तेरे भाषणमें मुझे विचार-शून्यता मालूम हुआी। वे विचार मुझे दिमागसे निकलनेवाले धुअें जैसे लगे। वे तेरे हृदयके अुद्गार नहीं थे। मुझे तो समय निकालकर तुझसे अुस विषयमें बातें करनी थीं और यों और दो बातकी तरह तेरे सामने अुन विचारोंकी शून्यता सिद्ध कर दिखानी थी। परन्तु तू जल्दी भाग गयी अिसलिये मुझे समय ही नहीं मिला। मुझे तेरी विचार-शून्यता सिद्ध कर दिखानेकी अुतावली तो थी ही नहीं अिसलिये मैंने तुझे रोका नहीं। मुझे अितना विश्वास है कि तेरा यह दोष तू स्वयं अभी देख लेगी। अितनेमें तो तेरे पत्रमें ही अुसका स्वीकार देखता हूँ। हुबलीके विचारोंमें तुझे यह दोष दिखायी न दे, यह संभव है। लेकिन अगर सचमुच विचार करना सीख लेगी तो हुबलीके विचारोंकी शून्यतामें तू देखे बिना नहीं रहेगी।

जिस मामलेमें पड़ना पड़ा था। जिसके सिवा शरीमानसे तो मैंने कहा ही है कि जब वे चाहें तब अनुनके मामलेकी जांच करनेको मैं तैयार हूं परन्तु वे आयें या न आयें तेरा धर्म स्पष्ट है।

के बारेमें तू जो मान बैठी है वह ठीक नहीं है। तुझे जो पत्र मिला है अुसकी कोअी कीमत नहीं। असी बात माननेसे पहले सम्बन्धित व्यक्तिसे पूछना चाहिये। मैं यह नहीं कहना चाहता कि अुसने असत्याचरण नहीं किया होगा। परन्तु जिसका यकीन कर लेना चाहिये। मुझे कोअी कहे कि प्रेमाने असा किया तो क्या तुझसे पूछे बिना मुझे अुसकी बात मान लेनी चाहिये?

तू दुबली में जो बोली वह तेरे हृदयके अनुसार भले ही हों। परन्तु अब तू जो लिख रही है अुससे तेरा मापक भिन्न था जितना तू स्वीकार करेगी? जो भी हो मैंने तो तुझे बता दिया कि मेरा अनुभव तेरे अनुमानसे अलग था। तू मेरे अनुभवसे अपने अनुमानका मूल्य अधिक बढ़कर आंक सकती है। परन्तु मैं क्या करूं?

बापूके आशीर्वाद

१८०

सेगांव-वर्धा
५-७-३७

चि॰ प्रेमा

आज तो जितना ही लिखना है कि लौटती डाकसे तुझे पीतांबी भेजी है। मिली होगी। बाकी समय मिलने पर।

बापूके आशीर्वाद

१८१

[आज ११ है अर्थात् अेकादशी है। दशमीको जन्मदिवस था। (आषाढ़ सुदी)]

२०—७—३७

चि. प्रेमा

तू कैसी अजीब है! तेरा १९ तारीखका पत्र आज २ तारीखको ११ बजे मिला। आज ११ है। दशमीको कैसे आशीर्वाद पहुंचाता? मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। तुझे क्या कहूं? आशीर्वाद तो हैं ही। आगे बढ़ती ही रह और विजय प्राप्त कर।

बापूके आशीर्वाद

१८२

[पू. महात्माजी बहुत करके खूनके दबावसे बीमार थे। आराम ले रहे थे।

जब मैं १९२९ में सत्याग्रहाश्रममें थी तब अेक बार पू. महात्माजीके साथ टहलते समय अेक भाअीसे हुआी अुनकी बातचीत मैं बड़े ध्यानसे सुन रही थी। पूछनेवाले भाअीने ब्रह्मचर्यके पालनकी कोशिश करनेवाले अेक विवाहित प्रोफेसरका किस्सा बयान किया था और अुस मामलेमें पू. महात्माजीका मार्गदर्शन मांगा था। महात्माजीके समझाये हुअे विचार मुझे बहुत पसन्द आये और याद रहे। तभी अुस कथाकी बुनियाद पर अेक अुपन्यास लिखनेकी अिच्छा मनमें रही थी। नासिक आनेके बाद दो तीन वर्षमें अुसे पूरा किया। 'काम और कामिनी' नामक अुपन्यास बन गया। प्रस्तावनामें अुपरोक्त प्रेरक संवाद देनेकी अिच्छा हुआी और वह जैसा याद था वैसा लिखकर मैंने पू. महात्माजीको भेज दिया और सुधार करना आवश्यक लगे तो करके भेजनेकी अुनसे प्रार्थना की।

सवालको जोड़कर मैंने जो प्रश्न स्पष्टीकरणके लिये पूछे थे अुनके सम्बन्धमें मेरे दबावसे पू. महात्माजीने यह चेतावनी दी थी कि जितना

अनर्थ होगा। और, अुन्होंने नया ही संवाद पेश किया। अुसे मैंने ज्यों त्यों मूल अितिहासके साथ पुस्तकमें छपवा दिया। अिस अुपन्यास गुजराती अनुवाद भी शकुन्त रावळने किया है और वह प्रकाशित हो गया है।]

सेगांव-वर
२५-८-३

चि॰ प्रेमा

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें तो तूने सुना ही होगा। कमसे कम मानसि परिश्रम और अधिकसे अधिक आराम यह हुक्म है। मस्तिष्क और शरी दोनों पूरा आराम चाहते हैं अिसलिअे तुझे अभी जितना चाहिये अुत ही कह कर निबटा देता हूं।

तेरी राखी बांध ली। समय पर मिल गयी थी।

तेरे प्रश्नोंका अुत्तर नया ही लिख डाला है। पुराने अुत्तर पसन्द न हैं। अपूर्ण होनेके कारण अुनका अनर्थ हो सकता है। पुराना कीडाला अिसे रद कर देना। यह छपाया ही नहीं जा सकता। नया अुत्तर हो तो छाप देना। तेरे पत्र सुरक्षित रखे हैं। तबीयत अच्छी होने पर अुत दूंगा। अथवा लिखानेकी अिजाजत दें तो तुरन्त भी शायद लिख जाय।

मेरे बारेमें चिन्ताका कोअी कारण नहीं। परन्तु मुझे बहुत सावध रहकर चलना है।

बापूके आशीर्

प्रश्न अेक प्रोफेसर हैं। अुनकी स्त्री भी है। प्रोफेसर ब्रह्मचर्यका पाल करना चाहते हैं। पत्नीको यह स्वीकार नहीं है। अैसी परिस्थितिमें यु स्वामीका क्या धर्म है?

अुत्तर यह प्रश्न तभी अुत्पन्न होता है जब विवाहके बाद पति ब्रह्मचर्यका विचार आता हो। धार्मिक विवाहका मेरा अर्थ यह है कि स्त्री-पुरुष-संग केवल सन्तानके लिअे ही हो। विकारतृप्तिके लिअे कभ नहीं। जहां विवाहका यह अर्थ नहीं किया जाता हो वहां तो दो अेक-दूसरेकी वृत्तिका ध्यान रखेंगे। जहां सम्मति न हो वहां बलात्कार ही माना जायगा।

महात्माजीकी स्वीकृति मैंने मांगी। जिस पर अुन्होंने खुद मदद देनेका आश्वासन दिया और २५ रुपये मुझे भेज भी दिये। जिस बातका पता श्री शंकररावजी तथा आचार्य भागवतको लगा तब दोनोंने अुसका विरोध किया और आश्रमसे ही सारा खर्च देनेका आग्रह किया। बादमें मैंने वैसा ही किया।]

५-१-१८

चि॰ प्रेमा

कैसी मूर्ख है! मुझे हर महीने ५ रुपये चाहिये भेज दीजिये — जितना लिखनेके बजाय जितना लम्बा पत्र! अब बता कैसे भेजूं? मनीआर्डरसे या मुझे ठीक लगे वैसे? हर महीने भेजता रहूं या तीन-चार महीनेके जिकट्ठे?

और कुछ लिखनेका समय नहीं है। तेरा पत्र फाड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

१८४

[अपनी वर्षगांठके निमित्तसे मैंने प्रणाम लिखे थे और कुछ प्रश्न पूछकर पू॰ महात्माजीको बताया था कि वे बहुत काममें हों तो जवाब श्री महादेवभाजीसे लिखवा दें तो भी काम चल जायगा। तब अुसके अुत्तर श्री महादेवभाजीने भेजे और वर्षगांठके आशीर्वाद पू॰ महात्माजीने अिस कार्डमें लिख भेजे।]

सेगांव
१४-७-१८

चि॰ प्रेमा

तेरे सवालका अुत्तर मुझे तो नहीं मांगा, लेकिन अन्तमें लगा कि कार्ड तो लिख दूं। तुझे पत्र नहीं लिखता मगर तेरा स्मरण तो अनेक अवसरों पर होता ही है। तू अुत्तरोत्तर अूंची ही अूंची चढ़। बाकी हरिभाअूसे और महादेवसे।

बापूके आशीर्वाद

१८५

दिल्ली
२२-९-३८

चि॰ प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। तेरी पुस्तक[1] भी मिली। परन्तु मैं उस पर नजर डाल पाऊं उससे पहले तो काका ले गये। लौटायेंगे तब ऊपर ऊपरसे देखनेकी आशा तो रखता ही हूं।

हां अक्तूबरके अन्तमें वहांसे लौटनेकी आशा रखता हूं। तब तू और रावसाहब आ जाना।

बापूके आशीर्वाद

१८६

[पंढरपुर महाराष्ट्रका प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र है। वहां कार्तिकी एकादशीके दिन बड़ा मेला भरता है। बम्बई राज्यके मुख्य मंत्री श्री खेर साहेबकी प्रेरणासे दर्शनार्थियोंकी सेवाके लिये मैं वहां गयी थी। उसका वर्णन मैंने पू॰ महात्माजीको लिख भेजा था।

पू॰ महात्माजीके मेरे नाम आये हुये पत्रोंमें से १ पत्रोंका अनुवाद मराठीमें हुआ और उस समय 'बापूंच्या प्रसाद-दीक्षा' के नामसे पुस्तक रूपमें नाम और पते अध्याहृत रखकर प्रकाशित हुआ। कुछ लोगोंने उन पत्रोंमें से कुछ पत्रोंके बारेमें बड़ा बवंडर खड़ा कर दिया। ता॰ २१-५-३९ का पत्र तो खास तौर पर उन लोगोंका निशाना बना था। जिससे मुझे दुःख तो हुआ ही परन्तु जिस बातसे घबराकर गांधी-सेवा-संघके अध्यक्ष श्री किशोरलालभाईने उस वक्त बड़ा कष्ट लिया। मैंने पू॰ महात्माजीकी सलाह मांगी। उनके उपदेशानुसार बादमें मैंने भी किशोरलालभाईको ब्यौरेवार स्पष्टीकरण करनेवाला पत्र लिखकर उन्हें दुःख देनेके लिये माफी मांगी। जिससे उनका समाधान हुआ और

---

१ पू॰ महात्माजीके चुने हुये पत्रोंका मराठी अनुवाद 'बापूंच्या प्रसाद-दीक्षा'।

अुन्होंने मुझे यह जवाब लिखा कि 'अिसका अन्त भला वह भला ही है। अब अिस प्रकरण पर पर्दा डाल दें।' पू. महात्माजीके अिन प्रकाशित पत्रोंके कारण महाराष्ट्रके कुछ आलोचकोंके बवंडरका सामना करना पड़ा। अिसका भी मुझे कम दुःख नहीं हुआ। परन्तु वे तो अभयदानी ठहरे!!]

सेगांव
१५-११-३८

चि. प्रेमा

बहुत दिनों बाद तेरा पत्र देखनेको मिला। तू जहां जाय वहीं तुझे यश मिले अिसमें आश्चर्य क्या?

पटवर्धन जब चाहें तभी आ सकते हैं। कुटुम्ब-जाल कठिन वस्तु है। बीमारियां और दुर्घटनायें होती ही रहती हैं। तुझे तो बीमार पड़ना ही नहीं चाहिये। अिसका सुनहला अुपाय सब बातोंमें मर्यादा-पालन है।

तू नयी सहेलीको खुशीसे साथ ला सकती है।

किशोरलालने मुझसे भी बात की थी। मैं स्वयं पुस्तक नहीं पढ़ सका। परन्तु जिन पत्रोंका विरोध किया गया है अुन्हें मैंने पढ़ लिया है। मुझे विरोधमें कोअी तथ्य नहीं लगा। अुनके छपनेसे मुझे हानि पहुंचना संभव नहीं। हानि तो तब पहुंचे जब मैं करनेकी बात न करूं और न करनेकी बात करूं। अिसलिअे (पुस्तक) वापस लेनेकी कोअी बात नहीं है। अुनमें से अेक पत्र अैसा है जिसे शायद प्रकाशित करनेकी अनुमति मैं न देता और वह केवल आश्रमके समाजका रंग देखते हुअे। मैं मानता हूं कि छपवानेमें भी तूने तो सारी सावधानी रखी थी।

किशोरलालने जो कुछ लिखा है वह सब शुद्ध भावनासे लिखा है अुसका दुःख न मानना। अुन्हें विनयपूर्वक स्पष्टीकरण दे देना।

मेरी तबीयत ठीक है।

खान साहबने अेक सेविकाकी मांग की है। मेरे मुंह पर तेरा नाम आ गया था परन्तु तेरे मौजूदा कामसे मैं तुझे नहीं हटाअूंगा। अिसलिअे तुझे भेजनेकी बात अभी तो छोड़ दी है।

बापूके आशीर्वाद

१८७

[राजकोटमें राजा-प्रजाके बीच संघर्ष हुआ था। अुस अरसेमें पू. महात्माजी राजकोट गये थे। वहां अुन्हें अुपवास करना पड़ा था जिसके कारण वाअिसरॉयने देशके बड़े न्यायाधीशको अिस प्रकरणका फैसला देनेके लिअे पंच नियुक्त किया था।]

राजकोट
८-३-३९

चि. प्रेमा

सुशीला पास बैठी है। अपना काम भूली हुअी जैसी कर रही है। मैं तो परम आनन्दमें था। बाकी सुशीलाने लिखा ही है। अधिक लिखना डॉक्टरोंका द्रोह करना होगा।

बापूके आशीर्वाद

१८८

[मध्य प्रदेशके तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. खरेने कांग्रेसका अनुशासन भंग करके कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्डकी अनुमति लिये बिना अपने दो साथी मंत्रियोंको मंत्रि-मंडलसे अलग कर दिया जिसलिअे अुनके खिलाफ कार्रवाअी की गअी और अुन्हें मुख्य मंत्री-पदसे अिस्तीफा देना पड़ा। अुसके बाद डॉ. खरे पूना आये और वहांकी वसन्त-व्याख्यानमालाकी तरफसे अुन्होंने अेक सार्वजनिक भाषण दिया। अुस भाषणमें कांग्रेस पर अनेक आरोप लगाये जायेंगे यह विश्वास होनेसे श्री शंकररावजी भी अुस सभामें अुपस्थित थे। अुनका हेतु यह था कि दूसरे दिन अुसी जगह पर वे भाषण देकर डॉ. खरेके आरोपोंका खंडन करें। अुस समय श्री शंकरराव देव कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य थे। पूनामें कांग्रेस-विरोधी लोगोंका बड़ा दल तो था ही। अुसे डॉ. खरेके भाषणके बहाने मौका मिल गया। अुस सभामें ये कांग्रेस-विरोधी लोग ही मुख्यतः थे। मैं अुस समय सासवड़ आश्रममें थी। मुझे बादमें पता लगा कि सभामें डॉ. खरेने सामने बैठे हुअे शंकररावजीकी ओर अुंगलीसे अिशारा करके अैसा भाषण दिया कि श्रोता लोग खूब अुत्तेजित हो गये और सभा समाप्त होने पर

अुन्होंने शंकररावजी पर हमला कर दिया! शंकररावजीके थोड़े-बहुत साथियोंने अुनका बचाव किया परन्तु दूसरे दिन वहां सभा हुअी तब कांग्रेसी लोगोंका बहुमत होनेके कारण विरोधी लोग सभास्थलसे बाहर अिकट्ठे होकर अपशब्दों और गालियोंकी गर्जना करते रहे! मेरे कुछ स्नेहियोंने मुझसे कहा कि गालियां देनेवाले लोगोंने मेरे नामका भी अुपयोग किया और होली जैसी धांधली मचाअी!! वैसे तो फैजपुरके कांग्रेस अधिवेशनके बाद तथा चुनावके आरम्भसे ही कांग्रेस-विरोधी लोगोंने शंकररावजीको बदनाम करनेमें कोअी कोशिश अुठा नहीं रखी थी। और पूना शहरी तथा नागपुरके कुछ विरोधी अखबारोंमें नाम दिये बिना हम दोनोंके बारेमें गुप्त प्रचार चलता ही था (क्योंकि मैं शंकररावजीके आश्रममें रहकर सेवाकार्य करती थी) फिर भी मैंने अुसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। ये ही अखबार पू. महात्माजीके बारेमें भी गंदा प्रचार करते थे। अिसलिअे अुन्हें पाप मानकर मैं कभी अुन्हें हाथमें भी नहीं लेती थी। लेकिन यह प्रसंग बिलकुल अलग था। अिसमें अैसी बीभत्सता थी। अिसलिअे मुझे दुःख हुआ और मनमें विचार आया कि राजनीतिक विरोधमें चरित्र-सम्बन्धी बदनामी भी होने लगेगी तो आगे चलकर शंकररावजीके लिअे कांग्रेसका सेवाकार्य करना कठिन हो जायगा। अिसलिअे मैं अिस गांव और प्रान्तको छोड़कर चली जाअूं तो ठीक होगा। मेरा निमित्त नहीं रहेगा तो फिर केवल राजनीतिक विरोध बाकी रह जायगा। परन्तु मुझसे शंकररावजीका कोअी खास बिगाड़ नहीं होगा।

यह सोचकर मैंने पू. महात्माजीको ब्योरेवार पत्र लिखकर अपना निर्णय बताया और सासवड़ तथा महाराष्ट्र छोड़कर अन्यत्र जाकर सेवा करनेकी तैयारी दिखाअी। यह भी लिख दिया कि वे मुझे स्थान बतायेंगे तो वहां जानेको भी मैं तैयार हूं। अिस पत्रका अुत्तर राजकोटसे मिला।

अपने साक्षात्कारके मामलेमें पू. महात्माजीको मैंने बताया कि श्री शंकरराव पर हुअे हमलेके साथ मेरे साक्षात्कारका कोअी सम्बन्ध नहीं था। हम दोनों महाराष्ट्रमें थे तो भी हमारे कार्यक्षेत्र अलग थे। वे राजनीतिक क्षेत्रमें काम करते थे मैं रचनात्मक सेवाक्षेत्रमें थी। हम शायद ही सार्वजनिक रूपमें साथ आते थे। फैजपुर कांग्रेस अेकदम सफल हुअी! परन्तु

सासवड़के जिस आश्रममें मैं रहती थी उसके संस्थापक शंकररावजी थे इतना कारण विरोधियोंके लिये काफी था। और लोगोंने जिस घटनाका अनुचित राजनीतिक लाभ उठाया था।]

राजकोट,
२१-५-३९

चि. प्रेमा

तेरा पत्र आज ही मिला। पढ़कर तुरन्त नारणदासको दे दिया। लेकिन बातें मैंने अखबारोंमें पढ़ा था। जिसका उपाय सहनशीलता और काम है। *आक्षेपोंका उत्तर भी न दिया जाय। उनकी सभाओंमें भी न* जाया जाय। लेख यदि न छपे होते तो वो सारे लिखने न पड़ते। प्रतिपक्षी न हो तो गाली देनेवालेको मजा नहीं आता।

तू देवका संघ छोड़े जिसकी मुझे आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। जब तक दोनोंके मत निर्दोष हैं और संघ केवल सेवाके लिये ही है तब तक देवको छोड़नेकी या तेरा काम बदलनेकी जरूरत मुझे मालूम नहीं होती। संभव है कि तेरा आहाराचार बदलनेकी जरूरत हो। परन्तु यह तो तू ही सोच सकती है अथवा मुझसे तू मिले और मैं भी मरकर तुझसे बातें कर सकूँ तो ही पता चले।

मैं दूसरी तारीखको बम्बई पहुँचनेकी आशा रखता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

१८९

बम्बई
२६-६-३९

चि. प्रेमा

तेरा पत्र अभी मिला। मेरी दृष्टिमें भी तू दस बरसकी ही है। सदा ऐसी ही रहना। मैं यहां काममें डूबा हुआ हूँ। यहां मैं पहली तारीख तक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पू महात्माजीके पत्रोंके मराठी अनुवाद प्रसाद-दीक्षा के लिये मुझे १२५ रुपये मिले। मैंने अुन्हें पू महात्माजीको अर्पण करना चाहा और जिसके लिये अुनसे अनुमति मांगी। जिस बारेमें अुन्होंने अपनी राय बताओी।

श्री केलकरने अुस समय अपनी आत्मकथा गतगोष्टी के नामसे अेक बड़े ग्रंथके रूपमें प्रकाशित की थी। अुसमें पू महात्माजीके बारेमें अुन्होंने अपने बहुतसे कड़वे मत लिखे थे। अुसकी चर्चा मैंने पू महात्माजीको लिखे अपने पत्रमें की थी।

स्वामी सत्यदेवका कौनसा वचन मैंने अुद्धृत किया था यह अब याद नहीं आ रहा है। बहुत करके गतगोष्टी में श्री केलकरने यह वचन दिया होगा। परन्तु स्व लोकमान्य तिलक महाराजके साथ पू महात्माजीका सत्य पर आधारित नीतिके सम्बन्धमें जो मतभेद हुआ था अुसके बारेमें मैंने पूछा था।

बिहारमें रामगढ़ कांग्रेसका अधिवेशन होनेवाला था। वहां स्त्रियोंमें पर्दा होनेसे स्वयंसेविका-दलका संगठन करनेका काम बहुत मुश्किल था। अेक दिन श्री शंकररावजीके नाम श्री राजेन्द्रबाबूका तार आया "स्वयंसेविकाओंके शिविरके लिये प्रेमाको भेज दें। श्री शंकररावजी मुझे आनेके लिये कहने लगे। अपने रिवाजके मुताबिक मैंने पू महात्माजीसे पत्र लिखकर आज्ञा मांगी थी।

अेक बार मैं वर्धामें थी — या सेवाग्राममें यह याद नहीं — तब स्व श्री महादेवभाओी मुझसे कहने लगे आप जितना सूत कातती हैं तो बापूको अपने सूतकी धोतियां क्यों नहीं देतीं? मैंने कहा "मेरी बड़ी जिच्छा है कि मैं अुन्हें अपने सूतकी धोती दूं। परन्तु अुन्हें तो बहुतोंसे धोती भेंटमें मिलती होगी। मेरी धोती यों ही पड़ी पड़ी सड़ती रहे तो फिर देकर क्या करूं? वे कहने लगे अरे, कहां भेंट मिलती है? कोओी नहीं देता! मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा सम्पतीने अवन्तिकाबाओी गोखले और गौरीबाओी तारिबकर तो भेजती थीं! वे कहने लगे अैसी तो अेक कहीं न कहींसे आती

होगी। परन्तु बापूजीको बकरत तो रहती ही है।" यह सुनकर मैंने संकल्प किया कि हर साल अपने सूतकी दो धोतियां पू महात्माजीको अर्पण करूंगी — खास तौर पर अनुकी वर्षगांठके दिन। १९३९ में पहली बार मैंने धोतिया भेजीं और बादमें अन्त तक संकल्पके अनुसार भेजती रही। अनुके अवसानके बाद भी धोतीके बजाय मुतने सूतकी आंटियां अुनका पवित्र स्मरण करके सेवाग्राम आश्रमको अर्पण करती हूं।]

जब मैंने पू महात्माजीको पहली बार धोतियां भेजी तब अुन्होंने चि कनुसे मुझे अेक कार्ड लिखवाया। अुसका आशय यह था पू बा अेक दिन पू बापूजीसे कहने लगीं आप जो धोती पहनते हैं वह फट गयी है। दूसरी हमारे पास नहीं है। क्या किया जाय? तब पू बापूजीने कहा भगवान देगा। और अुसी दिन आपका पत्र आया कि आपने धोतियां भेजी हैं। जिससे प्रसन्न होकर पू बापूजी पू बासे कहने लगे देखो भगवानने धोती भेज दी। फिर मुझसे कहा यह बात प्रेमाको लिखकर बता देना। जिसलिये यह कार्ड आपको लिख रहा हूं।"]

सेगांव-वर्धा
२९-८-३९

चि प्रेमा

तेरा पत्र आज ही मिला। रावी तो अमतुस्सलामने बांधी और पत्र मैं लिख रहा हूं।

पहले तो तेरे प्रश्नोंके अुत्तर १२५ रुपये देनेको क्यों नहीं दे देती? पुस्तकके लिये कोओ दे तो लेनेमें आपत्ति नहीं और जो बाकी रह उस रकमा अुसमें से जितना तू दे सके अुतना देनेको दे दे।

देनेकी यह बात मुझे बिलकुल समझमें आती है कि अुनका खर्च महाराष्ट्रसे ही निकलना चाहिये। यदि महाराष्ट्र खर्च न अुठाये तो समझना चाहिये कि महाराष्ट्रको अुनकी सेवा नहीं चाहिये।

पर्यटन जब चाहें तब मेरे साथ आकर रह सकते हैं। यहां (जयरुजी) तपी तो हमेशा रहती ही है।

मुझसे जब आया जाय तब आ जा। कम या ज्यादा जयरुका तेरे लिये प्रश्न ही नहीं है। यहां आयी कि तू अच्छी हुयी ही समझ। हां जितनी

बात बकर है कि मुझे बीचमें कहीं जाना पड़ सकता है। यो भी क्या? और जाना पड़ेगा तो तू तुरंत काम लेगी।

केळकरको जीतनेका जो प्रयत्न मैंने किया वुसे मेरा मन जानता है और वे स्वयं जानते हैं। मुन्हें (कांग्रेस) कार्यसमितिमें लेनेवाला भी मैं ही था। मुसका मुद्देश्य अेक ही था कि वे लोकमान्यके मुत्तराधिकारी माने जायं। जिस हद तक मुनके अनुकूल बना जा सके और मुन्हें जीता जा सके मुस हद तक वैसा करना मैं अपना धर्म समझता था। अब भी समझता हूं। लोकमान्यके साथ मतभेद होने पर भी मैं अपनेको मुनका पुजारी मानता हूं। मुनकी विद्वत्ता मुनकी देशभक्ति और मुनकी बहादुरीके लिये मेरे मनमें पूरा आदर था।

स्वामी सत्यदेवने जो कहा मुसमें जरा भी सचाजी नहीं है। मेरे मुंहसे वैसा वचन निकल ही नहीं सकता। वचन निकले तो मेरा सत्य और मेरी अहिंसा कलंकित हो।

मैं अवश्य मानता हूं कि रेयाहितके लिये वे असत्य और हिंसाका आचरण कर सकते थे। मुन्होंने मुझसे ही कहा था। यह चीज सब व्यवहारका विषय भी बनी थी। मुन्होंने शठं प्रति शाठ्यम् का प्रतिपादन किया था। मुसके विरुद्ध मैंने कहा था शठं प्रत्यपि सत्यम् — यह क्या तू नहीं जानती थी?

मैं मानता हूं कि तेरे सब प्रश्नोंके मुत्तर पूरे हो गये।

तेरे पत्रकी मैं प्रतीक्षा कर ही रहा था। अपनी प्रवृत्तिके बारेमें तूने जो लिखा मुसके संबंधमें मुझे कोजी आलोचना नहीं करनी है। तू जो करे मुझसे पूछकर ही करना चाहिये असा मैं नहीं मानता। भूल हो जाय तो भी क्या? मुझे विश्वास है कि तू आश्रमके आदर्शोंको ध्यानमें रखकर ही जो करना हो सो करती है और करेगी।

हां राजेन्द्रबाबूने तेरे विषयमें पूछा था। मैंने कहा था कि असी जिम्मेदारी मुठाने योग्य अवश्य है। यह जिम्मेदारी ले तो मैं विरोध नहीं करूंगा। असा हो तो आपके मुपरसे भारी बोझा मुतर जायगा। परन्तु मैं मुस पर दबाव नहीं डालूंगा। जिसके लिये आपको वैसी मांग करनी चाहिये। प्रेमा मुनके मातहत काम करती है। अब तो बस न?

सुशीलाका पत्र जिसके साथ है। बोरियां आने पर काममें लूंगा। सबके वे कैसी भी हों।

बापूके आशीर्वाद

१९१

[पू महात्माजीके जिससे आगेके दो पत्र बिना तारीखके हैं। पू महात्माजीकी अनुमति लेकर और राजेन्द्रबाबूकी आज्ञानुसार मैं रामगढ़ कांग्रेसके लिअे स्वयंसेविका-दलका संगठन करने बिहार गअी। अेक बार अक्तूबरका पूरा महीना वहां रही। अुस समय प्रवास करके मैंने प्रचारका काम किया। बादमें दिसम्बर १९३९ में फिर गअी। वहां चार महीने रहकर शिविर चलाया और रामगढ़ कांग्रेसका अधिवेशन पूरा होनेके बाद २ मार्चको वहांसे रवाना हुअी।

यह पत्र मुझे अक्तूबर १९३९ में बिहारके दौरेमें मिला था अैसा स्मरण है। अुस समय कांग्रेस कार्यसमितिने (यूरोपमें दूसरा महायुद्ध शुरू हो जानेके कारण परिस्थितिका विचार करके) जिस आशयका प्रस्ताव पास किया था कि कांग्रेसकी नीतिमें अहिंसा का प्रथम स्थान नहीं है। जिससे मेरे मनमें यह भय पैदा हुआ कि कहीं कांग्रेस पू महात्माजीका नेतृत्व न खो बैठे। मेरी तो अटल श्रद्धा थी कि पू महात्माजीका अवतार-कार्य ही भारतका स्वातंत्र्य है और अुनके नेतृत्वमें ही कांग्रेस अुसे प्राप्त कर सकेगी। अब यदि कांग्रेस अुनका त्याग कर देगी तो देशको और दुनियाको भी कितना नुकसान अुठाना पड़ेगा जिसका विचार मनमें आने पर मैं घबरायी और पू महात्माजीको पत्र लिखकर अपनी वेदना अुन्हें बतायी। यह पत्र अुसका अुत्तर है।]

संपादक-सचिव
(सी पी)

चि प्रेमा

तू क्यों निराश होती है? तेरी श्रद्धा कितनी कमजोर है? सारा जगत विरोध करे तो भी जो टिक सके वही है श्रद्धा अुसीका मूल्य है। अुसके बिना अहिंसा कैसे टिक सकती है? तू यह कहे कि तेरेमें अहिंसा

है ही नहीं तो यह दूसरी बात हुअी। अैसा हो तो अिसमें तू क्या कर सकती है? परन्तु अैसा हो तो अिसमें निराशा किस लिअे? तब तो जो हो अुसे तुझे देखते रहना चाहिये। मुझमें सच्ची अहिंसा होगी तो तुम लोगोंमें से किसी न किसीमें अैन मौके पर वह दीप्त होगी ही। परन्तु मुझमें अगर नहीं होगी तो तुम सबमें वह कहांसे आयेगी? अिस-लिअे परीक्षा तो मेरी हो रही है। अिससे तुझे तो (खुशीसे) नाचना चाहिये।

बिहारमें तूने अच्छी शुरूआत की है। मगर अब क्या होगा? किया हुआ काम व्यर्थ कभी नहीं जाता। अच्छे समय तो यहां तू गुजरेगी ही।

बापूके आशीर्वाद

१९२

[यह पत्र बहुत करके जनवरी १९४ में मिला होगा। बिहारमें मैंने अक्तूबर और दिसम्बर १९३९ तथा जनवरी १९४ में दौरा किया। तब वहां स्व श्री सुभाषबाबूके फॉरवर्ड ब्लॉकका जोर जगह जगह दिखाअी देता था। अुसमें गांधी-सेवा-संघ और कांग्रेसके कुछ कार्यकर्ता फंसे दिखाअी दिये। अिस बारेमें कुछ किस्से मैंने पू महात्माजीको पत्रमें लिख भेजे। अिस पर अुन्होंने यह पत्र दोनों संस्थाओंके सभ्योंको पढ़नेके लिअे भेजा।

प्रभा अर्थात् प्रभावती देवी जयप्रकाश। बिहारमें स्वयंसेविकाओंका दल खड़ा होनेवाला था। जनताने अुस पुकारको स्वीकार कर लिया। परन्तु अुसकी सरदारी करनेवाली कोअी बहन चाहिये थी। अिसके लिअे योग्य महिला नहीं मिली। मेरी नजरके सामने प्रभावती बहन थीं। अुन्हींको जिम्मेदारी सौंपनेका मेरा विचार था क्योंकि वे ही अकेली योग्य दिखाअी देती थीं। परन्तु जब बिहारमें मैं पहली बार अक्तूबरमें गयी और पटनामें वे मुझसे मिलीं अुस समय अुन्होंने कोअी विशेष अुत्साह नहीं दिखाया था। अुन्होंने यह आश्वासन दिया था कि अभी मेरी तबीयत ठीक नहीं है अेकाध महीनेमें कामके लायक ताकत आ जाने पर काम किया जा सकेगा। दूसरी बार दिसम्बरमें जब मैं वहां गयी तब प्रभा-

वती बहन सेवाग्राम गयी हुओ थीं। अुन्हें भेजनेके लिये मैंने पू. महात्माजीको पत्र लिखा। अुसीका यह जवाब है।

अिस पत्रके बाद मैंने प्रभावती बहनके साथ लगनसे पत्रव्यवहार शुरू किया। पहले तो "तबीयत अच्छी नहीं है, मुझे अंग्रेजी पढ़ना है" जैसा अेक विचित्र अुत्तर मिला। अुसके बाद मुझे जरा ब्यौरेवार लिखना पड़ा कि "आपके प्रान्तकी प्रतिष्ठाका सवाल है। अतः अंग्रेजी पढ़नेकी बात अभी तो आपको छोड़नी चाहिये। स्वयंसेविका-दलके लिये नेतृत्व करनेवाली कोओ महिला चाहिये और वह बिहारकी ही हो तो शोभा दे। अिस जिम्मेदारीके लायक और कोओ महिला मुझे मिली नहीं। अिसलिये आपको यहां आना पड़ेगा।" अिससे प्रभावती बहन अपने दायित्वके प्रति सावधान हुओं और पू. महात्माजीकी अनुमति लेकर रामगढ़ आ गओीं। फिर तो अुन्होंने वहां सुन्दर काम कर दिखाया।]

चि. प्रेमा

तेरा पत्र बहुत ही खबरोंसे भरा है। राष्ट्रपति और किशोरलाल भाओीको वह पत्र पढ़वाया। दोनों विचारमें पड़ गये। प्रभाका स्वास्थ्य अच्छा नहीं कहा जा सकता। यहां आयी है। अुसमें पहले जैसा अुत्साह नहीं रह गया है। कल रातको ही आयी। मैंने अुससे बातें नहीं कीं। हुक्म देकर तो आज भी वापस भेज सकता हूं। परन्तु यह तो तू नहीं चाहेगी। अभी तो यह यहीं रहे तो ठीक। अुसका मन जरा शान्त हो जाय, शरीर अच्छा हो जाय फिर आगेका विचार करूंगा।

बापूके आशीर्वाद

१९३

२९-१-४

चि. प्रेमा

बा की खास मांग प्रभासे मिलनेकी न होती तो प्रभा तुरंत वहां आ जाती। अुसके स्वास्थ्यका तू ध्यान रखना। तब वह तुझे जितना चाहिये अुतना काम देगी। परन्तु तू यह क्यों नहीं जानती?

बापूके आशीर्वाद

१९४

दिल्ली
५-२-'४

चि० प्रेमा

यह आ रही है प्रभा। अब अुसे हाथमें लेना। अुसे दूध घी और कुछ फलोंकी जरूरत रहेगी। जिसके बिना यह शरीरको टिका नहीं सकती। जिन चीजोंके बिना काम चलाया जा सके तो बहुत ही अच्छा। परन्तु यह प्रयोग जिस समय करने लायक नहीं है। यह जिससे काम लेनेका समय है। अुसकी खुराकके लिअे जो पैसा खर्च हो वह तू मुझसे मंगवा लेना। बाकी सब तो प्रभा ही तुझे कहेगी।

हम कल सवेरे वापस जा रहे हैं। बा साथ आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

१९५

[मैं बिहारमें थी तब मेरे हाथसे बाह्याचारकी कुछ भूलें हुआी थीं। सासवड़ लौटी तब राष्ट्रीय सप्ताहमें प्रायश्चित्त-स्वरूप सात दिनके अुपवास मैंने किये। रिवाजके मुताबिक पू० महात्माजीको समाचार देनेके बजाय पहले अुपवास शुरू कर दिये बादमें पत्र भेजा। अुसका यह जवाब है। अुपवास पूरे होनेके बाद मैं सेवाग्राम जाकर अुनसे मिली और सारी बातें अुनके साथ कर लीं।]

सेवाग्राम
१८-४-'४०

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। पैड[1] भी मिला।

तूने अुपवासके बारेमें पहले लिखा होता तो अच्छा रहता। मैं शायद तुझे न रोकता। परन्तु तुझे अुसका ज्यादा अच्छा अुपयोग बताता।

---

१ हाथ-कागजका पैड भेजा था।

अब अुपवासके बाद तुझमें शक्ति धीरे धीरे आ रही होगी। तेरा पत्र अधूरा है। जो कहना चाहिये वह तू नहीं कह सकी। यह तेरे लिअे ठीक नहीं माना जायगा। अब लिख सके तो लिखना। आकर बातें कर लेनी हो तो आ जा।

बापूके आशीर्वाद

१९६

[कांग्रेसकी ओरसे देशमें स्त्री-संगठन करनेकी योजना तैयार की जा रही थी और अुसमें भाग लेनेका मुझसे आग्रह किया जा रहा था। मैंने पू. महात्माजीका मार्गदर्शन अिस विषयमें मांगा था।]

सेवाग्राम-वर्धा,
१ -६-'४०

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। सब कुछ कड़वड़ीमें पड़ गया है। अिसमें से मार्ग निकालना होगा। हम दैवाधीन हैं। मुझे जो करना होगा वह करूंगा।

संगठनके बारेमें तेरी आत्मा कहे वैसा करना। मेरा विरोध नहीं है। प्रोत्साहन भी नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१९७

[२१ जून १९४ के दिन वर्धामें हुआी कांग्रेस कार्यसमितिने कांग्रेसकी नीतिकी घोषणा करनेवाला प्रस्ताव स्वीकार किया। असमें स्पष्ट रूपमें कहा था कि "अब आगे कांग्रेस गांधीजीके साथ अन्त तक नहीं चल सकती। अिसलिये पू. महात्माजी अब अेकाकी पड़ गये — यह कल्पना असह्य होनेसे मैंने अुन्हें पत्र लिख भेजा था। यह भूमिका अुसका है।]

सेवाग्राम
२५-१-४

चि प्रेमा

घबराती क्यों है? अैसा तो होता ही रहता है। अिसीमें मेरी परीक्षा है। अपूर्व अवसर (-वाला भजन) याद है? "अेकाकी विचरतो वळी' स्मशानमां — अेकाकी विचरता हूं और वह भी स्मशानमें अिस भजनकी अिन कड़ियों पर विचार कर लेना। कमेटी दूसरा कुछ कर नहीं सकती थी। सवाल तो सबके सामने खड़ा है। तुम सब भी क्या करोगे यदि मैं खोटा रुपया साबित होअूं? हमने वीरोंकी अहिंसा आजमाओी ही नहीं। अब समय आया है। मुसीबतमें अकिल बड़ा पड़े नहीं मर्द —यह कहावत मुझे मेरे मेमन मुवक्किल सुनाया करते थे। तू होशियार हो जा।

बापूके आशीर्वाद

१९८

[जुलाअीके पहले सप्ताहमें कांग्रेस कार्यसमितिने दिल्लीमें प्रस्ताव पास किया। यह प्रस्ताव भी राजाजीने तैयार किया था। खान अब्दुल गफ्फारखां अहिंसाके हिमायती थे। वे अकेले ही पू. महात्माजीके साथ रहे। पांच सदस्य तटस्थ रहे। बाकी सब — सरदार वल्लभभाओी भी — राजाजीके साथ थे। अिस प्रस्तावसे मुझे बड़ा आघात पहुंचा था। बुढ़ापेमें पू. महात्माजीकी अत्यन्त कड़ी कसौटीका समय आया था जिससे मुझे चिंता भी हुआी थी। अगस्तमें पूनामें अखिल भारतीय कांग्रेस समितिकी बैठक होनेवाली थी। वहां आप आयेंगे या नहीं यह भी मैंने महात्माजीसे पूछा था।]

सेवाग्राम-वर्धा,
१२-७-४

चि प्रेमा

तेरा दर्दभरा पत्र मिल गया। तुझसे अिससे कम मिल ही नहीं सकता। मेरी चिन्ता न करना। मुझे निराशा तो है ही नहीं। कमेटीके प्रस्तावसे तेरे जैसा आघात भी नहीं पहुंचा। तू हरिजन और हरिजन-

बन्धु पढ़ती रहना। मझे अभी रचना तो करनी ही पड़ेगी। परन्तु औसे कामके लिओ मैं अपनेको अभी तक बूढ़ा मानता ही नहीं।

तेरी वर्षगांठके आशीर्वाद आगे भरके लेना। वर्षगांठ आये तो अेक वर्ष कम हुआ न?

मेरा वहां आना जरा भी निश्चित नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

१९९

सेवाग्राम
७-८-'४

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। सच्ची अहिंसा तो अगर प्रगट होनेवाली होगी तो किसी समय प्रगट होगी। पहले तो हमें अपना घर ही सुधारना होगा। जो हमसे जुदा हो गये हैं अनुके प्रति सुधारता दिखाना हमारा प्रथम धर्म है। अिसमें सफल होंगे तो दूसरा कदम हमें आसान मालूम होगा। यदि अिसमें असफल होंगे तो अगला कदम अुठाया ही नहीं जा सकता। अिसकी स्पष्ट प्रतीति हो रही है या नहीं? हरिजन और हरिजन बन्धु खूब सावधानीसे पढ़ना।

बापूके आशीर्वाद

२००

[रामगढ़ कांग्रेससे लौटनेके बाद मैंने अेक पुस्तक लिखी थी सत्याग्रही महाराष्ट्र। अुसमें लोकमान्य तिलक महाराजके अवसानसे लेकर फैजपुर कांग्रेस तकके महाराष्ट्रके राजनीतिक अितिहासका वर्णन था। महाराष्ट्र कांग्रेसमें परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी कार्यकर्ताओंमें संघर्ष कैसे चला और बादमें महाराष्ट्रमें कांग्रेस-निष्ठा और पू० महात्माजीका नेतृत्व अिन दोनोंका अुत्कर्ष कैसे होता गया यह सारा अितिहास अुसमें वर्णन किया गया था। यह पुस्तक मैंने पू० महात्माजीको समर्पण की

थी। अिसलिअे पुस्तककी अेक प्रति मुझे भेजी और लिखा आपको मराठी भाषा अच्छी तरह नहीं आती और आप अनेक कामोंमें फंसे हुअे हैं। अिसलिअे पुस्तक न पढ़ सकें तो भी कमसे कम अर्पण-पत्रिका तो पढ़ ही लीजिये। अुस पत्रका अुत्तर अिसमें है।

अुसकी वर्षगांठकी भेंट — मेरे सूतकी दो धोतियां भी भेजी थीं।

सेवाग्राम
९-१-'४

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। पुस्तक मिली। अर्पण-पत्रिका पढ़ी। धोतियां पहुंची थीं और अभी तक दूसरी धोतियोंके साथ पहन रहा हूं। पुस्तक अपने पास रख ली है। पढ़ लेनेकी अिच्छा तो है।

बापूके आशीर्वाद

२०१

[व्यक्तिगत सत्याग्रहकी तैयारियां हो रही थीं। मैंने पूछा कि अुसमें स्त्रियोंके लिअे स्थान है या नहीं। कारण प्रारंभमें तो अैसा लगता था कि पू० महात्माजी नेताओं तथा धारासभाके सदस्योंको ही जेल भेजना चाहते थे।]

सेवाग्राम,
१८-१-'४

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। स्त्रियोंके लिअे अिसमें अवश्य स्थान है। परन्तु मुझे यह पता नहीं है कि यह लड़ाई मुझे और देशको कहां ले जायगी। सब अीश्वरके हाथमें है।

बापूके आशीर्वाद

२०२

सेवाग्राम
२८-१ -'४

चि. प्रेमा

तू कैसी है? अनशन तो कपालमें लिखा ही दीखता है। सत्याग्रहीको कभी कभी तो करना ही पड़ता है। परन्तु मेरे बिना तू न की सके तो खुशीसे मेरे साथ करना। परन्तु वह संयम करके नहीं। योगाग्नि प्रगट करके जल मरना। तू जो अपवास करती है अुसे संयम ही कहा जायगा। अुपवासका अधिकारी होना चाहिये। जो यह समझते हैं वे तो मेरे जैसेके अुपवाससे नाचेंगे। वे मिथ अुपवासको अुत्सव मानेंगे। अुसके आसपासका दूसरा काम करेंगे। अुपवासके लिये शर्तें तो होंगी ही। अुनका पालन हो जाय तो अुपवास बन्द हो जाय। अकल न गवां बैठना।

बापूके आशीर्वाद

२०३

[मैंने अपने प्रांतसे चुने हुये सत्याग्रहियोंको कानून-भंग करनेकी शिजाजत दी जाय यह सिफारिश पू. महात्माजीने कांग्रेस कार्यसमितिसे की। जिसलिये श्री शंकररावजीने मुझे भी जेल जानेके लिये तैयार रहनेको कहा। यह बात मैंने पू. महात्माजीको बताओ। अुसका जवाब।]

सेवाग्राम
११-११-'४

चि. प्रेमा

शंकरराव कहें वैसा करना। परन्तु शंकरराव मुझसे पूछे बिना कुछ न करें।

बापूके आशीर्वाद

२०४

सेवाग्राम
२५-११-४

चि प्रेमा

तेरा पत्र आया तेरा नाम भी सूचीमें रहेगा। ीश्वर तेरी रक्षा करेगा।

बापूके आशीर्वाद

२०५

[पू महात्माजीकी अनुमति आनेके बाद श्री शंकररावजीकी तैयार की हुअी योजनाके अनुसार महाराष्ट्रमें पहले-पहल सत्याग्रह मैंने किया और मुझे तीन मासकी सादी सजा हुअी। जेलसे पू महात्माजीको पत्र लिखकर मैं अपनी जेलवासी बहनोंकी हालत अुन्हें बतलाया करती थी। जेलसे लिखे गये मेरे पहले ही पत्रका यह अुत्तर है। श्री सरोजिनी देवी नायडू मेरे पहली बारके जेलवासके समय हमारे साथ ही थीं। परन्तु अुनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जानेसे सरकारने अुन्हें छोड़ दिया।

पहली सजा भुगतकर छूटनेके बाद पू महात्माजीकी अनुमतिसे मैं अुनसे मिलने सेवाग्राम गयी थी। जेलवासी बहनोंके बारेमें अुनसे मैंने कुछ प्रश्न पूछे जिनके अुत्तर अुन्होंने लिख दिये। अिसलिअे कि मैं दूसरी बार जेल जाअू तब यह पत्र लेकर ही अंदर जाअूं और अुनके हाथका लिखा हुआ पत्र बहनोंको पढ़ाअूं तो अुसकी सत्यताके बारेमें किसीको शंका न रहे। अिसलिअे अिस पत्र पर तारीख या हस्ताक्षर नहीं है। (देखिये आगे पत्र नं २ ६)

श्री लीलावतीबहन मुन्शी अुस समय जेलमें थी। मेरे साथ अुन्होंने पू महात्माजीकी सलाहके लिअे अेक प्रश्न भेजा था। वे बम्बअीकी नगर पालिकाकी सदस्या थीं। अुस नगरपालिकाके नियमानुसार प्रति वर्ष चार कौमोंमें से अेकका प्रतिनिधि मेयर चुना जाता था। यह कौमी चुनाव

बन्द करनेके प्रयत्न चल रहे थे। औकाबहनका विचार यह था कि मेयर-पदके लिये कोमी स्त्री-अुम्मीदवार खड़ी रहे, तो हिन्दू, मुस्लिम पारसी अीसाअी सब कौमें अुसका स्वागत करेंगी और कौमी चुनाव बन्द करनेमें बड़ी सहायता मिलेगी। अुस वर्षके मेयर हिन्दू थे। अगले वर्षके लिये अुम्मीदवार होनेकी औकाबहनकी अिच्छा थी कारण नगर पालिकाके कुछ सदस्योंने अुन्हें सुझाव दिया था कि वे खड़ी हों तो सभी सदस्य अुनके अनुकूल होंगे। मेयर कांग्रेसी रहेगा यह भी अिसमें लाभ था। अिसलिअे अुन्होंने पू० महात्माजीका मार्गदर्शन मांगा था।

जेलमें कमजोर, रोगी और बच्चोंके साथ भी स्त्रियां आने लगी थीं। बादमें वे सत्याग्रहीकी मर्यादाओंका पालन नहीं कर पाती थीं। अूंचा वर्ग प्राप्त करनेवाली स्त्रियां अपराधी स्त्रियोंसे अधिकार जताकर सेवा लेती थीं। अिन सब बातोंकी पू० महात्माजीके साथ चर्चा हुअी थी। सेवाग्रामसे लौटते ही मैं तुरंत जेल चली गअी। तब यह पत्र साथ ही था।]

सेवाग्राम-वर्धा
२८-१२-'४

चि० प्रेमा

तेरा सुन्दर पत्र मिला। भोले[1] वगैराको भेजकर नारणदासको भेजूंगा।

सुना है कि सुशीला तुमसे मिल गअी है। तब तो सब कुछ सुना होगा। भागवत[2] ने भी मुझे लिखा तो था ही।

कताअी प्रार्थना वगैरा नियमानुसार होती है यह सरोजिनीदेवीने भी कहा था। सब बहनें अच्छे शरीर लेकर और रचनात्मक कार्यके लिये खूब कुशलता प्राप्त करके निकलेंगी अैसी आशा रखता हूं।

प्रभावती अभी यहीं है। जयप्रकाशके साथ अुसने खूब यात्रा की। यहां तीन दिन रही। आज या कल जयप्रकाश आयेंगे और ले जायेंगे। तेरी दी हुअी सिक्षा और दीक्षा अैसेके लिये फलवती सिद्ध हुअी है।

---

१ श्री रघुनाथराव भोले। गांधी-सेवा-संघके मंत्री।

२ आचार्य भागवत। साधनाके हमारे आश्रमके संचालक।

पहली जनवरीको अपने काम पर चढ़ जायगी। अेक मासकी छुट्टी लेकर निकली थी।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें अखबारोंमें जो निकले मुझे निकम्मा समझना। मेरी तबीयत ठीक ही रहती है। अपनी तन्दुरुस्तीकी संभाल रखता हूं। जब तक अीश्वरको मुझसे काम लेना है तब तक तन्दुरुस्ती अच्छी ही रखेगा।

बा साथ ही है। वह शान्त है। लीलावती यहां आनेके बारेमें संयमसे काम ले रही है।

महादेव वगैरा सब मजेमें हैं।

बापूके सबको आशीर्वाद

२०६*

लीलावतीबहनसे कहना कि मुझे स्त्रियोंका ही विचार करना है। अपना कभी नहीं। कांग्रेसके खातिर अनुशासन हरगिज नहीं तोड़ा जा सकता और स्त्रियोंको युद्धमें नहीं जोड़ा जा सकता। यह स्त्रियोंकी दृष्टिसे भी भयानक है। परन्तु अीसाअियोंकी बारी आये तब अीसाअी स्त्रीको लिया जा सकता है। अिसी तरह हिन्दुओंकी बारी आये तब हिन्दू स्त्रीको और मुसलमानकी बारी आये तब मुसलमान स्त्रीको लिया जा सकता है।

जो बहनें कमजोर और रोगी हैं उन्हें बाहर हरगिज नहीं आना चाहिये। अिसी तरह कोअी बहन अपने बच्चोंको लेकर जेलमें नहीं जा सकती।

क और ख वर्गवाली बहनें जितनी कम सुविधायें भोगें उतना अधिक अच्छा है। असलमें तो ग वर्गसे कुछ भी ज्यादा सुविधा न भोगना ही हमारा आदर्श है।

जुर्माना अदा करनेमें उद्देश्य यह है कि जैसे जेलका भय छोड़ा है वैसे ही जुर्मानेका भी छोड़ें। जिसका यह अर्थ कभी नहीं कि जुमार

---

* देखिये पत्र २५ की टिप्पणी।

ही नहीं चाहिये। आनेवाला ही होगा तो अुसका स्वागत करना और प्रार्थना करना कि अुसे सहन करनेका बल अीश्वर मुझे दे।

२ हरिजन बन्द हो गया क्योंकि दिल्लीसे अकस्मित पत्र मिला। अुस परसे देखा जा सका कि सरकारकी वृत्ति हरिजन का स्वागत करनेकी नहीं थी और अिस बारकी लड़ाओमें हरिजन को लड़नेका कारण नहीं बनाना है।

३ वर्तमान राजनीतिका असर मुझ पर कुछ नहीं है, क्योंकि मैंने समझ लिया है कि अभी कुछ नहीं हो सकता। अिसीलिये मैंने कहा है कि यह लड़ाओ लम्बी है। अिसीमें हमारा हर प्रकारसे श्रेय है।

महादेव फिर अेक दिनके लिये आज बम्बओ गये हैं। दुर्गाको बीमार छोड़कर गये हैं। दोनों हिम्मतवाले हैं। अिन दोनोंने समझकर अपनी आहुति दी है।

सब बहनोंको मेरे आशीर्वाद।

बा अभी दिल्लीमें है। अुसकी तबीयत ठीक होती जा रही है, परन्तु समय लगेगा।

बापूके आशीर्वाद

२०८

सेवाग्राम-वर्धा
११-५-'४१

चि० प्रेमा

अिस बार तुझे देरसे पत्र लिख रहा हूं। कामकी भीड़ बहुत है। और तेरा पत्र भी पत्रोंके ढेरमें दबा रहा।

वहांके समाचार तो मुझे मिलते ही रहते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अुत्तम रहता है।

सबकी परीक्षा अच्छी तरह हो रही है।

अम्तुस्सलाम तो बीमार ही रहती है। बा दिल्लीमें अभी कमजोर हो गयी है। सुशीला[1] खूब सेवा-शुश्रूषा कर रही है। अच्छी हो जानेकी आशा रखती है। लीलावतीको बाकी सेवाके लिये भेजा है।

---

१ डॉ० सुशीला नय्यर, प्यारेलालजीकी बहन।

अप्पा तो बढ़िया काम कर ही रहे हैं। अिस बार तू सीधी आयेगी ही।[1]

अनुप-तख्ती मिली होगी। यह ठीक बनी हो तो मति अच्छी देती है।

अपनी मुई अच्छी कर लेना। लिखना और पढ़ना आना ही चाहिये।

अपना वजन बढ़ाना।

कमूकी सगाओ हो गयी जैसा माना तो था। परन्तु अब जैसा नहीं है। भविष्यमें क्या होगा यह तो दैव जाने।

राजकुमारी[3] *जलवायु-परिवर्तनके लिये शिमला गयी हैं।*[2]

मेरी और बाकी तबीयत अच्छी है। महादेव देहरादून गये हैं। आज मुलाकात करके लौटेंगे। अहमदाबादमें अुन्होंने बढ़िया काम किया जैसा कहा जायगा।

सब बहनोंको

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री अप्पासाहब पटवर्धन महाराष्ट्रके गांधी कहलानेवाले पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता। अेम. अे. की परीक्षा पहली श्रेणीमें पास होनेके बाद पूनामें प्रोफेसर हो गये। परन्तु असहयोग आन्दोलनके समय (१९२) में नौकरी छोड़कर पू. गांधीजीके पास संस्कार लेने सत्याग्रहाश्रम चले गये। वहांसे लौटकर महाराष्ट्रमें अपने रत्नागिरी जिलेमें रहे। आज साठसे अधिक अुमरमें भी भारी सेवाकार्य कर रहे हैं। खास तौर पर हरिजनोंके काममें अुन्होंने क्रांति करा दी है। कुछ सुन्दर पुस्तकें भी लिखी हैं।

२ अिसके बादका अेक वाक्य चेकवालोंने काट दिया है।

३ राजकुमारी अमृतकौर।

२११

[छूटनेके बाद मैं राजकोट गअी। सुशीला तथा श्री नारणदास काकासे मिलकर बारडोली गअी। सुशीला भी मेरे साथ थी। परन्तु अेक दिनके बाद वह बम्बअी चली गअी। मैं लगभग अेक सप्ताह तक बारडोलीमें ही रही। वहां कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठक अनेक दिन तक चलती रही।

कुछ नेता और अुच्च कोटिके माने जानेवाले रचनात्मक कार्यकर्ता पू. महात्माजीके बारेमें आपसमें बात करते थे तब आलोचना करते थे कि "बूढ़ा आजकल जरूरतसे ज्यादा बोलता रहता है। सामनेवालेको मूर्ख ही समझकर बकवास करता रहता है। जिसके पास अुदाहरण तो केवल दक्षिण अफ्रीकाके ही होते हैं। जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें था यह वचन बार-बार कहता रहता है। हममें कोअी बुद्धिशाली है या नहीं? हमारी तो सुनता ही नहीं। अैसी आलोचना अपने सामने होती सुनती तब मैं चिढ़ जाती और आलोचकोंसे लड़ने लगती। बादमें अेक-दो भाअियोंसे मैंने कहा कि देखिये यह बात मैं महात्माजीसे कहूंगी।" जरूर ही कहिये अुन्होंने अुत्तर दिया। अिसलिअे मैंने महात्माजीको पत्रमें सावधान किया।]

सेवाग्राम
१०-१-'४२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरा काम वहां अच्छा चल रहा है।

तूने मेरे बातूनीपनके बारेमें याद दिलाकर अच्छा किया। मूर्ख तो मैं तुझे कहूंगा ही। परन्तु तेरी आलोचना ध्यानमें रखूंगा। तू दूसरोंकी भी साक्षी देती है वह मेरे लिअे चेतावनीका काम करेगी। अेक बात जरूर सच्ची लगती है। मेरे पिछले अनुभव दलील नहीं कहे जा सकते। मुझे भले ही वे बल दें। परन्तु दलीलमें अुनका गौण स्थान है। जिससे

सेवाग्राम
१७-१-'४२

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। चोलियां भी मिलीं। कल पहन कर आनेवाला हूं। अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

२१६

[श्री सुचेताबहन कृपालानी अुस समय अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी महिला-शाखाकी अध्यक्षा नियुक्त हुअी थी। महाराष्ट्र शाखाकी अध्यक्षा बननेके लिये वे मुझसे कह रही थीं। अिसलिये पू० महात्माजीसे मैंने पूछा। यह अुसीका जवाब है।]

सेवाग्राम
२२-१-'४२

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। देवकी प्रसादी रोज पहनी जाती है। खूब हलकी चोलियां हैं। बढ़िया हैं।

तू सुचेताको लिख दे: मुझको कहा गया है कि यह काम मैं हाथमें लूं। आप लिखें कि मुझे क्या क्या काम करने पड़ेंगे। मेरे हाथ भरपूर रहते हैं। यों तो मैं महिला-सेवा कर ही रही हूं। विशेष क्या करना चाहिये जो हम नहीं करते हैं?

अैसा पत्र लिखना और जवाब मुझे भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

२१४

सेवाग्राम
१६-४-'४२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला।

शंकररावकी धोतियोंकी सब बीच्यां करते हैं। तू जो व्यवस्था करे वह स्वीकार है।

शंकररावको कामी पकड़े यह संभव नहीं है।

अपने लेखोंमें मैं सतत विचार करता हूँ। तू ध्यानपूर्वक अुन्हें पढ़ना और न समझे तो पूछना।

शंकररावको जो शंका थी अुसका अुत्तर दे दिया है। वह तूने पढ़ा होगा।

अन्तमें तो सबको जैसा मैंने लिखा है अपनी जिम्मेदारी पर काम करना है। जिस हद तक हम गांवोंमें फैलेंगे अुसी हद तक सुशोभित होंगे अिस बारेमें मुझे शंका नहीं है।

सूतके माप (वजन)के बारेमें मेरी योजनाको समझना। बाकी अमल में आवेगी।

बापूके आशीर्वाद

२१५

सेवाग्राम-वर्धा
१९-४-'४२

चि. प्रेमा

तेरे सब पत्र मिल गये हैं। अुन सबके अुत्तर दिये हैं। सबके अुत्तर दे परन्तु डाकका ठिकाना न हो तो मैं क्या करूं? तू ही कह। हरिजन पढ़कर जो ठीक लगे वह करना।

बापूके आशीर्वाद

२१६

बम्बअी
१४-५-'४२

चि. प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तू मेरे पत्रोंकी शिकायत करती है, यह ठीक नहीं है। पत्र अिधर-अुधर चले जायें तो अिसका क्या किया जाय?

सुचेताने लिखा है अुस विषयमें अगर तू यह भार अुठा सके तो ले लेना। परन्तु ब्यौरेवार जान तो ले कि क्या करना है। अिसके सिवा मेरी बीमारियोंमें अुसका स्थान कहाँ रहेगा यह सोच लेना है। अिसमें तो शंकरराव ही तेरा अधिक मार्गदर्शन कर सकते हैं क्योंकि तुम्हींको वहाँका भार वहन करना है। मैं क्या करूँगा यह तो अेकाअेक नहीं कह सकता। परन्तु जो होगा वह तुरन्त ही करना होगा।

मैं तेरा मन जाना चाहता हूँ यह कहना तो व्यापारी है।

यहाँसे शनिवारको निकलनेकी आशा रखता हूँ। मेरी तबीयत ठीक ही है।

सुशीला यहाँ है अिसका भी मुझे पता नहीं है तब मेरे पास आयी तो कहाँसे होगी?

बापूके आशीर्वाद

मेरे साथ महादेव प्यारेलाल कन्हैया हैं। प्यारेलाल मथुरादासको[1] देखने नासिक गये हैं।

२१७

[क्रिप्स साहबकी समझौतेकी बातचीत असफल हुअी और [illegible] सामने दिखाअी देने लगा। जापानने ब्रह्मदेश पर कब्जा जमा लिया था और भारत पर आक्रमण होनेकी संभावना दिन-दिन बढ़ती जा रही थी। जनतामें बेचैनी बढ़ रही थी। कार्यकर्ता और नेता परेशानीमें पड़े थे। भविष्यमें क्या करना होगा अिस बारेमें लोगोंमें

१ स्व. श्री मथुरादास त्रिकमजी। पू. महात्माजीके भानजे जो बम्बअी नगरपालिकाके मेयर थे। अुस समय नासिकमें बीमार थे।

अनेक प्रकारके अनुमान होने लगे। नेताओंमें अेकवाक्यता नहीं थी। अिस-लिओ सेवाग्राम जाकर पू॰ महात्माजीसे बातचीत करके अपनी तमाम शंकाओंका निवारण कर लेनेकी मेरी अिच्छा हुआी। अिसलिओ मैंने आग्रह पत्र लिखकर वहां आनेकी अनुमति मांगी थी।]

सेवाग्राम
८-७-'४२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तू आनेकी अिजाजत मांगती है, सो मेरी तरफसे तो है ही। पर देवकी अिजाजत लेनी। आये तब शंकाओंका निवारण करा लेना। तू अपनी बुद्धि काममें ले तो सब शंकाओंका अुत्तर तू ही दे सकती है। मैं विश्वासके साथ कहता हूं कि तेरी शंकाओंमें कोअी सार नहीं है। अधिक लिखनेका समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

२१८

[प्रारंभमें वर्षगांठके आशीर्वाद हैं।

बम्बअीमें अखिल भारतीय कांग्रेस समितिकी बैठक होनेवाली थी अिसलिओ मैंने सेवाग्राम जानेके बदले बम्बअी जाकर ही पू॰ महात्माजीसे मिलना पसन्द किया। बम्बअीसे मैं अुनके साथ सेवाग्राम जानेका मनोरथ रखती थी।]

सेवाग्राम
२१-७-४२

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरे मनोरथ पूरे हों। अिसमें सब-कुछ आ गया।

बम्बअीमें मुझसे मिलना और वहां तुझे संतोष न हो तो अवश्य मेरे साथ यहां आना यदि मैं आअूं तो। आगेका हाल अीश्वरके सिवा कौन जानता है।

बापूके आशीर्वाद

२१९

[१९४२ के अगस्तमें अखिल भारतीय कांग्रेस समितिकी जो प्रसिद्ध बैठक बम्बअीमें हुअी थी अुसे देखने मैं गअी थी। ८ अगस्तकी रातको पू. महात्माजीका भाषण हुआ फिर राष्ट्रपति मौलाना आजाद बोले। अुसके बाद बैठक पूरी हुअी। अुस समय व्यासपीठ पर जाकर मैं पू. महात्माजीसे मिली और अुनसे पूछा "अब आगे क्या कार्यक्रम है?" अुन्होंने कहा "अब ११ तारीखको वर्धा जाना है।" मैंने कहा "महात्माजी मैंने तो सुना है कि आज रातमें आपको और सब नेताओंको पकड़ लिया जायगा।" वे हंसते हंसते कहने लगे "मेरे अितना साफ और विस्तृत भाषण देनेके बाद अगर सरकार मुझे पकड़ेगी तो वह मूर्ख कहलायेगी।" मुझे आश्चर्य हुआ। अेक क्षण चुप रहकर मैंने कहा "आप वर्धा जायं तो मुझे आपके साथ चलना है।" वे बोले "तुम्हें मेरे साथ बैठकर ही वर्धा चलना है।"

परन्तु भावी कुछ और ही थी। ९ तारीखको अुष:कालसे पहले सब नेता पकड़ लिये गये। श्री शंकररावजीके पकड़े जानेकी खबर मुझे समय पर मिल जानेसे मैं वहां मौजूद रह सकी। परन्तु कोअी सवारी न मिलनेसे मैं बिड़ला-भवन समय पर नहीं पहुंच सकी और न गिरफ्तारीके समय पू. महात्माजीसे मिलना ही हुआ। किस्मतका भाग्य था कि वह अुसी समय पकड़ी गअी और अेक ही रेलगाड़ीमें अुसने पूना तक पू. महात्माजीके साथ यात्रा की। शामकी गाड़ीसे मैं पूनाके लिअे रवाना हुअी। परन्तु पूनाके शिवाजी नगर स्टेशन पर मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और मैं रातको यरवडा जेल पहुंच गअी।

फिर डेढ़ वर्ष तक जेलवास रहा जिसका अितिहास यहां देनेमें औचित्य नहीं होगा। पू. कस्तूरबा बीमार पड़ीं तब मुझे अुनकी सेवाके लिअे आगाखां महलमें ले जानेवाले थे। जेलोंके बड़े अधिकारी मेजर भंडारीने पू. महात्माजीकी मेरे लिअे की गअी सूचनाको स्वीकार भी कर लिया था। परन्तु दूसरे ही दिन दूसरे नामकी मांग की और बादमें मनु गांधीको बुलवा लिया गया अित्यादि बातें मुझे छूटनेके बाद मालूम हुअी। तंद

हमेशाकी तरह जिस बारका कारावास भी मेरे लिये तपस्याका सिद्ध हुआ — सबसे कड़ी तपश्चर्या कहूँ तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मैं १ जनवरी १९४४ के दिन जेलमुक्त हुआी। मेरे साथ थी मणि बहन पटेल थी। राजनीतिक स्त्रियोंमें सबसे अंतमें छूटनेवाली हम दो थी। मुझे क्या पता था कि चार वर्ष बाद ठीक जिसी दिन पूज्य महात्माजीका बलिदान होगा!!

सासवड आश्रमके अधिकांश सदस्योंके जेल चले जानेसे और बाकी लोगोंके अपने अपने गाँव चले जानेसे आश्रम बन्द हो गया था। अुसे फिर चालू किया गया। परन्तु हमारे पुराने साथी और आश्रम-संचालक आचार्य भागवत जेल जानेके बाद भिन्न विचारके हो गये थे। वे पहले कांग्रेसके पक्के अनुयायी थे और अब अुसके कट्टर विरोधी हो गये। आश्रमका और अुनका सम्बन्ध टूट गया। बादमें तो आश्रमको महिलाश्रमका रूप प्राप्त हुआ।

छूटनेके बाद मैं कांग्रेसके काममें लग गयी थी। फरवरी-मार्चमें १९ दिनकी अवधिमें महाराष्ट्रके अलग अलग जिलोंका दौरा करके मैं मुख्य मुख्य कार्यकर्ताओंसे मिल आयी। बादमें जिन कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी बैठक शुरू हुआी और कांग्रेस रचनात्मक समितिकी स्थापना हुआी। अुसके अध्यक्ष खेरसाहब थे। अेकाध महीने मैंने कामचलाअू मंत्रीका काम किया। बादमें कांग्रेसके पुराने मंत्री पैरोल पर छूटे तो अुन्हें मंत्रीपद सौंपकर मैं साधारण सदस्य रही। सरकारने प्रान्तीय कांग्रेस समितिको गैरकानूनी घोषित किया था। जब तक सरकारने कांग्रेस परसे प्रतिबन्ध अुठा नहीं लिया तब तक प्रान्तमें रचनात्मक समितिके द्वारा ही काम होता था। प्रान्तीय अध्यक्षके आदेशानुसार मैं प्रान्तीय स्त्री-संगठनका काम करती थी। कांग्रेस बन्धन-मुक्त हुआी अुसके बाद भी यह काम चालू ही रहा। सन् १९५१ के चुनावके बाद मैंने कांग्रेसकी सदस्यता छोड़ दी। अुस समय महाराष्ट्र कांग्रेस स्त्री-संगठन समितिने प्रस्ताव पास करके स्वयं ही अपना विसर्जन कर दिया। (सन् १९५२)

पू. महात्माजी छूटे तब मैं सासवडमें ही थी। बादमें अुनसे मिलने पर्णकुटी गयी। बहुत दिनों तक अुनका मुकाम पूनामें ही था। फिर कारणवश पत्रव्यवहार शुरू हुआ।

पू महात्माजी थोड़े दिन पूनामें रहे और बादमें जुहू चले गये। वहां मैं अुनसे मिलने गयी थी। तब श्री सरोजिनीदेवी अुनके पास रहती थीं। डॉ सुशीला नय्यर मुझे और मेरी सहेलियोंको महात्माजीके पास ले गयी परन्तु श्री सरोजिनीदेवी अिससे बहुत नाराज हुआी। अुन्होंने मुझसे कहा "मैं बूढ़ेकी चौकीदार हूं। मेरी अिजाजतके बिना किसीको यहां नहीं आना चाहिये। पू महात्माजीकी बीमारीमें अुन पर पहरा लगे तो अिसमें मुझे बुरा लगनेका कोअी कारण ही नहीं था। अिसलिअे फिर मैं अुनसे मिलने गयी ही नहीं। परन्तु वे फिर पूना आये तब रचनात्मक समितिके सदस्योंको अुनका मार्गदर्शन मिले अिसके लिअे कार्यक्रम तय करनेका काम मुझे सौंपा गया था। प्रो लिमये अुस समय समितिके सूत्रधार थे। *अुन्होंने ऑपरेशन कराया था जिस कारण वे कमजोर हो गये थे।* पू महात्माजीको मैंने पत्र तो लिखा परन्तु अुसमें जुहूके द्वारपाल का स्मरण कराया और लिखा कि "पूनामें यदि कोअी द्वारपाल हो तो अुसकी अिजाजत लेकर ही मैं कार्यक्रमकी योजना करना चाहती हूं।

पू महात्माजी जेलसे छूटे तब अुनकी तबीयत ठीक नहीं थी अिसलिअे बहुत दिन तक किसी प्रकारका सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं हो सका। परन्तु जुहूमें स्वास्थ्यलाभ करनेके बाद वे पूना लौट आये और डॉ दिनशा मेहताके नसिंग होममें रहने लगे। वहीं ता २९-९-'४४को लगभग ५ महाराष्ट्रीय कांग्रेस कार्यकर्ताओंको अुन्होंने मार्गदर्शन दिया।]

पूना
१८-९-'४४

चि प्रेमा

तेरा पत्र आज मिला। तू जैसी जल्दबाज थी वैसी ही आज भी है। तेरी अिच्छा हो तब आ जाना। यहां तो द्वारपाल मैं ही हूं। लोग मेरी प्रार्थना स्वीकार करके आते ही नहीं। जिन्हें मैं बुलाअूं वे ही या जिन्हें आनेकी मांग की हो और मैंने मान ली हो वे ही आते हैं। मझसे जाच कराये बिना किसी आदमीको मानना ही नहीं चाहिये। भीड़ बनकर जिस बार यहां कोअी नहीं आ सका। तेरे पास नाम हों तो

मुझसे पूछ लेना। अुनके बारेमें भी पूछना हो तो पूछ लेना। तेरे पत्रोंको कोअी नहीं रोकता।

प्रो. लिमये मिलनेके संकल्पसे ही मैं आया हूं। जिन्हें वे लाना चाह रहा सकते हैं। अभी तो प्रोफेसर खुद ही बीमार हैं। जो काम मैं पूनेमें नहीं कर सका वह यहां कर लेना चाहता हूं। प्रो. लिमये तेरे द्वारा पुछवायें जिसे मैं अपने लिअे शरमकी बात मानता हूं। अुनके लिअे मेरे मनमें बहुत आदर है।

काम तो जितना काफी है न? देवगांडेजीके[1] बारेमें अलग लिखनेकी जरूरत नहीं रह जाती न?

बापूके आशीर्वाद

२२०

[पू. महात्माजीसे मैंने बिनती की थी कि वे सेवाग्राम जायें तब मुझे भी अुनके साथ चलना है। अुन्होंने अनुमति दे दी। तदनुसार मैं अुनके साथ वर्धा होकर सेवाग्राम गयी। बम्बअी जाना नहीं हुआ। कल्याण होकर ही हम लोग वर्धा गये।]

पंचगनी
२४-७-'४४

चि. प्रेमा

सुशीला दिल्ली गअी है। मैं यहांसे २ अगस्तको रवाना होअूंगा और सीधा वर्धा जाअूंगा। बम्बअी जाना पड़ेगा या कल्याण यह नहीं जानता। तू मेरे साथ अथवा जब मरजीमें आये तब आ सकती है। मेरी तबीयत अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री पो. आ. अुर्फ तात्यासाहब देवगांडे। वे महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस समितिके मंत्री थे।

२२१

[जेलसे छूटनेके बाद देशकी बिगड़ी हुअी हालतको देखकर पू॰ महात्माजी अुपवासका विचार करने लगे थे। कार्यकर्ताओंके आग्रहके कारण तथा हालत सुधारनेके लिअे जीतोड़ मेहनत करनेका वचन सभीने दिया जिसलिअे अुन्होंने अुपवास स्थगित कर दिया। २८ और २९ अक्तूबर १९४४ को बम्बअी राज्यकी चारों प्रान्तीय कांग्रेस समितियोंके कार्यकर्ताओंकी अेक बड़ी सभा बम्बअीमें हुअी। अुसमें रचनात्मक कार्यको विधायक स्वरूप देनेका और अुसकी गति बढ़ाने तथा कांग्रेस संगठनको मजबूत करनेका सभीने निश्चय किया और अेक योजना बनाअी।]

सेवाग्राम
९-११-'४४

चि॰ प्रेमा

तू बिलकुल पागल है। मौतसे पहले ही मर रही है क्या! अुपवासका डर ही है न? वह आया तो नहीं। औश्वरकी आज्ञाके बिना थोड़े ही आयेगा? जो अुसका रहस्य समझता है वह तो अुसका स्वागत ही करेगा। अुस दिनको धन्य दिवस मानेगा। अुपवास आया तो वह मुझे अकेलेको ही करना होगा। मेरे साथ कोअी अुपवास नहीं कर सकता। मैं चल बसूं तो बादमें अेकके बाद दूसरेको करनेका अवसर जरूर आ सकता है। परन्तु जिसकी बात आज क्यों की जाय? तू अपने काममें मजबूत रह और दूसरोंको रख।

बापूके आशीर्वाद

२२२

[अुस समय जो अनेक प्रश्न जेलमुक्त कार्यकर्ताओंके सामने खड़े थे अुनमें से कुछ मैंने पूछे थे। भूगर्भगत कार्यकर्ताओंके बारेमें राय मांगी थी। कांग्रेसमें ही राजनीतिक मतभेदोंकी रस्साकशी चल रही थी। जिस मामलेमें भी पूछा था। पू॰ महात्माजी जेलसे छूटे तब अुनकी तबीयत बिगड़ी हुअी तो थी ही परन्तु मानसिक भार सहन करनेकी अुनकी

ताकत भी बीमारी और कमजोरीके कारण घट गयी थी। बहुत दिनके अुपचार और आरामके बाद वे पहलेकी तरह काम करने लगे।]

सेवाग्राम
१-१-'४५

चि॰ प्रेमा

पत्रका अुत्तर आज ही दे पा रहा हूं। विवश हूं।

अखबारों पर भरोसा न करना। मैंने निर्णय नहीं दिया है। विरोधी कहनेवाले दो मत बताते हैं। सदस्य न बनानेका मत अंतिम और अधिक परिपक्व है। परन्तु जो सदस्य बनाये अुसे मनाही नहीं है।

मैंने पार्टीके साथ मैंने बात नहीं की। संभव है कि प्रस्ताव मुझे सुरेशबहनने या और किसीने बताये हों। परन्तु मेरी अनुमतिका क्या अर्थ? सब अपनी जिम्मेदारी पर काम करें — गांधीवादी हों या विरोधी हों। गांधीवाद जैसी कोअी चीज नहीं है, यह कहा जा सकता है। समाजवादियोंसे मैं अधिक मिला हूं। अुनकी बहुतसी बातें मेरे गले अुतरी हैं। अथवा यों कहा जाय कि वे मुझसे अधिक मिलते-जुलते हो गये हैं।

परन्तु मेरा नाम कोअी न ले। मैं अुपधर्ममें रहना पसन्द नहीं करता। परन्तु रहनेवालोंकी निन्दा नहीं करता। रहनेकी निन्दा करता हूं। दोनोंका भेद समझना।

जिनासाहबके साथ हुअी बातचीतमें मेरे साथ कोअी नहीं था। वे तो थोड़े ही। राजाजी। औरोंने तो कुछ जाना भी नहीं था।

बाकी सब समझ गया हूं। परन्तु ब्योरेमें जानेके लिअे समय नहीं है। तू अपने रास्ते चलती रह। जितनी अच्छी स्त्रियां मिलें अुन्हें जुटाकर काम कर। सारे देशका भार न अुठा। जो अुठाते हो तो अुसीका भार अुठाना। अधिक पूछना हो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

निराशा जैसी कोअी चीज न तो मेरे जीवनमें थी और न होगी। सब मर जायं तो भी मुझे निराशा नहीं हो सकती। मैं जो कहता हूं वह भी सच्चा है और मुलाकातीका प्रयत्न भी सच्चा है। तू अपना काम करती जा।

२२३

[कस्तूरबा स्मारक कोष अेकत्रित हुआ था। अुसमें से संस्था बनी हुओ थी। अुसका विभाग बन गया था। पू॰ महात्माजी अुसके अध्यक्ष थे और श्री ठक्करबापा मंत्री बने थे। दूसरे प्रान्तोंमें काम शुरू हो गया था। महाराष्ट्रमें सब जगह ठंडा था। महाराष्ट्रमें आठ लाखका चंदा जमा हुआ था। अेक प्रान्तीय समिति भी स्थापित हुओ थी। अुसमें अधिकांश पुरुष ही थे। महाराष्ट्रकी प्रतिष्ठा न जाय अिसलिअे कोओ काम शुरू करनेकी मुझे अुत्कण्ठा थी। मैंने स्वयंस्फूर्तिसे अिसकी योजना बनाओ और मंत्री श्री ठक्करबापाको भेजकर महाराष्ट्रमें शिविर शुरू हो अिसका प्रयत्न आरंभ किया। आचार्य भागवतने अिस शिक्षाकार्यमें मदद देनेका मुझे आश्वासन दिया था।]

बम्बओ
१७–४–४५

चि॰ प्रेमा

तेरे पहले पत्रका अुत्तर दिया था नहीं यह भूल गया। दूसरा आज मिला। मैं २ तारीखको महाबलेश्वरके लिअे रवाना होअूंगा और महीना भर वहीं रहूंगा। यह पदमजाके पर आधार रखता है। वहां तू आये तो ही मिलना हो सकता है। जरूरत हो तो कहीं भी चले जायं। नहीं तो महाबलेश्वर किसलिअे?

तेरी बताओ पुस्तक अभी तक तो नहीं मिली। मिल जायगी। आचार्य भागवत शरीक होंगे यह अच्छी बात है। यह मामा था सकता है कि मेरी तबीयत ठीक रहती है।

पुस्तक मिल गयी।

बापूके आशीर्वाद

[श्री भूलाभाअी अुस समय वाअिसरॉय और अैसेकसे मुलाकातें कर रहे थे। वे संसदीय कार्यक्रम (Parliamentary प्रवृत्ति) फिरसे शुरू करनेकी हिमायत करते थे। अिस पर कुछ अखबारवाले नाराज हुअे थे। कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य अहमदनगरके किलेमें कैद हैं तब तक भूलाभाअीको सरकारके साथ समझौता करनेका अधिकार नहीं अैसे लेख समाचारपत्रोंमें छप रहे थे। और, अेक खबर अैसी भी अखबारोंमें प्रकाशित हुअी थी कि अहमदनगरके किलेमें बन्द कार्यसमितिके सदस्योंको भी भूलाभाअीकी यह प्रवृत्ति पसन्द नहीं है।

अिन सब अखबारी बातोंका अुल्लेख मैंने पू. महात्माजीको लिखे पत्रमें किया था।]

पंचगनी
१२-६-'४५

चि. प्रेमा

तेरा लम्बा खत मिला। मैंने आदर्श बताया है, अुसे सामने रखकर सब सवालोंका जवाब तू ही दे सकती है, जैसे युक्लिडकी आदर्श लाअिन सामने रखकर सब जाननेवाले दूसरी लाअिन बना सकते हैं। अभी देख :

क्योंकि मैं आदर्श जानता हूं लिखी-पढ़ी बहनोंका अुपयोग [मैं] आदर्श सिद्ध करनेके ही लिये करूंगा। अुसमें जीवन-वेतन देना पड़े तो दूंगा। लेकिन वे जो लेंगी अुससे अधिक देती रहेंगी। अगर नहीं देंगी तो निकम्मी हैं। अनको शिक्षिका बनानेके लिये विशिष्ट आवश्यकता होगी तो वैसा करूंगा।

पछात (पिछड़ी हुअी) बहनोंके लिये छह महीने हों, १२ महीने हों या अुससे अधिक यह तो अनुभवकी बात होगी न? मुझको जिसकी दरकार नहीं होगी क्योंकि अुन्होंके मारफत ही [वे] सीखेंगी। अिसलिये अपना खर्च अुठाती रहेंगी अथवा जल्दीसे जल्दी अुठाने लायक बनेंगी।

मैं निष्फल हुआ अैसा माना जाय तो अुससे क्या? मेरी निष्फलता तो आदर्श नहीं है। और जो आदर्शकी तरफ जाता है अुसको निष्फल कैसे

कहूँ? तू खूब आश्रममें रहकर आदर्शको नहीं पहुँची है। तो आदर्शको पहुँचना असंभव सिद्ध करेगी या तू नालायक सिद्ध होगी?

अनपढ़ बहनोंको शिबिरमें लेनेसे असफलता ही फलित होगी तो देहातोंमें जाने से जाना असंभव हो जाता है। आश्रम आखिर निष्फल सिद्ध हो जायें या तू कहती है वैसे ही यह कहते हों तो भी मुझे कुछ डर नहीं। जो आज असंभवित-सा लगता है अुसीको संभवित कर बतानेसे हमारी योग्यता सिद्ध होगी।

सुशीला पै नहीं है। अुसको मैं यह खत देता हूँ। यह और किसीको।

अब दूसरी बात। मुन्नालालजीके बारेमें मैंने तुझे [जो] कहा है अुस पर कायम हूँ। वे भिन्न वक्त नहीं हैं। अभी मात्र ६-४ हुये हैं। वे दस बजे जायेंगे। [जो] जेलमें हैं वे छूटेंगे ऐसा मैं नहीं जानता हूँ। अगर छूटेंगे तो अच्छा ही है। मुन्नालाल पर अगर कोई गुस्से होते हैं तो मुझ पर भी होना चाहिये क्योंकि अुनका काम जो मैं जानता हूँ अुसे नापसन्द करें तो वे करनेवाले नहीं हैं। वर्किंग कमेटीके लोगोंने कहा है ऐसा [जो] माना जाता है, अुसे मैं नहीं मानता हूँ। और अगर अुन्होंने कुछ कहा भी है तो बगैर अधिकारके कहा है। जेलमें रहनेवाले बाहरकी बात क्या जानें? मेरे कानूनके मुताबिक तो अुनको यह जाननेका अधिकार भी नहीं है। और मुझसे मतभेद होना तो क्या हर्ज है? बाहर निकलकर जो करना चाहें वह करनेका अुन्हें अधिकार है। मुझे तो मत देनेका कोअी अधिकार है ही नहीं। मेरी स्थिति तो सलाहकारकी ही है न? अखबारोंकी बात मानना ही नहीं और माननेसे फायदा भी क्या है? मैं कल मरूँगा ऐसा भविष्य जाननेसे मुझे नुकसान ही है। ऐसा ही जिसमें भी समझो। हाँ, जितना कहूँ [कि] जो अखबारवाले जानते हैं वह मुन्नालाल नहीं जानते। मैं तो जानूँ ही क्या?

अमुक स्थितिमें क्या करना अुसका तो मैं क्या कहूँ? दूसरे भी क्या कहें? मैं आज जो करता हूँ अुस परसे अगर भविष्यका परिचय मिले तो ले लेना। मुझको तो यह भी नहीं क्योंकि दिन प्रतिदिन मैं समझता जाता हूँ कि काल्पनिक बातों पर अभिप्राय बांधकर हम अपना जीवन बिगाड़ते हैं। जो चीज बने अुस पर हम क्या करते हैं वही सार्थक है। दूसरा सब निरर्थक।

[यहां तकका भाग मूल हिंदीमें है। नीचेका भाग गुजरातीसे अनूदित है।]

मेरी मर्यादा और मेरी दृष्टि तू अभी तक नहीं जानती? कुमारप्पाने अिस्तीफा दिया तो मुझे पूछकर ही दिया न? अगस्त १९४२ के प्रस्तावमें सैनिक सहायता देनेका जिक्र हुआ है, अुसमें भी मैं था न? मैं स्वयं अेक चीज करूं और दुनिया अुससे अुलटा करे और मैं अुसका साक्षी बनूं, तो अिससे क्या हुआ? मैं करूं भी क्या? मैं तुझे अितना ही कहता हूं कि जितने समय तक तू मेरे साथ रही और बादमें दूर चली गयी फिर भी तू जैसा व्यवहार करती है जैसे मेरे साथ ही है तो भी मैं तुझे यही कहूंगा कि मेरा व्यवहार देख मेरे वचन देख अुन पर विचार कर और फिर तुझे जो ठीक लगे वैसा कर। अिसीमें मेरा साथ है वैसा समझ क्योंकि मैं सबको अपने जैसा नहीं बनाना चाहता। सब जैसे हैं वैसा व्यवहार करें यही मेरी शिक्षा है। मेरा कहा जितने पचा लिया होगा वह तो कभी वमित नहीं होगा और आगे बढ़ता ही जायगा।

मणिबहन भी यहीं है। बाकी सब बातोंका अुत्तर देना सुशीला पै पर डाल रखा है।

बापूके आशीर्वाद

अिसे ध्यानपूर्वक पढ़ना। न समझे तो फिर पूछना।

२२५

सेवाग्राम
१९-७-४५

चि. प्रेमा

तेरा ११ तारीखका पत्र आज पढ़ा। राजकुमारीका भी साथ ही है। डाक बालकमें मिली मालूम होती है। अिस समय साढ़े चार बजे हैं। दातुन-कुल्ली करके यह लिख रहा हूं। मच्छरदानीमें हूं। बत्ती बाहर है। अब प्रार्थनाकी घंटी बजती।

तेरी वर्षगांठ आज है। यह पत्र तेरे हाथमें तो दो दिन बाद मिलेगा। तुझे अभी तो बहुत वर्ष बिताने हैं। अुन्हें सुखमें और सेवामें बिताना। सेवा हमारे हाथमें है और सुख-दुःखको समान मानें तो सुख भी हमारे हाथमें ही है। विष्णु[1]को भूलना ही अच्छा हुआ है न? अुसे क्यों भूलें?

तुम पर चिढ़नेकी बात मुझे याद नहीं है। अगर चिढ़ा हूंगा तो कारण रहा होगा। परन्तु मेरी चिढ़ चिढ़ ही नहीं है। यह तो तू समझती है न?

तू अपना शिविर स्वतंत्र रूपसे चलाये और रुपया न मांगे तो क्या हर्ज है? तुझसे दूसरे सीखेंगे। मैं भी सीखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

२२६

[बम्बअीमें अखिल भारतीय कांग्रेस समितिकी बैठक २१, २२, २३ सितम्बर १९४५ को हुअी थी। अुसमें मैं अुपस्थित थी। अहमदनगरके किलेसे बड़े नेता मुक्त होकर आये अुसके बाद यह बैठक हुअी थी। पू॰ महात्माजी अपनेको कांग्रेसकी अन्तिम आवाज नहीं मानते थे। सर्वोपरि तो कार्यसमिति ही थी। अिसलिअे सबको यह आशा थी कि अब देशको कोअी निश्चित मार्ग मिलेगा। परन्तु मुझे तो निराशा ही हुअी। कांग्रेसकी आन्तरिक शुद्धि और बाहरी मार्गदर्शन अिन दोनों मामलोंमें कुछ भी नहीं किया गया। मुझे अैसा लगा कि अिस बैठक पर १९४२ की पूरी छाया थी। अमुक लोगोंका अभाव असह्य भी लगा। और पू॰ महात्माजी मौलाना साहबके आग्रहसे अिस बैठकमें मौजूद रहनेके लिअे आये तो थे परन्तु बीमारीके कारण निवासस्थान पर ही बिस्तरमें पड़े। बैठकमें किसीने अुनकी गैरहाजिरीका अुल्लेख करके दुःख तक प्रगट नहीं किया! यह मुझे बुरा लगा। मैंने मराठी दैनिक 'नवा काळ' में अेक लेख लिख भेजा जो अुस पत्रने छाप दिया। शीर्षक था 'आम्ही कोठें आहोंत?' (हम कहां हैं?) अुसमें मैंने अिस बैठककी कड़ी आलोचना की थी।]

---

१ विपद् विस्मरणं विष्णो।

पूना
१–९–'४५

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र पढ़ा। अुत्तर लिखकर पत्र फाड़ डालूंगा।

तू पागल ही है! मुझे जरा बुखार था जब तो अिसमें प्रार्थना करनेकी क्या बात है? और मैं पंडालमें न होअूं तो अिसका खेद कैसा? अितने बड़े जलसेमें कोअी हो या न हो अुसका क्या असर हो सकता है और किसलिये हो? मुझे यह सब अनुचित लगता है। जैसा मुझे लिखा है वैसा तूने जया काळ में लिख भेजा हो तो तूने भूल की है।

तेरे शिबिरके बारेमें मैंने बापाको लिख दिया है। अुसे कुछ दिन हो गये। तुझे अनुमति मिल जानी चाहिये। अुसके साथ अस्पताल हो तो अच्छा ही है।

शंकररावजी पर आजकल मैं नाराज हूं अैसी शंका भी तुझे किसलिये होती है? मेरे सामने यह सवाल ही नहीं अुठता। सातारा सम्बन्धी अुनका लेख मैंने नहीं पढ़ा। अैसा बहुत ही कम मेरे पढ़नेमें आता है।

मैं मौन रखूं या न रखूं अिसके साथ कमेटीके सदस्योंका सम्बन्ध होना ही नहीं चाहिये।

चरखा-द्वादशीके बाद चि॰ नारणदासके आनेकी संभावना जरूर है।

तू नजदीक होने पर भी मिल नहीं आती अिसमें क्या हुआ? तू काम तो करती ही रहती है। फिर मिलनेसे ज्यादा क्या हो जायगा? काम न हो तब तो मिल जानेकी छूट तुझे है ही।

बापूके आशीर्वाद

२२७

पूना,
१-१-'४५

चि. प्रेमा

तेरे पत्रका मैंने तुझे लम्बा अुत्तर भेजा है। वह अब तो मिल गया होगा। तूने अपना किस्सा लम्बा कर बताया है। 'नया काळ' का लेख मुझे भेजना।

बापूके आशीर्वाद

२२८

['नया काळ' वाला लेख पू. महात्माजीने मंगवाया जिसलिअे मैंने भेज दिया। श्री शंकररावजीने मुझसे कहा था कि अंग्रेजीमें अनुवाद करके अुसे अंग्रेजी अखबारोंमें छपवाया जाय। शंकररावजीको वह लेख पसन्द आया था और अुनकी अिच्छा थी कि अुसका व्यापक प्रचार हो। पर पू. महात्माजीने अैसा करनेसे मना कर दिया जिसलिअे वह बात नहीं रही।

सितम्बर १९४२ में सुशीला राजकोट छोड़कर बम्बअी आ गयी थी। परन्तु अुसने आन्दोलनमें भाग लिया और दो बार — तीन और अेक महीनेकी — सजा भुगती।

अगस्त १९४४ में मैं पू. महात्माजीके साथ गयी तब सुशीला भी अस्पतालसे मेरे साथ शरीक हो गयी थी। अुसके बाद वह समय-समय पर पू. महात्माजीके पास स्वतंत्र रूपमें जाकर थोड़े थोड़े समय रहने और काम करने लगी थी। काम अलबत्ता दफ्तरका ही करती थी।

महाराष्ट्रमें मैं सेवाकार्य करने लगी तब आश्रममें स्वतंत्र सेविकाके रूपमें रह कर ही काम करती थी। सत्याग्रहाश्रमके अनुभवके बाद किसी भी प्रकारकी जिम्मेदारी लेकर काम करनेकी बात मैं हमेशा टालती रहती थी। शंकररावजी कअी बार पुकारते कि "संस्था ही सेवाकार्यका निश्चित रूप है। अिसलिअे स्त्रियोंकी संस्था खोलकर अुसका संचालन करनेसे काम चमक अुठेगा।" मुझे यह बात पसन्द नहीं आती थी। जिस

प्रकार दस वर्ष बीत गये। फिर कस्तूरबा कोष अिकट्ठा हुआ। परन्तु महाराष्ट्रमें काम तो शुरू हुआ ही नहीं। अिसलिये मनमें विचार आया कि "चलो हम कामकी बुनियाद डालें। बादमें विस्तारका काम और किसी बहनको सौंप देंगे। यह महाराष्ट्रकी विरासतका सवाल है। कोअी बहन आगे आनेकी हिम्मत नहीं करती तो हम ही कामकी शुरुआत करें।" अिस प्रकार मैंने प्रयास आरम्भ किया। परन्तु महाराष्ट्रकी समिति (कस्तूरबा ट्रस्टकी) कार्यक्षम नहीं है, अैसा अनुभव हुआ। प्रत्येकका मत अलग होता था बातोंमें समय चला जाता था। परन्तु काम तो होता ही नहीं था। अिसलिये मैंने श्री ठक्करबापासे मुलाकात करके अुनका आश्वासन प्राप्त किया और काम शुरू कर दिया। सासवडके पास अेक छोटे गांवमें शिविर आरंभ किया। परन्तु अुसे शुरू करनेसे पहले जो जो मुसीबतें अुठानी पड़ीं वे मेरी कल्पनाके बाहर थीं। स्थानीय समितिकी सहायता तो मिलती ही नहीं थी। समितिके मंत्री अनेक कारणोंसे मुझ पर नाराज थे। शिविरके मामलेमें अुनका मतभेद भी था। ठक्करबापा जानते थे कि महाराष्ट्रमें काम करना आसान नहीं था और वे स्वयं किसीको प्रेरणा देकर यह काम करा नहीं सकते थे। अिसलिये प्रान्तीय समितिको अलग रखकर मेरे द्वारा हाथमें लिये हुअे कामको मंजूरी और रुपया दिया जाय यही अेक मार्ग अुनके सामने था। अुन्होंने यह मार्ग अपनाया। परन्तु वे हमेशा दूर दूर प्रवासमें जाते थे अिसलिये रुपयेकी मदद समय पर मिलनेमें कठिनाअी होती थी। शिक्षा और संस्कारकी दृष्टिसे शिविर सफल हुआ। महाराष्ट्रके खास तौर पर पूनाके, विद्वानोंकी बहुत सहायता मिली। आचार्य भागवत भी पांच महीने शिविरमें आकर रहे और अुन्होंने पढ़ाया।

समय बीतने पर पू. महात्माजीने देखा कि जगह जगह स्थापित समितियां कामके लिये अुपयोगी नहीं हैं। अिसके सिवा वे अिस संस्थाका सेवाकार्य और व्यवस्था-तंत्र सब कुछ बहनोंको सौंपना चाहते थे। अिसलिये अुन्होंने सारी समितियां तुड़वाकर प्रत्येक प्रान्तमें महिला-प्रतिनिधि नियुक्त कीं। महाराष्ट्रमें कोअी योग्य महिला न मिलनेसे यह स्थान कुछ समय तक खाली ही रहा।]

पूना
९-१-'३९

चि. प्रेमा

तेरा पत्र पढ़कर फाड़ दिया। कतरन[1] सुशीलाके साथ लौटा रहा हूं।

तेरा लेख सुशीलासे पढ़वाकर सुन लिया ताकि कोअी भूल न करूं। अिसका अंग्रेजी छपवानेमें कोअी सार नहीं। मराठीमें है वही काफी है। अिसमें भाषादोष नहीं है। परन्तु अब कुछ हर समय कहने लायक नहीं होगा। तू कभी मिलेगी तब अिस विषयमें बात करेंगे। खास किसी बातके लिये आना हो तो भी समय निश्चित करा कर आ जाना। तेरे शिबिरके बारेमें बापाने ट्रस्टियोंको निवेदन भेजा है। १९ तारीखको तो यहां समितिकी बैठक रखी है तब देख लूंगा।

बापूके आशीर्वाद

२२९

[श्री ठक्करबापाने महाराष्ट्रकी प्रतिनिधिके रूपमें सुशीला पैका नाम सुझाया था। मैं कांग्रेस महिला-संगठन समितिका रचनात्मक कार्य करती ही थी। शिबिरका काम महीनों तक चलता है। अिस प्रकारके संस्था-संचालनकी जिम्मेदारी लेनेके लिये मैं अपनेको योग्य मानती ही नहीं थी। लोक-संग्रह करनेकी अपनी शक्ति पर सुशीलाको विश्वास था। अिसलिये वह अिस कामको हाथमें ले लेती तो मुझे अच्छा लगता। अिस लिये मैंने भी यह जिम्मेदारी स्वीकार करनेका अुससे आग्रह किया। परन्तु महाराष्ट्रमें काम करना अुसने मंजूर नहीं किया। तुमार खड़ी करनेका काम कोअी खेल नहीं है!

लगभग १४-१५ वर्ष पहलेकी घटनाओंको क्रमानुसार याद करके प्रस्तुत करनेमें थोड़ी कठिनाअी मालूम हो रही है। फिर भी मैं प्रयत्न करूंगी। महाराष्ट्रकी प्रान्तीय कस्तूरबा निधि समितिके मंत्री प्रांतके अेक वयोवृद्ध और सेवाकार्यमें जीवन बितानेवाले सज्जन थे। (वे आज

1 नया काळ में छपे लेखकी।

भी जीवित हैं और सेवा कर रहे हैं।) १९२० से पू. महात्माजीके अनुयायी थे। कस्तूरबा निधि अेकत्र करनेका काम शुरू हुआ तब अुन्होंने मुझे पू. बाका अेक छोटासा जीवन-चरित्र लिख देनेको कहा ताकि निधि जमा करते समय लोगोंको पू. बाके विषयमें जानकारी मिले। मैं अुस समय बहुत ही काममें थी। अिसलिअे मैंने अुनसे प्रार्थना की कि "मुझे जरा भी समय नहीं है। अमुक लेखकसे लिखनेको कहिये। वे अच्छा जीवन-चरित्र लिख देंगे।" परन्तु मंत्रीजीने हठ पकड़ लिया कि "स्त्रीका जीवन-चरित्र स्त्री ही लिखे तो शोभा दे। और आप तो कस्तूरबाको जानती थीं अिसलिअे आप ही लिखिये। अैसे दबावसे मैंने रात-दिन अेक करके जीवन-चरित्र-संबंधी अेक लेख लिखा और अुन्हें भेज दिया। परन्तु मंत्रीजीने अुन दूसरे लेखकका ही जिनका नाम मैंने पहले सुझाया था लिखा हुआ लेख छपवाया और मेरा लेख लौटा दिया। जिससे मैं नाराज हुअी और अुन्हें अुलाहना दिया मैं आपसे पहले ही कह रही थी कि मुझे समय नहीं है मुझे तकलीफमें न डालिये। अुन सज्जनसे ही लिखवा लीजिये। परन्तु आपने सुना नहीं और मैंने जो लेख भेजा अुसे लौटा दिया। मुझे नाहक क्यों तंग किया?" अिस पर वे मेरा ही दोष निकालने और झूठी दलीलें देने लगे जिनका मैंने अेकके बाद अेक खंडन कर दिया। अिस पर नाराज होकर वे स्पर्धाकी तकरार करने लगे। वृद्ध होनेसे अुनके प्रति रहे आदरके कारण मैं शान्त हो गयी। परन्तु मंत्रीजीके मनमें वह कांटा बहुत समय तक चुभता रहा। बादमें महाराष्ट्रमें कस्तूरबा ट्रस्टका शिविर खोलनेका प्रयास मैं करने लगी। अुससे वे सहमत नहीं हुअे। अुनके विचार भी स्वतंत्र थे। अुन्होंने केन्द्रीय कार्यालयको लिख भेजा कि मेरे साथ प्रान्तीय कार्यालयका सहयोग नहीं हो सकेगा। फिर भी ट्रस्टवालोंने निश्चय किया था कि महाराष्ट्रमें काम शुरू होना ही चाहिये अिसलिअे अुन्होंने मुझे सहायताका आश्वासन दिया। अिस पर वे मंत्रीजी ट्रस्टके अध्यक्ष पू. महात्माजीसे मिले और अुनके सामने मेरी बहुतसी शिकायतें कीं। अुनमें वह जीवन-चरित्रकी अुलटपलटवाली घटना भी बताअी। "प्रेमाबहनजीने मेरा अपमान किया। मेरी सारी अिज्जत पर पानी फेर दिया।" यह वर्णन करते समय अुन

पूज्य महात्माजीकी आंखोंसे आंसू बहने लगे। जिससे पू. महात्माजीको बहुत बुरा लगा और वे मुझ पर नाराज हो गये। शिविर अभी शुरू नहीं हुआ था। मुझे मदद दी जाय या नहीं दी जाय यह बात बच ही रही थी कि बीचमें यह घटना हो गयी।

मेरा खयाल है कि पू. महात्माजीका पुनासे १२-१०-'४५ का लिखा हुआ कार्ड मुझे मिला और तदनुसार मैं १७ तारीखको सुनके साथ घूमने गयी। सुसी समय बहुत करके मुझे पू. महात्माजीकी नाराजीका पात्र बनना पड़ा। वे मुझे फटकारने लगे "जैसे बृद्ध देश-वत्सल माननीय सज्जनका अपमान किया ही कैसे जा सकता है? तू अपनी मर्यादा नहीं जानती।" जैसे जैसे भुनाहने मुझे सुनने पड़े। मैंने कहा कि, "मैं अुनसे बिना कारण थोड़े ही लड़ने गयी थी। अुन्होंने मुझे लेख लिखनेको मजबूर किया था। अुसमें मेरा समय व्यर्थ गया अुसका क्या?" परन्तु महात्माजी मेरी कोओ भी दलील सुननेको तैयार नहीं थे। बहुत ही कठोर बनकर अुन्होंने मुझे आड़े हाथों लिया। मैं समझ गयी कि अब मेरे कामके लिये मदद नहीं मिलेगी। मैं अुदास होकर अपने स्थान पर चली गयी। मुझे बहुत बुरा लगा। मैं सोचने लगी कि पंद्रह वर्ष पहले जब मैं जवान और अनुभवहीन थी तब मुझे पू. महात्माजी फटकारते थे वह तो ठीक था। परन्तु अब मेरी अुमर ४१ से अधिक हो गयी है। मैंने स्वतंत्र रूपसे काम किया है। महाराष्ट्रमें ही नहीं परन्तु बिहार जैसे दूसरे प्रान्तमें भी किया है अनुभव प्राप्त किया है। वह सब आज अेक वृद्ध शास्त्रीके आंसुओंकी बाढ़में बह गया! आखिर है क्या? जैसा लगता है कि पू. महात्माजीकी दृष्टिमें तो मैं कभी लायक बनूंगी ही नहीं। सिसके सिवा सुशीलाजी औरसे समाचार मिला कि "तेरी किसीसे बनती नहीं तेरा स्वभाव तेज है" जैसा महात्माजी कहते थे और वे सिस निर्णय पर पहुंचे हैं कि महाराष्ट्रमें कस्तूरबा ट्रस्टका काम तुझे नहीं सौंपा जा सकता। यह खबर मिलनेके बाद मेरा दुःख और गुस्सा दोनों बढ़ गये और मैंने भी निश्चय कर लिया कि यह शिविर मेरे हाथसे पूरा हो जाय तो फिर पू. महात्माजी जिस संस्थाके संबंध रखते हों अुसमें मैं कभी काम नहीं करूंगी।

पू॰ महात्माजीका मत कुछ भी बना हो परन्तु ठक्करबापाकी राय दूसरी रही और अुन्होंने मुझे शिबिर चलानेके लिअे मदद देना जारी रखा। शिबिर १५ दिसम्बर १९४५ को सासवडसे तीन मील दूर पिपळे नामक गांवमें शुरू हुआ। अुद्घाटन करने श्री शंकररावजी आये थे। श्री ठक्करबापा भी अुपस्थित थे। मनमें अुत्साह होनेसे और समर्थन प्राप्त होनेसे मैंने अुस शिबिरको सफल बनानेके प्रयासमें कोअी कसर नहीं रखी। पूनासे बड़े बड़े विद्वान कार्यकर्ता तथा सरकारी खेती-विभागके अधिकारी पढ़ाने आते थे। शिक्षाके बारेमें ठक्करबापाकी कोअी भी अपेक्षा मैंने बाकी नहीं रखी। शिबिरमें तीन गायें भी थीं। शरीर-श्रम अध्यापन तथा गांवके लोगोंकी सेवा आदि सबको स्थान दिया गया था। आचार्य भागवत पांच महीने आकर यहां रहे थे और पढ़ानेमें मदद देते थे।

परन्तु पू॰ महात्माजीके प्रति मेरे मनमें रोष था। मैंने बहुत दिन तक अुन्हें पत्र ही नहीं लिखा। अुनका १२-१२-'४५ का कार्ड मिला था तब मैंने हमेशाकी तरह साफ विनम्र जवाब भी नहीं दिया था। यदि मैं जिम्मेदारी लेनेके लायक नहीं हूं जैसा पू॰ महात्माजी मानते हैं तो फिर महाराष्ट्रका प्रतिनिधि किसे बनाया जाय अिस बारेमें मेरी सलाह भी क्यों मांगते हैं? मुझे देनेका अधिकार भी मुझे कहां है? अिस भावनाके कारण मैंने अुन्हें कोअी भी राय देनेकी अनिच्छा लिख भेजी। जिससे पू॰ महात्माजी परेशानीमें पड़ गये। पश्चात्ताप करनेवाला दूसरा पत्र अुन्होंने भेजा (२१-१२-'४५)। तब लंबे अुत्तरमें मैंने अपना सारा रोष अुंडेल दिया। पू॰ महात्माजीसे झगड़नेका मेरे जीवनका यह तीसरा और अंतिम प्रसंग था। अुसका आशीर्वाद और कामका महत्त्व समझकर बादमें महात्माजीने अपनी युक्ति फिर शुरू की। परन्तु अिस बार मैं जल्दी नहीं मानी। पू॰ महात्माजी पूनामें डॉ॰ मेहताके नर्सिंग होममें रहते थे और मैं पूनामें थी फिर भी अुनसे मिलने नहीं गयी। अेक बार शंकररावजी मुझसे मिलने गये तब अुनके साथ वहां तक गयी परन्तु अंदर न जाकर बाहर सुशीलासे मिली। शंकररावजी तथा सुशीला दोनोंको मैंने चेतावनी दे दी थी कि पू॰ महात्माजीसे यह न बतायें कि मैं यहां

जाती हूं। मैं अुनसे मिले बिना वापस अपने मुकाम पर आ गयी। बिस बातका पता लगने पर वे बहुत दुखी हुअे। सुशीला पर नाराज हुअे और कहने लगे "वह महात्माजी थी। वह तूने मुझसे क्यों नहीं कहा? मैं खुद मिलकर अुसे समझाता। शंकररावजीको मेरा रवैया अच्छा नहीं लगा। वे मुझे अुलाहना देने लगे कि तुम अैसा कैसे कर सकती हो? रोष भी कितने दिन तक रखा जाय? अुसका कोअी अंत है या नहीं? और महात्माजीके साथ अैसा बरताव? सुशीला भी समझाने लगी महात्माजीको बहुत दुख होता है। बिसलिअे अब तू गुस्सा छोड़ दे। अपने खंडित अभिमानका बदला लेनेके बाद मेरे मनमें विवेकका अुदय हुआ। विवेक मनसे पूछने लगा जिसे सर्वार्पण कर दिया अुससे यदि अुलाहना मिले तो अुसके लिअे रूठनेका अधिकार हमें हो सकता है? अैसा हो तो सर्वार्पण किस कामका? फिर तो अपने दुखका कारण मैं ही बनी। अुसके बाद मैं पू महात्माजीसे मिलने गयी। मुझे देखकर वे कहने लगे "तूने मेरा त्याग कर दिया है न?" मैंने जवाब नहीं दिया। बादमें अुन्हें दुख देनेके लिअे माफी मांगी और दुबारा अैसा न करनेका वचन दिया।

शिविरका पूर्णाहुति-समारोह २८ मअी १९४६ को पूनामें हुआ। श्री ठक्करबापा कुछ समय मौजूद थे। वृद्ध तपस्वी श्री कर्वे सेविकाओंको आशीर्वाद देनेके लिअे पधारे थे। और श्री मोरारजीभाअीने प्रमाणपत्र वितरित करके दीक्षान्त भाषण दिया। शिविरमें दी गयी शिक्षा और सेवाकार्य आदि सब बातोंका ब्यौरेवार वर्णन मैंने विवरणमें पढ़कर सुनाया। १९ बहनोंमें से अेक अपने खर्च पर संस्कार ग्रहण करनेके लिअे आअी थी। ६ बहनें आगे परिचारिका (नर्स) का अध्ययन करने जानेवाली थीं। बाकी १२ बहनें कामसेवाके लिअे तैयार हो गयी थीं और अुन सबकी सेवाओंको अलग अलग जिलोंके आठ थाणोंने स्वीकार किया था। जिन-लिअे अेक महीनेकी छुट्टी भोगकर वे अपने अपने कार्यक्षेत्रमें काम पर लगनेवाली थीं।

समारोह समाप्त होनेके बाद मैंने श्री ठक्करबापासे कहा "महा-राष्ट्रकी प्रतिष्ठाके खातिर मैंने यह काम हाथमें लिया था। अब मुझसे

हो गयी है। आप कोओी योग्य महिला ढूंढकर मुझे बतायें तो यह काम मैं तुम्हें सौंप दूं और मुक्त हो जाऊं!" नयबाबाने मेरी टेक पूरी कर दी जिसलिअे मैं मन ही मन बुसका अुपकार मानती थी।

बापा कुछ नहीं बोले। अुनमें मा लगभग अेक महीने बाद पूज्यश्रीके घूस्में पू महात्माजी पूना आकर रहे थे। तब मैं अुनसे मिलने गयी। वहाँ मेहताके नसिंग होमके बगीचेमें सुबह घूमते हुअे अुन्होंने अेकाअेक मुझसे प्रश्न किया "महाराष्ट्रकी प्रतिनिधिकी जिम्मेदारी मैं तुझे सौंपना चाहता हूं। बोल तेरा क्या कहना है?"

मैं थोड़ी देरके लिअे तो अवाक् रह गयी। परन्तु बादमें पूछा "मुझे तो आप जिस कामके लिअे नालायक मानते थे। अब कैसे मानस-परिवर्तन हुआ?"

वे साफ दिलसे बोले "बापाने मुझसे कहा कि दूसरे प्रान्तोंमें शिबिर हुअे परन्तु वहां पढ़ी हुअी बहनें तुरंत ही काममें नहीं लगीं जब कि महाराष्ट्रमें ऐसे शिबिर होने पर भी संस्कार पायी हुअी सब बहनें काममें लग गयी हैं। महाराष्ट्रमें आठ ग्रामकेन्द्र शुरू भी हो गये हैं। दूसरी जगह कहीं भी अैसा काम नहीं हुआ। जिसलिअे प्रेमाको ही महाराष्ट्रकी प्रतिनिधि बनाना चाहिये।"

परन्तु मेरे स्वभावकी मर्यादा आप जानते हैं। मुझे आप बार बार टोकते और डांटते रहेंगे तो मैं क्या करूंगी? अुस परिस्थितिमें मुझसे काम नहीं होगा।"

महात्माजी हंसते हंसते बच्चोंसे बोले "मैं तुझे कोरा चेक देता हूं। मैं तुझे कभी कुछ नहीं कहूंगा। तेरे जीमें आये वही तू करना।"

अिन शब्दोंसे मुझे बहुत प्रेरणा हुअी। मेरी स्मृति परसे पर्दा थोड़ा हट गया और लगभग पंद्रह वर्ष पहलेका अेक दृश्य आंखोंके सामने तैरने लगा। साबरमतीमें आश्रम और वाड्जके बीच हम दोनों घूम रहे थे और मैंने महात्माजीसे कहा था "मैं आश्रमकी जिम्मेदारी लेनेके लिअे नालायक हूं। जिसलिअे आप मुझे वापस ले लीजिये।" पू महात्माजीने जवाब दिया था कि, मैं तुमसे भिक्षा मांगता हूं। तुझे ही यह जिम्मेदारी लेनी चाहिये।"

मैंने देख लिया था कि मेरी योग्यतासे प्रसन्न होकर नहीं परन्तु मुझसे कोअी योग्य बहन न मिलनेके कारण लाचार होकर महात्माजी मुझे यह जिम्मेदारी सौंपनेको तैयार हुअे थे। पंद्रह वर्ष पहले जो हुआ था असीकी पुनरावृत्ति आज भी हुअी थी। जितने वर्षोंमें मैंने जरा भी प्रगति नहीं की थी! पू. महात्माजीके मनमें कर्तृत्वका महत्त्व नहीं था अपार आत्मिकता विशेष मूल्य था। और मुझमें तो असकी कमी थी ही। पू. महात्माजीसे विदा ली तब मेरा अंतःकरण भारी हो गया था। पूनामें शंकररावजीके मुकाम पर जाकर मैंने अुन्हें सारी बात कही। मेरे मनकी व्यथा भी बताअी और कहा "कस्तूरबा ट्रस्टका काम लेनेकी मेरी जिच्छा नहीं है। मैं तो महात्माजीसे ना कहनेवाली हूं।" परन्तु शंकररावजीका मत दूसरा था। वे मानते थे कि संस्था-संचालन करनेसे जीवन-विकासमें मदद मिलती है। जिसलिअे वे मुझसे यह जिम्मेदारी लेनेका आग्रह करने लगे। बादमें मैं काममें जुट गअी। थोड़ी देर बाद शंकररावजी मेरे पास आकर बोले "महात्माजीका फोन आया था। अुन्होंने पुछवाया था कि प्रेमा प्रतिनिधि बननेको राजी है या नहीं। तुम्हारी तरफसे मैंने स्वीकार कर लिया है। मैं विरोध करने जा रही थी, परन्तु अुन्होंने जिशारेसे मुझे चुप करके कहा "अपने प्रिय बूढ़ेको अब और न सताओ। (पू. महात्माजीको मैं *Old Beloved* कहती थी यह मेरे स्नेही और स्वयं महात्माजी भी जानते थे।)

जिस प्रकार भीतरकी प्रसन्न प्रेरणाके बिना मैंने यह जिम्मेदारी अपने सिर ली। परन्तु असके पीछे मेरा पाप छुपा हुआ था यह भी साथ ही चला। परिणाम यह हुआ कि कामको कोअी निश्चित स्वरूप देकर दो तीन वर्षोंमें असे किसी और योग्य बहनको सौंपकर स्वयं निवृत्त होनेका जो जिरादा मैंने किया था वह सफल नहीं हुआ। पूरे नौ वर्ष मुझे जिसमें देने पड़े और जब मैं काम सौंपकर निवृत्त हुअी तब मुझे भारी मानसिक क्लेशमें से गुजरना पड़ा। अपने प्रति असंतोष कामके प्रति असंतोष जिस सारे समयमें कार्यकर्ताओं या साथियोंकी भूलोंके लिअे किये गये अुपवास और अंतमें काम सौंप देनेके बाद भी प्रायश्चित्त-स्वरूप किये गये चार दिनके अुपवास आदि कारणोंसे मनमें विचार आया: बहुत कर्मकी गति ।]

पूना
१२-१-'४५

चि प्रेमा

तू १७ तारीखको सुबह साढ़े सात बजे मेरे साथ टहलना। अधिक समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

२६०

सोदपुर,
१२-१२-'४५

चि प्रेमा

चि. सुशीलाने भाअी श्यामलालको निम्नलिखित पत्र लिखा है:

"मंत्रीजी
कस्तूरबा स्मारक निधि कार्यालय वर्धा

आपका पत्र मिला। महाराष्ट्रकी प्रतिनिधि बननेके लिये अध्यक्ष महोदयकी सूचनाके लिये मैं आभारी हूँ। परन्तु अिससे मुझे आश्चर्य हुआ। महाराष्ट्रमें बरसोंसे काम करनेवाली अेक बहन मौजूद है और वे अिस समय क. स्मा. निधिका ही काम कर रही हैं। अुनका नाम प्रेमा कंटक है। महाराष्ट्रकी प्रतिनिधि बननेका अधिकार अुनका है, क्योंकि अुन्होंने अपनी गुप्त सेवासे ही अुसे प्राप्त किया है। महाराष्ट्रसे वे परिचित भी हैं। अिसलिये अुनका पद स्वीकार करना मेरे लिये असंभव है। आशा है अध्यक्ष महोदय मुझे क्षमा करेंगे।"

मैंने तो मान लिया था कि सुशीला अिस कामकी जिम्मेदारी तुरंत ले लेगी और अिसलिये मैंने श्यामलालकी अिस सूचनाका स्वागत किया कि वही तुझे लिख देंगे। परन्तु जब सुशीला तेरी ही सिफारिश करती है और तू फिर भी स्वयं आनेसे अिनकार करती है, तब तेरी सलाह

ऐसा हूं कि जिस मामलेमें क्या करना अुचित है। काम अधिक अच्छा हो सके और सुशोभित हो सके वैसा ही करना चाहिये न? सुशीलाको मिलकर कहना हो तो मिलकर कहना। जो सुझाव देना हो वह देना। अुपरोक्त पते पर अुत्तर देगी तो मैं जहां हूंगा वहां मिल जायगा।

बापूके आशीर्वाद

२३१

सोदपुर
२१-१२-'४५

चि० प्रेमा

तेरा ता० १७-१२-'४५ का-पत्र विचित्र है, अुसकी भाषा विचित्र है। जैसा तेरा यह पहला ही पत्र है। तू बहुत काममें लग गयी है। तू सेविका होनेका दावा करती है और समय-समय पर रुपया मांगना पड़े जिससे शरमाती है। यह कैसे आश्चर्य और कैसे दुःखकी *बात है?* सेवाके खातिर रुपया मांगनेमें शरम कैसी? रेलगाड़ीसे सिर निकालकर पैसा पैसा मांगते तूने मुझे देखा तो है ही। भीख मांगनेमें तूने मदद भी की है। परन्तु जिस पत्रका मैं अुत्तर दे रहा हूं वह तो किसी सेठका पत्र मालूम होता है। अपने स्वार्थके लिअे पैसा मांगे और शरमाये लिये तो मैं समझ सकता हूं। परन्तु सेवाके खातिर तो सौ बार पैसा मांगे तो भी क्या ज्यादा कहा जायगा? तूने जो अधिक पैसेकी मांग की है अुसकी नकल भी नहीं भेजी। यदि तूने मुझे अध्यक्षके नाते पत्र लिखा हो तो नियमानुसार मंत्रीको लिखना चाहिये। मंत्रीके मारफत आये हुअे पत्रका अुत्तर मैं तुरंत भेज सकता हूं। यदि मुझे बुजुर्गकी हैसियतसे लिखा हो तो मुझे जितना ब्यौरा देना चाहिये जिससे मैं तुरत पैसा भेज सकूं।

मैंने तो तुने पुत्री, साथी और सुशीलाकी तरी बहनसे भी ज्यादा समझकर तेरा *मार्गदर्शन चाहा।* यह *मार्गदर्शन* देनेके बजाय तूने ऐसा पत्र लिखा मानो हम अेक-दूसरेको जानते ही न हों। यह क्या

है, समझमें नहीं आता। अिस पत्रका अुत्तर सोदपुर भेजना। मैं बंगालमें भ्रमण करता हूंगा। वहांसे वहां पत्र पहुंचा देंगे।

बापूके आशीर्वाद

२६२

रेलमें
मौनवार,
१४-१-'४६

चि० प्रेमा

तेरा पत्र मिला। अिसका जवाब क्या दूं? जिसे तू मान बैठी है अुसका अस्तित्व ही न हो तो क्या अुत्तर दिया जाय? कोअी कहे कि आकाशमें पुष्प है, तो अुससे क्या कहा जा सकता है?

रजत सीप महं भास जिमी जथा भानुकर बारी।
जदपि असत्य तिमि काल तिमि भ्रम न सकहि कोअु टारी।।[1]

तुलसीदासका यह दोहा याद करके हंसना हो तो हंसना।

तू अितनी भावुक मिजाज होगी यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। और को तू कैसे विशेषण देती है? तू जब शांत चित्तसे लिखेगी तब ज्यादा लिखूंगा। सुशीलाका पत्र मिल चुका है। मैंने तो बाबाको यह सलाह दी है कि वहां योग्य बहन प्रतिनिधिके रूपमें न मिले वहां जगह खाली रखी जाय।

तेरी अिच्छाके अनुसार तेरा पत्र फाड़ डाला है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ दोहेका शुद्ध पाठ अिस प्रकार है
रजत सीप महुं भास जिमि जथा भानुकर बारि।
जदपि मृषा तिहुं काल सोअि भ्रम न सकअि कोअु टारि।।

२५३

नओ दिल्ली
२२-४-'४५

चि प्रेमा

तेरा पासपतसे भरा सुशीलाके नामका पत्र मराठीमें सुना। अुसका अनुवाद भी सुना। ध्येय जानना अच्छा है। ध्येय-पुरुषको छोड़ दिया जाय। दुःख यह है कि ध्येय-पुरुष ही तेरा ध्येय है। असा बहुतोंके जीवनमें होता है और बादमें वे दुःखी होते हैं। ध्येय-पुरुषको जब ध्येय बनाते हैं तब अर्थ यह होता है कि वह हमारे अनुकूल बोले-चाले तब अच्छा लगता है। और वैसा न करे तो अुससे हम रूठ जाते हैं। अिसलिये ध्येयको हमेशा स्वतंत्र रखा जाय। जब तक वैसा नहीं करेगी तू दुःखी रहेगी। और तेरा काम भी रुकेगा। पढ़ी तो है परन्तु गुनी नहीं! अब गुनना सीख न सीखी हो तो जितना मुझसे सीख ले। अिसमें ध्येय और ध्येय-पुरुषका समझा ही नहीं है। क्योंकि गुननेका अर्थ है व्यवहार ज्ञान प्राप्त करना। व्यवहार भी सत्य और असत्य दोनों होता है, यह ध्यानमें रखना। तू जाग।

बापूके आशीर्वाद

२५४

दिल्ली
२६-४-'४५

चि प्रेमा

तेरा लंबा पत्र पढ़ लिया। अुसमें कुछ भी खानगी नहीं है। मैंने अुसे सुशीला बैको पढ़नेके लिये दिया है।

मुझे तेरे पत्रसे दुःख नहीं हुआ। मैं जितना देखता हूँ कि मेरा गर्व अुतरता जा रहा है। मैं मानता था कि मैं बहुतोंको पहचानता हूँ। अब अपना अज्ञान मैं अधिक स्पष्ट रूपमें देख सकता हूँ। यह बात मुझे पसन्द है।

मैं तेरी प्रवृत्तियोंको कब अपनी आंखोंसे देख सकूंगा यह तो नहीं जानता[1]। परन्तु कभी न कभी देखनेकी जिच्छा तो है।

मुझे लगता है कि तू आवेशमें रहा करती है। यह सच हो तो वह मिटना चाहिये।

तुझे अेक पत्र लिख रखा था। मुझे सुशीलाने रोक लिया। अब तो वह भी जिसके साथ जायगा।

तुझ पर या किसी दूसरे पर दबाव तो मैंने डाला नहीं। डालना भी नहीं है। तेरे कामके बारेमें मैंने भूल की हो तो मैं सुधार लूंगा। तू दिये हुओ वचनों का पालन कर। जिस विषयकी बापासे चर्चा करना।

बापूके आशीर्वाद

२३५

दिल्ली
२७–४–४६

चि॰ प्रेमा

अपने पत्रमें तूने तीन मुद्दे भुठाये हैं।

१ शिबिरमें तालीम लेकर निकली हुआी बहनें कस्तूरबा-निधिके अधीन सेवा करनेको बंधी हुआी हैं।

२ ट्रस्ट अुन्हें वेतन और काम देनेको बंधा हुआ है।

३ हर जिलेमें अेक प्रौढ़ अुमरकी और अेक कम अुमरकी जिस प्रकार दो बहनोंको साथ रखा जाय।

यद्यपि ट्रस्टके नियमोंमें ये मुद्दे नहीं आते फिर भी नियम बनानेसे पहले तुझे वचन दे दिया था जिसलिये अुपरोक्त तीनों मांगें मान ली गयी हैं।

---

१ पिछले पाचवा शिबिर और नाम देखनेका मैंने महात्माजीको आमंत्रण दिया था।

२ शिबिरमें आयी हुआी बहनोंको नीचेके पत्रमें लिखे तीन मुद्दोंके रूपमें वचन दिये थे।

साथ ही यह सिफारिश की जाती है कि

१ सम्बंधित स्थान और जिसमें जितना चंदा जिकट्ठा किया जा सके किया जाय।

२ जहां अेक अनुभवी परिपक्व अुमरकी बहनसे काम चलाया जा सके वहां अेकको ही भेजा जाय क्योंकि बराबरीकी दो बहनें अेक ही स्थान पर काम करे तो दोनोंमें टक्कर होनेकी संभावना है। परन्तु अेक छोटी अुमरकी और अेक बड़ी अुमरकी हो तो दोनोंको साथ रखनेमें कोअी हर्ज नहीं।

यह अपवाद-स्वरूप है। जिस बातका ध्यान रखना होगा कि यह अपवाद नियम न बन जाय।

२३६

[शिविरमें दफ्तरके कामके लिये मैं शुाकका कागज काममें लेती थी। पूनाकी कुछ संस्थायें दिखानेके लिये (जिनमें ज्यादा सरकारी थीं) मैं बापूजीको ले जानेवाली थी। अुन संस्थाओंके संचालकोंको मैं पत्र लिखती थी अुन कागजों पर अंग्रेजीमें पता लिखनेकी आवश्यकता थी जिसलिये थोड़ेसे कागजों पर अंग्रेजीमें पता छपवा लिया था। अुपयोगके बाद बाकी रहे कागज दूसरोंको पत्र लिखनेके काम आ सके। अुनमें से अेक पू महात्माजी तक पहुंच गया।]

मसूरी
७-६-'४६

चि प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मजेदार है। तू अब पत्र लिखनेमें जितना परिश्रम न करे तो तेरा समय बच जायगा। जो वर्णन तूने मुझे लिखा है तू मुझे छपवायेगी अथवा जैसा ही जो कुछ हो अुसकी नकल मुझे भेजेगी तो मैं सब जान लूंगा। तेरा झगड़ा भी मुझे मीठा लगता है। जिसलिये झगड़कर भी तू अपना काम करती रहना और मेरे जैसेसे जो कुछ लेना हो वह ले लेना।

तूने अपने पत्र लिखनेके कागजों पर पता अंग्रेजीमें क्यों छपवाया? नागरी-उर्दूमें अथवा यह तुझे पसन्द न हो तो केवल नागरीमें क्यों नहीं छपाया? अंग्रेजी किसके लिये?

मणिबहन नाणावटी तुझे अधीरा न दे यह मुझे आश्चर्यकी बात लगती है। मणिबहनसे मैं पूछूं?

दिल्लीके बाद मेरा कार्यक्रम पूनाकी ओर आनेका और हो सके तो पंचगनी जानेका है। जहां चाहूं वहां आनेकी तुझे छूट है।

बापूके आशीर्वाद

२३७

[पू. महात्माजी मुझे राजी करनेको जितने अुपायके हो गये थे कि पूनामें अपने साथ ही सासवड आनेका अुन्होंने प्रस्ताव किया। मुझे तो बहुत आनंद हुआ। सासवडके लोग खुश हुये और स्वागतके लिये सारी तैयारियां होने लगीं। शंकररावजीकी सूचनाके अनुसार १२ तारीख (जुलाअी १९४५की होनी चाहिये) निश्चित की गयी। पू. महात्माजी अेकाअेक बोल अुठे तेरहवी है। देखना कोअी मुसीबत न आ जाय। अैसे वहममें मेरा विश्वास नहीं था। परन्तु ईश्वरकी करनी मुझका कोअी क्या करे? मेरा खयाल है कि १ तारीखकी रातको पंढरपुरसे बम्बअी राज्यके आरोग्य विभागके मंत्री डॉ. गिल्डरका तार पू. महात्माजीको मिला कि सासवड न जाअिये वहां प्लेग है। मुझे ११ तारीखको खबर लगी। मुझे आश्चर्य हुआ। अेक-दो दिन मैं धीरज धर रही। अिसलिये ११ तारीखको सासवड जाकर देखा तो वहां प्लेग था ही नहीं। परन्तु दूर कोनेके किसी गांवमें प्लेगका अेक केस हुआ था अैसा मालूम हुआ। बादमें डॉ. गिल्डरसे मिलकर मैंने बड़ी बहस की। परन्तु वे न माने और पू. महात्माजी सासवडमें न आ सके।]

---

१ बम्बअीके अुपनगरमें रहनेवाली खादीप्रेमी बहन जिन्होंने अन्य बहनोंकी मददसे वर्षों तक अेक खादी भंडार चलाया था। बादमें चलकर वे अखिल भारत चरखा-संघकी कार्यकारिणीमें चुनी गयी थी।

पंचगनी
२१-७-४

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। तेरा दुःख मैं समझता हूं। मैं अिस बारकी बार सासवड़ नहीं आ सकूंगा अिसका मुझे कम दुःख नहीं है। परन्तु तुझे और मुझे डॉ॰ गिल्डरका मानस भी समझना चाहिये। वह सीधे आदमी हैं। अुन्हें जो ठीक लगता है वह कहते हैं और करते हैं। मुझे जोखमका डर नहीं। परन्तु सार्वजनिक व्यक्तिके नाते मैं सार्वजनिक कार्यमें अपनी मरजीके मुताबिक नहीं चल सकता। हम दोनों अेक तंत्रके अधीन हैं। अुसकी आज्ञा या अिच्छाका अनादर करूं तो दूसरों पर अुसकी आज्ञाका प्रभाव हलका पड़ेगा। यह मैं कैसे कर सकता हूं? देख तो यह बात समझ गये वैसे ही तुझे भी समझना चाहिये। मैं पूना छोड़ूं अुससे पहले भी मुझे सासवड़ आनेकी अिजाजत मिल जाय तो मैं आ जानेको तैयार हूं। मैं २८ तारीखको पूना पहुंच रहा हूं। डॉ॰ गिल्डरके साथ बातें कर देखूंगा और जरा भी संभव हुआ तो सासवड़ आ जाअूंगा। नहीं तो यह पत्र लोगोंको पढ़ा सकती है। यह भी अेक अच्छा पाठ होगा।

सुचेता[1] मेरी अिच्छासे नहीं गयी। अुसने सत्याग्रह किया यह तू भले माने मैं नहीं मानता। परन्तु तेरा या मेरा मानना किस कामका? अुसे सूझे वही ठीक। अब तुझे दूसरी बहनकी तलाश करनी होगी। मैंने तो सुशीलाके साथ बात की है। परन्तु वह तेरे साथ सलाह करेगी। वह दूसरी सहेलियोंसे भी पूछ ले ट्रस्टियोंको पूछे और बादमें निश्चय करे। तेरी मदद मिलेगी न?

तू मेरे साथ ही वर्धा चलना। मुझे अच्छा लगेगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री सुचेताबहन कृपालानी कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्टकी संयोजक-मंत्री थीं। परन्तु अुत्तर प्रदेशकी विधान सभामें प्रवेश प्राप्त करनेके लिये वे चुनावमें भाग लेनेवाली थीं अिसलिये ट्रस्टके नियमानुसार अुन्हें अपने पदसे अिस्तीफा देना पड़ा।

२३८

[महाराष्ट्रमें कस्तूरबा ट्रस्टके केन्द्र चलने लगे। अिस बीच अेक अजीब मुसीबत आयी। सेविकायें ट्रस्टके साथ शर्तमें बंधी हुअी थीं कि शिबिर शिक्षणके बाद दो वर्ष तक वे गांवोंमें जाकर काम करेंगी। आचार्य भागवत शिबिरमें मेरे साथी थे। महिलाओंके जीवन-विकासके मामलेमें वे स्वतंत्र विचार रखते थे। वे शिबिरमें और केन्द्रोंमें जाकर भी सेविकाओंको विवाहके लिये तैयार करने लगे और अुनकी सगाअी भी कर देने लगे। मैंने अुनसे अैसा न करनेकी प्रार्थना की। परन्तु वे कहने लगे कि सेविकायें कस्तूरबा ट्रस्टके साथ जीवन् भरके लिये बंधी हुअी नहीं हैं। केवल दो वर्षके कामके लिये बंधी हुअी हैं। विवाहके बारेमें विचार करनेको वे स्वतंत्र हैं। मैंने अुन्हें समझाया कि दो वर्षका करार पूरा होने तक अुनके मनमें बुद्धिभेद पैदा नहीं होना चाहिये। अुन्हें विवाहके लिये तैयार करनेसे वे सेवाकार्य छोड़ देती हैं अैसा अनुभव हुआ है। परन्तु आचार्य भागवत नहीं माने। तब मैंने पत्र लिखकर पू. महात्माजीसे मार्गदर्शन मांगा। अिस पत्रमें यह आया। अिसलिये आचार्य भागवतको मैंने सूचना दी कि आअिंदा वे केन्द्रोंमें न जायं और सेविकाओंसे न मिलें-जुलें। अुन्होंने अिसे स्वीकार किया।]

नअी दिल्ली
१६-१ -'४६

चि. प्रेमा

तेरे दो पत्र मेरे सामने हैं। दूसरा आया कि मैंने जवाब शुरू कर दिया था। परन्तु जिनके लिये यहां आया हूं वे आ गये अिसलिये अधूरा रहा। अिसे आज फिर शुरू कर रहा हूं।

न्यूरेम्बर्गकी बात जाने देता हूं। वहां जंगलीपन ही चल रहा हो वहां यह क्या और वह क्या। सच नहीं है।

यह कथन अनुचित है कि मैं रचनात्मक काम छोड़कर यहां आया हूं। अिसी तरह यह कहना भी ठीक नहीं कि मैं राजनीतिके वश हो गया हूं। असलमें जीवनके टुकड़े नहीं होते। अवयवोंके नाम अलग अलग

होने पर भी शरीर अेक ही है। अिसी तरह जीवन भी अेक है। तू भूल देख सकती है अिसलिये तुझे तो भूल ही माननी चाहिये। यह देखते हुअे तू अपनी भूल देखेगी और मेरे जीवनका दोष देखेगी अथवा मुझे सुधारेगी। मैंने यह मोह कभी नहीं रखा कि मैं जो मानता हूं वही सच है। हां यह सच है कि मैं जो मानूं वह मेरे लिये तो सत्य ही है नहीं तो मैं सत्याग्रही नहीं रहता। यही नियम सबके लिये है।

अब तेरा असली सवाल लेता हूं। स्त्रकिन्या कुमारी रहें यह मुझे अच्छा लगेगा। पर यह चीज जबरन् हो ही नहीं सकती। अिसलिये जिसे विवाह करना हो अुसके लिये सुविधा पैदा करनी चाहिये।

आचार्य नायकमका यह धर्म था — और है — कि अुन्हें तुझे और दूसरे साथियोंको समझाकर नियमपूर्वक जो करना हो सो करना चाहिये था। अुन्होंने सलाह-मशविरा किये बिना जो किया वह अनुचित किया। और तुझे भी अुनसे कुछ प्राप्त करनेके लोभसे अुनका अनुचित व्यवहार सहन नहीं करना चाहिये जो तूने किया है। यहां भी अंतिम निर्णय तो तुझीको करना होगा क्योंकि जैसे अवसर आते हैं तब भिन्न तरहके कड़वे घूट पीने पड़ते हैं। मैंने तो तुझे अेक नियम बताया है।

अिससे अधिक लिखनेका समय नहीं है।

सुशीलाने यदि यहां बैठकर अधिक समझा होगा तो तुझे लिखेगी। मेरा मौन चल रहा है। अुससे मुझे लाभ हुआ है। मेरे स्वास्थ्यके टूट जानेका डर था। अधिक मिलेंगे तब।

अेजेण्टों[1] की सभा नहीं हुअी यह मुझे खटकता है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ अेजेण्ट यानी कस्तूरबा ट्रस्टके प्रान्तीय प्रतिनिधि। ट्रस्टका अेक प्रस्ताव अैसा था कि प्रान्तीय प्रतिनिधियोंकी बैठकें वर्षमें दो बार की जायं। अुनमें से अेक पू. महात्माजीकी अुपस्थितिमें होनी चाहिये।

२३९

[यह पत्र गांधीजीसे भेजा हुआ है। सुशीला भी महात्माजीके साथ वहां गयी थी। वहां कुछ महीने काम करके वह वापस बम्बई चली गयी।]

१-१२-'४६

चि प्रेमा

तेरा पत्र आज ही मेरे हाथ आया। मैं बहुत दूर हूं। यहां डाकघर नहीं है। तार तो हो ही कैसे सकता है?

मैं तो यहीं चिपट गया हूं। शायद यहांसे छुटना ही न हो। सब कुछ ठीक हो जाय तो ही छूट सकता हूं। न हो तो यहां मरना मुझे प्रिय बनेगा। अभी तो यह समझ के कि सेवाग्राम उरुळीकांचन वगैरा सब मैंने छोड़ दिया है।

मैं अकेला पड़ा तो हूं। परन्तु मुझे अकेला रहने कौन देता है? यह कसौटी तो शायद मेरे भाग्यमें नहीं है।

बोलियां आयेंगी तब तुझे लिखूंगा। तुरंत पहुंचूंगा।

मेरी अहिंसाकी सच्ची परीक्षा यहां होगी। काम कठिन है।

सुशीला गांवमें आनेके बाद कल ही पहली बार आयी। वर्षगांठ थी न? काममें खूब गड़ी है।

तू अपने कामोंसे कैसे छूट सकती है? तुझे तो अेक पांव आशादेवीसे लौटा जा सकता है। तू बिलकुल योग्य है। परन्तु तेरा वहांका काम मैं छुड़वाना नहीं चाहता। आशादेवीसे आना बन सके तो आ जा।

सुशीलाने तो तुझे विस्तारसे सब कुछ लिखा ही होगा जिसलिये अब अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

२४०

[पू. महात्माजी दूर चले गये थे, अिसलिअे वर्षगांठके दिन धोतियां और अुत्तरीय वस्त्र अुन्हें देनेकी व्यवस्था नहीं हो सकी। बादमें जनवरी १९४७ में शंकररावजी जब अुनसे मिलने नोआखाली गये तब वह भेंट ले गये थे। १४ जनवरीको संक्रांति थी। अुसके लिअे सुशीलाको मैंने तिलगुड़ भेजा था। वे अुसने पू. महात्माजीको संक्रांतिके दिन ही दिये। सुशीलाने लगातार पत्र लिखकर मुझे वहां नोआखाली आ जानेको प्रेरित किया तो मैंने पू. महात्माजीसे अिजाजत मांगी। अुन्होंने अिजाजत दी तब फरवरीमें वहां जाकर दोनोंसे मिल आयी।]

कला
२४-१-'४७

चि. प्रेमा

तेरा कार्ड मैंने संभालकर रख छोड़ा है। आज दूसरे गांवकी यात्रा करते हुअे यह लिख सकता हूं। तेरे तिलगुड़ सुशीलाने ठीक संक्रांतिके दिन दिये और सबको खिलाये। मैंने तो खाये ही। शंकररावने धोतियां भी दी थीं। वे भी पहनीं। अब तू फुरसतसे आयेगी तब मिलना। परन्तु अितना कह दूं कि तू अितनी झंझटसे बच। अितने रुपये बचा और अपना कर्तव्य करती रह। यह अिस यज्ञमें भाग लेनेके बराबर ही होगा। जो तू वहां बैठकर प्राप्त कर रही है वह यहां आकर प्राप्त नहीं कर सकेगी। परन्तु तुझे जैसा जचे वैसा करना।

तू शान्त होगी।

बापूके आशीर्वाद

२४१

१८-४-'४७

चि. प्रेमा

जिसे हमने धर्म माना हो अुसे प्रियजनोंकी वेदना मिटानेके लिअे भी बन्द नहीं कर सकते। परन्तु जहां हम स्वयं ही कर्ता हों और कर्म भी हों वहां तटस्थताको कठिन मानकर अपने विरुद्ध कोअी कदम अुठाया जा रहा हो तो अुसे अुठने देना चाहिये। विचार तो जो थे वही हैं। और अुनमें मैं अधिक दृढ़ होता जा रहा हूं। वहां मैं दोष नहीं देखता।

बापूके आशीर्वाद

२४२

[मैं नोआखालीमें पू. महात्माजीसे मिलने गयी थी तब मैंने यह मांग की थी कि यात्रा पूरी होनेके बाद पू. महात्माजीके ओढ़नेकी शाल प्रसादस्वरूप मुझे मिलनी चाहिये। पू. महात्माजीने मेरी मांग स्वीकार की और शाल भेज दी।

कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके अध्यक्ष होने पर भी पू. महात्माजी अुस समय अुस संस्थाकी बैठकोंमें अुपस्थित नहीं रह सकते थे। थोड़े दिन बाद प्रान्तीय प्रतिनिधियोंकी बैठक हुअी थी। अुसमें कर्नाटकके प्रतिनिधिने वहांकी ग्राम-सेविकाओंके कुछ दुखद किस्से पेश किये थे। अुनका अुल्लेख मैंने अपने पत्रमें किया था। अुसके बारेमें पू. महात्माजीने जवाब दिया।]

पटना
१९-५-'४७

चि. प्रेमा

तेरा पत्र कल मिला। आज मौनवार है अिसलिअे जवाब तुरंत दे सकता हूं।

तुझे घास भेजी अिसमें अुपकार कैसा? तब तो तू कोअी चीज मुझे भेजे तब मुझे भी तेरा अुपकार मानना चाहिये।

विनमनी पूरणी मागे ते न होय प्रेम प्रेमीनो

—जो विनमयकी पूर्ति चाहे वह प्रेमीका प्रेम नहीं।

कर्नाटककी बात पूरी नहीं समझा। मुझे फिर लिखना। क्या बहुतसी लड़कियां बिगड़ गयी?

मालूम होता है महाराष्ट्रका काम तू अच्छी तरह समझ रही है।

तुझे अुपवास करना ही पड़े तो अुस समय तेरे पास रहना मुझे अच्छा लगेगा। परन्तु अच्छा लगेगा अिसीलिये क्या वैसा किया जा सकता है? अुस समय जो मेरा और तेरा धर्म होगा वह सोच लेंगे। अभीसे अिसका विचार भी हम न करें। जिसका तूने अुल्लेख किया है अुसकी नोटिस भी मैंने संकोचपूर्वक ही दी। न देता तो ठीक नहीं होता।

गाडगिल[1] जो खबर लाये वह गलत है। स्त्रियोंके विरुद्ध अुपवास करनेकी बात मुझे सूझती ही नहीं। अुपवासका विचार मनसे निकालकर तू अपने काममें लगी रह।

डॉक्टर गिल्डर डॉक्टरी दृष्टिसे यही कहेंगे कि मेरी वृत्ति स्पष्ट है। गीताजीके दूसरे अध्यायके जो श्लोक शामको रोज हम रटते हैं वैसा स्थितप्रज्ञ जो मनुष्य हो जाय वह १२५ वर्ष अवश्य जियेगा। अीशोपनिषद्में शतम् समा है। अुसका अर्थ ९९+१ नहीं है। १२ १२५ या ११ वर्ष होता है। मैंने तो अखबारोंमें ७ अगस्त १९४२ को १२५ वर्ष गिनाये थे। अभी मैं अिच्छा करता हूं। परन्तु मैं अपने काम-क्रोधको न जीतूं तो १२५ वर्ष जी ही नहीं सकता। जीनेकी अिच्छा भी मुझे छोड़नी चाहिये। अिसलिये मेरी यह अिच्छा शर्तवाली है।

बापूके आशीर्वाद

---

१ श्री न. वि. गाडगिल १९३९ से ७-८ वर्ष तक महाराष्ट्र प्रांतीय कांग्रेस समितिके अध्यक्ष। यह पत्र लिखा गया अुस समय केन्द्रीय मंत्रि-मंडलमें बिजली, खान वगैरा अुद्योग-विभागके मंत्री थे। आजकल पंजाबके राज्यपाल हैं।

२४३

[श्री शंकरराव देव अुस समय कांग्रेसके मंत्री थे। महाराष्ट्रमें राष्ट्र सेवादल (जो पहले कांग्रेसकी संस्था थी बादमें समाजवादी दलको मिली) की तरफसे शंकररावजीके विरुद्ध अैसा झूठा प्रचार हो रहा था कि "जनरल शाहनवाज अखिल भारतीय कांग्रेस सेवादल विभागके अध्यक्ष थे परन्तु शंकररावजीने अुन्हें त्यागपत्र देनेको विवश किया। जिसमें महात्मा गांधीजीकी सहानुभूति तो थ शाहनवाजकी ओर थी।" जिसके बारेमें पू महात्माजीके साथ मेरा पत्रव्यवहार चला और अपरोक्त प्रचार झूठा सिद्ध हुआ। जिस पर वह पत्रव्यवहार प्रकाशित करनेकी मैंने अुनसे अिजाजत मांगी थी।]

नअी दिल्ली
१५-९-'४७

चि प्रमा

जिस समय ४-३ बज है। प्रार्थनाके बाद लिखने बैठा हूं। आस पासके लाग सो रहे हैं। निंद टूट गअी है अुनकर मैंने जाना नहीं चाहता। जिननेमें चि मनु पपाका रस लाती है जिसलिये लिख मंगाता हूं। अब नअी निंद है जिसलिये मुझको अूपरकी चरखी नहीं जाती तब तक वह चलनी नहीं। अिसी तरह जीर्ण मनुष्याकी गाडी घिसटती हुअी चलती है। स्वास्थ्यकी नअी लहरमें तुम अब अुड़ी यहां मेरे बैठेका क्या?

अब देखता हू कि अीश्वर मुझे कहां के जा रहा है।

मेरा पत्र छापनेकी अनुमति मैं नहीं दूंगा। मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा परन्तु मेरी अधूरी स्मरण-शक्तिसे दूसरोंका कहीं नुकसान हो जाय जिस भयसे कारण।

जनरल शाहनवाजने कहा कि अुनके हाथमें सारा अधिकार न हो तब तक वे अपने कामको चला नहीं सकेंगे। जिस पर मैंने कहा कि अैसा हो तो अुन्हें निकल जाना चाहिये। जिसके सिवा मेरा कोअी सम्बन्ध जिस बातमें नहीं।

बिहारमें मेरे अधीन काम करना चाहती थी जिसलिये मैंने रख लिया। मुझे तो बहुत ही मदद देती है। यह बिलकुल सच है कि अुसे अहिंसा और सत्यकी कोअी परवाह नहीं। असे कितने ही आदमी हैं जो काम कर रहे हैं। आज अहिंसा और सत्यकी कीमत ही क्या है? तू अधूरा विचार करती है। अपना काम सुशोभित करती रह और स्वयं सुशोभित होती रह।

बापूके आशीर्वाद

-

२४४

[पू. महात्माजीके अवसानसे पहलेकी मेरी अन्तिम वर्षगांठके अवसर पर (अुस समयके वातावरणसे दुःखी होकर और अुनका अब अनशन होनेके कारण) मैंने पत्रमें यह अिच्छा प्रगट की थी कि आप यह लोक छोड़कर जायें अुससे पहले भगवान मुझे बुला ले।]

नयी दिल्ली
२५-१-'४८

चि. प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। तेरी वर्षगांठकी बात समझा। मुझसे पहले चल जाना चाहती यह कैसी बात है? फिर मेरा क्या हाल होगा? यह कैसा स्वार्थ? परन्तु यह अच्छा है कि मरना-जीना किसीके हाथमें नहीं है। सारे प्रयत्न व्यर्थ हैं। हाथमें सो साथमें यह कहावत अच्छी है।

च. वाडुलकरके मामलेमें मैं सार्वजनिक रूपमें क्या कहूं? कोअी कुछ लिखे अुसके लिये मैं जिम्मेदार कैसे हो सकता हूं?

मैं जो कहूं या करूं अुसके लिये मैं जरूर जिम्मेदार हूं। बाकीके लिये नहीं।

मेरा और तेरा पत्रव्यवहार प्रकाशित करनेमें कोअी सार नहीं है। तुझको कुछ प्रकाशित करना होगा तो तू मुझे पूछ लेगी।

के बारेमें तू जो कहती है वह सही हो यानी मैं तेरा कहना पूरी तरह समझा होअूं, तो कहूंगा कि तू बहुत बारीक भेद निकालती है। विचार कर।

मिलना जरूर है। तू आकर मेरे साथ कुछ समय रह जाय तो शायद ज्यादा समझमें आ सके। अर्थात् थोड़े अंतरसे दो चार-दिनका समय निकालना अथवा जो काम हाथमें आय अुसे करते रहना। दुनियाको जैसे चलना हो वैसे चल।

तू अपना काम सुशोभित कर रही है।

सुशीला पै गयी।

बापूके आशीर्वाद

२४५

[मेरे पिताजीके अवसानके समाचार मिलनेके बाद मुझे लिखा हुआ सान्त्वनाका पत्र।]

नयी दिल्ली
२७-९-'४७

चि. प्रेमा

तूने अपना पिता खोया और हमने तो बहुतसे पाये। हम सबके लिये जो अुमरमें बड़े अथवा ज्ञानमें बड़े हैं वे सब पिता हैं। असी स्त्री हो तो हमारी मां है। हमारे बराबरवाले सब भाअी-बहन हैं और छोटी अुमरके सब लड़के-लड़की हैं। अिसलिये हमारा संसार अमर बढ़ जायगा। फिर तू पिताके लिये शोक क्यों करे? और मृत्यु तो हमारा सच्चा मित्र है। यह ठीक हो तो हमारे प्रियजन अपने अनिष्ट मित्रसे मिलें अुसमें दुःख क्यों हो? प्रियजनोंका वियोग हो तब हमें अपने सेवाकार्यमें अधिक गुथ जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

२४६

[पू॰ महात्माजीकी वर्षगांठके अवसर पर अपने सूतकी दो धोतियां और शंकररावजीके सूतके दो अुत्तरीय (ओढ़नेकी चादरें) मैं बरसोंसे अुनके लिये भेजती थी। १९४७ में दोनों वस्त्र बुनकर आनेके बाद धोबीके पास भेजकर दो बार भट्टीमें चढ़ानेके बाद वर्षगांठके दिन अुनके पास पहुंचाने जितना समय नहीं था। अतः अेक बार भट्टीमें चढ़ाकर धो डालनेके बाद धोतियां जैसीकी जैसी शंकररावजीके साथ पूनासे नअी दिल्ली भेज दी। वे सफेद नहीं हुअी थीं। पू॰ महात्माजी अुन्हें अुसी रूपमें पहनना चाहते थे। परन्तु मालूम होता है अुनके साथ रहनेवाले किसीने अुनसे पूछे बिना धोबीके यहां भेज दी।

मेरे पिताजीके अवसानसे मुझे जो दुःख हुआ अुसे दूर करनेके लिये अुन्होंने जो दलीलें दी थीं खास तौर पर सेवाकार्यमें अधिक ध्यान देनेकी सिफारिश वे मुझे पसन्द नहीं आयीं। अिसलिये मैंने अपना विरोध पत्रमें बताया था।]

नअी दिल्ली
१२-१-'४८

चि॰ प्रेमा

तेरा पत्र मिला। मेरे पास समय तो है ही नहीं।

मैंने जो लिखा वह मेरा ही था। किसीके कहनेसे लिखनेवाला मैं नहीं हूं।

तेरे पत्रमें जो अुलाहना है अुसे मैं समझता हूं। मैं क्या लिखूं? दुःख देनेके लिये तो मैं कुछ नहीं लिखूंगा।

धोतियां शंकरराव बड़ी श्रद्धासे लाये थे। पर पहुंचनेमें देर हो गयी। मेरा अिरादा तो अुसी रूपमें अुन्हें पहननेका था। बादमें पता चला कि क्या हुआ। अिसमें क्या? तुम सबकी सावधानीसे ठीक ११ तारीखको तो मिल ही गयी थी।

अधिक जब तू आयेगी तब।

बापूके आशीर्वाद

खबर मिली (जो अन्यत्र भी फैली थी) कि जवाहरलालजीने स्वयं ही आचार्य नरेन्द्रदेवका नाम सुझाया। तब पू. महात्माजीने मुझे अपनी अनुमति देते हुअे कहा "जयप्रकाशको भी अध्यक्ष बना सकते हो। — " अथवा किसी अर्थके शब्द अुन्होंने कहे।

अिसलिअे मैंने पत्रमें पू. महात्माजीसे पूछा: जयप्रकाशजीके पीछे बहुमत नहीं है फिर भी अुनका नाम आपने कैसे सुझाया? यह अलग लोकतान्त्रिक संस्थाके संविधानसे बाहर माना जायगा या नहीं?

२. भारतमें भाषावार प्रान्त-रचना होनेकी चर्चा अुस समय अुग्र रूपमें हो रही थी। बम्बई राज्यके महाराष्ट्र और गुजरात दो अलग राज्य हो जायं तो भौगोलिक दृष्टिसे और महाराष्ट्रीय लोगोंका बहुमत होनेसे बम्बई शहर महाराष्ट्रमें जाना चाहिये असा दावा महाराष्ट्रीय करते थे। अिस विषयमें पू. महात्माजीकी राय मैंने पूछी थी।

३. कांग्रेस अब सत्ताधारी बन गयी थी अिसलिअे केवल पुलिस पर ही नहीं सेना पर भी अुसका अधिकार हो गया है। अिसलिअे कांग्रेसमें सत्यके साथ अहिंसाको भी जीवन-सिद्धान्त माननेवालोंको चवन्निया सदस्यके रूपमें रहना चाहिये या बाहर निकल जाना अुचित है, अिस बारेमें अुनका मार्गदर्शन मांगा था।

पू. महात्माजीका १६ तारीखको लिखा हुआ पत्र श्री शंकररावजीने विमान-मार्गसे डाकसे भेजा जो मुझे १७ तारीखको सुबह ११ बजे जब मैं डाक लाने गयी तब मिला। साथमें श्री शंकररावजीका पत्र था जिसमें लिखा था:

"आज दोपहरको चार बजे (पू. महात्माजीसे मिलने गया) तब अुन्होंने मुझसे कहा: प्रेमाके पत्रका अुत्तर आज लिखना बाकी है और तुम रातको आओगे तब मैं अिसे पूरा कर दूंगा। तुम जल्दी भेजनेका प्रबन्ध करना। अिसलिअे मैं रातको आठ बजे गया तब पत्र लिखनेका काम चालू ही था। अुपवासके चौथे दिन अितना लंबा पत्र जिस व्यक्तिके हाथोंसे लिखा रहे थे अुससे वहां बैठे हुअे सभी लोगोंको आश्चर्य होना स्वाभाविक था। मगर आपसे कहने लगे अभी पूनीको पत्र लिखना रहे है अिसलिअे लिखना बाकी है।"]

नयी दिल्ली
१६-१-४८

चि. प्रेमा

तेरे दोनों पत्र कल मिल गये। तिल-गुड़ तो संक्रांतिके दिन ही मिल गये थे। वह (डाकमें आयी) छोटीसी पोटली अपनी मेज पर पड़ी हुआी मैंने देखी। अुसके साथ लगाया हुआ जो पुर्जा था वह नजरके बाहर था। देखा तो अुस पर तेरा नाम पढ़ा। संक्रांति याद आयी और मैं समझ गया। आभाको बुलवाया और कहा कि यहां जितने लोग हैं अुनमें अेक भाग तो बांट दिया जाय और दूसरा भाग मेरे लिये रख लिया जाय — क्योंकि अुपवासमें तो मैं खा नहीं सकता। अुस समय जो लोग मौजूद थे अुनमें अुसी समय तिल-गुड़के दाने बांट दिये गये। तिल-गुड़के महत्त्वके विषयमें तेरा काव्य पढ़ा। खुशी हुआी। जिस त्योहारका शुभ भावना बढ़ानेमें अुपयोग हो अुसकी मैं अवहेलना नहीं करूंगा परन्तु जिस त्योहारके साथ राग-रंग वगैराका प्रदर्शन जुड़ा हुआ हो वह त्योहार मुझे खटकता है।

शंकररावदेवने कल बताया कि तूने खास तौर पर लिखा है कि तेरी ओरसे वे मुझे रोज देख जायं और पत्र लिखें। अुन्हें अैसा करना ही पड़ा तो वे अपना कर्तव्य चूकेंगे जितना तू विचार कर ले। अुन्हें अलग अलग जगहों पर जाना चाहिये। अिसके बजाय अेक बूढ़ेको देख जानेके लिये वे अपनी जिम्मेदारी छोड़ दें? और मुझे देखनेके लिये तेरे यहां आनेकी क्या जरूरत? तू जितना समझ कि यहां भी सेवा करनेवाले बहुत लोग हैं। अुन सबको आने दूं तो मेरा अुपवास लम्बाता ही रहे क्योंकि मेरी सेवामें अुन्हें सर्वस्व मिल गया अैसे भ्रममें पड़ कर वे अपने अपने कर्तव्यमें चूकें। फिर भी अैसा लगे कि तुझे आना ही चाहिये तो आनेकी तुझे छूट है।

तेरे दोनों पत्र सुन्दर काव्य जैसे हैं। मैं नहीं जानता था कि भाषा पर तेरा जितना बड़ा अधिकार है।

समाजवादियोंके बारेमें मैं यह मानता हूं कि वे त्यागी हैं अध्ययनशील हैं और साहसी हैं। वे क्या कर रहे हैं, यह मैं नहीं जानता।

अखबारोंमें जो कुछ आता है अुतना जानना काफी हो तो अुतना ज्ञान मैं रखता हूं। वह भी सूक्ष्म रूपमें नहीं। मुझे लगता है कि वे कांग्रेसमें रहें और वह भी कार्यसमितिमें तो वे कांग्रेसकी शक्तिको बढ़ायेंगे। अिसका कारण यह है कि कांग्रेसके वर्ग पर जैसे आदमी अपने रंगकी शक्ति बढ़ानेकी कोशिश कभी नहीं करेंगे और करेंगे तो अुनके हाथ नाश होगा। यदि अिससे अुलटी बात सच हो तो मेरे विचारोंका अनुसरण करनेवाले लोग समाजवादियों अथवा अन्य विरोधियोंके प्रति प्रेमभाव रखें और अविश्वासको प्रेमसे जीतें। प्रेमसे कट्टरसे कट्टर विरोधीको भी जीता जा सकता है। न जीता जा सके तब समझना चाहिये कि दोष हमारा है। हमारा प्रेम अधूरा है।

मैंने जब जयप्रकाशका नाम राष्ट्रपतिके रूपमें रखा तब जो शब्द मेरे मुंहमें किसीने रखे हैं वे मैंने जरूर कहे होंगे क्योंकि अुस समय तो वह बात सत्य थी। आज अुसमें कुछ फर्क पड़ गया है। वह कैसे अिसमें जानेकी जरूरत नहीं। यह हो सकता है कि मेरे प्रेमसे राष्ट्रपति बननेकी योग्यता अनायास किसीमें पैदा हो जाय। परन्तु मेरे प्रेमके साथ जैसी योग्यताका कोअी सम्बन्ध नहीं है। अितना जरूर है कि जो वाक्य मैंने कहा है वह किस संदर्भमें और किस अर्थसे कहा है, अिसका तो मैं भी वर्णन नहीं कर सकता।

यह बात सच है कि बहुमतवाले दलके लोगोंमें से कार्यसमिति चुनी जाती है फिर भी बहुमत अपने ही दलमें से अल्पमत चुने यह बात हमेशा सच नहीं होती। समझदार कार्यसमिति हो और अल्पमतवाले दलमें से भी कोअी होशियार और प्रामाणिक मनुष्य मिल जाय तो वह अुस मनुष्यको जरूर पसन्द करेगी। तो ही लोकतंत्र अन्तमें सफल होगा। हठी बहुमत सदा भयंकर परिणाम लाता है।

अुनके विचार और नीति जहां तक मैं जानता हूं वहां तक राष्ट्रके लिये घातक नहीं हैं अुनकी रीति राष्ट्रहितकी विरोधी है। परन्तु यदि वे अल्पमत हो जाय तो अुन्हें कांग्रेसकी नीतिका ही अनुसरण करना चाहिये। खूबी यह है कि विरोधी वातावरणके बीच अुन्होंने स्वयं ही राष्ट्रपति बनना नामंजूर कर दिया। जिस मनुष्यने बाहर रहकर विरोध किया

१

अेक त्याग

[पू. महात्माजीके ता. २८-९-३५ के पत्रमें “मुझे विश्वास है कि मेरे त्यागका सारा हाल तू जानेगी तब तू भी मुझसे सहमत होगी” यह वाक्य जिस लेखको ध्यानमें रखकर लिखा गया है वह नीचे मुद्रित किया गया है। अिसका अुल्लेख महात्माजीके ता. १-५-३६ के पत्रमें भी आता है। यह लेख और साथका लेख पढ़कर समाजमें अुस समय बड़ा अूहापोह मचा था। अिस कारणसे पू. महात्माजीसे अुनके ब्रह्मचर्य-जीवन सम्बन्धी प्रश्न पूछनेकी मुझे प्रेरणा हुअी थी। अुत्तरमें पू. महात्माजीने ता. १-५-३६ और ता. २१-५-३६ के पत्र लिखकर स्पष्टीकरण किया और ब्रह्मचर्यका महान आदर्श जीवन-विकास तथा सामाजिक कल्याणके लिअे अुपस्थित किया।]

सन् १८९१ में मैं विलायतसे लौटा अुसके बाद मैंने हमारे परिवारके बालकोंका लगभग पूरा कब्जा ले लिया और अुनके — लड़के-लड़कियोंके कंधे पर हाथ रखकर घूमने जानेकी प्रथा डाली। वे बालक मेरे भाअियोंके थे। अुनके बड़े हो जानेके बाद भी यह प्रथा जारी रही। ज्यों ज्यों मेरे परिवारकी मर्यादा बढ़ती गयी त्यों त्यों अिस प्रथाका दायरा धीमे धीमे अितना बढ़ा कि लोगोंका ध्यान अिस ओर गये बिना न रहा।

जहां तक याद है मुझे कभी अैसा नहीं लगा कि मैं कोअी बुरा काम कर रहा हूं। कुछ वर्ष हुअे साबरमतीके अेक आश्रमवासीने मुझसे कहा, “आप जब बड़ी अुमरकी लड़कियों और स्त्रियोंके कंधे पर हाथ रखकर चलते हैं तब अुसमें समाज द्वारा स्वीकृत सभ्यताकी कल्पनाका भंग होता दिखाअी देता है।” परन्तु आश्रमवासियोंके साथ चर्चा होनेके

बाद यह प्रथा जारी रही। थोड़े ही दिन पहले मेरे दो साथी वर्धा आये थे। अुन्होंने मुझसे कहा यह प्रथा दूसरोंके सामने बुरा अुदाहरण पेश कर सकती है। अिसलिअे आपको यह प्रथा बन्द कर देनी चाहिये। अुनकी दलील मेरे गले नहीं अुतरी। फिर भी मैं अिन मित्रोंकी अिस चेतावनीकी अुपेक्षा नहीं करना चाहता था। अिसलिअे मैंने यह सूचना पांच आश्रम-वासियोंके सामने छानबीन करने और अुनकी सलाह देनेके लिअे रखी। यह विचार चल ही रहा था कि अितनेमें अेक निश्चयात्मक घटना घटी। यूनिवर्सिटीमें पढ़नेवाले अेक होशियार विद्यार्थीका किस्सा किसीने मुझे बताया। यह विद्यार्थी अेक लड़कीके साथ जो अुसके प्रभावमें थी अेकान्तमें सब तरहकी छूट लेता था और अिसका कारण यह बताता था कि वह लड़की अुसकी सगी बहनके समान है, अिसलिअे अुसके प्रति प्रेमका थोड़ा बहुत शारीरिक प्रदर्शन किये बिना अुससे रहा नहीं जाता। कोअी अुस पर अपवित्रताका जरा भी आरोप लगाता तो अुसे क्रोध चढ़ जाता। यह युवक क्या क्या करता था अिसका वर्णन अगर मैं कर सकूं, तो पाठक बिना संकोच कहेंगे कि अुसकी अिस छूटमें मलिनता ही थी। अिस बारेमें हुआ पत्र व्यवहार मैंने और दूसरे जिन लोगोंने पढ़ा अुन्होंने यही राय बनाअी कि यह युवक या तो पहुंचा हुआ दंभी होना चाहिये या अपने मनको धोखा देनेवाला होना चाहिये।

चाहे जो हो लेकिन अिस खोजने मुझे विचारमें डाल दिया। मैंने अुन दो साथियोंकी चेतावनी याद की और मनसे पूछा कि यह युवक मेरे अिस रिवाजकी बात करके अपने कामका बचाव करता था अैसा यदि मुझे पता चले तो मुझे कैसा लगे? यहां अितना कह दूं कि जो बाला अिस युवककी चेष्टाका शिकार बनी हुअी है वह अुस युवकको सर्वथा निर्मल और भाअीके समान मानती है, फिर भी अुसे वे चेष्टायें अच्छी नहीं लगतीं। अुनका वह विरोध भी करती है, लेकिन अुन चेष्टाओंके खिलाफ विद्रोह करनेका अुसमें बल नहीं है। अिस घटनासे मेरे मनमें जो आत्म परीक्षण चल रहा था अुसके परिणामस्वरूप यह पत्रव्यवहार पढ़नेके बाद दो या तीन दिनमें मैंने अपनी अूपर बताअी हुअी प्रथाका त्याग कर दिया और पिछली १२ तारीखको वर्धाके आश्रमवासियोंके सामने अिसकी घोषणा

की। जिस निर्णय पर पहुंचनेमें मुझे गहरा दुःख हुओ बिना नहीं रहा। जिस प्रकारके वातावरणमें रहते या असके कारण मेरे मनमें कभी अेक भी मलिन विचारने प्रवेश नहीं किया। मेरा आचरण हमेशा मुझे आम हुआ है। मैं मानता हूं कि वह आचरण पिता करता है वैसा ही था और असके कारण जिन अनेक बालाओंका मैं मार्गदर्शक और रक्षक बना हूं अन्होंने दूसरे किसीके सामने न की हों जितने विश्वासके साथ और जितनी निर्भयतासे अपने मनकी बातें मेरे सामने की हैं। जिस ब्रह्मचर्यको हमेशा अन्य स्त्री या पुरुषके स्पर्शके सामने रक्षणकी दीवार रखनेकी जरूरत हो और जो जरासे भी प्रलोभनके सामने आते ही स्खलित हो जाय असे मैं सच्चा ब्रह्मचर्य नहीं मानता। फिर भी मैंने जो छूट ली है असमें रहे खतरोंसे मैं बेखबर नहीं था।

जिसलिये मैंने अपर बताओ हुओ खोजके परिणामस्वरूप मेरी प्रथा चाहे जितनी शुद्ध रही हो तो भी असका त्याग कर दिया है। मेरे प्रत्येक आचरणको हजारों स्त्री-पुरुष सूक्ष्मतासे देखते हैं, क्योंकि मैं जो प्रयोग कर रहा हूं असमें अखंड जागृतिकी आवश्यकता है। जिन कामोंका मुझे दलीलोंसे बचाव करनेकी जरूरत पड़े वे काम मुझे नहीं करने चाहिये। मेरे अुदाहरणका कोओ भी मनुष्य अनुसरण कर सकता है, अैसी धारणा मेरी कभी नहीं थी। जिस युवकके अुदाहरणने मुझे सावधान कर दिया है। मैंने जिसे चेतावनी समझा है और आशा रखी है कि जिन्होंने मेरे अुदाहरणके असरसे या असके बिना भूलें की हैं वे वापस सन्मार्ग पर मुड़ेंगे। निर्दोष यौवन अेक अनमोल धन है। क्षणिक अुत्तेजनाके लिये जिसे आनन्दका गलत नाम दिया जाता है यह धन नष्ट नहीं करना चाहिये। जिस घटनाकी लड़कीकी तरह जो निर्दोष मनकी लड़कियां हों वे जितना बल सम्पादन करें जिससे शठ या अपने विवेकका भान न रखनेवाले युवकोंकी चेष्टाओंका — भले वे कितनी ही निर्दोष क्यों न हों — विरोध करके वे अुन्हें रोक सकें।

हरिजनबन्धु २२-९-३५

२

प्रभुकृपाके बिना सब मिथ्या है

डॉक्टर मिश्रों और स्वेच्छासे मरे जेकर बने हुये घरदार बलकम माबी तथा अमृताबाअनजीकी कृपासे हरिजनबन्धु के पाठकोंके साथ मेरी साप्ताहिक बातचीत थोड़े-बहुत अंशमें फिरसे शुरू करनेकी मुझे प्रयोगके रूपमें छूट मिली है। यह छूट देते समय अुन्होंने कुछ शर्तें मुझ पर लादी हैं और अुन्हें मैंने अभी तुरन्त तो स्वीकार कर लिया है। वे शर्तें ये हैं (१) मेरे साप्ताहिकोंके लिये भी अत्यन्त आवश्यक हो अुतना ही मैं लिखूं और यह भी सप्ताहमें अेक-दो घंटेसे ज्यादा परिश्रम न करना पड़े अुतना ही (२) अपने व्यक्तिगत या पारिवारिक प्रश्नों और समस्याओंके बारेमें लिखनेवालोंके साथ मैं पत्रव्यवहार न करूं (जैसे अेक दो प्रश्नोंके सिवा जिनमें मैं शुरूसे लेकर अब तक पूरी तरह फंस चुका हूं) (३) किसी भी सार्वजनिक कामकाजको मैं स्वीकार न करूं और अेक भी सार्वजनिक सभामें शामिल न होअूं या भाषण न दूं। अिसके अलावा निद्रा आराम व्यायाम और आहारके बारेमें भी नियम बनाये गये हैं। लेकिन अुनसे पाठकोंका कोअी सम्बन्ध न होनेके कारण मैं यहां अुनका अुल्लेख नहीं करूंगा। मुझे आशा है कि मेरे साप्ताहिकोंके पाठक और पत्रलेखक अिस बारेमें मुझे सहयोग देंगे और महादेव देसाअी पर, जिनके द्वारा मेरे सामने आवश्यक पत्र रखे जाते हैं दया करेंगे।

मेरी तबीयत बिगड़नेके कारण जाननेकी पाठकोंको सहज ही अिच्छा होगी। डॉक्टर मिश्रोंने बहुत सावधानी और परिश्रमपूर्वक मेरी परीक्षा की और अुनका कहना मैं जहां तक समझा हूं वहां तक अुन्हें मेरे अेक भी अवयवमें कोअी बिगाड़ मालूम नहीं हुआ है। अुनकी राय यह है कि मेरी तबीयत बिगड़नेका कारण यह है कि मेरी खुराकमें पौष्टिक तत्त्व (प्रोटीन) और गरमी पैदा करनेवाले तत्त्व (शक्कर और स्टार्च) अुपयुक्त प्रमाणमें नहीं थे और मैंने काफी अरसेसे अतिशय मानसिक परिश्रम किया है। मेरे

रोजके सार्वजनिक कार्योंके अलावा कष्टदायी व्यक्तिगत प्रश्नों पर भी मैंने भटों सिरपच्ची की। मुझे अब तक भी याद है कि पिछले बारह महीनोंसे या अुससे भी ज्यादा समयसे मैं यह शिकायत करता आया हूँ कि मेरा बढ़ता हुआ काम मैं कम नहीं करूँगा तो मेरा शरीर टूट जायगा। जिसलिअे जब मेरी तबीयत बिगड़ी तो मुझे कोअी आश्चर्य नहीं हुआ। मेरे आसपासके अेक व्यक्तिने मेरी अस्वस्थता देखकर घबराहटमें तुरन्त अमतलालजीको लिख न दिया होता और अुन्होंने अथवा सब डॉक्टर मिलकर न किये होते और अनवरीस डॉक्टर न बुलाये होते तो सम्भव है कि मेरी बीमारीका दुनियाको जरा भी पता न चलता।

जिस दिन मेरी तबीयत बिगड़ी अुस दिन सुबह अुठते ही मुझे चेतावनी तो मिल चुकी थी। मेरी गरदनके अूपरके भागमें विचित्र दर्द शुरू हुआ था। लेकिन मैंने अुसकी परवाह नहीं की और किसीसे कुछ कहा भी नहीं। दिनका कार्यक्रम हमेशाकी तरह चालू रखा। शामको घूमते समय अेक मित्रके साथ अत्यन्त गम्भीर और थकानेवाली बात करनी पड़ी अुसके परिणामस्वरूप मेरी तबीयत बिगड़ी और मैंने बिस्तर पकड़ा। शामिलीके व्यक्तिगत प्रश्न मेरे लिअे तो स्वराज्यके प्रश्नों जितने ही महत्त्वके ठहरे। अैसे प्रश्न अेक बार हाथ में आये फिर मैं अुन्हें छोड़ नहीं सकता। अैसे प्रश्नोंकी चर्चा और अुनके निराकरणमें अेक पूरे पखवाड़े तक मेरे खूनका पानी हुआ था। फिर और कोअी परिणाम कैसे आ सकता था?

अगर मेरी बिगड़ी हुअी तबीयतके बारेमें धांधली न मचाओ गअी होती तो भी कुदरतकी चेतावनीकी मैं अवहेलना न करता। मैंने काफी आराम किया होता और मैं अच्छा हो जाता। लेकिन जो हो गया अुसे देखते हुअे मुझे लगता है कि जितनी धांधली ठीक ही थी। डॉक्टर मित्रों द्वारा रखी गअी असाधारण सावधानी और मेरे दोनों वेकरों द्वारा की गअी असाधारण संभालके परिणामस्वरूप मुझे जबरन् अतिशय आराम लेना पड़ा। जितना आराम स्वेच्छासे तो मैंने नहीं ही लिया होता। जिस आरामके समयमें मुझे आत्मनिरीक्षणके लिअे खूब अवकाश मिला। जिससे मुझे लाभ हुआ जितना ही नहीं बल्कि मेरे आत्मपरीक्षणने मुझे बता दिया है कि गीताका जो अर्थ मैंने किया है अुसके मेरे पालनमें

गंभीर त्रुटियां थी। चाहे जितने गंभीर व्यक्तिगत प्रश्न मेरे सामने आये लेकिन जिस लिये मैंने मनोमन्थनमें पड़कर अतिशय कष्ट भोगा मैंने अनका विचार पूरी अनासक्तिसे क्यों नहीं किया? अनके लिये मैंने भारी वेदना मुठायी और अपना खून जलाया यह तो स्पष्ट ही है। गीताके पुजारीके शरीर और मन पर अैसे प्रसंग व्यथा अुत्पन्न नहीं कर सकते वह तो सम-दुःख-सुख और धीर रहता है। लेकिन मैं धीर नहीं रहा। मेरी सचमुच यह मान्यता है कि गीतामाताके अुपदेशके अनुसार व्यवहार करनेवालेके मन और आत्माको जरा और व्याधि स्पर्श ही नहीं सकती। अैसे गीताभक्तका शरीर नीरोग वृक्षके पके फल या सूखे पत्तोंकी तरह समय आने पर गिर जाता है लेकिन अुसकी आत्मा तो सदा ताजी ही रहती है। शरशय्या पर लेटे हुअे भीष्म पितामह द्वारा युधिष्ठिरको दिये गये अलौकिक अुपदेशका रहस्य यही है।

डॉक्टर मित्रोंने हमेशा मुझे अपने आसपास घटनेवाली घटनाओंसे बेचैन न होनेकी सलाह दी है। अैसी बेचैन करनेवाली घटनाओंकी खबर मुझे न देनेकी भी खास सावधानी रखी गयी थी। ये लोग मुझे जितना स्वस्थ गीताभक्त समझते थे अुतना स्वस्थ तो मैं नहीं था फिर भी अुनकी सावधानी और सूचनाके पीछे रहस्य था। जमनालालजीने मुझे मगनवाड़ीसे महिलाश्रम ले जानेकी मांग की तब मुझे कितना दुःख हुआ था यह मैं जानता हूं। लेकिन जमनालालजी क्या करें? अनासक्तिपूर्वक काम करनेकी मेरी शक्तिके बारेमें अुन्हें श्रद्धा रही ही न थी। मेरी तबीयत गिर गयी जितनी ही बात अुनके सामने मेरे अनासक्तिके दावेको न माननेके लिये काफी थी। अुनका लगाया हुआ अपराध मैं स्वीकार करता हूं।

लेकिन अभी तो मेरे दुःखका कटोरा पूरा भरा नहीं था। मैं सन् १८९९ से ब्रह्मचर्यका ज्ञानपूर्वक और आग्रहपूर्वक पालन करनेका प्रयत्न करता आया हूं। ब्रह्मचर्यकी मेरी परिभाषामें शरीरकी ही नहीं बल्कि विचार और वाणीकी शुद्धिका भी समावेश होता है। शारीरिक शुद्धि तो मैं अीश्वरकी कृपासे पालन कर सका हूं। पिछले छत्तीस वर्षोंके सतत प्रयत्न-कालमें मानसिक शुद्धि भी अेक ही बार खतरेमें पड़ी थी। अैसे ही मनोविकारका दर्शन जिन बीमारीके दिनोंमें अेक बार मुझे हुआ और

मैं कांप अुठा। मुझे अपने प्रति तिरस्कार पैदा हुआ। विकारका दर्शन होते ही मैंने अपने साथियों और डॉक्टरोंसे बात की। वे बेचारे मेरी क्या मदद करते? मैंने अुनसे किसी तरहकी मददकी आशा भी नहीं रखी थी। मुझ पर पूरे आरामकी जो कड़ी शर्त अुन्होंने लगाअी थी अुस शर्तका मैंने भंग किया और कामकाज शुरू किया। मैंने अपने दुःखद अनुभवकी बात सब पर प्रकट की जिससे मेरा मन काफी हलका हो गया। मुझे अैसा लगा कि मेरे अूपरसे भारी बोझ अुतर गया। मुझे कोअी भी हानि हो अुससे पहले मैं सावधान हो गया।

लेकिन गीतामाताका क्या? अुसका अुपदेश तो स्पष्ट है। अुसमें कोअी परिवर्तन नहीं कर सकता। अिस ध्रुवतारेकी निशानी सामने रखकर जिसका मन चलता है अुसे विकार छू नहीं सकते। अिस ध्रुव तारेसे — अिस सर्वनियंतासे मैं कितना दूर होअूंगा यह तो नहीं जानता हूं। महात्मा के रूपमें प्रसिद्ध हो जानेके बावजूद अीश्वरकी कृपासे मैं कभी फूला नहीं बेवकूफ नहीं बना। लेकिन मेरे भीतर गर्वका बोझा भी जो बंध रहा होगा वह जबरन् आराम करना पड़ा अुससे गल गया है। जिससे मेरी मर्यादायें और अपूर्णतायें स्पष्ट हो जाती हैं। लेकिन अिन मर्यादाओं और अपूर्णताओंसे शरमानेकी जरूरत नहीं है। अिन्हें दुनियासे छिपाअूं तो ही शरमानेकी जरूरत हो सकती है। गीतामाताके अुपदेशके बारेमें मेरी श्रद्धा पहले जितनी ही आज भी जाग्रत है। अिस अुपदेशका जीवनमें साक्षात्कार तभी होता है, जब अुस अुपदेशके पालनके लिअे सतत प्रयत्न किया जाय। लेकिन वही गीताजी कहती हैं कि यह साक्षात्कार प्रभुकृपाके बिना नहीं होता। प्रभुकृपाकी शर्त भगवानने न रखी होती तो आदमीका सिर फिर जाता और अुसके अभिमानकी सीमा न रहती।

हरिजनबन्धु, १–३–३६

प्रेम पन्थ

प्रेमपन्थ पावकनी ज्वाळा भाळी पाछा भागे जोने
मांही पड्या ते महासुख माणे देखनारा दाझे जोने।
हरिनो मारग छे शूरानो।।[1]

मेरे जीवनमें प्रार्थनाने बहुत हिस्सा अदा किया है। मैं बिलकुल बच्ची थी तब मुझे किसीने व्यक्तिगत या सार्वजनिक प्रार्थनाके बारेमें कुछ कहा हो या संस्कार दिये हों अैसा मुझे याद नहीं है। लेकिन ननसालमें मैं रहती थी तब मेरे माता कभी कभी पोथी पढ़ कर सुनाते थे। भुसको कथाव मैं सुनती थी। छोटी या बड़ी सभी भुमरके भक्तोंको भगवान संकटसे बचाते हैं अैसे किस्से अनेक बार सुननेस मेरे मनमें श्रद्धा जागी और यह विश्वास पैदा हुआ कि भुन भक्तोंकी तरह मैं भी भगवानसे प्रार्थना करूँ तो वह मेरी भी सहायता करेगा। बादमें मैंने जिसका अनुभव किया। बचपनके संकट भला कितने बड़े हो सकते हैं! फिर भी समय समय पर भुस भुस समयकी मेरी भावनाके अनुसार मुझे जब भयंकरी परिस्थिति लगती तब मैं चुपचाप मनमें भगवानकी करुणाके लिये याचना करती पोथीमें से सुने हुये भक्तोंके करुणा-वचनोंका भुपयोग करती। संकटके प्रसंग अैस होते थे बीमारी परीक्षा अंधेरेमें जानेके प्रसंग अच्छा न लगनेवाला काम अनिच्छासे करनेके प्रसंग स्कूल जाते समय चिढ़चिढ़े आदमियों द्वारा सताये जानेके प्रसंग। लेकिन अनुभव अैसा हुआ कि प्रार्थनासे या तो संकट दूर हो जाता है या मदद अथवा बल मिलता है। जिसलिये मेरी श्रद्धा बढ़ती ही गयी।

पूज्य महात्माजीके आश्रममें आकर साधना करनेकी मेरी जिच्छा मन तरहसे अनुकूलता प्राप्त करके आखिरमें सफल हुयी। यह भी

---

[1] अर्थ प्रेमका मार्ग आगकी ज्वालाके समान है। लोग भुसे देखकर वापस भाग जाते हैं। जो भुसके भीतर प्रवेश करते हैं वे महासुख भोगते हैं। और बाहरसे देखनेवाले जल जाते हैं। हरिका मार्ग शूरोंका है।

प्रार्थनाका ही फल है बैसी मेरी श्रद्धा है। यहां बारेक वर्ष बितानेके बाद और बेलमें ग्यारह महीने रहनेके बाद फिर निर्भयकी मुसीबत आकर खड़ी हुबी तब भी प्रार्थना काम आबी। जेलसे छूटनेके पहले भविष्यके मार्गदर्शनके लिबे भगवानसे प्रार्थना की तब अुसकी कृपासे वह काम सरल हो गया।

प्रार्थनाके साथ मेरे जीवनसे जुड़ी हुबी अेक गूढ़ घटना सूचक स्वप्नोंकी है। बुद्धिनिष्ठ विद्वान बिसे हंसकर टाल देंगे। लेकिन मैं तो अपने अनुभवके आधार पर कहती हूं। जब जब मेरे जीवनमें कोबी खास परिवर्तन होनेका समय आया है, अथवा मार्गदर्शनकी अपेक्षा होती है, अथवा अपेक्षा न होने पर भी मेरे हाथसे कोबी काम होनेकी अपेक्षा नियति रखती है तब तब मुझे सूचक स्वप्न आते हैं! सत्याग्रह आश्रममें आनेके बाद मुझे अेक बैसा स्वप्न आया था जिसका स्पष्टीकरण पूज्य महात्माजीने अपने ढंगसे किया था। सासवड़ आनेके बाद भी फिरसे (वह) स्वप्न आया।

सासवड़ आनेके बाद मेरे मनमें दो विचार-प्रवाह बहने लगे। अेक मनमें बैसी चिन्ता बनी रहती थी कि जिस क्षेत्रमें अभी तक कोबी कार्य नहीं हुआ है अुसमें नया प्रयोग करते समय ज्ञान और अनुभव न होनेसे कार्यशक्तिमें अुतनी कमी रहेगी। साथी नये क्षेत्र नया अपनी बुद्धि तथा शक्तिके मापका कोबी अन्दाज नहीं। बिसके सिवा महाराष्ट्रका वातावरण भी सत्याग्रह आश्रमके वातावरणसे मिलता नहीं था। महाराष्ट्रमें रचनात्मक कार्यकर्ता भी राजनीतिमें पूरा रस लेते हैं। बिसलिबे प्रथम आदर मिलता है और चर्चा तथा वाद-विवाद पूरे जोरसे चलते हैं। दो महाराष्ट्री मिले कि वाद-विवाद आरम्भ हुआ ही समझिये। ये सब बातें मेरे स्वभावके विरुद्ध थीं। बिस वातावरणमें अपने ढंगका सेवा कार्य कैसे होगा बिसकी चिन्ता मनमें बनी रहती थी।

दूसरा विचार पूज्य महात्माजीके बारेमें था। सत्याग्रह आश्रममें थी तब मैं भले ही दूर रह तो भी पास ही अपने थे। पत्रव्यवहार द्वारा अुनके साथ सान्निध्य कायम रहता था। बीच बीचमें मिलना भी हो जाता था अुनका सहवास भी मिलता था। अब मैं दूर आ पड़ी थी। वे भी बहुत

दूर थे। पत्रव्यवहार नियमित चलेगा या नहीं उनके मनमें मेरा स्थान रहेगा या नहीं अैसी अैसी चिन्तायें मनमें हुआ करती थी। सूर्यमालामें अपने कक्षमें घूमनेवाले ग्रह जिस प्रकार सूर्यसे प्रकाश और शक्ति प्राप्त करते हैं वैसे ही दूर रहते हुअे भी पूज्य महात्माजीसे स्नेह सहानुभूति तथा बल प्राप्त करनेकी आशा मैं रखती थी। जिस प्रकार दो तरहकी चिन्तामें मन व्यग्र हो गया था। और भविष्य अंधकारमय लगता था।

अैसी स्थितिमें रातको यह स्वप्न आया

मैंने देखा कि अेक विशाल मैदानमें मैं बैठी हूं। मैदान जितना विस्तीर्ण था कि दूर गोल घूमता हुआ आकाश क्षितिजके पास मुससे मिलता हुआ दिखाभी देता था। पेड़ मकान रास्ता कुछ भी नहीं दीखता था। मनुष्य भी नहीं थे। सर्वत्र हरी घास ऊगी हुअी थी और मैदानमें मध्यबिन्दुके रूपमें अेक कुरसी पर मैं बैठी हुअी थी। थी तो अकेली ही लेकिन अैसी प्रतीति होती थी कि मेरे पीछे ही अेक व्यक्ति खड़ा है। मुझे वह व्यक्ति दिखाभी नहीं पड़ता था दृष्टिसे ओझल था लेकिन वह पुरुष था मेरा रक्षक कहो या तारनहार कहो लेकिन वह भाव देनेवाला था जिस बारेमें मुझे शंका नहीं थी। जिस स्थितिमें मैं बैठी थी तभी अचानक सामनेसे चार-पांच सुन्दर बालक सुन्दर पोशाक पहने हुअे हाथमें पुष्पोंके गुच्छे लिये दौड़ते आये और पास आकर अुन्होंने वे गुच्छे मुझे दे दिये। मैं अुनके साथ बातें करने लगी जितनेमें वैसे ही दूसरे बच्चे दौड़ते हुअे आये और अुन्होंने भी मुझे गुच्छे दिये। जिसी तरह बालकोंके गुट्ट बढ़ते आते गये और सभी मुझे गुच्छे देते गये। आखिरमें बालक ठहर गये और चारों दिशाओंसे और अूपर आकाशमेंसे पुष्प गुच्छोंकी वृष्टि मेरे अूपर होने लगी जिससे मैं ढक गयी और चौंककर नींदसे जाग गयी!

जागनेके बाद स्वप्नका विचार आया। मैंने जाना कि स्वप्नमें जो पुरुष मेरे पीछे अदृश्य रूपमें खड़ा था वे पूज्य महात्माजी ही थे। अुनके आशीर्वाद मेरे साथ रहेंगे है जिसलिअे अुनका अमर मेरे सेवाकार्यमें दृश्य रूप लिये बिना नहीं रहेगा अैसा विश्वास मनमें दृढ़ हो गया।

यह स्वप्न मैंने पू. महात्माजीको नहीं बताया क्योंकि ओक पत्रमें अन्होंने मुझे लिखा था कि सपनोंको महत्त्व नहीं देना चाहिये। यहां मुझे अेक सुख-संवाद याद आता है।

दांडीकूचसे पहले पू. महात्माजीका निवास सत्याग्रह आश्रममें था अुसकी यह घटना है — शायद बाहीर कांग्रेससे पहलेकी हो। शामकी प्रार्थनाके बाद पूज्य महात्माजी हृदय-कुंजके आंगनमें अपनी खाट पर बैठे थे। सामने बेंच पर दो अमेरिकन मित्र बैठे थे। अुनमें से अेक अमेरिकाके लेखक मी घेरवुड ओड्डी थे अैसा स्मरण है। मैं पास बड़ी ध्यानपूर्वक अुनकी बातें सुन रही थी। अैसी मुलाकातोंसे मुझे बहुत सीखनेको मिलता था।

वे लेखक पू. महात्माजीसे पूछ रहे थे "जब आपके सामने कोओ कठिन समस्या खड़ी होती है तब आप अुसे किस तरह हल करते हैं? अर्थात् जब आपको मार्ग स्पष्ट नहीं दीखता तब आप क्या करते हैं?"

पू. महात्माजी बोले "I think and ponder over it for hours together and when I cannot see the light I say 'Let it go to the devil' and sleep over it. But when I get up in the morning, lo! the solution is there!" (मैं घंटों तक अुस पर विचार और मनन करता हूं और जब मुझे प्रकाश नहीं दीखता तब मैं कहता हूं कि 'अभी जिस बातको छोड़ो'? और अेक रात नींद निकाल लेता हूं। लेकिन सुबह मैं अुठता हूं तो अचानक हल सामने आकर अुपस्थित हो जाता है!)

लेखकने पूछा "Do you mean to say that you get the solution in your dream, as if through a miracle?" (आपके कहनेका क्या यह अर्थ है कि चमत्कारकी तरह स्वप्नमें आपको हल मिल जाता है?)

पूज्य महात्माजी बोले "No, no miracle! It is something like the case of a mathematician. He ponders over his problem for hours together and after a great deal of concentration and effort he finds the solution all of a sudden and cries, 'Ah! here it is!' That exactly is the

case with me." (यहाँ चमत्कार नहीं ! यह तो गणितके जैसी बात है। वह घंटों तक अपनी समस्या पर विचार करता रहता है। और खूब अेकाग्रता और प्रयत्नके बाद अेकाअेक अुसे अुसका हल मिल जाता है और वह बोल अुठता है "अहा! हल मिल गया।" मेरे बारेमें ठीक अैसा ही है।)

श्री विनोबाजीसे मैंने अेकबार स्वप्नोंके बारेमें पूछा था। मेरी स्मरण शक्ति ठीक काम करती हो तो "मुझे स्वप्न आते ही नहीं।" अैसा अुत्तर अुन्होंने दिया था। अतः अुनके लिअे स्वप्नकी बात विचार करने योग्य भी ही नहीं।

अिस तरह अिस युगके दो महान आध्यात्मिक शक्तिवाले पुरुषोंके मत मैंने जान लिये। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभवसे ही चलता है। मुझे स्वप्नोंकी सूचक और सच होनेकी प्रतीति कअी बार हुअी है। मेरे पिताजी कारवारमें अचानक नींदमें गुजर गये अुसी रातको लगभग अुसी समय मुझे भय-सूचक स्वप्न आया था! तब मैं सफरमें थी। दो दिन बाद पूना पहुंची और तार मिला! और मुझे रामायणका राजा दशरथकी मृत्युके बारेमें भरतको आये स्वप्नका वर्णन याद आ गया।

*

नागपुरमें सेवाकार्य शुरू हुआ। पूज्य महात्माजीके साथ पत्रव्यवहार चालू रहा। समय समय पर मिलना भी हो जाता था। गांधी-सेवा-संघकी सदस्या बननेके बारेमें स्व. श्री किशोरलालभाअीकी सूचना मुझे मिली और मैं सदस्या बनी। अिससे हर साल सम्मेलनमें सात दिन रहकर पूज्य महात्माजीका सहवास प्राप्त करनेका सुख मिलने लगा। नागपुरका आग्रह महाराष्ट्रमें गांधीजीके विचार और कार्यका केन्द्र बने अैसी श्री जमनालालजीकी अिच्छा और प्रयत्न था। आचार्य भागवत जैसे विद्वान और तत्त्वचिंतक लगातार आपका मार्गदर्शन करते थे। धीरे धीरे आपकी प्रवृत्तियां बढ़ने लगीं। चरखा, कताअी, तेलघानी, राष्ट्रभाषा प्रचार, गोरक्षा प्रचार, हरिजन-सेवा आदि काम चलते ही थे। अिसके सिवा महाराष्ट्र चरखा-संघकी तरफसे नागपुरमें नारी-विद्यालय शुरू हुआ और विदर्भ महाराष्ट्र विद्यार्थिनियोंकी तरफ अभिमानी विद्यार्थी चार शालायें भी नागपुर और पासके तीन गांवोंमें चलने लगीं। सन् १९४ तक नागपुरमें

रचनात्मक काम बड़ी तेजीसे चल रहा था। फिर सत्याग्रहका आंदोलन शुरू हुआ। आश्रमवासी अेकके बाद अेक जेल जाने लगे। आश्रमकी प्रवृत्तियाँ बन्द होती गयी और सन् १९४२ में आश्रम और छात्री-विद्यालय दोनों बन्द हो गये।

सन् १९४४ से आश्रम नये रूपमें शुरू हुआ। आचार्य भागवतके विचार — खास तौर पर राजनीतिक क्षेत्रके — बदल गये थे। वे कांग्रेसके विरोधी और समाजवादी दलके पक्षपाती हो गये थे। पू. महात्माजीके अवसान तक समाजवादी दल कांग्रेसमें था, फिर भी दोनोंके बीच अविश्वास बढ़ता जाता था।

मैंने सासवड़का केन्द्र कायम किया था। आश्रम फिर शुरू हुआ। श्री शंकरराव्जी जून १९४५ में जेलसे छूटे तब तक आश्रममें बहुनें ही आकर रहती थीं। फिर पुरुष कार्यकर्ता आने लगे।

कांग्रेस स्त्री-संगठन समितिके कार्यके सिलसिलेमें मुझे महाराष्ट्रमें बार बार भ्रमण करना पड़ता था। फिर कस्तूरबा ट्रस्टका काम बढ़ने लगा। जिसलिये ग्रामकेन्द्रोंके निरीक्षणके लिये भी घूमना पड़ा।

पूज्य महात्माजी नोआखालीमें घूम रहे थे तब अेक बार मैं अुनसे मिल आयी थी। सन् १९४७ का समय दुःस्वप्नकी तरह मालूम होता था अैसा याद पड़ता है। देश आजाद हुआ अुसका आनन्द मनाने जैसी परिस्थिति नहीं रही थी। मैं जहां जाती वहां अुनका ही चिंतन करती थी। अुनकी जीवनभरकी तपस्याका फल अैसे अुग्र वातावरणमें हुआ इससे व्याप्त मानव-समाजके मौनमें आसुरी द्वेषके तांडवमें प्रकट होगा अैसी कल्पना ही नहीं थी। औश्वरके अैसे महान भक्तको अैसी भयानक कसौटीमें से क्यों गुजरना पड़ता होगा यह मेरी समझमें ही नहीं आता था। मुझे अपने अूपर भी चिढ़ आती थी। हम अुनके अनुयायी खास-तौर पर मैं खुद क्यों कुछ नहीं कर पाते? क्यों अुनकी मदद नहीं कर सकते? हमारी प्रार्थना क्यों नहीं फलती? क्या भगवानका कोप हुआ होगा?

आगाखां महलसे पूज्य महात्माजीके छूटकर आनेके बाद मैंने दो बार अुनसे कहा था — आपके अवसानसे पांच मिनट पहले मुझे मर जाना

है। आपके बाद मैं जीना नहीं चाहती। मुझे घोर अंधेरा लगेगा।" अुन्होंने अेक बार हँसकर कहा था। दूसरी बार पूछा "पहले मरकर तू क्या कर लेगी?"

लेकिन सन् १९४७ में देशमें चारों ओर जो यमराज्य चल रहा था वह मौतसे पहले मरने जैसा दिखाई देता था। अुसे क्या जीवन कहा जा सकता था? पूज्य महात्माजीका जन्मदिन आता तब प्रतिवर्ष मैं अुनकी दीर्घायुके लिये प्रार्थना करती थी और पत्रमें भी वैसी ही शुभेच्छा लिखती थी। लेकिन १९४७ में अुनके जन्मदिन पर जिस प्रकार लिखनेकी याद आती है: जीवनभर आपने जिस आदर्शकी तपस्या की अुससे अुल्टा ही परिणाम भविष्यमें आनेवाला हो तो अुसे देखनेके लिये आप जीयें और हम आपके अनुयायी निकम्मे बनकर बैठे रहें और आपकी मददमें मर मिटनेकी हिम्मत न बता सकें — जिसकी अपेक्षा भगवान अपनी कृपासे आपको वैसी स्थिति पैदा होनेसे पहले ही अपने पास बुला ले वैसी प्रार्थना मन करता है।"

सन् १९४७ के दिसम्बरमें पूज्य महात्माजीका निवास नयी दिल्लीमें था। दिसम्बरके दूसरे सप्ताहमें कस्तूरबा ट्रस्टके प्रान्तीय प्रतिनिधियोंकी बैठक पूज्य महात्माजीकी मौजूदगीमें होनेवाली थी अिसलिये मैं दिल्ली गयी थी। लगभग १ महीने बाद मैं अुनसे मिलने गयी थी। जेलमें न होनेकी स्थितिमें जितना लम्बा समय मैं कभी न जाने देती थी। अुनकी मुलाकातको ४–५ महीने होते कि या तो मुझे किसी कारण वश अुनके दर्शनका मौका मिल जाता या कोअी कारण ढूँढकर मैं ही अुनसे मिलने चली जाती थी। मेरी अिस आदतसे शंकररावजी अच्छी तरह परिचित थे। कभी कभी विनोद भी करते थे। मेरी आतुरता देख कर वे कहते "अब बैटरी खतम हो गयी मालूम होती है। अब वहाँ (पूज्य महात्माजीके पास) जाकर फिर कुछ भर लाना।" और सचमुच ही मैं चाहे जितनी थकी हुअी होती तो भी हमारे अुन प्रियदर्शी नेताका दर्शन हुआ कि कोअी नयी ही चेतना मेरे मनमें प्रवेश करती थी। थकान अुतर जाती थी मनमें अुल्लास भर जाता था। अुनकी बातचीतसे जिसको तुरन्त अनुभव होता था अुनके प्रसन्न हास्यसे हृदय खोलने

रूपता था और अनका वात्सल्यपूर्ण हाथ कंधे पर फिराकता तब अखिल जगतको जीतनेका अुत्साह मनमें पैदा हो जाता था। जिसलिये अुनसे मिलते ही बैटरी भर जाती और मैं नये अुत्साहके साथ वापस जाकर स्वधर्ममें जुट जाती थी जिसमें आश्चर्यकी कोओी बात नहीं।

जिस वर्ष वे नोआखाली और बिहारमें भीषण परिस्थितिमें काम करने गये थे शैतानका हृदय पिघलाने गये थे अतः हमारे लिये — अुनके अनुयायियोंके लिये — तो स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः होकर रहना ही स्वधर्म था। छावन और पुरस्वर तालुकोंमें हिन्दू बहुमतके बीच थोड़ेसे मुसलमान सुरक्षित रहे थे। कस्तूरबा ट्रस्टकी सेविकाओं और कांग्रेस स्त्री-संगठन समितिकी बहनें महाराष्ट्रमें अपने अपने कर्तव्यका पूरतापूर्वक पालन कर रही थीं। यह समाचार लेकर मैं दिल्ली गयी थी।

पूज्य महात्माजीसे मेरी मुलाकात हुअी। मेरी स्मृतिके अनुसार ९ दिसम्बरकी शामको पूज्य महात्माजीके साथ मोटरमें बैठकर मैं बिड़ला-भवनकी तरफ जा रही थी। हम दो ही थे। पूज्य महात्माजी हृदयकी वेदना अुंडेलने लगे। अपने पुराने साथियोंके बारेमें जो अुस समय राज्याधिकार भोग रहे थे वे बात कर रहे थे। मैं अकेला हूं मेरे साथ कोओी नहीं है। यह था अुनके कथनका आशय। मैं थोड़ी देर अवाक होकर बैठी रही। मैंने पहले कभी अुनके मुंहसे अन्तर्वेदनाको जिस तरह प्रगट होते नहीं देखा था।

प्रतिनिधियोंकी बैठकमें भी वैसा ही हुआ। अनेक प्रश्न पूछे गये मैंने भी अेक प्रश्न पूछा था। सारे देशमें कस्तूरबा ट्रस्टकी सेविकाओंके लिये कार्यकी अेक नीति है। लेकिन देशमें अनेक संस्थायें अलग अलग तरीकेसे मनमाना काम करें तो अुससे कोओी निश्चित परिणाम नहीं आता। जिसलिये सारे देशके लिये अेक योजना बननी चाहिये जिसमें सरकार और जनता दोनों शामिल हों जिससे ट्रस्टका काम चमक अुठे और सबके लिये सरल भी हो जाय। आजकी विकेन्द्रित शक्तिके केन्द्रित होनेसे राष्ट्रीय कार्यके साथ राष्ट्रीय गुणोंका भी अुत्कर्ष होगा — अैसा मैंने कहा।

पूज्य महात्माजीने पूछा अैसी योजना कौन बनायेगा ? "

मैंने कहा यह तो आप ही बना सकते हैं। "

वे बोले "मुससे क्या होगा ?"

मैंने कहा क्यों ? केन्द्रीय मंत्रि-मंडलमें आपके ही अनुभवी नेता । मुनके गले यह योजना आप मुतारें। फिर राष्ट्रीय पैमाने पर काम शुरू होगा।

पूज्य महात्माजी गंभीर हो गये। कहने लगे "तू मानती है कि सब मंत्री मेरा कहा सुनेंगे ? मैं कहता हूं कि मेरी बात कोअी नहीं सुनेगा। मैं अकेला हूं। फिर हरअेकका नाम लेकर वे अपने और मुनके बीचके मतभेदका विवेचन करने लगे। यहां मुसके विस्तारमें जाना व्यर्थ है। लेकिन पूज्य महात्माजीके मनमें भीतर ही भीतर कितनी निराशा पैदा हो गयी थी जिसकी झांकी मुझे मिली।

मैं बेचैन हुअी। मैं तो बिलकुल सामान्य सेविका थी। असंभवको संभव बनानेके लिअे मैं भला क्या कर सकती थी ? फिर भी मैं पूज्य महात्माजीको फिरसे प्रसन्न और मुत्साहपूर्ण देखना चाहती थी। मिसलिअे दुबारा हम मिले तब मैंने पास जाकर मुनसे पूछा सरकारको जाने दीजिये। हमारा गांधी-सेवा-संघ तो है। जिसका आपने विसर्जन किया था मुसीको फिरसे खड़ा क्यों नहीं करते ? वह आपकी योजनाको पूरी करनेमें मदद करेगा।"

वे सिर नीचा करके लिख रहे थे। मेरा मुत्तर सुनकर मुन्होंने अेकदम सिर मूचा करके मेरी ओर देखते हुये जरा हंसकर कहा "गांधी-सेवा-संघकी फिरसे खड़ा करनेकी बात ही तू मत बोल। क्या तू चाहती है कि मैं अपने चारों तरफ hypocrites (दांभिकों)का अेक दल खड़ा कर दूं ? मुस संघमें से वैसा ही दल पैदा हुआ था। मैं दुबारा वैसा नहीं करना चाहता।

मुझ पर जैसे वज्रपात हुआ। मैं भी संघकी सदस्या थी। पूज्य महात्माजी हमसे जो अपेक्षा रखते थे मुसका पूरा होना तो अेक किनारे रहा मुल्टे हमने दुःख ही दिया। कैसा पाप ?

पूज्य महात्माजीसे कुछ भी कहनेकी मैंने फिरसे हिम्मत नहीं की। विचार आया अलगारी पुरुषकी मुत्कट अभिलाषा रखना अेक चीज है। लेकिन मुसके अवतरित होनेके बाद मुसकी मांग पूरी करनेके लिअे

आवश्यक शक्ति पैदा करना दूसरी चीज है। युग-पुरुषकी सेवाके लिये योग्यता होनी चाहिये।"

बैठक खतम होनेके बाद वापस लौटनेसे पहले मैंने पूज्य महाराजजीसे विदा ली। अुस दिन दिसम्बरकी ११ तारीख थी। शामकी प्रार्थनाके बाद अुनके साथ मैं बगीचेमें घूम रही थी। अेक तरफ आमा थी दूसरी तरफ मैं। डॉ किचलूके साथ अुनकी बातचीत चल रही थी। अेक और सज्जन डॉक्टर साहबके साथ थे लेकिन वे कौन थे यह अब याद नहीं है। सुशीला मुझे छोड़ने आयी तब मुझे अत्यंत दुःख हुआ। जिस बार दस महीनेके वियोगके बाद मुलाकात हुमी है। भविष्यमें कब होगी? अैसा विचार मनमें आया और अनजानमें अैसे शब्द मुंहसे निकले।

पूज्य महाराजजी मुझसे पूछने लगे बोल तू फिर कब मुझसे मिलना चाहती है?

मैंने क्षणमात्र विचार किया और कहा "अैसी विच्छा होगी तब आपको लिखकर बताअूंगी।"

ठीक वैसा ही करना" अैसा आश्वासन देकर अुन्होंने मेरी झुकी हुमी पीठ पर अभयहस्त रखा। प्रणाम करते करते मनमें आता हुआ अरे, आज तेरहवीं तारीख है!!!"

सुशीलाके साथ जाते जाते मैंने कितनी ही बार मुंह घुमाकर अुनका दर्शन किया। सुशीला हंसते हंसते मुझसे पूछने लगी "आज विदा लेते समय तू जितनी विह्वल क्यों हो गअी थी? जिसका जवाब मैंने अुस समय नहीं दिया। अेक महीने बाद राजघाटकी तरफ जाते हुवे समशान-यात्रामें हम साथ मिले तब अुसे जिसका अुत्तर अपने आप मिल गया।

मैं सासवड़ वापस आयी तब मनमें अनेक विचार अुठते रहते थे। पूज्य महाराजजी कभी भी अपने साथियोंके बारेमें जिस तरह नहीं बोलते थे। कभी मैं किसीकी आलोचना करती तो अुन्हें यह अच्छी नहीं लगती थी। काम सफल होता तब वे सब साथियोंको श्रेय देते काम बिगड़ता तब अपनी भूल निकालते। लेकिन जिस बार तो अुनकी रीति कुछ और ही दिखायी देती थी। जिसका कारण क्या होगा? साथियोंसे नाराज

हुओ होंगे ? या यह भावीकी सूचना कहलायेगी ? औसा कहा जाता है कि स्वामी रामकृष्ण परमहंसने अपनी मृत्युके बारेमें पूर्व सूचना दे दी थी। वे कहते थे कि म करने जैसी बातें मैं करने लगूं तब समझना कि मेरी मृत्यु समीप आ गयी है।

दिसम्बर पूरा हुआ। जनवरीका महीना आया। चौदहवीं तारीखको संक्रांति थी। हमेशाकी तरह मैंने पूज्य महात्माजीको पत्रके साथ तिल-गुड़ भेजा। असके बाद अखबारोंमें पढ़ा कि अन्होंने अपवास शुरू किया है। हृदयको अेक आघात लगा। मनमें डर पैदा हुआ कि "अिस संकटके समयमें अहिंसा-मूर्तिकी आहुति तो नहीं पड़ेगी!" लेकिन मैंने देखा कि भारतका हृदय अविचल है, बलवान है। अूपर दिखायी देनेवाली हिंसाके पर्देके नीचे पूज्य महात्माजीके प्रति प्रेम और निष्ठाकी तहें हैं। अनकी टेकको पूरा करके जनताने आत्माके प्रति द्रोह करनेसे अिनकार कर दिया है।

वातावरण कुछ पलटता-सा लगा। अपवासमें अपमृत्यु टल गयी। फिर बम-संकटसे भी पूज्य महात्माजी बच गये। मुझे लगा कि भगवान भक्तोंके रक्षक हैं। हम व्यर्थ ही डरते थे। जितना महान पुरुष अुतनी ही महान असकी कसौटी! असके लिअे संकट भी महान ही आयेंगे। महान संकटोंमें से पार हुअे बिना महापुरुषकी महानता भी कैसे सिद्ध हो सकती है? भगवान अपनी लीला दिखाते हैं। महात्माजीकी महानता तो शिखर पर पहुंच गयी है, अैसा कुछ मनको लगा और हृदय अत्यंत प्रसन्न हो गया।

अुस समय भी शंकररावजी कांग्रेसके महामंत्री थे। वे कांग्रेस संस्थामें आयी हुअी शिथिलताको दूर करके असको मजबूत बनानेका प्रयास कर रहे थे। वे सर्वोदयकी बुनियाद पर देशमें आर्थिक नियोजन करनेका विचार रखते थे। अिसलिअे रचनात्मक कार्यकर्ताओंका अेक संघ संगठित करनेकी आवश्यकता अुन्हें महसूस होती थी। पूज्य महात्माजीने खादी-सेवा-संघको पुनरुज्जीवित करना अस्वीकार कर दिया था फिर भी रचनात्मक कार्यकर्ताओंको मार्गदर्शन देनेकी तैयारी बतायी थी। स्वतंत्रता प्राप्त करनेके बाद अुद्यम और पुरुषार्थ करनेका समय आया था। देशसे

दारिद्र्यके रोगकी जड़ काटनेके लिये रचनात्मक शक्तिकी बुनियाद पर भगीरथ प्रयास करनेकी जरूरत थी। इसलिये शंकररावजीके प्रयत्नसे ८ ९ और १ फरवरीको सेवाग्राममें रचनात्मक कार्यकर्ताओंका सम्मेलन करनेका निश्चय हुआ था। पूज्य महात्माजी फरवरीके शुरूमें नयी दिल्लीसे सेवाग्राम जानेवाले थे।

उस सम्मेलनमें शरीक होनेकी मेरी भी इच्छा थी। इसलिये २१ जनवरीको मैंने सासवड़ छोड़ा। दूसरे दिन पूना जिलेके पेन गांवमें महाराष्ट्र कांग्रेस स्त्री-संगठन समितिकी कार्यसमितिकी बैठक थी। वह दो दिनमें पूरी हुई। फिर तीसरे दिन पूनाके एक गांवमें कस्तूरबा ट्रस्टके ग्रामसेवा केन्द्रको देखने गयी। और ३ जनवरीको दोपहर १२ बजे मैं बंबई पहुंची। मेरी मौसीके यहां ठहरी थी।

शाम तक सारे काम पूरे करके मैं साढ़े पांच बजे फलाहार करने बैठी थी। जल्दीसे वर्धा जाना चाहती थी। इसीके विचार मनमें घूम रहे थे। एकाएक किसीने बाहरका दरवाजा जोरसे खोला। मौसी देखने गयी तो उनका छोटा लड़का रेडियो सुनकर हांफता हुआ दौड़कर आया और चीख उठा मां गांधीजी गये ।

मेरी छातीमें दो चार दर्द उठे। मुझे ठीक याद नहीं कि मैं कब उठी और मुंह धोकर बाहर आरामकुर्सी पर बैठ गयी। दिमाग बिलकुल जड़ हो गया था। मैं जीवित हूं या मृत इसकी भी कल्पना नहीं थी।

मौसी पास आकर सिर पर हाथ रखकर मुझे समझाने लगी शान्त रह बेटी यह कमबख्त गप्प खबर आया होगा। मैं मालूम करती हूं। मालूम करनेके बाद तो तीन गोली लगनेके ही समाचार मिले।

आंखसे आंसू भी नहीं बह रहे थे मैं स्थिर बैठी थी। बहुत देर बाद भान हुआ। किसन आकर मुझसे लिपट कर रोने लगी। उसके बाद मुझे भी रोना आया ऐसा याद है। सारी रात वह मेरे पास ही सोयी। सुबह जल्दी उठकर मैंने सिर धोकर स्नान किया और चौपाटी पर सार्वजनिक प्रार्थनाके लिये जानेकी तैयारी की। इतनेमें फोन आया। सुशीला सुबह सफर करके बम्बई पहुंची थी। एक स्नेहीके मारफत उसने मुझे हवाई जहाज द्वारा दिल्ली चलनेका सन्देश दिया था। वह

स्वयं हुवाओ मार्गसे रवाना हुओ फिर किसन और मैं दोनों विमानसे दिल्ली पहुंची। अुस सारे समयकी मनःस्थितिका वर्णन करना कठिन है। तब तक अखबार हाथमें आया और सारे समाचार विस्तारसे जाननेको मिले। अेक तो अुस भीषण मृत्युका आघात। हमारा और देशका जीवन अब शून्य हो गया अैसी भावनासे पैदा हुओ घोर निराशा। और फिर हत्यारा महाराष्ट्री कुलांगार निकला! (अुसका नाम भी अुस समय तक मैंने नहीं सुना था यद्यपि वह पूनाका रहनेवाला था और कांग्रेस विरोधीके रूपमें प्रख्यात था।) महाराष्ट्रमें बुद्धिमान नेता कहे जानेवाले वर्गमें से कुछ व्यक्तियोंने वर्षों तक पूज्य महात्माजीके विरुद्ध जो व्यक्तिगत जहरीका प्रचार किया था अुसीका यह पका फल था। अुस समय हवाओ जहाजमें हमारे साथ श्री खेरसाहब अुनकी पत्नी और लीलावतीबहन आसर थीं। लीलावतीबहन व्यवसायमें बोल अुठीं "मुझे लगा कि हत्यारा कोओ निर्वासित होगा। लेकिन बादमें मालूम हुआ कि वह तो मुआ बाटिया था। जिन शब्दोंने मुझे सावधान कर दिया। अीसाकी मृत्युको लेकर यहूदी और अीसाअियोंके बीच सदियों तक वैर बना रहा था। अब अैसी ही बात क्या भारतमें भी होगी? गुजराती महाराष्ट्रियोंके बीच क्या स्थायी अहि-नकुलका वैर पैदा होगा? अैसे दुःसह विचार मनमें आने लगे। मन जड़ और बधिर हो गया।

जुलूसमें शामिल होकर मैं अनुमावन करती हुओ सुशीलाके साथ चलने लगी। वह खूब शांत थी और मुझसे विवेककी बातें करने लगी। राजघाट पर श्रीदेह लाया गया तब श्री मणिबहन पटेलकी मददसे मैं अुस जर्जर किन्तु पावन देहका देख सकी। मैंने मस्तक पर हाथ रखा। बरफ जैसा ठंडा लगा। मेरे शरीरमें कंपकंपी छूटी। जब चिता प्रगट हुओ और शरीर भस्म होने लगा अुस समयके आक्रन्दका वर्णन कैसे करूं? जो शरीर हम सबको प्रियदर्शी और प्रिय लगता था जिसकी सेवाको हम सब साक्षात् भगवानकी ही सेवा मानते थे वह शरीर आखिर भस्मान्तम् हुआ!! अैसी विचित्र लीला है!

जिसको तूने जगमें जिलाया वो ही तुझको जलावे।

किसन और मैं भी मावलंकरजीके यहां गभी। शंकररावजीको मालूम हुआ तो वे आकर हमें अपने घर ले गये। कुछ दिन तो किसीका खाना-पीना सूझा ही नहीं। दूसरे दिन अखबारमें खबर आयी महाराष्ट्रमें — खास तौर पर पूना-कोल्हापुर-सतारामें कांग्रेस-विरोधी तथा गांधी-विरोधी लोगों पर बहुसंख्यक समाज टूट पड़ा है। अुनके मकान जलाये जा रहे हैं। अत्याचार हो रहे हैं। आदि आदि।

हृदयमें क्षोभ और संताप भरा था। आवेशमें मैं बोल अुठी मुझे अुन लोगों पर जरा भी दया नहीं आती।

शंकररावजी शांतिसे मुझे समझाने लगे "हमें अुदार होना चाहिये प्रेमाबाअी अिस तरह नहीं बोलना चाहिये।

तीन दिन बाद किसनके साथ मैं दिल्लीसे रवाना हुअी। अन्तरमें वैराग्यकी आग धधकने लगी। मैंने अपने बाहरी वेशमें परिवर्तन कर डाला। देखनेवालोंको आघात लगा। लेकिन मुझसे कुछ कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं हुअी। अेक दो बहनोंने साहस प्रयत्न किया लेकिन मैंने अुन्हें रोक दिया। पूनासे आचार्य मामवत मेरे साथ हुअे। सासवड़ पहुंचनेके बाद मेरी वेदना और क्लेश बढ़ गये और अब परमात्माके साथ झगड़ा शुरू हुआ।

मैं भगवानसे कहने लगी तू दयामय नहीं है। कोअी क्रूर राक्षस जैसा है! अपने भक्तोंकी भी तू रक्षा नहीं करता। तू वचनका झूठा है। न मे भक्तः प्रणश्यति। अिस आश्वासनको तूने झूठा सिद्ध किया है! सुकरात शीसा और महात्माजी — तेरे अिन भक्तोंको अपना बलिदान देना पड़ा। अहिंसाका पूर्ण पालन करनेवाले व्रतियोंको भी तू भीषण मृत्यु देता है। दुनियामें भलेका नतीजा भला बुरेका बुरा — यह नीति अब तेरे पास नहीं रही। अिसलिअे पूज्य महात्माजीका जैसा भयानक अन्त देखकर लोगोंकी श्रद्धा टूट गयी और कानूनको हाथमें लेकर वे तोड़फोड़ और मारकाट करने लगे अिसमें आश्चर्य क्या? अंतिम अुपवासके दिनोंमें पूज्य महात्माजीका असाधारण धर्मतेज प्रगट हुआ तब मुझे श्रद्धा हुअी थी कि अिस पुण्यभूमिमें संतकी हत्या नहीं होगी। लेकिन तूने तो मेरी बातें बोलनेमें जरा भी देर नहीं लगायी। अिस तरह जैसे जैसे झगड़ा

लगता गया वैसे वैसे मनमें निराशा फैलती गयी। आन्तरिक श्रद्धाका आधार अब तो भगवानमें था। अुसके अूपर रही श्रद्धा टूट जाय तब तो जीवनका दिवाला ही निकलेगा न!

फिर भी प्रार्थना और संतवाणीका परिशीलन मैंने नहीं छोड़ा। मन तो रातदिन संतप्त रहता था। अन्तरमें बड़ी भारी रिक्तता आ गयी थी।

१२ फरवरीको राष्ट्रीय पैमाने पर अस्थियोंकी निवृत्ति हुअी। अुस दिन मैंने पूरा अुपवास किया था। तेरहवींको शुक्रवार था। अुस दिन अेक बार खाया और हर सप्ताह वैसा करनेका संकल्प किया।

शुक्रवारको कुछ मानसिक ग्लानि बढ़ गयी थी। जिस दुनियामें अब अपना कोअी नहीं है, भगवान भी नहीं है, अैसी कुछ विचित्र शून्यावस्था चित्तमें पैदा हो गयी थी। पूज्य महात्माजीके अवसानसे पहले मर जानेकी अिच्छा पूरी नहीं हुअी। मैं जीवित हूं। निराश और निरुत्साहित हूं। अब जीवन कैसे बिताअूं? सेवाकार्यमें मेरा पथदर्शक कौन होगा? हृदयका दुःख और भूलोंका भार किसके सामने हलका करूंगी? अैसे विचारोंसे मन अुद्विग्न हो गया था।

हमारे मकानकी दूसरी मंजिल पर अेक छत थी। बरसात नहीं होती तब आठ महीनसे ज्यादा समय मैं वहीं सोती थी। मुझे कमरेमें सोना कभी अच्छा नहीं लगता था खुलेमें सोना ही अच्छा लगता था। आज भी यही स्थिति है।

तेरहवीं फरवरीको माघ शुक्ल तृतीया थी। रातको साढ़े ग्यारह बजे मैं छत पर गयी। आचार्य भागवतका अनशन सम्पूर्ण हो गया था जिसलिअे वे पहली मंजिल पर कमरेमें ही सोते थे। आश्रम-माता वृद्ध मामी और अेक छात्रा दोनों नीचेके अेक कमरेमें सोती थीं। मकान गांवके अेक किनारे होनेसे चारों ओर अेकान्त था। फिर आधी रात हो चली थी। चारों ओर शांति विराज रही थी। मैं थकी हुअी थी। क्योंकि मनमें वेदना होनेके बावजूद काम तो बराबर चलता ही था। मनको शान्त रखनेसे अुलटा बढ़ जाता था जिसलिअे काममें लगे रहना ही लाभप्रद मालूम होता था।

छत पर बिस्तर बिछाकर मैं लेटी। चारों तरफ अंधकार था। आकाशमें नक्षत्र चमक रहे थे। यामिनी निस्तब्ध थी। पूज्य महात्माजीका

रत्नागिरीके बाद फुलावाडी जानी आयी। तब दीवालीका त्योहार पास आ गया था। पूज्य महात्माजीके अवसानके बाद राष्ट्रमें शोक व्याप्त हो गया था जिसलिये भुरसब मामूली-सा मनाया गया था। फिर भी बच्चोंके और ग्रामीणोंके रसिक मनको दुःख भी आनन्दी ही लगता है। अच्छा हुआ कि यात्राके मेरे अधिकांश दिन मुसलमानोंकी बस्तीवाले प्रदेशमें बीते। भाओीदूजके दिन काम नहीं था। यात्रा करके मैं ठहरनेके लिये महाड नामके गांवमें पहुंची। रातके १ बजे थे। छत पर सोने गयी। प्रार्थना और नामजप करके लेटी लेकिन पड़ोसमें रेडियो और भुत्सवकी धूमधाम चालू थी जिसलिये थकी होने पर भी जल्दी नींद नहीं आयी। नींद कब आयी यह पता नहीं चला।

नींदमें स्वप्न आया। विह्वल होकर मैं बैठी थी और पूज्य महात्माजीका स्मरण कर रही थी। तभी अन्तर्नाद होते सुना "मैं नहीं हूं पास ही हूं।" चौंककर मैं देखने लगी तो पूज्य महात्माजी सामने हंसते हुये खड़े थे और मुझे आश्वासन दे रहे थे। खुशीमें मैं लोगोंको आवाज देकर बुलाने लगी "आओ यहां दौड़कर आओ। ये रहे महात्माजी!" लोग दौड़ते आये लेकिन पूछने लगे "कहां है? कहां है?" मैं बताने लगी लेकिन लोगोंको वे दिखाई नहीं देते थे। केवल मैं ही मुन्हें देख सकती थी। फिर तो मैं जोरसे रोने लगी और महात्माजीसे कहने लगी "आप मुझे छोड़कर चले गये। ऐसा क्यों किया? अब मैं कैसे जीऊंगी? मुझे तो सब ओर शून्य ही शून्य लगता है।" वे कहने लगे "पगली रोती क्यों है? शोक मत कर। मैं तो तेरे पास ही हूं। कहीं नहीं गया। आंख खोलकर देख।" और भी कुछ कहा लेकिन स्वप्नमें मैंने सुना नहीं। स्वप्नकी तीव्रता जितनी बढ़ गयी कि भुसका असर मनपर मैं जाग पड़ी। देखा तो चारों ओर अंधेरा और शांति!!

पूज्य महात्माजीके अवसानके बाद वे पहली बार ही मुझे स्वप्नमें दिखायी दिये थे। जीवित थे तब अनेक बार स्वप्नमें आते थे। लेकिन अवसानके बाद तो महीनों तक भुनका दर्शन नहीं हुआ। जिस स्वप्नमें आश्वासन मिला जिससे हृदयको कुछ शांति हुयी। मनमें विचार आया कि मृत्युको मित्र माननेकी सीख वे हमें अनेक बार देते थे। रामका

थे। मेरी माता और प्रमद भी रहता था। श्री मोरारजी देसाजी हर साल अेक बार आकर आश्रममें रह जाते थे। मेरे सेवाकार्यमें अुन्होंने अपनी मर्यादामें रहकर बहुत मदद की। मुझे बिना खर्च किये लोकसभामें भेजनेके लिये वे तैयार हो गये थे लेकिन मैंने मना कर दिया। फिर अुनके आग्रहसे मैंने दो-तीन सरकारी कमेटियोंमें काम किया। अैसे काम मेरी प्रकृतिके अनुकूल न होनेके कारण आगे अैसा न करनेकी मैंने अुनसे प्रार्थना की और वे मान गये। विदेश जानेके मौके भी मैंने टाल दिये। संस्था अन्न-वस्त्रके बारेमें स्वावलम्बी होनी चाहिये यह आदर्श पूज्य महात्माजीने हमारे सामने रखा था। अुस आदर्श तक पहुंचनेका मैं महाप्रयत्न करती रही।

अिस प्रकार महात्माजीके अवसानके बाद सात वर्ष बीते। १८ नवम्बर, १९५४ को राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद आश्रममें पधारे तब राज्यके बड़े बड़े शासक वहाँ सेवकगण और ग्राम लोग हाजिर थे। राष्ट्रपतिने सब जगह घूमकर सन्तोष व्यक्त किया और कहा सचमुच यह जंगलमें मंगल हो गया है। यहां फिरसे आनेकी मेरी अिच्छा है।

किसी भी सेवक या सेविकाके लिये अुसकी सेवा कृतार्थ हुअी अैसा अनुभव करनेका यह धन्य क्षण था। लेकिन अैहिक वैभवसे मेरा मन अपनेको कृतार्थ मान ले अैसी मेरी मनःस्थिति या मनोरचना नहीं है।

मैं समाजके प्रति कृतज्ञ थी क्योंकि हजारों हाथोंसे वह मुझे सहायता देता था। सामाजिक सेवाकार्यमें अनेक कठिनाअियां आती हैं। लेकिन मेरे कार्यमें कभी भी बड़ी कठिनाअियां खड़ी हुअी हों अैसा मुझे याद नहीं है हमेशा अनुकूलता ही मिली है। सद्भाव और स्नेहका अभाव भी मैंने कभी अनुभव नहीं किया। जो काम हाथमें लिया अुसमें लोगोंकी सहायता और पूज्य महात्माजीके आशीर्वाद दोनोंके फलस्वरूप मुझे सफलता ही मिली है।

लेकिन जितना वरदान मिलता गया अुतना अिस कारण अुत्तरदायित्वका भार मन पर बढ़ता गया। समाजके अनन्त हाथ हैं जब कि मेरे दो ही हाथ हैं जिसका मुझे सतत स्मरण रहा है। दिया अुससे अधिक लिया — यह वस्तुस्थिति मुझे नम्रताका पाठ सिखाती आयी है। जितने

सिवा सेवाको मैंने कभी भी अपनी भौतिक अुन्नतिका साधन नहीं माना। मैं अुसे चित्तशुद्धिका साधन मानती आयी हूं। सेवासे अन्तःकरणका मैल धुलना चाहिये, मोह मिटना चाहिये, परमात्म-दर्शनका मार्ग सुगम होना चाहिये अैसी मेरी मान्यता थी। लेकिन मैंने देखा कि मेरी यह अिच्छा सफल नहीं हुआी। कामका भार जैसे जैसे बढ़ता गया वैसे वैसे सन्ताप भी बढ़ता गया! अपने कामसे मुझे ही असन्तोष होने लगा। शुरूसे मैंने सपना देखा था जैसे दीपकसे दीपक प्रगट होता है अुसी तरह सेवाके द्वारा सेवाभावी चारित्र्यवान सेविकाओंका संघ तैयार करनेकी मेरी अभिलाषा सफल नहीं हुआी। बाहरी शिक्षा और चरित्रके संस्कार ये दो चीजें भिन्न हैं। संस्कारकी दृष्टिसे शिक्षा देनेका काम सरल नहीं है अैसा अनुभव मुझे हुआ। असफलता जिसमें मुझे अपनी ही कमी नजर आयी। और अपने प्रति मेरा असन्तोष बढ़ने लगा।

मैं आत्म-निरीक्षण करने लगी। मेरी कितनी प्रगति हुआी है? अपने क्रोधको मैं जीत सकी हूं या नहीं? मानवके मनमें षड्विकार तो रहते ही हैं। लेकिन मुझे क्रोधके विकारको जीतनेके लिये सतत प्रयत्न करना पड़ा है। दूसरे विकार साधारणतः सुप्त अवस्थामें ही रहते हैं। कभी अेकाध विकार जाग्रत हो जाय तो सामान्य विवेककी जागृति ही अुसे शान्त करनेके लिये काफी होती है। लेकिन क्रोधको जीतना मुझे कठिन लगा है। क्योंकि प्रयत्नसे मैंने निग्रह-शक्ति थोड़ी मात्रामें प्राप्त की है। लेकिन सेवाकार्यमें क्रोध-विकारने बार बार मुझे खूब सताया है।

मैंने देखा कि आजके यंत्रयुगका असर सेवा पर भी पड़ा है। आजकल सेवा किसी संस्था या संगठनके मारफत ही होती है और सेवाकी अपनी गति मिट गयी है। परिणामस्वरूप सेवा करनेवाला व्यक्ति जड़ यंत्र जैसा बन जाता है। आत्माके विकासके लिये अुसमें अवकाश नहीं रहता। सेवाकार्यमें आनन्द माननेकी शक्ति नहीं आती। तलवारकी तरह अुसकी धार भोंथरी हो जाती है!

अिसके सिवा मनको सबसे ज्यादा खटकनेवाला काम है सेवाके विवरण तैयार करके छपाना। सेवाका हिसाब करने बैठें तो अुसकी कीमत पैसोंमें आंकनी पड़ती है। लोगोंसे पैसे लेते हैं अिसलिये पैसोंका

हिसाब तो देना ही पड़ता है। लेकिन सेवाका भी हिसाब देना पड़े यह बात मुझे पसंद नहीं थी। मुझे लगता कि अिससे सेवाकी पवित्रता भ्रष्ट होती है। अैसी कार्य-पद्धतिसे मनमें अहंकार बढ़ता जाय तो अिसमें आश्चर्य क्या?

मुझे मानसिक शांति भी नहीं थी। हृदयमें गहरा घाव हो चुका था। मुझे व्यापक सेवाकार्यकी पट्टी बांधकर मैंने ढंक दिया था। जीवनमें या सेवाकार्यमें होनेवाली भूलें आचार-दोष विचार-दोष पुण्य — सभी पाप अिसमें अर्पण करनेसे मनको मुक्ति और शांति मिलती थी वह महातीर्थ तो दृष्टिसे ओझल हो गया था!! अब मनको पावन करनेवाली और शांति देनेवाली कोअी महाशक्ति मौजूद नहीं थी। अिससे मेरी अकुलाहट बढ़ने लगी। सात वर्षमें जो संयम हुआ था अुसका भार मुझसे सहन नहीं हुआ। मुक्तिकी अभिलाषा रहने लगी। समाजसे दूर कहीं अेकान्तमें भाग जानेकी व्याकुलता मनमें बढ़ने लगी।

मैंने यह भी अनुभव किया कि सामाजिक या व्यक्तिगत स्नेहकी मर्यादा होती है। दो या अनेक व्यक्ति मिलकर अेक सामान्य ध्येय या आदर्शके लिअे सह प्रयत्न करते हैं और व्यक्तिगत जीवनमें अनेक अपेक्षाअें भी रखते हैं। अिसलिअे सेवाक्षेत्रमें भी हिसाबी व्यवहार हो जाता है। बहुत बार यह अपेक्षा अहंकारकी पोषक होती है। अिसलिअे वह पूरी न हो तो क्लेश पैदा होता है। जगतकी अिस मर्यादाको समझकर ही साधु-सन्तोंने लिखा होगा

जगतमें कोअी नहीं अपना। मेरा श्रीराम प्यारा है॥

निरपेक्ष प्रेम करनेवाला या तो भगवान है या सद्गुरु। जगतका प्रेम व्यावहारिक ही रहता है। यह कहकर मैं जगतकी निंदा नहीं करती बल्कि अुसकी मर्यादा बताती हूं। क्योंकि हम भी जगतके ही अंग हैं अिसलिअे अुसकी मर्यादासे परे नहीं हैं।

अिस तरह अिस जंजालमें से छूटनेके लिअे मन तड़प रहा था तभी हमेशाकी तरह दृष्टिसे अगोचर रहनेवाले परन्तु अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड तक वस्तुमात्रका कल्याण करनेवाले मेरे सर्जनहार और तारनहार भगवानने

फिर मेरी मदद की। अेक अेक चिन्ता दूर होने लगी। सन् १९५२ में स्त्री-संगठन-समितिका विसर्जन हुआ। लगभग अुसी समय मैंने कांग्रेसकी सदस्यता छोड़ दी। अलग अलग कमेटियोंसे मुक्त हुअी। रहा कस्तूरबा ट्रस्टका काम। अुसके लिअे भी योग्य व्यक्ति मिल जानेसे सन् १९५४ के आखिरमें अुसकी सारी जिम्मेदारी भी मैंने सौंप दी। और सचमुच मैं मुक्त ही बनी!!

अिन सात वर्षोंमें मुझे भारी श्रम करना पड़ा था। बीच बीच मिलती थी वाचन-चिंतनके लिअे पूरा समय नहीं मिलता था। सफरके समय गाड़ीमें हिलती-डुलती कुछ पढ़ती थी। मनमें हमेशा कामनाओं और मनोरथ अुत्पन्न होते, सिद्धियां प्राप्त होतीं, किन्तु करते थे अिसलिअे गम्भीर चिन्तन तो होता ही कैसे? मेरी अवस्था सचमुच अैसी हो गयी थी। अिसे कर्मयोग कैसे कहा जाय? कर्मयोग हो भक्तियोग हो अथवा ज्ञानयोग हो — चाहे जो योग हो परन्तु योगका अर्थ है जोड़ना। हमारा मन औश्वरके साथ सतत जुड़ा हुआ रहना चाहिये बड़से बड़े काममें भी यह अवस्था कायम रहनी चाहिये। तभी योग साधा अैसा कहा जा सकता है। नहीं तो वह श्रम-व्यायाम हो जाता है। जैसे बुनियादी शिक्षामें शिक्षाका प्रत्येक प्रकार जीवन के साथ जुड़ा हुआ होना ही चाहिये तभी अुसे जीवन-शिक्षण कहा जा सकता है वैसे ही योगमें चित्तका सम्बन्ध भगवानके साथ जुड़ा रहना चाहिये तभी कर्ममें अनासक्ति आती है और मनको शांति मिलती है।

भविष्यका कोअी खास विचार अिस समय मनमें पैदा नहीं हुआ था। अैसा निश्चय किया था कि अेक वर्ष तक आश्रममें शांतिसे बैठकर वाचन चिन्तन मनन और थोड़ा भूदान-यज्ञका काम करूंगी। अेक वर्ष बाद आगेका विचार! लेकिन मैंने देखा कि मेरा जीवन मेरे हाथमें था ही नहीं। वर्षों पहले मैंने यह जीवन पूज्य महात्माजीको अर्पण किया था। वे देहधारी थे तब वे मार्गदर्शन करते थे। अुनके अवसानके बाद अुनके साथ मेरा जीवन भगवानके हाथमें गया। अब भगवान मार्गदर्शन करने लगे। अुनकी अिच्छा थी अुनका सार्वजनिक सेवाकार्य अुन्होंने मेरे हाथमें सौंप दिया। अब अुन्होंने मेरे लिअे कुछ और ही योजना बनाअी

थी। वह भी अुनकी अिच्छाके अनुसार हुआ। अेक अैसी विलक्षण घटना घटी कि मेरा जीवन बिलकुल दूसरी ही दिशामें मुड़ गया।

*

पूनामें अेक तत्त्वज्ञानी और विद्वान भक्त रहते हैं जिनका नाम महाराष्ट्रमें प्रख्यात है प्रो० शंकर वामन अुर्फ सोनोपंत दांडेकर। कुछ वर्ष तक वे पूनाके सर परशुराम भाअू कॉलेजके प्रिंसिपाल थे। ब्रह्मचारी हैं। महाराष्ट्रके संत-शिरोमणि श्री ज्ञानदेव महाराज और श्री तुकाराम महाराजके परम भक्त हैं। पंढरीके वारकरी (महाराष्ट्रके अेक भक्ति-सम्प्रदायके अनुयायी) हैं। सुन्दर प्रवचन करते हैं। मैं कस्तूरबा ट्रस्टका काम करती थी तब दो बार अुन्हें विद्यालयमें आमंत्रित करके छात्राओंके सामने अुनके अनेक प्रवचन कराये थे। पहली बार वे आये तब मैंने अुनसे पूछा था "ज्ञानेश्वरीके छठे अध्यायमें ध्यानयोगका जो अनुपम वर्णन है वह वास्तविक है या काव्य है?" वे बोले "वह सत्य है।" मैंने कहा "आज योगशास्त्रको जाननेवाला कोअी अधिकारी व्यक्ति है क्या? मुझे अुस शास्त्रमें रस है। कोअी अधिकारी व्यक्ति मिले तो अुसे सीख लेनेकी मेरी अिच्छा है।" अुन्होंने कहा "हां अैसे अधिकारी पुरुषको मैं जानता हूं। अुनका नाम श्री गुळवणी है।" फिर मैंने कहा "मुझे अुनका पता दीजिये। मैं अुनसे मिलूंगी।" अुन्होंने कहा "वे यात्रामें रहते हैं। पूना आयेंगे तब आपको लिखकर बताअूंगा।"

अुसके बाद लगभग दो वर्ष बीत गये। मैं पूछती तब "श्री गुळवणी यात्रामें हैं" यही अुत्तर मिलता। सन् १९५४ के दिसम्बरमें मैंने प्रो० दांडेकरको विद्यालयमें दूसरी बार बुलाया तब अुनसे मिलना हुआ। मैंने श्री गुळवणीके बारेमें पूछा तो वे कहने लगे "आप सच्चे दिलसे पूछती थीं क्या? आपको सचमुच ही श्री गुळवणीसे मिलना है? मुझे लगा कि आप शिष्टाचारके लिअे ही पूछती होंगी अिसलिअे मैंने आपकी बात पर कोअी खास ध्यान नहीं दिया।" तब मैंने अुनसे कहा कि "मैं सच्चे दिलसे ही पूछती थी। मुझे योगके बारेमें जिज्ञासा है और अब मैं कामसे मुक्त ही होनेवाली हूं।" तब अुन्होंने अुत्तर दिया "मुझे विश्वास हो गया। अब मैं पूना जाअूंगा तब मालूम करके आपको लिखूंगा।"

जनवरीमें श्री दांडेकरका तार मिला कि श्री गुरुदेवजी पूनामें हैं। मैंने आपके बारेमें अुनसे कह रखा है। अुनके साथ पत्रव्यवहार करके आप अुनसे मिल लीजिये।

मुझे आनन्द हुआ। १८ जनवरीको संक्रान्ति थी। अुस मुहूर्त पर मैंने कस्तूरबा ट्रस्टकी जिम्मेदारी नये प्रतिनिधियोंको सौंप दी और हर्षपूर्वक अन्तःकरणसे श्री गुरुदेवजीको लिखकर पूछा कि १८ तारीखको आपसे मिलने आअूँ? अुनका अुत्तर आया "आ जाअिये।"

मैं पूना गयी। मेरे साथ मेरे अेक वृद्ध स्नेही श्री हरिभाअू मोहनी थे। श्री हरिभाअू मालगुजार बहुत पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ता और पूज्य महात्माजीके पुजारी हैं। वर्षोंसे मुझे जानते और मुझ पर स्नेह रखते थे। मेरे भावी जीवनके बारेमें अुन्हें चिन्ता थी। अिसलिअे वे मेरे साथ गये।

श्री गुरुदेवसे मुलाकात हुआी तब अुनकी आयु ७१ वर्षकी होगी। चेहरा छोटे किन्तु प्रसन्न-गंभीर दिखते थे। अुन्हें देखकर मुझे सन्तोष हुआ। हम पास बैठे और हमारे बीच बातचीत शुरू हुआी। वे योगके अभ्यासी और अनुभवी थे अिसलिअे बातोंमें रस आया। योगके बारेमें जिज्ञासा बताते हुअे मैंने अपनी जीवन-कथा संक्षेपमें अुन्हें सुनाअी। बातों ही बातोंमें अपने जीवनके चार आश्चर्यजनक अनुभव मैंने अुनसे कह सुनाये।

पहला अनुभव जब मैं बहुत छोटी थी। बचपना पूरा होनेके बाद स्कूल जाने लगी अुससे पहलेका यह अनुभव है। स्कूल जानेसे पहले ही मैंने अक्षरोंकी पहचान कर ली थी और रोज सुबह नहानेसे पहले अेक जगह बैठकर पट्टी पर पाटी धोकर-सुखाकर और पहाड़े लिखकर पूरे करनेकी मेरी आदत थी। नियमके अनुसार मैं लिखने बैठी थी। लिखते लिखते मुझे अेक विचित्र अनुभव हुआ। लिखना बन्द करके मैं विचार करने लगी — मानों भान हुआ अैसा ही कहा जा सकता है — कि मैं अेक जीवित मनुष्य हूँ। मेरे शरीर है। हाथ-पैर हैं। मैं लिखती हूँ। विचार करती हूँ। मेरा अस्तित्व है।" अैसे अस्तित्वके जितना स्पष्ट दर्शन नहीं हुआ। लेकिन मैं फिर अूँचा करके अिधर-अुधर देखने लगी। ये मनुष्य घूमते हैं। मेरी तरह ये भी जीवित हैं। मनुष्य हैं। चलते हैं। मैं भी

बड़ी होजूंगी। लेकिन मैं हूं मैं हूं मैं भी कोमी हूं।, भुसी समय मुझे अपने अस्तित्वकी प्रथम बार प्रतीति हुमी और भुसके बाद यह अनुभव सतत याद रहा।

मैं बड़ी होती गमी वैसे वैसे मुझे लगता गया कि और लोगोंको भी मेरी तरह जीवनमें कभी न कभी अपने अस्तित्वकी स्वतंत्रताकी प्रतीति जरूर हुमी होगी। लेकिन मैंने बहुतोंसे पूछा (काफी बड़ी भुमरमें) तब प्रत्येकने कहा "अैसा अनुभव तो मुझे कभी नहीं हुआ। जिससे मुझे आश्चर्य हुआ।

दूसरा अनुभव मैं कॉलेजमें पढ़ती थी तबका यह अनुभव है। गरमीकी छुट्टियोंमें मैं कभी कभी अपने पूर्वजोंके गांव बारबार जाती थी। समुद्री मार्गसे कम समय लगता है। लेकिन १५ मओीके बाद जहाज चलने बन्द हो जाते हैं जिसलिअे रेलमार्गसे जाना पड़ता है। कारवारसे बसमें हुबली जाना होता था और वहांसे रेलगाड़ीमें बैठकर बम्बमी आना होता था। भुस समय हुबलीमें अेक प्रसिद्ध सिद्ध योगीका निवास था। लोग भुन्हें श्री सिद्धारूढ़ स्वामी के रूपमें,पहचानते थे। हमारे संबंधियोंमें बहुतस भुनके पुजारी थे। पिताजीके साथ मैं भी दो बार भुनके दर्शन करने गमी थी। लेकिन भुनकी कन्नड़ भाषा मुझे नहीं आती थी जिसलिअे मैं कुछ बातचीत नहीं कर सकी।

अेक बार बम्बमीमें पिताजीके यहां थी तब रातको अेक अद्भुत स्वप्न देखा। अेक सिद्ध पुरुष मेरे सामने खड़े थे। वे वही सिद्धारूढ़ स्वामी थे या और कोमी यह याद नहीं है। लेकिन भुन्होंने मुझसे पूछा बेटी तेरी क्या कामना है? स्वप्नमें भी मुझे अैसे प्रेरणा हुमी यह भगवान ही जाने। मैंने कहा स्वामिन् मुझे समाधिका अनुभव लेना है। जिस पर कुछ हंसकर वे सिद्धपुरुष बोले जिसमें कितनी देर? और भुन्होंने अपना हाथ मेरे मस्तक पर रखा। हाथ रखते ही मुझे बिजलीके जैसा धक्का लगा और अैसा मालूम हुआ मानो अेकदम मेरा शरीर नीचे गिर गया हो। जो सच्ची मैं थी (अर्थात् मेरी जीवात्मा) वह भुस शरीरसे बाहर आकर दौड़ने लगी। चारों ओर सारा विश्व लुप्त हो गया और जहां देखती वहां प्रकाश ही प्रकाश दिखामी देता। वह भी सूर्यके

प्रकाश जैसा नहीं कुछ अनोखा अद्भुत। प्रकाशके ढेर बादलों जैसे या लहरों जैसे दिखाओी देते थे और मैं हल्की होकर बड़ी तेजीसे दौड़ती थी। मेरे भारी शरीरके गिर जानेका मुझे भान आया और मैं चिल्लाने लगी "मेरा शरीर! अरे मेरा शरीर कहां गया? लेकिन यह शब्द मुंहसे निकलें तब तक तो मैं सैकड़ों योजन आगे बढ़ गयी थी। अैसी अजब गतिसे (पवनवेगसे कहीं अधिक गतिसे) मैं दौड़ रही थी। सामने दूर क्षितिजके पास प्रकाशका केन्द्र दिखाओी देता था जिसमें से चिन्हमें फैला हुआ यह प्रकाश निकल रहा था। अुस केन्द्रकी ओर मैं दौड़ रही थी। यह केन्द्र पास आने लगा था लेकिन मेरी वासना मेरे शरीरसे जुड़ी होनेके कारण अुस शरीरका स्मरण मुझे आगे नहीं जाने देता था। फिर अेकाअेक मैं चौंक अुठी मेरा शरीर कहां खो गया। और अुसी डरके कारण मैं जाग पड़ी तब अपने बिस्तर पर ही शरीरमें आबद्ध मैंने अपनेको देखा।

तीसरा अनुभव मैं सत्याग्रह आश्रममें थी तब दांडी-कूचसे पहले चौमासेमें अेक रातको यह अनुभव आया। हृदय-कुंजके आंगनमें पूज्य महात्माजी और मैं खाटें डालकर सो रहे थे। हमारे बीच ६–७ फुटका अंतर होगा। बरसात नहीं हो रही थी जिसलिअे बाहर खुलेमें सोते थे। कुछ बहनें बरामदेमें सोओी थीं। आधी रातको मैं गहरी नींदमें थी। स्वप्न था ही नहीं। अेकाअेक किसीने मुझे तमाचा लगाकर अूंची आवाजसे कहा अुठ अुठ बरसात होने लगी है। महात्माजी भीग जायेंगे। डर घबराकर मैं जागी अुठकर बैठी और देखने लगी। कोओी दिखाओी नहीं दिया। मुझे तमाचा किसने मारा? कौन बोला? सब कोओी सोये हुअे थे। पास या दूर कोओी नहीं था। सिर्फ झरमर झरमर पानी बरसने लगा था और पूज्य महात्माजी पर पानीकी बूंदें गिरने लगी थीं। मैंने तुरन्त बरामदेमें सोओी हुओी कुसुमबहन देसाओीको जगाया और हम दोनोंने महात्माजीकी खाट अन्दर कर दी। फिर मैंने अपनी खाट भी अन्दर की। फिर भी मुझे आश्चर्य होता रहा कि यह चेतावनी मुझे किसने दी होगी? स्वप्न तो था ही नहीं। मुझे तमाचा लगा था और शब्द भी मैंने साफ सुने थे।

चौथा अनुभव — आश्रममें आनेके बाद पूज्य महात्माजीने मुझे ग्यारह व्रतोंकी दीक्षा दी। अुसमें ब्रह्मचर्यका सहायक अस्वाद-व्रत भी लेनेके लिअे अुन्होंने कहा। शुरूमें मैं सिर्फ आश्रममें ही अिस व्रतका पालन करती थी बाहर नहीं। लेकिन १९३३ में आश्रमका विसर्जन करके पूज्य महात्माजीने हम आश्रमवासियोंसे कहा — अबसे तुम लोग अपने अपने साथ संयम आश्रम लेकर ही घूमना और आश्रम-व्रतोंको कभी न छोड़ना। तब मैंने देशके आज़ाद होने तक सारे व्रत पालनेकी प्रतिज्ञा की और आज़ादीके बाद वे व्रत मेरा स्वभाव बन गये अिसलिअे आगे भी चलाये। अनुभवके आधार पर मुझे कहना है कि किसी भी व्रतकी अपेक्षा अस्वाद-व्रत मुझे अधिक सरल लगा। पीढ़ियोंसे चला आया अपना आहार छोड़कर अस्वाद व्रतका आहार स्वीकार करनेमें मुझे ज़रा भी कठिनाअी मालूम नहीं हुअी। शरीर, वाणी और मनको मुझे ज़रा भी क्लेश नहीं हुआ और न कोअी विशेष प्रयत्न करनेकी ज़रूरत मालूम हुअी। पूज्य महात्माजीको भी यह देखकर अचरज होता था और अुन्होंने अनेक बार मेरे सामने और दूसरे आश्रमवासियोंके सामने अुसे व्यक्त किया था। शुरूमें कभी कभी स्वप्नमें मैं मिठाअी वगैरा खाती थी। लेकिन अैसा अेक दो बार होनेके बाद स्वप्नमें भी मुझे अिसका भान रहने लगा कि क्या चीज़ खानी चाहिये और क्या नहीं खानी चाहिये। मुझे स्वयं भी आश्चर्य-सा लगा करता था कि यह व्रत मेरे लिअे अितना सहज कैसे बन गया।

अिस तरह अपने ये चार अनुभव मैंने श्री गुरुजीको कह सुनाये।

श्री गुरुजी बोले “आपको समाधिका जो स्वप्न आया वह स्वप्न नहीं सच्चा अनुभव है। समाधि वैसी ही होती है। अुस अनुभवको और आपके दूसरे अनुभवोंको देखते हुअे यह स्पष्ट दिखाअी देता है कि अपने पूर्वजन्ममें आपने योगाभ्यास किया होगा। वह अधूरा रहा अिसलिअे अिस जन्ममें आपको अुसे पूरा करना होगा। आप प्रवृत्ति-मार्गमें अितनी फँस गअी हैं कि आपमें रजोगुणकी बहुत बड़ी वृद्धि हो गअी है। अिसलिअे आपका अब प्रवृत्ति-मार्गसे निवृत्त होना आवश्यक है। अब अेकान्त स्थल पर जाअिये और दो तीन घंटे तक पलथी मारकर स्थिर बैठना सीख लीजिये। यही आपका पहला पाठ है। अुस समय कुछ भी नहीं करना चाहिये।

केवल शान्त और स्थिर बैठी रहें। जिस तरह दो तीन घंटे बैठ सकेंगी तो आपका आसन स्थिर हो जायगा। मनको स्थिर करनेके लिये प्राणायाम कीजिये। लेकिन अभी लंबे समय तक नहीं। आरम्भमें थोड़े मिनिट तक करें और फिर धीरे धीरे समय बढ़ायें। अैसा कहकर अुन्होंने मुझे प्राणायाम करनेका तरीका बताया।

श्री गुरुजी द्वारा किया हुआ अपने अनुभवोंका स्पष्टीकरण मुझे जंचा। अस्वाद-व्रतके बारेमें मुझे भी कभी कभी लगता था कि बहुत संभव है अपने पिछले जन्ममें मैंने अुसका अभ्यास किया होगा या जिस जन्ममें सफल हुआ दिखता है। मेरे दूसरे अनुभवोंके बारेमें तो अुनका बताया हुआ कारण ही सन्तोष देने जैसा था।

मुझे अेकान्त स्थान पर जाकर योग-साधना करनेके लिये श्री गुरुजीने कहा। परन्तु अैसा स्थान कहां मिले? साधनाश्रमके आश्रममें अेकान्त असंभव ही था। पास ही विद्यालय था और अुससे सम्बन्धित प्रवृत्तियां थीं जिनके साथ मेरा ९ वर्षका निकट सम्बन्ध था। जिसके सिवा आश्रममें शंकररावजी आते तब वे भी अपने साथ बहुतसी प्रवृत्तियां ले आते थे। मेरा आज तकका जीवन सार्वजनिक था और आसपासके सब लोग मुझके आदी हो गये थे। जिसलिये यहां शान्ति और अेकान्त मिल नहीं सकता था। तब अैसा स्थान कहां खोजूं?

और, अचानक अन्तरमें रही अेक अुत्कट जिज्ञासा अूपर आयी। अुसने अुत्तर दिया — हिमालयकी गोदमें!

अुस पवित्र स्मरणसे मनमें अुल्लास पैदा हुआ और मैंने श्री गुरुजीसे पूछा — मैं हिमालयमें जाकर रहूं और अभ्यास करूं तो?

यह तो अत्यन्त सुन्दर! योगाभ्यासके लिये हिमालयसे अधिक अनुकूल जगह और कहीं है ही नहीं। फिर, आप अपने कार्यक्षेत्रसे जितनी दूर चली जायं अुतना ही आपको लाभ होगा।

मुझे भी अैसा ही लगा। सन्त ज्ञानेश्वरकी यह अुक्ति याद आयी:

व्याधाहातौनि सुटला। विहंगम जैसा॥

व्याधके हाथसे छूटा हुआ पक्षी जैसे पूरा जोर लगाकर दौड़ता है, अुड़ जाता है वैसे ही हमें भी करना चाहिये।

फिर हिमालयकी सुविधाओंके बारेमें तथा अन्य मिलर-अुधरकी बातें हुआीं और मैं अुनसे विदा लेकर वापस सासवड़ आओी।

भी हरिभाअूको यह बात अच्छी नहीं लगी। प्रौढ़ अुमरमें मेरे जीवनमें अैसा मोड़ आये यह अुन्हें कुछ मयावह लगा। वे मुझे समझाने लगे लेकिन मेरा तो निश्चय ही हो गया था। जिसलिओे मैं अुनकी दलीलें सुननेको तैयार नहीं हुआी।

मैं सासवड़ वापस आओी तब कस्तूरबा ट्रस्टसे पूछा हुआ अेक काम बाकी था। विद्यालयकी अेक छात्राने गम्भीर भूलें की थीं। सच बता देगी तो अपराध माफ कर दिये जायेंगे नहीं तो मुझे प्रायश्चित्त करना पड़ेगा — अैसा मैंने अुससे कहा था फिर भी वह तीन बार झूठ बोली। जिसलिओे मुझे त्यागपत्र देनेसे पहले प्रायश्चित्त करना था। लेकिन प्रतिनिधियोंका वार्षिक सम्मेलन पास आ गया था जिसलिओे अुस मौके पर अुपवास स्थगित कर दिया था। अब पूनासे आनेके बाद प्रायश्चित्तके लिओे मैंने चार दिनका अुपवास किया। जिस बीच मैंने हिमालय जानेके बारेमें चिन्तन भी खूब किया।

मुझे लगा कि मेरा किया हुआ निश्चय पूज्य महाराजजीके अुपदेशसे अलग जाता है। अुन्हें हिमालय जाकर तपस्या करनेकी कल्पना पसन्द नहीं थी। वे जनसेवा पर ही जोर देते थे। अुनका अुपदेश अमलमें लानेमें मैंने कभी आलस्य नहीं किया था। अपनी सारी शक्ति लगाकर जनसेवा करनेका प्रयत्न किया था। लेकिन मैं असफल रही अुसका क्या हो? नरसापुर आश्रममें जो हुआ वही सासवड़में हुआ। संस्थाके संचालनके लिओे मैं अयोग्य हूं। फिर अिससे बाहर काम क्यों करना चाहिये? अथवा मेरी कार्य-पद्धतिमें दोष होगा। प्रत्येक काम निर्दोष ही अैसा मैं आग्रह रखती हूं। अुससे भी काममें दोष पैदा होता होगा। चाहे जो हो लेकिन यदि अैसे ही चलाती जाअूं तो मेरा कसूमर निकले बिना न रहेगा।

पूज्य महाराजजीके पास मैं पहली बार आओी थी तब मनमें निश्चय किया था कि देशकी आजादीके लिओे यही सेवाकी पद्धति अुचित है। व तो अपना कार्य करके गये। अब देशके विकास का काम शुरू हुआ है। जिस कामका कभी अन्त ही नहीं आनेवाला है। तब मैं कब तक जिस

कामका अेक अंग बनकर रहूं ? फिर आज जिस दिशामें चक्र घूम रहे हैं वह पूज्य महात्माजीकी बताअी हुअी दिशा तो नहीं है। अुलटे अधिकतर बातोंमें अुनके दिये हुअे मार्गदर्शनसे अुलटी दिशामें ही सरकार और अुसकी प्रेरणासे लोग चलते हैं। मैं तो तुच्छ मानव ठहरी। अिस बातमें मुझे नहीं पड़ना है। अब मार्गदर्शनके लिअे पूज्य महात्माजी नहीं हैं। मैंने अपना जीवन अुन्हें अर्पण किया था और अुन्होंने अन्त तक वह वैसा ही रहे यह आशीर्वाद दिया था। अब मार्गदर्शन करनेकी जिम्मेदारी अुनकी है। मैं तो अब भगवानकी शरणमें ही बापूजी जिनके पास वे पहुंचे हैं। भगवानकी अिच्छा होगी वैसा होगा!

अिस तरह चिन्तन करते हुअे चार दिन बीते। २१ को मेरा अुपवास पूरा। रातको स्वप्न आया।

पूज्य महात्माजीका दर्शन हुआ। वे अेक कमरेमें बैठे थे। लोगोंका आना-जाना चालू था। वे अब जीवित नहीं हैं अैसा भान मुझे स्वप्नमें नहीं था। पहलेकी तरह वे अिस दुनियामें ही हैं अैसी मनकी भावना थी।

अुनके साथ बातचीत करनेका मौका मिला तो मैंने पूछा — महात्माजी पहलेके और आजके भारतमें आपको क्या फर्क दिखाअी देता है?

अुन्होंने पूछा — पहलेके भारतसे तुम्हारा क्या मतलब है?

मैंने कहा — पहलेका यानी सन् १९३० में आप दांडी-कूच पर गये थे अुस समयके अिस देशके लोगोंमें और आजके लोगोंमें आपको क्या फर्क दिखाअी देता है?

मुझे स्वप्नमें भी लग रहा था कि आन्तर-राष्ट्रीय शान्तिके लिअे भारत द्वारा किये गये सफल प्रयत्नका और पंचवर्षीय योजना जैसे सिद्ध किये हुअे रचनात्मक कार्यक्रमका विचार करके पूज्य महात्माजी गौरवपूर्ण शब्द कहेंगे।

लेकिन वे स्मित हास्य करते हुअे बोले — भारत लोगोंमें hypocracy (दंभ) बढ़ गयी है।

मुझे लगा कि मैंने ठीकसे सुना नहीं होगा। अिसलिअे दुबारा मैंने वही प्रश्न पूछा। अुन्होंने फिर वही अुत्तर दिया। तीसरी बार वही प्रश्न मैंने किया और तीसरी बार भी वही अुत्तर मिला!!

मैं आयी तब मुझे विस्मय हुआ। संयोगवश अुसी दिन मुझे किसी कारणवश श्री मोरारजीभाभीको पत्र लिखना था। अुसमें मैंने अपने स्वप्नकी बात लिखी।

अुत्तरमें अुन्होंने लिखा स्वप्नकी बात पर कितना जोर दें यह कहना मुश्किल है। मनुष्यके आन्तर मनमें अनेक प्रक्रियायें चलती रहती हैं। अुनका प्रतिबिम्ब स्वप्नमें पड़ना सम्भव है। लेकिन यह प्रतिबिम्ब मनुष्यके सच्चे मनको व्यक्त नहीं कर सकता। गांधीजीके प्रति आपकी भक्तिके कारण वे आपके स्वप्नमें आये। क्या अैसा हम नहीं कह सकते कि आपके प्रश्नका अुन्होंने जो अुत्तर दिया वह आपके मनके भीतरकी ही बात व्यक्त करता है? देशमें और दुनियामें होनेवाले परिवर्तन अनेक कारणोंसे होते हैं। जगत विकास करता है या अुसकी अधोगति होती है यह कहना भी कठिन है। हम शुभदर्शी रहकर समाजके हितके लिये मेहनत करनेमें विश्वास करते हैं, जिसलिये हमारे लोग ज्यादा डिपार्मेंट हो गये हैं अैसा हम कैसे कह सकते हैं? अलबत्ता अिस प्रश्न पर पत्र द्वारा चर्चा करना कठिन है। आदि।

श्री मोरारजीभाभी वस्तुनिष्ठ राजनीतिक पुरुष ठहरे, जिसलिये अुनकी दृष्टिमें स्वप्नकी ज्यादा कीमत नहीं हो सकती। लेकिन मुझे तो स्वप्नमें संकेत मिला ही करता था। अगर समाजमें दंभ बढ़ा हो तो भी मैं अुसी समाजका अंग हूं जिसलिये मेरे भीतर भी दंभ बढ़ा ही होगा जिसमें मुझे शंका करनेका कारण नहीं था। जिसलिये शुद्धिके लिये तपश्चर्या ही अेकमात्र अुपाय था और वह अुपाय पहलेकी तरह सार्वजनिक सेवाकार्योंकी जिम्मेदारी सिर पर लेकर नहीं लेकिन सर्वथा मुक्त रहकर नत-मस्तक होकर ीश्वरकी शरणमें जाकर ही करनेकी जरूरत थी। विकासके शिखर पर चढ़ना हो तो सिर पर बोझ रखकर कैसे चढ़ा जा सकता है? समाजरूपी शिवकी सेवा करनेके लिये पहले हमें शिव बनना चाहिये। शिवो भूत्वा शिवं यजेत्। अयोग्य साधक या सेविकासे समाजका भला नहीं होता नुकसान होता है। सेविकाका भी अुससे अधःपतन होता है।

अैसे विचार मनमें आये और अेकान्तमें जाकर तपस्या करनेका मेरा निश्चय अधिक दृढ़ हुआ।

जनवरीके अन्तिम सप्ताहमें श्री शंकररावजीकी षष्ठ्यब्दपूर्तिका समारोह था। आश्रममें ही होनेवाला था। वह पूरा हुआ अुसके बाद मैंने अपना भविष्यका कार्यक्रम अुन्हें और दूसरे स्नेहियोंको बताया। यद्यपि लोगोंने अलग अलग राय जाहिर की। थोड़े लोगोंको ही मेरी यह बात पसन्द आयी। ज्यादातरको नहीं आयी। शंकररावजीको दुःख हुआ। मेरी कर्म-मग्न वृत्तिको छोड़कर मैं संन्यास लूं यह कल्पना ही अुन्हें असह्य लगी। फिर महाराष्ट्रसे दूर, बिलकुल बेगानी सरहद पर जाकर मैं गुफामें बैठी रहूं यह चीज भी अुन्हें अच्छी नहीं लगी। लेकिन मुझे तो अिस कर्म-मग्न जीवनके प्रति प्रबल वैराग्य अुत्पन्न हो गया था। वे समझाने लगे — "सासवडके आश्रममें रहनेकी अिच्छा न हो तो महाराष्ट्रमें ही कोअी अेकान्त स्थल मैं ढूंढ दूंगा लेकिन आप अितनी दूर मत जाअिये।" हिमालय जानेकी बात करना जितना सरल है अुतना वहां बसना सरल नहीं है। मेरी अुमर अुस समय ४ वर्षकी थी। अैसी अुमरमें अेकाअेक नया ही प्रयोग जीवनमें करनेका निश्चय खतरनाक है। हिमालयमें सब कुछ अज्ञात है वगैरा दलीलें वे देने लगे। लेकिन मैंने अुनकी अेक भी बात नहीं मानी। स्वामी रामदासके शब्दोंमें कहूं तो 'देह पडे वा देव जोडे!' (या तो देह नष्ट होगी या भगवान मिलेगा।) अैसी टेक पर मन आ टिका था।

निराश होकर शंकररावजी मुझे स्वामी आनन्द श्री मावजी और

---

१ स्वामी आनन्द मूल बंबअीके निवासी हैं। बचपनमें अुनकी प्राथमिक शिक्षा मराठी स्कूलमें शुरू हुअी। अीश्वरकी खोजमें छोटी आयुमें घर छोड़कर वे भागे और अनेक साधु-वैरागियोंके सहवासमें ठेठ हिमालय तक पहुंचे! बहुत घूमे लेकिन अीश्वर-दर्शनकी अिच्छा पूरी नहीं हुअी। फिर सौभाग्यसे रामकृष्ण मिशनके साथ अुनका संबंध हुआ और कलकत्ताके बेलूर मठमें रहकर अुन्होंने बंगला और अंग्रेजी भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया शिक्षा पूरी की और संन्यासकी दीक्षा ली तब अुन्हें स्वामी आनन्दकी अुपाधि मिली। युवावस्थामें वे पूज्य महात्माजीके पास पहुंचे और अुनके मार्गदर्शनमें सेवाकार्य किया। पिछले कुछ वर्षोंसे वे वर्षमें आठ महीने हिमालयके कौसानी धाममें बिताते हैं।

वहां अेक सिद्धयोगीके और तीन बार साधकोंके दर्शन हुअे। कुछ सिद्ध योगीकी आयु ९ वर्षकी होगी अैसा लोग कहते थे। लेकिन आश्चर्यकी बात यह थी कि १ फुटकी अूंचाजीवाले गंगोत्रीके प्रदेशमें वे योगी नग्नावस्थामें रहते थे। अुनके कपड़े ओढ़कर मिलने गये हुअे हम लोग सरदीसे कांपते थे लेकिन अुन नग्न योगीके शरीरके रोअें भी खड़े नहीं होते थे। वे सीधे तनकर बैठे थे और अुनके चेहरेका गाम्भीर्य सहज लगता था। अुनका नाम कृष्णाश्रम था। पास ही अेक शिष्या थी। वह तीस वर्षसे अुनकी सेवा करती थी। पहाड़ी होने पर भी संस्कारवान मालूम हुअी। स्वामीजी मौनव्रती हैं बोलते नहीं लेकिन अगर अुत्तर देनेका अुनका मन हो तो भिशारेसे या अुंगलीसे लिखकर प्रश्नोंके अुत्तर देते हैं। पारनेरकरजी और दूसरे मित्रोंके साथ मैं गअी तब वहां जितनी शान्ति थी कि हम भी अेकदम शान्त हो गये। कोअी बोले नहीं। अुस शिष्याने ही हमें बिठाया और फिर वही मध्यस्थ बनकर स्वामीके विचारोंका अर्थ हमें समझाने लगी।

स्वामी कृष्णाश्रम योगकी अंतिम भूमिका तक पहुंचे हैं अैसी जान कारी वहांके दूसरे साधकोंने हमें दी थी। जिसलिअे अुनसे मार्गदर्शन लेनेको मैं अुत्कंठित थी। लेकिन वे बोलते नहीं थे। शिष्याकी सम्मति लेकर मैंने ही आरम्भ किया। मेरी भूमिका अुन्हें बताकर मार्गदर्शन मांगा।

स्वामीने कहा प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों अलग अलग मार्ग हैं। प्रवृत्ति-मार्गसे अीश्वर-प्राप्ति हो सकती है, लेकिन क्रमशः होगी जब कि निवृत्ति-मार्गसे मनुष्य सीधे अीश्वर तक पहुंचता है। तुम्हारा पिंड कर्म प्रधान है। जिसलिअे तुम कुछ समय निवृत्तिमें बिताना। साधना करना। भगवानकी कृपा प्राप्त करना। फिर अपने क्षेत्रमें प्रवेश करना।

मैंने और भी कअी प्रश्न पूछे जिनका अुन्होंने अुत्तर दिया। अुनका अधिकार तो दिखाअी देता ही था। गंगोत्रीमें रहते हुअे मैं अुनसे दो बार मिली। मुझे खूब आनन्द हुआ। जाते समय अुनके चरण-स्पर्श करके मैंने आशीर्वादकी याचना की। अुन्होंने सिर हिलाया और मैं वापस आअी। शिष्याम खबर मिली कि स्व पंडित मदनमोहन मालवीयजी

स्वामीजीको बहुत मानते थे और अनुके आग्रहके वश होकर स्वामीजी अेक बार हिन्दू युनिवर्सिटीमें जाकर तीन दिन रहे थे। अिसके बाद वे फिर हिमालयसे नीचे नहीं अुतरे और बारहों महीने गंगोत्रीमें ही रहते हैं।

मेरी साधनाके लिअे यह धुन शुभ हुआ असा मैंने माना।

पहाड़ोंमें १६ अप्रैल १९५५ को मेरी साधना शुरू हुआी जो २५ जनवरी १९५६ तक चली। अिस बीच मैं तीन बार यात्रा कर आयी (१) गंगोत्री (२) केदार-बदरी और (३) कौसानी। साधनामें मार्गदर्शन करनेवाला भगवान ही था। मैंने अष्टांग-योग और भक्तियोगका परिशीलन और अभ्यास किया। मैंने देखा कि वाचन चिन्तन और अभ्यास करते करते आगेका रास्ता अपने आप मालूम हो जाता है। अिसके सिवा हमारी कल्पना भी न हो असी रीतिसे और असे अवसर पर अलक्ष्य रूपमें सहायता और मार्गदर्शन भी मिल जाता है। मुझे यहां साधनामें किसी तरहकी मुसीबत नहीं आयी। यथासमय भगवानने कभी दिव्य अनुभव भी कराये जिससे मेरी श्रद्धा बढ़ गयी।

प्रतीति मिलनेसे विश्वास हुआ कि योगमार्ग या भक्तिमार्गमें मिलनेवाले जिन अनुभवोंके वर्णन साधकोंने लिख रखे हैं, वे सब बिलकुल सच्चे हैं। योगमार्ग सच्चे हैं। केवल बुद्धि पर आधारित तर्क करनेसे कुछ भी ज्ञान नहीं आता। अुस अुस मार्गका शास्त्रोक्त अभ्यास करनेसे अुसके सत्यकी प्रतीति होती है। अिसलिअे जिन प्राचीन मार्गोंके बारेमें अब कोओी कितना ही विरोधी तर्क करे और बुद्धियुक्तिके साथ करके दिखाये तो भी मेरे मन पर अुसका कोओी असर होनेवाला नहीं है। क्योंकि अब प्रतीतिके बादका ज्ञान मुझे हुआ है। पहले तो केवल श्रद्धा ही थी।

सितम्बरमें मैं कौसानी गयी। पूज्य महात्माजीने वर्षों पहले यहीं रहकर अनासक्तियोग लिखा था। कौसानीमें लक्ष्मी-आश्रम नामकी पहाड़ी कन्याओंकी अेक संस्था है। यहीं मैं तीन हफ्ते तक रही। स्वामी आनन्दसे मिली। मेरी साधनाका वर्णन सुन लेनेके बाद अुन्होंने कहा

"मुझे लगता है कि आप योग्य मार्ग पर चल रही है और आपकी प्रगति होती दिखाओी देती है।" बादमें शंकररावजी भी ५–६ दिन वहां आकर रह गये। जिसके बाद मैं पशुलोक आयी। साधना चालू ही रही। अनुभव होते गये। दिसम्बरमें शंकररावजी कुछ मित्रोंके साथ यहां आये। मेरा काम ठीक चल रहा था। अब वापस सासवड जाकर रहूं और वहां अेकान्तकी अनुकूलता मिले तो साधना आगे चलानेमें कठिनाओी नहीं होगी अैसा विश्वास मनमें पैदा हुआ और श्रीस्वरकी जिच्छानुसार १ जनवरी १९५६ को मैं वापस सासवड आश्रममें आ पहुंची।

हिमालय जाते समय मनमें किये हुअे अधिकतर संकल्प पूरे हो गये थे। अेक ही बाकी था। वह सासवड आश्रममें पूरा हो तब तक अेकान्त-सेवन और साधना करनेका मैंने निर्णय किया था और शंकररावजी तथा दूसरे स्नेहीजनोंसे कह रखा था। साधना शुरू हुअे अब लगभग साढ़े चार वर्ष हो चुके थे। यहां भी भगवानकी कृपासे कुछ प्रसाद मिल गया फिर भी संकल्प पूरा नहीं हुआ जिसलिअे साधना चालू रहेगी।

हिमालयमें क्या और यहां क्या निरपवाद अेकान्त तो मिलता ही नहीं। लोगोंके साथ थोड़ा-बहुत संबंध तो रहा ही है। सहज सेवा जितनी हो काम भुगती करती हूं। लेकिन किसी तरहकी जिम्मेदारी नहीं लेती। मन मुक्त रहना चाहिये। तभी वह अेकाग्रता साधता है। मनको ठिकाने लाना हो तो अुसे क्षोभ हो अैसी परिस्थिति पैदा न होने देनेके लिअे सावध रहना पड़ता है। जिसलिअे स्वाभाविक रूपमें ही जन-संबंध पर अंकुश रखना पड़ता है। दूसरे, मैंने यह भी देखा कि साधकके लिअे मौन लाभदायी सिद्ध होता है। बकबक करनेसे या अधिक समय तक बोलनेसे चित्त चंचल होता है:

> व्यर्थ बडबड बहु न करावी। साधक चौथे।।
> अरि म्हणविल योगी व्हावें ।।

साधक मनुष्यको व्यर्थ बकबक नहीं करनी चाहिये यदि वह योगी होना चाहता हो।

ध्यानयोग कर्मयोग या भक्तियोग सभी तरहके योगोंमें यह नियम अनिवार्य है।

पशुलोकमें मैं भी तब थी मुळवणीके साथ मेरा पत्रव्यवहार चलता ही था। यहां आनेके बाद कभी कभी मुनसे मिल भी लेती हूं यद्यपि अब लगभग बारी वर्ष हुमे मैं क्षेत्र-संन्यास लेकर यहीं बैठी हूं। दूर सफरमें जाती ही नहीं पूना भी कभी कभी ही जाती हूं।

सन् १९५७ में श्री मुळवणी ७५ वर्षके हुमे तब पूनामें मुनका अमृत-महोत्सव ७ दिन तक चला था। तब मुझे मालूम हुआ कि वे महाराष्ट्रमें प्रसिद्ध हैं और मुनका शिष्य-परिवार भी बड़ा है।

•

जिस साधनामय जीवनसे मुझे बहुत शान्ति मिली है, फिर भी अमुक वस्तु मिली है अैसा नहीं कहा जा सकता। छोटे बालकका धीरे धीरे बड़ा पुरुष होता है, अंकुरमें से वृक्ष बनता है मुसी तरह आध्यात्मिक प्रगति वृद्धि पाती है। यह सहज होनी चाहिये। मुसका माप हिसाब या विवरण नहीं दिया जा सकता। लेकिन अभ्यास और चिन्तनके बाद मैंने यह देख लिया है कि आध्यात्मिक या दिव्य अनुभव प्राप्त करना अेक वस्तु है और अपने स्वभाव-दोष सुधारना दूसरी वस्तु है।

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।

ज्ञानी मनुष्य भी प्रकृतिवश होता है। योगी अथवा भक्त अेकसे स्वभावके नहीं होते। सब अपनी अपनी प्रकृतिका अनुसरण करते हैं। तपश्चर्याका बहुत बड़ा सामर्थ्य रखनेवाले ऋषि-मुनि क्रोध अीर्ष्या आदि विकारोंसे मुक्त नहीं थे अैसा हम पढ़ते हैं। जिसलिये अपने स्वभाव-दोष बदलनेके लिये विशेष तपस्याकी ही जरूरत होती है। रावण किसी भी समय भगवान शंकरके दर्शन कर सकता था और तपस्यासे मुसने तीनों लोकोंका राज्य प्राप्त किया था। फिर भी मुसने परस्त्रीका हरण किया ही अपने विकारोंको वह वशमें नहीं रख सका। अेक और भी कारण है। आत्म-साक्षात्कार जिन सब प्रकारकी साधनाओंकी अंतिम परिणति

अंतिम फल है। अुसके बिना अस्मिता — देहभावना नहीं मिटती। और जब तक देहभावना है तब तक भेद अर्थात् रागद्वेष रहता ही है। अभेद अर्थात् वासुदेवः सर्वमिति भावना अन्तरमें दृढ़ होनी चाहिये। तभी मनुष्य परा शान्ति प्राप्त करता है।

जिस अवस्थाका जीवनमें क्या अुपयोग है? कोअी व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार या जीवन्मुक्ति प्राप्त करे जिससे समाजको क्या काम? समाजको मुक्ति न मिले अुसका अुद्धार न हो तब तक व्यक्तिका स्वार्थ साधनेमें क्या काम? अुसकी कीमत भी क्या हो सकती है? जिस तरहके अनेक प्रश्न अुठेंगे। आजकल समाजके लिअे व्यक्ति की पुकार चारों ओर मची हुअी है और समाजवादी राज्य स्थापित करनेके स्वप्न दुनियाके सभी राज्य देख रहे हैं। अुद्धारका अर्थ लोग अलग अलग तरहसे करते होंगे। आध्यात्मिक दृष्टिसे जगतका अुद्धार तो परमेश्वर ही कर सकता है मनुष्य नहीं कर सकते। साधक अथवा सेवक नम्र होकर व्यक्तिमात्रमें तो क्या भूतमात्रमें रहनेवाले औश्वरको देखकर अुसकी पूजा और सेवा ही करता है और अुसके द्वारा अपनी चित्तशुद्धि कर लेता है। समाजका अुद्धार करनेवाले अवतारी पुरुषोंको भगवान भेजता है। यह काम हमारा नहीं है। हमें तो भगवानकी सेवा ही करनी चाहिये। जिस रूपमें भगवान सामने आता है अुसी रूपमें अुसे पहचानकर शक्तिभर अुसकी सेवा करनी चाहिये। जब हम अपना ही अुद्धार नहीं कर सकते तब समाजका अुद्धार कैसे कर सकेंगे?

आश्रमके बगीचेमें हरे चंपाका अेक पेड़ है। बहुत बार अुसमें फूल खिलते हैं। अुसकी सुगन्धसे हवा महकती रहती है लेकिन फूल ढूंढने जायं तो बहुत प्रयत्न करने पर भी वे नहीं मिलते। मुझे लगता है कि सच्चे सेवकका यही आदर्श है। कोनेमें रहकर सुगंध फैलाते रहना चाहिये। किसीकी जानकारीमें नहीं आना चाहिये। भगवानकी भक्ति करना चाहिये। अैसी सेवा करते हुअे औश्वरको अुसके हाथसे ज्यादा सेवा लेनी होगी तो वह लेगा लेकिन वह सहज रूपसे विकास पायेगी। कलीमें न फूल कैसे खिला जिसकी किसीको जानकारी नहीं होती सेवककी तो कभी भी नहीं होती। माके पेटमें बालक कैसा होता है तभीसे माता अुसकी सेवा

करती है। वह सेवा बालक बड़कर बड़ा पुरुष होता है तब तक चलती है। वह सेवा सहज होती है। अुसकी जानकारी किसीको नहीं होती — न देनेवालेको होती है न लेनेवालेको होती है और न आसपासके लोक-समाजको होती है। समाजसेवा भी किसी तरीकेसे होनी चाहिये। मनुष्य स्वाभाविक रूपमें ही समाजमें रहना पसन्द करता है। अकेले रहना अुसके लिये लगभग असंभव बात होती है। समाजकी सुव्यवस्थाका काम वह अुठाता है जिससे अुस व्यवस्थामें शान्ति बनी रहे, कलह अथवा हीन संस्कृति सुलभ न हो जिसके लिये यत्नशील रहना अुसका स्वधर्म बन जाता है। सेवा स्वधर्मसे अलग नहीं होती।

लेकिन स्वधर्म क्या है? समाजकी आजकी संकट-अवस्थामें स्वधर्म या धर्मका ज्ञान प्राप्त करना कठिन हो गया है।

भगवान मनुने कहा है

विद्वद्भि सेवित सद्भिर् नित्यम् अद्वेषरागिभि ।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस् तं निबोधत ॥

विद्वान सन्त और रागद्वेषसे मुक्त वीतराग सज्जनोंने जिसका सेवन किया है और जिसे हृदय मान लेता है वही धर्म है। अुसे जान लो।

यह परिभाषा जिनको पूरी तरह लागू हो सके ऐसे धर्माचार्य आज कहां हैं? आज समाजको धर्म नहीं सिखाया जाता कानून दिये जाते हैं। सेवाधर्मकी दीक्षा नहीं दी जाती सेवाके लिये तरह तरहके राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक संगठन निर्माण करके अुनके द्वारा संयोजक व्यवस्थापक योजक और नेतागण लोगोंकी शक्ति खर्च कर डालते हैं। राज्यकर्ता लोग (सरकार) भी किसी कोटिके माने जायंगे। प्राचीन कालमें समाजको कानून नहीं परन्तु धर्म दिया जाता था। भगवान व्यासने पुकार पुकार कर कहा है कि "मानवोंके दो पुरुषार्थ — अर्थ और काम — धर्मके आधार पर ही प्राप्त करने चाहिये। धर्मके बिना दोनों मया यह हैं।

अुस सार्वभौम धर्मका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये महर्षिगण भगवान मनुके पास गये और अुन्होंने भगवान मनुसे धर्मकी व्याख्या करनेकी प्रार्थना की।

मनुम् अेकाग्रम् आसीनम् अभिगम्य महर्षयः ।
प्रतिपूज्य यथान्यायम् इदं वचनम् अब्रुवन् ॥१॥
भगवन्! सर्ववर्णानां यथावद् अनुपूर्वशः ।
अन्तरप्रभवाणां च धर्मान् नो वक्तुमर्हसि ॥२॥
त्वम् अेको ह्यस्य सर्वस्य विधानस्य स्वयंभुव ।
अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यतत्त्वार्थवित् प्रभो! ॥३॥

अेक बार महर्षि लोग अेकाग्रचित्त होकर भगवान मनुके पास गये और विधिके अनुसार परस्पर शिष्टाचार होनेके बाद कहने लगे भगवन्, सब वर्णोंका धर्म यथाक्रम और सम्पूर्ण रूपमें हमें बतानेके लिये आप ही अेकमात्र योग्य हैं। कारण आप स्वयंभू हैं और अचिन्त्य और अप्रमेय निखिल वेदोंका कार्य और उनका प्रतिपाद्य विषय इन दोनोंका ज्ञान आपको ही है।

समाजके लिये धर्म-प्रतिपादन करनेवालेका यह अधिकार था। आज अलग अलग मतदान-विभागोंमें बहुमत प्राप्त करके लोकसभा अथवा विधान-सभामें चुनकर आनेवाले सैकड़ों सदस्योंकी धर्म-प्रतिपादन या कानून-प्रतिपादन सम्बन्धी योग्यताका समर्थन कौन कर सकेगा?

कानून धर्म नहीं है। कानूनमें अधर्म प्रवेश कर सकता है। लेकिन मान लीजिये कि प्रजाके कल्याणके लिये ही सारे कानून बनाये जाते हैं। लेकिन जहां राज्यद्वेषके लिये अनुकूल क्षेत्र है (खास राजनीतिके सम्बन्धमें) जहां सत्ता ही सर्वोपरि लक्ष्य है जहां कानून बनानेवाले खुद ही आपसमें झगड़ा-फसाद करते हैं गाली-गलौज करते हैं चप्पलोंका अुपयोग करते हैं मारपीट करते हैं वहां अैसे लोग प्रजाके लिये अनुशासन किस तरह बना सकते हैं? अगर काजी स्वयं ही अपराध करने लगे तो वह दूसराका न्याय कैसे करेगा? कानूनकी प्रतिष्ठाकी रक्षा अुसे पुस्तकोंमें लिखनेसे नहीं होती। पूज्य महात्माजीकी अेक बार कही हुअी बात सोलह आने सच्ची है धर्मके बिना राजनीति भयानक है!

काम और अर्थ इन दो पुरुषार्थोंमें कामकी अपेक्षा अर्थ अधिक भयावह लगता है। क्योंकि आजकी दुनियामें अर्थका मूल्य सर्वोपरि माना

अिसलिअे सारे व्यवहार, योजना ध्येय धर्मके आधार पर खड़े हों। अर्थात् मानव-जातिका कल्याण करनेकी दृष्टिसे हों। जीवनमें संयम अहिंसा सत्य श्रम सहनशीलता निर्भयता आदि दैवी सम्पत्तिका विकास देखनेमें आयेगा।

सार्वजनिक सेवाकार्यके बारेमें भी यही नियम लागू होता है। जिस संस्थाके मार्गदर्शक धर्मबल और तपोबल रखनेवाले दीर्घदर्शी सत्पुरुष होते हैं अुनके द्वारा काम करनेवाले सेवकोंकी नैतिक अुन्नति और चरित्र वृद्धि हुअे बिना नहीं रहेगी। अिसके विपरीत जहां विषमताकी भावना सत्ताका अभिमान और रुपयेका महत्त्व होता है वहां सेवा भौतिक लाभका साधन बन जाती है। अुससे चित्तशुद्धि नहीं होती। समाजमें सामंजस्य अुत्पन्न नहीं होता।

सेवाके द्वारा अपना स्वार्थ या अैहिक लाभ प्राप्त करनेका लोभ महापातक माना जाना चाहिये। अपने लाभके लिअे सेवा करनेवालेका जीवन-विकास नहीं होता। चित्तशुद्धिका अर्थ यह है कि अुससे मनुष्यका मन विशाल होता जाता है। मानव-जातिमें अुसे भगवानका साक्षात्कार होता है। अुसके भीतर भक्तिकी अुमंग अुठती है। समय बीतने पर सेवा अुसका सहज स्वभाव हो जाता है। चित्तमें द्वेषका मैल कभी भी पैदा नहीं होता। अुस व्यक्तिके सहवासमें आनेवाले सब लोग प्रसन्न-चित्त हो जाते हैं। अुसकी धूल लगनेसे वे भी भक्ति-परायण और श्रद्धालु बन जाते हैं।

तुज संगे कोअी वैष्णव थाये तो तुं वैष्णव साचो
तारा संगनो रंग न लागे त्हां लगी तुं काचो।[1]

यह है सच्चे सेवक या सेविकाकी कसौटी।

अैसे विचार मनमें आया करते हैं। नवविधा भक्तिमें अंतिम भक्ति आत्म-निवेदन है। समर्थ रामदास स्वामी लिखते हैं

१ तेरे संगमें कोअी वैष्णव बन जाय तो तू सच्चा वैष्णव है। तेरे संगका किसीको रंग न लगे वहां तक तू कच्चा ही है।

मी भक्त ऐसें म्हणावें। आणि विभक्तपणेंचि भजावें।।

"मैं भक्त हूँ यह कहना चाहिये और विभक्त होकर ही भगवानको भजना चाहिये। यह आश्चर्यजनक लगता है, लेकिन अनुभवसे समझमें आता है।

ऐसी ऊँची अवस्था तक पहुँचनेके बाद सेवा कोओी अलग वस्तु नहीं रहती। लेकिन हमारे जैसे सामान्य मनुष्योंके लिये भूतमात्रमें भगवानको देखकर भक्तिपूर्वक अुनकी सेवा करनेका आदर्श ही योग्य है। शुभ संकल्पोंका दाता भगवान होता ही है। शांतिका शाश्वत और अेकमात्र स्थान भी वही है। पूज्य महात्माजीने अेक बार मुझसे कहा था हमें सेवाकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। भगवान मौका देता ही है। अुनके अिस कथनका पालन मैंने आज तक यथाशक्ति किया है और अिसकी सरलता अनुभवसे प्राप्त की है।

*

आज गांधी-जयन्तीका पुण्य अवसर है। मन भगवानके अवतार-कार्यका चिन्तन करता है।

महाराष्ट्रमें चार सौ वर्ष पहले श्री अेकनाथ महाराज नामक महात्मा हुअे हैं। श्रीमद् भागवतके ग्यारहवें स्कन्ध पर अुन्होंने महान टीकाग्रंथ लिखा है। अुसे अेकनाथी भागवत कहते हैं। महाराष्ट्रमें ज्ञानेश्वरीके बाद अिस ग्रंथका महत्त्व माना जाता है। अिस ग्रंथमें ३१ अध्याय हैं। अंतिम अध्यायमें भगवान श्रीकृष्णके निर्वाणका वर्णन है। अुसे पढ़ते समय सज्जन-हृदय अश्रुपात किये बिना रह ही नहीं सकता, ऐसा हृदयस्पर्शी वर्णन वह है। नासिक-जेलमें अिस ग्रंथका मैंने तीन बार वाचन और चिन्तन किया और हर बार मुझे अुसमें नवीनता ही मालूम हुअी है। ग्रंथके तीसवें अध्यायके अुपसंहारमें श्री अेकनाथ महाराज भगवान श्रीकृष्णके अवतार-कार्यका सार कहते हैं

अजन्मा तो जन्म पावी। विदेहत्वेंची देहधारी।
कर्ती अकर्ता ना करूं कार्य। ऐसा ईश्वर श्रीकृष्ण।।

जो अजन्मा है वह जन्म दिखाता है, जो विदेह है वह देहकी उपाधि अपना लेता है, जो स्वयं अक्षय है वह मरण दिखाता है। भगवान श्रीकृष्ण बड़े नटवर हैं!

> अेकादशाचा कळस जाण। श्रीकृष्णाचें निजनिर्याण।
> जेथ नाहीं देहाभिमान। तें ब्रह्म पूर्ण परिपक्व॥

भगवान श्रीकृष्णके निजनिर्याणको ग्यारहवें स्कन्धका कलश मानना चाहिये। जिसमें देहाभिमान नहीं है वह पूर्ण परिपक्व ब्रह्म है।

> भय नाहीं जन्म धरितां। भय नाहीं देहीं वर्ततां।
> भय नाहीं देह त्यागितां। हे ब्रह्मपरिपूर्णता हरि दावी॥

जन्म लेनेमें भय नहीं है। देहमें रहनेमें भय नहीं है। देहका त्याग करनेमें भय नहीं है। अैसी ब्रह्मपरिपूर्णता भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं!

मुझे लगता है कि यह अंतिम ओवी पूज्य महात्माजीके अवतार कार्यका भी दिग्दर्शन करती है।

> भय नाहीं जन्म धरितां। भय नाहीं देहीं वर्ततां।
> भय नाहीं देह त्यागितां। हे ब्रह्मपरिपूर्णता हरि दावी॥

इकत्तीसवें अध्यायमें भगवानका स्वेच्छासे किया हुआ निर्याण वर्णित है।

मूल संस्कृत श्लोक यह है —

> लोकाभिरामां स्वतनुं धारणाध्यानमंगलाम्।
> योगधारणयाग्नेय्याऽदग्ध्वा धामाविशत्स्वकम्॥

जिस श्लोक पर सन्त अेकनाथ महाराजकी टीका जिस प्रकार है

> पूर्ण निजांगें निजसुखें। तैसें सगुण निर्गुणात्मा जालें।
> या नांव योगाग्निधारण जाणिं। हरीनें देह दाहिलें हें कदा न घडे॥

जैसे जमा हुआ घी पिघलता है वैसे ही सगुण ब्रह्मने निर्गुणत्वको प्राप्त किया जिसीको योगाग्नि-धारण कहा जाता है। कृष्णने अपनी देह जला डाली यह कभी हो ही नहीं सकता।

कृष्णें देही नेला ना त्यागिला। तो लीलाविग्रह संचला।
भक्तध्यानीं प्रतिष्ठिला। स्वयें गेला निजधामा॥

कृष्णने देह न तो धारण की न अुसका त्याग किया। वह लीला देह सब जगह ओतप्रोत हो गयी। भक्तोंके ध्यानमें अुसकी प्रतिष्ठापना करके भगवान स्वयं निजधामको पधारे।

*

मेरा मन कहता है, ३१ जनवरी १९४८ की शामको मैं भी दिल्लीमें राजघाट पर थी। पूज्य महात्माजीके पार्थिव शरीरका वहां चंदन-काष्ठकी चिता पर जलकर भस्म होते मैंने अपनी आंखसे देखा। अुस पवित्र चिताभस्मका थोड़ासा भाग अिस आश्रममें अेक डिब्बीमें सुरक्षित रख छोड़ा है। अब पूज्य महात्माजी विश्वरूप हो गये हैं!

यहां हृदयके अेक कोमल कोनेमें मृदु निनाद गुंजन करता है "नहीं नहीं पूज्य महात्माजीकी सगुण विभूति भी अमर है!! अमर है!!!'

*

निधनमें गत हुआ। परन्तु जीवन प्रवाह अखंड है!

मेरे अिस साधना-आश्रम बाहरकी सारी प्रवृत्तियां बंद छोड़ दी हैं। लेखन-प्रवृत्ति भी बंद की थी। अेकाध नाम विशेष दानवाला थोड़ी भी नाम चलानेकी मेरी अिच्छा नहीं होती थी। लेकिन अिस लेखनका निमित्त मेरा हाथ हुआ है फिर भी प्रेरणा अुनकी है। अुनकी अिच्छानुसार सब हो गया है। अेकाग्रता भी वही है। विचार भी वही है। मुझे हरबार रहनेवाली अुन्हींकी शक्ति मानना है! जब प्रगट होती है तब वही शक्ति अुनकी जीवन बन जाती है!!

संत श्री तुकाराम महाराजके पवित्र वचनसे ग्रंथकी समाप्ति करता हूं

आपुलिया बळें नाहीं मी बोलत।
सखा भगवंत वाचा त्याची ॥१॥
साळुंकी मंजुळ बोलतसे वाणी।
शिकविता धणी वेगळाची ॥२॥
काय म्या पामरें बोलावीं उत्तरें।
परि त्या विश्वंभरें बोलविलें ॥३॥
तुका म्हणे त्याची कोण जाणे कळा।
चालवी पांगळा पायांविण ॥४॥

मैं अपनी शक्तिके बल पर नहीं बोलता। भगवान मेरा सखा है उसकी यह वाचा है। मैना मधुर वाणी बोलती है, उसे सिखानेवाला स्वामी कोई और ही है। मैं पामर क्या वचन बोलूं? लेकिन उस विश्वंभर भगवानने मुझे बोलनेको प्रेरित किया। तुकाराम कहता है, उसकी कलाको कौन जान सकता है? वह लंगड़ोंको बिना पैरोंसे चलाता है।।

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।

अुस पारके पड़ोसी	१५
जीवन-लीला	१
सूर्योदयका देश	२५
स्मरण-यात्रा	१५
हिमालयकी यात्रा	२
गांधी और साम्यवाद	१२५
गीता-मंथन	१
जड़मूलसे क्रान्ति	१५
तालीमकी बुनियादें	२
संसार और धर्म	२५
स्त्री-पुरुष-मर्यादा	१७५
अेकला चलो रे	२
बा और बापूकी शीतल छायामें	२५
बिहारकी कौमी आगमें	१
आशाका अेकमात्र मार्ग	२
अैसे थे बापू	१७५
गांधीजी और गुरुदेव	८
गांधीजीकी साधना	१
ठक्करबापा (जीवन चरित्र)	१
बापू — मैंने क्या देखा क्या समझा ?	
हमारी बा	